अथश्रीमद्भागवतभाषाएकादशस्कंधप्रारंभः

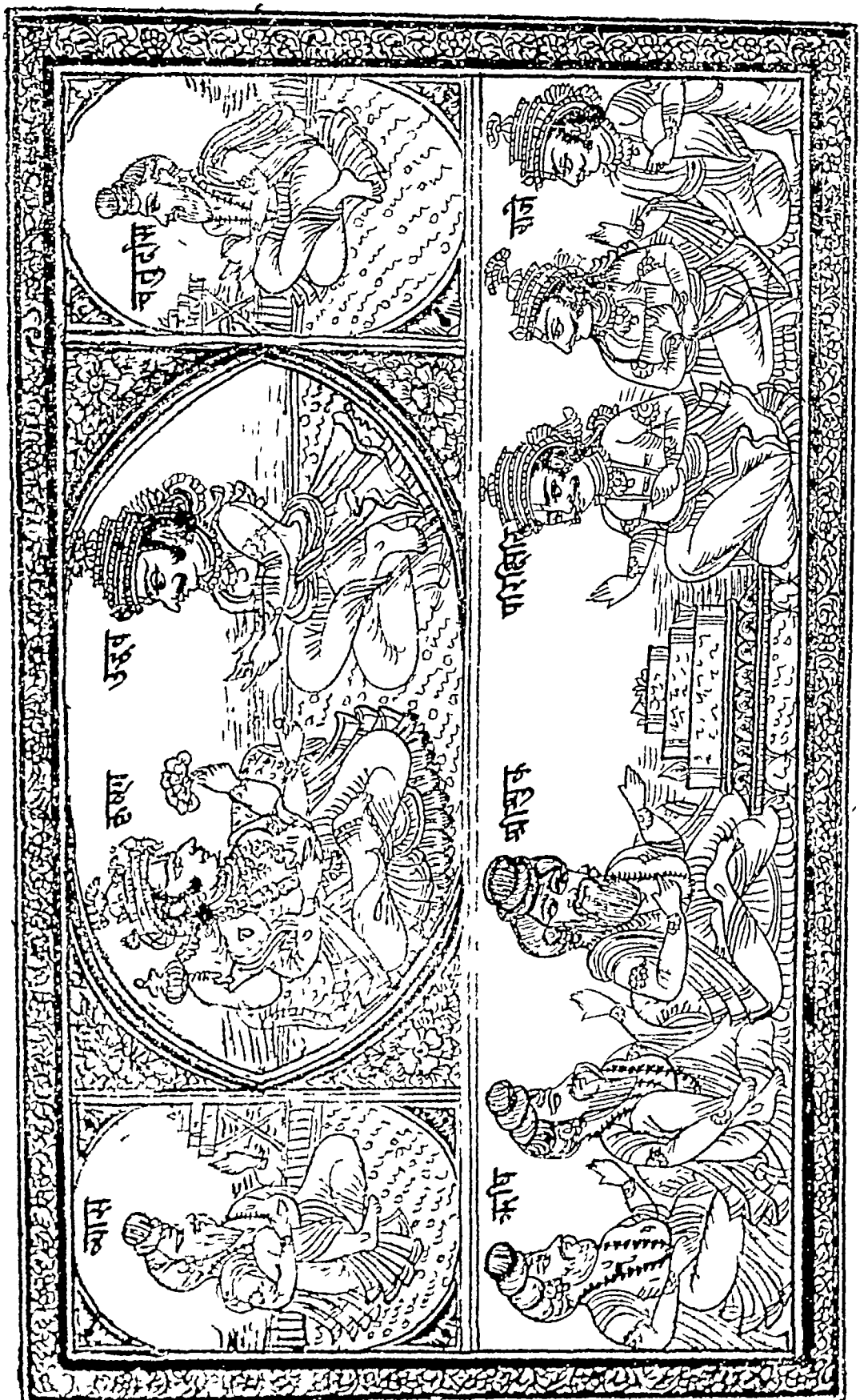

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगोपालकृष्णायनमः ॥ ॥अथश्रीएकादशस्कंधभाषालिख्यते ॥ दोहा ॥ ह
रिगुरुभक्तप्रसादतैंश्रीधरमिलतविवेक ॥ एकादशइकतीसमैंअधिकएकतैंएक ॥ १ ॥ वेदव्यासकृत
मूलपैंचतुर्दासकृतसार ॥ सुगमजानसबनगरहैंलहैंसुतत्वविचार ॥२॥ श्रीधरपहलैंध्यायमैंचतुर्दासकहिमा
न ॥ विप्रसापकेव्याजतैंमुसलकौआख्यान ॥ ३॥ ॥ चौपाई ॥ संतदाससतगुरुकेचरना ॥ तिनकौं
गहौंसुदृढकरिसरना ॥ जातैंउपजैज्ञानबिचारा ॥ छूटैभरमकर्मव्यवहारा ॥१॥ बहूरोजगतजनमनही
आवुं ॥ तिनकौंनिजानंदपदपावूं ॥ तिनकीआग्याहिरदैधरौं ॥ लोकहितारथभापाकरौं ॥२॥ श्रीभग
वानविरंचहिंभाष्यो ॥ सोविरंचिनारदसौंआष्यो ॥ सोनारदव्यासहीसमुझायौ ॥ व्यासभाषकरिशुकहि
पढायौ ॥३॥ सोशुकह्यौपरिक्षतआगैं ॥ छूट्यौद्वैतसुपनज्यौंजागे ॥ सोइसूतअजहुंविस्तरे ॥ सहअठा
सीऋषीमनधरैं ॥ ४ ॥ श्रीभगवानआपयहभाष्यौ ॥ तातैंनामभागवतराष्यौ ॥ आपामिलनकौंपंथवतायै
यामारगबहुतनिहरिपायौ ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ व्यासदेवजोभागवत ॥ भाष्योद्वादशस्कंध ॥ ति
नमैंएकादशकह्यौ ॥ नैनलहैंज्योंअंध ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकादशइकतिसअध्याय ॥ ति
नकौबहुरौंकहूंसुनाय ॥ जदुकुलनासप्रेममगयौ ॥ बहुतभांतिवैरागउपायौ ॥ ७ ॥ हरिरिपुपंथकह्योपुन
चारी ॥ जनकहिंजोगेश्वरानिबिचारी ॥ सोनारदवसुदेवहिकह्यो ॥ पायौज्ञानपरमपदलह्यौ ॥ ८ ॥ छठे
कृष्णउधवप्रस्ताव ॥ तेइसकरनिजज्ञानसुनाव ॥ द्वैजाधवविनासविस्तार ॥ एइकतीसज्ञाननिजसार ॥ ९ ॥

श्रीशुकदेवकरतआरंभ ॥ श्रोतानृपतिअडिगतजअंभं ॥ तबशुकजीयहकीयोविचार ॥ ज्ञानबिनानाहींउ
धार ॥ १० ॥ तातैब्रह्मज्ञानसमझाऊं ॥ प्रथमहिदृढवैरागउपाऊं ॥ पंषीऊडेपषंव्हैजैसे ॥ ज्ञानवैराग्यामि
लेहरिऐसें ॥ ११ ॥ राजासुनोजगतसुखजैसें ॥ जिनसौंगीलागीभ्रमतनरऐसें ॥ भएकोटिछपनकुल
जादव ॥ ज्जौंघनघमंडिचिंहुंदिसिभादव ॥ १२ ॥ तिनकौंबहुतभांतिविस्तारा ॥ गनतीकरतरहैंकोंपा
रा ॥ भवनआपनोकमलाकीयौ ॥ नवनिधजहांबसेरालीयौ ॥ १३ ॥ बहुरिसुधरमासभामगाईं ॥ बैठैं
जहांनव्यापेकाईं ॥ तिनकीसमताकौनबताऊं ॥ तिनलोकमेंकहीनउपाऊं ॥ १४ ॥ तिनकीबातकहतअ
वेसी ॥ पलकमांहिसुपनेकीजैसी ॥ च्यारघरीमेंसबसंघारे ॥ ज्यौंबुदबुदापवनकेंमारें ॥ १५ ॥ राम
कृष्णातिहांकौतिकहारा ॥ आपुहिआपसकलसंहारा ॥ विप्रश्रापकोकीनौव्याजा ॥ एसबकृष्णदेवकेका
जा ॥ १६ ॥ कोकनिकौंवैराग्यजनायौ ॥ उद्धवयाद्वारासमझायौ ॥ प्रथमभीमअर्जुनद्वैभ्रनी ॥ दुष्टनृप
तिभ्रसेनाहनी ॥ १७ ॥ याविधिभूकौंभारउताऱ्यौ ॥ नामरूपजलकौंविस्ताऱ्यौं ॥ जाकौंगहिपहुंचैभव
पारा ॥ आगेंजनजेहोहिभ्रपारा ॥ १८ ॥ बहुतमांतिकरिभ्रदभूतकर्म्म ॥ थाप्योजगतभागवतधर्म ॥
याविधिसबकेकाजसंहारें ॥ तबहरजीवैकुंठपधारें ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भ्रैसीसुनिभ्रदभूतक
था ॥ जदुकुलकोंद्विजश्राप ॥ कृष्णकरीराजातहां ॥ लषवैतिनकौंपाप ॥ २० ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ चौ
पाईं ॥ ॥ तेतोविप्रभक्ततेसारे ॥ परमद्रानभ्रसेवकभारें ॥ विप्रकोपकीनौक्योंपूर्ण ॥ जातेंनासभए

सबतूर्ण ॥ २१ ॥ कोननिमितश्रापसोंकोन ॥ कहोकृपाकरीकरुणाभौन ॥ एकमनाजादवतेंसारें ॥ आ
पुहीआपकोंनाविधिमारें ॥ २२ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ भूकोंभारहरनकेकाजा
भूअवतारलियोवृजराजा ॥ बहुविधभूकोंभारउताऱ्यौ ॥ तबमनमैंगोपालबिचाऱ्यौ ॥ २३ ॥ ज्यौंलगि
हजादवकुलसारौं ॥ त्यौंलगिनहीभूभारउताऱ्यौं ॥ ममआधीनरहेंएसारें ॥ तातेंनिजकरवनेनमारें ॥
२४ ॥ दूजोकोईसकेनहीमारी ॥ तातेंकीजैजतनबिचारी ॥ ज्यौंबहुवांसबढेवनमांही ॥ पवननिमितपाईं
घरसाईं ॥ २५ ॥ आपआपुमैंअग्निउपावैं ॥ तासौंलागसकलजलजावैं ॥ हैंत्यौंइहांपवनद्विजश्राप ॥
क्रोधअग्नितहांआपहिआप ॥ २६ ॥ कविविस्तारहोइसंघार ॥ यहठरयोकृष्णविचार ॥ आएसकल
ऋषिसरभौंन ॥ निकटक्षेत्रकरवायोंगोन ॥ २७ ॥ कणवअंगिराविश्वामित्र ॥ दुरवासाभृगुआत्रिअग
स्त ॥ कस्यपवामदेवअरुनारद ॥ औरबहुतऋषीबहुविसारद ॥ २८ ॥ तहांसबेमुनिसुखसौंबैठे ॥ ज
दुकुमारतहांछलकरिंपैठे ॥ सांबहींबनिताभेषबनायो ॥ वस्त्रादिकनिउदरअधिकायो ॥ २९ ॥ अति
बीनतौसौंचरणनिलागे ॥ पुछेकृष्णखरेतिनआगें ॥ यहबनितारपूछेद्विजराजा ॥ सनमुपहोतलगेंअति
लाजा ॥ ३० ॥ निकटप्रसवआयोहैंयाकौं ॥ करोबिचारआपमैंताकौं ॥ तुमत्रिकालदरसीसबजानौ॥
कहाजनहिसोहमहिबषानौं ॥ ३१ ॥ तबकरिक्रोधबचनतेभने ॥ कुलनासनमुसलएजने ॥ जातेंतुमबहु
मदसौंमातें ॥ दुष्टबुद्धिहोवोसबजातें ॥ ३२ ॥ वैनसुनतअतिभयमनआयौ ॥ तबहीतहांउदरछटिकायौ

देष्योतहांलोहकीमुसल ॥ तबतिनजान्योनाहींकुसल ॥ ३३ ॥ तेसबबहुभांतिपिछताये ॥ लेमुसलराजा
पेंआये ॥ उग्रसेनसोंबोलेबेन ॥ अतिमलीननाहिंजोरेंनेन ॥ ३४ ॥ सुन्योआपअरुमूसलदेष्यौ ॥ जीवन
सबनिगयोकारिलेष्यौ ॥ मूसलरेतचूरनकरवायो ॥ कृष्णनपुछोसमुंदवहायो ॥ ३५ ॥ तातेंरेतरह्योअति
तुच्छ ॥ ताकोंनिगलगयोएकमछ ॥ तेचूरणलहारेनिकेमारे ॥ आएतीरभअतृनसारे ॥३६॥ झीवरए
कजालविस्तार्यौ ॥ औरनिसंगमछसोपर्यो ॥ ताकेउदरलोहसोपायो ॥ व्याधएकसोबानबनायो ॥३७
॥ हरजीबातसकलसोजांनी ॥ बहुतभलीहिरदेमेमानी ॥ जद्यपिजोगअन्यथाकरनें ॥ परीमनमाहींस
कलसंहरनें ॥ ३८ ॥ यहिविधिसकलआपमनमांई ॥ ताकौंफेरिसकेंक्युंकाई ॥ निश्चैऐसीथापूव्यापू
॥ यदुकुलषोऊंद्विजकेसरापू ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥यहबैरागनिरूपयो ॥ ज्ञानकाजशुकदेव ॥
ज्ञानकहोंअबज्योंलह्यौ ॥ नारदसोंवशुदेव ॥ ४० ॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुरानेएकादशस्कंधेअ
ष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांजदुकुलआपनिरूपणंनामप्रथमोऽध्यायः ॥१॥ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
दुजैश्रीवसुदेवजी ॥ पूछोनारदपास ॥ नवयोगेश्वरजनकप्रति ॥ कीनोज्ञानप्रकास ॥ १ ॥ श्रीशुकउ
वाच ॥ ॥ चौपाई ॥ द्वारावतीआपतहांपालक ॥ ताहांनहींदक्षआपकौतालक ॥ नारदातिहांनिरंत
रआवें ॥ कृष्मदेवकेदर्सनपावें ॥ १ ॥ जीवनमुक्तभजेनितजाकौं॥वंध्यौजीवतजेक्यौंताकौं ॥ जाकौंसक
ललोकमेंकाल ॥ जाहांतहांनिसिदिनाबेहाल ॥ २ ॥ मानवतनइंद्रियनिसौंराजा ॥ इतनिहरिसेवाकेसा

जा ॥ वंछेजांहींब्रह्मसुरराजा ॥ कृष्णदेनसेवाकेकाजा ॥ ३ ॥ ऐसीदेहभागतेंपावें ॥ हरिकीसेवाक्योंछ
टिकावें ॥ पलमेंकाटेंकालकेपास हरिकोंपावेंहरिकोदास ॥ ४ ॥ एकवारवशुदेवकेभवन ॥ नारदकी
योकृपाकरिगवन ॥ तिनबहुविधपूजाबिस्तरी ॥ तापीछैंअस्तुतीकरी ॥५॥ ॥ वसुदेवउवाच ॥ हेप्र
भुजीतुमारोआगमना ॥ सबदेहीनकोंसुषकौंभवना ॥ उपमातुमहीकोनकीदीजे ॥ जिनकेदरससकलभय
छीजें ॥ ६ ॥ औरदेवदेवेंसुषदुषकौं ॥ तुमसेंसाधप्रगटपरसुषकौं ॥ जिनकेह्रदेविराजेराम ॥ तिनतेंहो
इकोननहींकाम ॥ ७ ॥ ऐसेफलदाइकसबदेवा ॥ तेतोलहैंजेनीकरेंसेवा ॥ ज्योंकरलेंदरपनकोंकोई ॥
आपकरेंआभासेसाई ॥ ८ ॥ तुमसेंसाधसदासुपदाई ॥ जिनकीमहिमाकहीनजाई ॥ जद्यपिदरसमेंभ
योकृतारथ ॥ पूछोंदेवतथापिहितारथ ॥ ९ ॥ जोभागवतधर्मसुनीजीव ॥ जनममरणतजिपावेपीव ॥ तिन
आचर्यानितुमकोंदेव ॥ हरिप्रष्णसोभाष्योभेव ॥ १० ॥ पूर्वजनमसेवामेंकरी ॥ मायामोह्योसमुझउनपरी
॥ तबमेंहरिपुत्रकरीवऱ्यौ ॥ तांहिंहुतेंनहींउधऱ्यौ ॥ ११ ॥ तातेंअबमेंतुमरीसरना ॥ सोकछूकऱ्योमी
टेज्योंमरना ॥ काहांलोंकहोंजगतकेदुष ॥ जामेंसुपनेहुंनहींसुष ॥ १२ ॥ जहांजहांजाइतहांतहांका
ल ॥ हरिबिनजीवसदाबिहाल ॥ ऐसेंबचनसुनेजबनारद॥ तबतेंबोलेपरमविशारद ॥१३॥ ॥ दोहा
परमबचनवसुदेवकेसुनिकैंभयोअनंद ॥ भगवतधर्मप्रकाशियोबोलेपूरनकंद ॥ १४ ॥ नारदउवाच ॥
चौपाई ॥ ॥ धनवसुदेवधन्यतुमबानी ॥ जाकरिपूछेसारंगपानी ॥ कोइहोइसकलजगवातक ॥ वि

ए०
३॥

ष्णुधरमतेंरहेनपातक ॥१५ ॥ श्रवणकीरतनआदरध्यान ॥ अनुमोदनउकरेंसयान ॥ सोपुनितहोवेंतत
काल ॥ बहुरीपरेंनहिजमकेजाल ॥ १६ ॥ तुमयहकीयोबडोउपकार ॥ मोहिसुमारयोसिरजनहार ॥
जाकोश्रवनकीरतनऐसौ ॥ अंधकारकौसूरजसैसौ ॥ १७ ॥ तुमसोंकहोंकथाइतिहास ॥ जातेंछूटेंभव
केपास ॥ ऋपभदेवसूनतनवजोगेश ॥ तिनकेंसुनियोजनकनरेस ॥ १८ ॥ सुनिकेब्रह्मपराइनभयो ॥ ज
नममरनसंसारसबमयो ॥ अबउतपतीकहतहौंतिनकी ॥ पूरणप्रीतरामसोंजिनकी ॥ १९ ॥ स्वायंभुवम
नुनृपतीसिरताजा ॥ ताकौतनयप्रीयव्रतराजा ॥ ताकौंआग्नीध्रसुतभयौ ॥ नाभिजनमताहिंतेंलयों ॥ २० ॥
ताकेऋपभदेवअवतारा ॥ जिनप्रगटायोब्रह्मविचारा ॥ ताकेपुत्रएकसतभएं ॥ सकलवेदकेपारहिगए ॥
२१ ॥ तिनमेंबडेभरतसैंनाम ॥ जाकेरद्धदेवसेनितराम ॥ जातेंभरतखंडयहकह्यौ ॥ तातेंअजनाभनाम
तेंलह्यौ॥ २२॥ प्रथमवोतहींभोएभोग॥ समझत्यागपुनिलीयोजोग॥ मनक्रमबचनकरिंहरिभक्ति॥ तीजज
नमलहीतिनमुक्ति॥२३॥तिनमेंनवनवषंडनरेस॥एकअरुअसीकरमउपदेस॥नवतेमहाभोगअधिकारी॥
सबतजीसेवेंचरणमुरारी ॥ २४ ॥ तजिअनर्थअर्थविस्तारें ॥ याविधिजीवबहुतनिस्तारें ॥ देहअतीतदि
गंबरबेष ॥ सदात्द्दयमेंएकअलेष ॥ २५ ॥ कविहरीअंतरिक्षपिप्पलायन ॥ आविहोंत्रपरबुधपरा
यन ॥ द्रुमिलचमसकरभाजननाम ॥ इननवनिकोब्रह्ममेधाम ॥ २६ ॥ आपहिंआदिसंसारपसारा ॥
सबेकोजोनेंसिनजनहारा ॥ द्वैतभावकौभिनोषंड ॥ याविधिविचरेंसकलब्रह्मंड ॥ २७ ॥ सुरअरुसाध ॥३

सिद्धगंधर्व ॥ किंनरजक्षनागनगसर्व ॥ सकललोकमेंइछाचारी ॥आडरहितसबमेंअधिकारी॥२८॥
निमिसनामजनककेसत्रा ॥ एकवारतितकीनीयत्रा ॥ रविसिसोभितजिनकीदेहा ॥ आवतदेषेंनृपतिविदे
हा ॥ २९॥ राजाअग्निविप्रउठिध्याए ॥ आगेंव्हैलेवेकोंआए ॥ क्रमक्रमआनिधरेसिंघासन ॥ क्रम
हिंक्रमतेंबेठेआसन ॥ ३० ॥ तबहीताहिक्रमपूजाकीनी ॥ करिदंडोतप्रदक्षिणादीनी ॥ श्रकआभरण
वस्त्रबहुरंगा ॥ तेसबसोभेतिनकेअंगा ॥ ३१ ॥ ज्ञानविचारब्रह्ममयएसें ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकजेसें ॥
तबकरजोरिमयोनृपठाढौ ॥ बाल्योवचनप्रेमअतिबाढौ ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ तबनृपकोंआनंदव
ढेएकछुनरहिसंभाल ॥ प्रेममगनव्हैबोलियोबानीपरमरसाल ॥ ३३ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥चौपाई
॥ तुमपारषतपरमहरिजीकें ॥ मैजानेसबईनमेनीकें ॥ जीवनिकेंउधरषेकारज ॥ सकललोकमेंविचरोआ
रज ॥ ३४ ॥ धनमेधनमेरोअवतारा ॥ जोतेंपायोदरसतुमारा ॥ नानायोनिजीवयहपावें ॥ मानुषतन
सोंकबहुकआपावें ॥३५॥ याविधिनरदेहनहुगेहें ॥ दुरलभसाधसंगनवलेहें ॥ जिनकेंसंगमिटेंभवबंधा
॥ नैनअनंतलहेंज्यौंअंधा ॥३६॥ प्राणनाथहरिहिरदेविराजें ॥ छूटेकर्मभरमभयभाजें ॥ आधोक्षाणहो
वेंसतसंगा ॥ सोइकरेजगतभयभंगा ॥ ३७ ॥ तातेंममसंदेहमिटावो ॥ परमपेमसोमोहिसुनावो ॥ भ
गवतधर्मकहोविस्तारी ॥ जोमेंहोंसुननेअधिकारी ॥ ३८ ॥ जिनतेंमिटेंजगतमयभारी ॥ बहुरिआप
कोंदेतमुरारी ॥ एसुनिबचनसबनिसुषपाए ॥ तबहींमानदेबेनसुनाए ॥ ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

नृपकेमनआनंदभयोभाग्योभरमअंदेस ॥ तबराजाप्रष्णकरिबोल्योकविजोगेस ॥ ४० ॥ ॥ कविरुवाच
॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राजाप्रष्णकरीतुमएसी ॥ बडभागापुछतहैंजेसी ॥ निरभयपदएकहेंदेवा ॥
हरिकेचरनकमलकीसेवा ॥ ४१ ॥ ताकौंछोडिकरेंनरजोई ॥ दुपकोमूलहोतहेंसोई ॥ जहांजहांजाई
तहांदुपभारी ॥ कालपासकहुंटरेंनटारी ॥४२ ॥ तातेंकहेंभागवतधर्मा ॥ मिलेंरामछूटेंभवभर्मा ॥ श्री
मुपश्रीभगवानसुनायो ॥ आपमिलनकोपंथबतायो ॥ ४३ ॥ मूरखउजेहोवेंकोई ॥ इनपंथहरिपावेसोई
॥ भ्रमनहिहोहिविलंबनलागें ॥ भर्मनिसासुतोज्यौंजागे ॥ ४४ ॥ आंषिंषिमुदिउध्यावेंकोई ॥ याहरिपं
थनकछुभयहोई ॥ हरिमिलनकोमारगएहा ॥ हरिभजीमुगतहोईयहदेहा ॥ ४५ ॥ हरिकीभक्तिसबने
तेन्यारी ॥ कौटिविघनतैटरैनटारी ॥ अजरनामहैभक्तिपियारी ॥ तातेंपारहोइनरनारी॥ ४६ ॥ हरि
मिलनेंकोमारगकहौं ॥तेरेउरकौसंसादहौं ॥ मनक्रमबचनबुद्धिअरुचित ॥ होईसुभावहूतेंजोनित ॥ ४७
॥ सोसबहरीहोसमर्पनकरैं ॥ योभगवतधर्मनिविस्तरै ॥ जबयहजीवहरीहिविसरवे ॥ तबहरिकीमाया
आवरवौ ॥ ४८॥ तबआपनोस्वरूपभुलायो ॥ आपमानितनमेमनलायौ ॥ द्वैतभावतबउपजेमनमें ॥ ताहि
तेंयहमरीजनमें ॥ ४९ ॥ तातेंबुधिसेवेहारिचरना ॥ जातेंमिठेंजनमअरुमरना ॥ सोधिलेइउतमगुरुदेवा॥
हरिकोंजानिकरेंनितसेवा॥ ५०॥सोज्यौंज्यौंआचणंबतावें ॥ त्यौंत्यौंहरिसौंहेतलगावे ॥ कपटनभजेतजेंस
बकाम ॥ छूटेंजगतामिलेंतबराम ॥ ५१ ॥ द्वैतकछुहैयेनाहिराजा ॥ आभास्यौसोमनकौकाजा ॥ जेसेंमृ

षामनोरथसुपना ॥ मनहींकरितदोनौंउपना ॥ ५२ ॥ हरिकेजनमकर्मगुणनामा ॥ सुनैंकहैंसुमरैंसबजा
मा ॥ तजैंलाजहोवेनिहसंगा ॥ मगनरहैंनितहरिकेरंगा ॥ ५३ ॥ हेकछुनाहींपारिहैंसोहैं ॥ ताकेसंग
लागिसबमोहैं ॥ तोसंकल्पविकल्पनकीजैं ॥ मनदृढराषिरामरसपीजैं ॥ ५४ ॥ ऐसैंभजतप्रेमअधिका
वैं ॥ सबतनरोमांचितव्हैंआवैं ॥ गदगदशब्दअटपटेबैंना ॥ द्रवेंचितजलबरषैंनैंना ॥ ५५ ॥ रोवेंह
सैंउचैंसुरगावैं ॥ कबहुंमोनमहिरहीजावैं ॥ लोकबेदकुललाजनज्यानै ॥ ज्यौंउनमताविवसयोंठानै ॥
५६ ॥ दसदिसिसरीतासिंधूनगनागा ॥ रविशशितारहंसरुकागा ॥ षितिजलपावकपवनआकासा ॥
जोकछूदेषैंहरिकेदासा ॥ ५७ ॥ हरिकौरूपसकलकौंजांनै ॥ जहांतहांपरनामहींठांनै ॥ कबहूंभूलनभा
सैंआना ॥ भयेअनन्यभजैंभगवांनां ॥५८॥ ज्यौंज्यौंबढैंकृष्णअनुरागा ॥ त्यौंत्यौंओरसकलकोत्यागा
ज्यौंज्यौंअनुभोजनप्रतिग्रासा ॥ तोषतोषअरुभुषविनासा ॥ ५९ ॥ याविधिकरतेसाधनभक्ति ॥ हरि
जीसुंबाढैंअनुरक्ति ॥ तबकछुओरभुलिनहींभासैं ॥ तबहिरदेमैंज्ञानप्रकासैं ॥ ६० ॥ ब्रह्मएकदसहूंदि
शिदेषैं ॥ द्वैतभावकरकदैंनलेषैं ॥ एसेअंगभागवतमाहीं ॥ सोहरिमेंहैंजगमेंनाहीं ॥ ६१ ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ एसुनिकाविजीकेवचन ॥ कीनोंप्रश्णविदेह ॥ अबभाषोभागवतके॥ लछनकरुनागेह ॥
६२ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुजीकहोभागवतलछन ॥ जिनबसहोवेंरामाविचछ
न ॥कोनधर्महिरदेदृढराषें ॥ क्यौंआचरैंकोनबिधिभाषें ॥६३ ॥ कोनसुभावनिरंतररतिनकें॥द्वैतभावनाहीं

उराजिनकें ॥ वोलेहरिजोगेश्वरदूजें ॥ नृपकेवचननहुतातिनपूजें ॥ ६४ ॥ हरिरुवाच ॥ ॥ चौपाई स्थावरजंगमसूषमथूला ॥ एकप्रकृतिसकलकोमूला ॥ सोएकआतमकेआधारा ॥ सोआतमाअंसनिर कारा ॥ ६५ ॥ हरिजोतेंउपजेंएदोई ॥ अंतलीनहरिमेंहहोई॥तातेंअबहूंहरिकोंजाने ॥ द्वैतभावकबहूं नहीआनें ॥ ६६ ॥ ज्योंसागरबुदबुदातरंगा ॥ यौंसबजगतजगतपतिसंगा ॥ यानिधजांनिभयोजोथीरा ॥ सोहरिजनउत्तमहेंबीरा ॥ ६७ ॥ जाकौंहरिसौंनिहचलप्रेमा ॥ अरुहरिजनसंगतिनितनेमा ॥ सब जीवनिपरिकरुणाआनें ॥ सबउधरेत्दृदेयोंजानें ॥ ६८ ॥ जोकोउतापरिदोषहीठांनें ॥ तहांतजेकेजौं योंछानें ॥ निसदिनरहेंरामरंगराता ॥ सोहरिजनमध्यमहीताता ॥ ६९ ॥ जोमुरतिमेंहरिकोंजानें ॥ मनक्रमवचनआनमाहिआनें ॥ ताकौंपूजेहिताचितलाई ॥ कछुनमागेंसहजशुभाई॥७०॥तेंहरिजननभजे हरिजानी ॥ सतगुरुबिनानाहींपहिचानी ॥ सबआतमाहरिकोंनहिजांने ॥ सोप्राकृतजनसाधुबपांनें ॥ ७१ ॥ बहुरिकहुंउत्तमहरिभक्त ॥ ताहीपुरुषहुजेंआसक्त ॥ दरसपरसतेंकारजसारें ॥ तेहरिजनभव सागरतारें ॥७२॥ कृष्णबसेजाकेमनमाहीं ॥ औरकछुसतजानेंनाहीं ॥ जोकछुकहेंसुनेंअरुदेषें ॥ इं द्रियकृतमायासबलेषें ॥ ७३ ॥ सोहरिजनउत्तमनरदेवा ॥ तातेंमिलेंनिरंजनभेवा ॥ जोजनब्रह्मविचार हिपायौ ॥ आपसमजोसुषमाहिसमायौ ॥ ७४॥ जनममरणनदेहकौंजानें ॥ क्षुधातृषाकोंप्राणहिमानें ॥ तृष्णाबुधिरुमयसोमनकों ॥ यहलछनउत्तमहरिजनकों ॥ ७५ ॥ कर्मवासनाअरुसबकामा ॥ तिनकौ

भूलिनजानेनामा ॥ वासुदेवमेंकीनोवासा ॥ सोकहिएउत्तमहरिदासा ॥ ७६ ॥ जिनकेजातिबरनकुल
कर्मा ॥ लोकनबेदनहिआसरमा ॥ भूलिदेहअभिमाननआवें ॥ सोउत्तमहरिदासकहावें ॥ ७७ ॥ कि
सिवस्तुपरिममतानाहीं ॥ अरुतनकोअभिमाननमाहीं ॥ सबभूतनिपरिसमताआनें ॥ सोउत्तमहरिदासब
खानें ॥७८ ॥ अष्टसिद्धिनिभुवनसुषआवें ॥ परिसोकबहूमननडूलावें ॥ लवनिमिषार्द्धतजेंनाहिंचर्ण ॥
गुणातीतनिस्भयपदसर्ण ॥ ७९ ॥ नाकौंशिवविरंचिअरुदेवा ॥ तनमनलाइकेरेंनितसेवा ॥ तेऊजाकें
चर्णनपावें ॥ ताकौंजनक्यौंकरिछटिकावें ॥ ८० ॥ हरिकेचर्णचंद्रचितजाकौं ॥ इहातापउठैक्यौंता
कौं ॥ एसोउत्तमहरिजनकहिए ॥ ताकेंसंगपरमपदलहिए ॥ ८१ ॥ याकौंहरिजीनिमषनत्यागें ॥ प्रे
मदोरिबाधेक्यौंभागें ॥ सोकहिएउत्तमहरिदासा ॥ कदेंनतजीएताकौपासा ॥ ८२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
त्रिविधभक्तलछनकहैंनृपसौंहरिजोगेस ॥ तबमायाकेजानबेकीनीप्रष्णनरेस ॥ ८३ ॥ ॥इतिश्रीभाग
बतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेभाषाटीकायांनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कवीहरीके
वचनसुनिपूछतहैंनृपराय ॥ अंतरिक्षप्रबुधमनपिप्पलायनऋषिराय ॥ १ ॥ आविर्होत्रविचारतैंकह्योतत्वनि
जसार ॥ श्रीधरतीजैंध्यायमैंहैयोगेश्वरचाय ॥ २ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अब
करीकृपाकहोहरिमाया ॥ जिनयहसकललोकभरमाया ॥तुमरेमुषसरोजकीबानी हरिकीकथाअमृतमय
जांनी ॥ १ ॥ ताकेपिवततृप्तिनहींमानौ ॥ सदापिऊंऐसीमनजांनौ ॥ भवकेतापतपनजोदेही ॥ ताकौंपरम

ओपदीएही ॥ २ ॥ ऐसेंसुनीनृपतीकेवेना ॥ वकताकौंउपजावतचैंना ॥ तबबोलेबानीअभिरामा ॥ ती
जेअंतरिक्षसैंनामा ॥ ३ ॥ ॥ अंतरिक्षउवाच ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ प्रथमहीदूजोहुतोनंनामा ॥
आपुहिआपविराजेरामा ॥ दयासिंधुमनमांहिविचारा॥तबयहकर्‍योसकलसंसारा ॥ ४ ॥ पंचभूतकरि
रचियादेह ॥ बांध्योतहांआतमाएह ॥ जातेंपहिलेंभोगवैंभोगा ॥बहुर्‍योदूषितहोईभवरोगा ॥ ५ ॥ तातें
मोसोंचितलगावैं ॥ मेरोनिजानंदपदपावैं ॥ मगनरहेमेरेआनंदा ॥ बहुरिनहिंपावेंदुषदंदा ॥ ६ ॥ याही
तेंयहभवविस्तार्‍यौ ॥ भितरअंसआपनोडार्‍यौ ॥ इंद्रियदसअरुमनविस्तारें ॥ बहुभांतिकेंविषेंसवारें
७॥सोयहअंसइंद्रियनिमनसौं॥भोगभोगवैंसबयातनसौं ॥आपभूलिभोगनमनदीनौ ॥ तबअभिमानदेहकौ
कीनौ ॥ ८ ॥ भोगनिमितकर्मविस्तारें ॥ तिनकेफलसुषदुषभएभारें ॥ तिनकर्मनितेंजोनिअनंता ॥ जन
ममरणकौंलेंहनअंता ॥ ९ ॥ प्रलयअवधिलौंभ्रमैंनिरंतर ॥ लीनहोइपुनिमायाअंतर ॥ श्रष्टिसमैंबहुर्‍यो
तनपावैं ॥ भवसागरकौंअंतनआवैं ॥ १० ॥ भ्रमतभ्रमतप्रलैंअवधिआवैं ॥तबसबनासकालमनभावैं ॥
तबसतबरषनवरषैंजलधर ॥ तेजतपैंतहांद्वादसादिनकर ॥ ११ ॥ बहुर्‍यौअग्निशेषमुषानिसरें॥प्रलयप
वनामिलिजहांतहांपसरें ॥ सारोलोकभस्मतबकरें ॥ बहुरौंप्रलयमेघसंचरैं ॥ १२ ॥ हातींसुंढधारुजल
वरषें॥ यौंअखंडवीतेसरवरषें॥तबहोवैंविराटकौनासा॥आतमकरेप्रकृतिमेंवासा॥१३॥जोअभक्तहोवेंब्रह्मा
हु॥तोडूंब्रह्ममाहिनहिजाहूं ॥जेहरिभक्तसुहरिकौपावैं॥ औरप्रकृतिमेंसकलसमावैं ॥ १४ ॥पवनकरेंजब

गंधहीक्षीनां ॥ भूमिहोइतवजलमेलीना ॥ त्यौहींरसकौंहरेंसमीर ॥ तातोंमिलेंतेजमेनीर ॥ १५ ॥ अंध
कारजवरूपाहिहरें ॥ तेंजतबैपवनसंचरें ॥ बहूरिस्परसहरेंआकासा ॥ पवनकरेंतवनभमेवासा ॥१६॥
कालकीयोजबशब्दहिक्षीनां ॥ तामसअहंकारनभलीना ॥ तामसअहंकारमनामिलें ॥ राजसअहंकार
दोउगलें ॥ १७ ॥ इंद्रियअरूराजसअहंकारही ॥ सत्वअहंकीनौआहारहीं ॥ बुधिदेवसात्विकअहं
कारा ॥ महतत्वकीनौसंहारा ॥ १८ ॥ महतत्वसौंप्रकृतिहिमिलें ॥ याविधिकालसकलकौंगिलें ॥ऐसी
हिविधिवारंवारा ॥ उतपतिप्रलयनअंतनपारा॥ १९ ॥ यहसबहरिकीमायाकरें ॥ उपजावेंप्रतिपालेंहरें ॥
मेंतुमकोंसंक्षेपसुनाई ॥ बहुरिप्रष्णकरोमनभाई ॥२०॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसीसुनोमायाप्रबलउपज्यो
नृपकेभीत ॥ तबपूछोआधीनव्हैंतातरवेकीरीत ॥ २१ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई॥
ऐसीप्रबलईसकीमाया ॥जिनयहसकललोकभरमाया ॥ ताकौंतुमसेंग्यानितरें ॥ हमसैंदेहीक्योंनिस्तरें ॥
२२ ॥ ताकौंसुषेंतरीएदेवा ॥ सोकरिकृपापावतावोभेवा ॥ एसुनिवचननृपतिकेसुधा ॥ तबबोलेचौथेंप्र
बुधा ॥ २३॥प्रभुधउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सकलमनुष्यसुषनिकेकाजा ॥ करेंकर्मआरंभहिं
राजा ॥ तिनतेंकेवलदुषआधिकारा ॥ अवहूंअरूआगोंविस्तारा ॥ २४ ॥ पाएहूंधनदुपअपारा ॥ निश
दिनचिंताकौंअधिकारा ॥ सोउअतिदुर्लभनहींआवें ॥ जोआयोतोथीरनरहावें ॥ २५ ॥ त्यौंहीग्रहकुटंब
सुतदारा॥पलकमांहिढईजाईपसारा ॥ ज्यौंपंथमांहिमिलनाहोई ॥ घरीमांहीविछरेंसबकोई ॥२६॥ जो

कछूइहांकर्मकमावें ॥ तिनतेंज्योनिज्योनिदुषपावें ॥ इनमेंकोईनहीछोडावें ॥ आपआपकौसबकोइजावें ॥ २७ ॥ याहिविधिनस्वरपरलोका ॥ स्थिरनरहेंविधिहुंकोओका ॥ छोटेबडेनीचबहुभांती ॥ तिनकेम तकीमिटेंनकांती ॥ २८ ॥ मदमत्सरअरुचाहेमांना ॥ कामक्रोधअरुलोभसमाना ॥ तृष्णाबंधेकछूनहीं जाने ॥ आपआपुमेंजुधहिंठांने ॥ २९ ॥ कालपाईउहांतेंपरें ॥ बहुरिआईइहांअवतेरें ॥ योंविचारी वैरागउपावें ॥ तबहिसोधिगुरुसरएोंआवें ॥ ३० ॥ ब्रह्मजानितासेवाठांनैं ॥ आलसकपटकामनाभांनै ॥ तातेंसोंपेंभक्तिकेअंगा ॥ जिनतेंहरिजीतजेनसंगा ॥ ३१ ॥ शब्दब्रह्मसकलजोभाषें ॥ परब्रह्मनितत्वदे येरापें ॥ ऐसेंगुरुबिनज्ञाननपावें ॥ तातेंसोधिगुरूपेंआवें ॥ ३२ ॥ सबतेंमनकोसंगमिटावें ॥ उलटिसाध संगतिसोंलावें ॥ सममित्रउत्तमबहुमानें ॥ ब्रह्मज्ञानीसबपूजाठांने ॥ ३३ ॥ सौचपाठतपमौनतितिक्षा ॥ बहुविधिलेवेंगुरुसोशिक्षा ॥ ब्रह्मचर्यअरुकौमलरहना ॥ हिंसात्यागिद्वंधसबसहना ॥ ३४ ॥ एकाकी आश्रमनहींबांधें ॥ वस्त्रटुककेबलकलसाधें ॥ जहांतहांआतमचेतनदेषें ॥ परमातमानियंतालेषें ॥३५॥ ग्रंथभक्तिकीश्रधाकरैं ॥ निंदारागद्वेषपरिहरैं ॥ देहवचनअरुमनकौंदंडें ॥ समदमसतसंतोषनषंडें ॥ ३६ ॥ जनमकर्मअरुगुणहरिजीकें ॥ सदांसुनेंउधारएाजीकें ॥ त्योंहीकहेंनिरंतरध्यावें ॥ सोइकरेंह रिहीजोभावें ॥ ३७ ॥ जपतपजोगजज्ञव्रतदांनां ॥ तनमनधनदारासुतप्रांनां ॥ जोकछुसोसबहीरिंहीनव दें ॥ याविधिसकलकर्मकौंछेदें ॥ ३८ ॥ थावरजंगमहरिमयजानैं ॥ परिसेवासंतनकीठानै ॥ ॥७॥

मिलिपरसपरहरिगुणगावैं ॥ निसदिनकहतसुनतसुषपावैं ॥ ३९ ॥ पलपलप्रीतिबढैहीएहूलैं ॥ गुणानि
संभालततनकौंभूलैं ॥ दूजाभावनकबहूंउपनैं ॥ प्रेममगनजागतअरुसुपनै ॥ ४० ॥ ऐसैंप्रेमभक्तिकौपावैं
॥ पलपलतनपुलकितव्हैआवैं ॥ कबहुंहरिचितवनतेंरोवैं ॥ कबहुंहसेंआनंदितहोवैं ॥ ४१ ॥ कबहुना
चैंकबहुंगावैं ॥ लज्जारहितज्योंज्यौंमनभावैं ॥ कबहुंसुमरिसुमरीमिलिजावैं ॥ स्वासशब्दवाहरनहींआवैं
॥ ४२ ॥ याविधिलेवैंगुरुसौंशिष्या ॥ गुरुशिष्यनकोहपारिख्या ॥ ब्रह्मपराइनताजानकेरैं ॥ मायाभूलि
नआवैंनरैं ॥ ४३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥एसुनीवचनविदेहकेत्हृदयवढ्योआनंद ॥ प्रणकरीतनब्रह्म
कोज्यौंछूटैंभवफंद ॥ ४४ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ब्रह्मचेतनमेंतुमअधिकारी ॥
तुमहोंहयमेंत्हृदेविचारी ॥ तातेंकहोंब्रह्मकोरूपा ॥ जानेंजाहिमिटैग्रहकूपा ॥ ४५ ॥ परमातमाब्रह्मभग
वाना ॥ एसबएककिधोंहैंनाना ॥ सबजीवनकौंअतिकरुनायन ॥ तबबोलेपंचमेंपिप्पलायन ॥ ४६ ॥
पिप्पलायनउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुखमथूलसकलसंसारा ॥ जाकोशक्तीसकलपसारा ॥
उत्पत्तिप्रलयकरैंवायांकौं॥काहुंतेंजनमनहीताकौं॥४७॥जाग्रतसुपनसुषोपतितूरिया॥चहुंमेसदाएकरसपुरी
या॥इंद्रियदेहत्हृदयअरुप्राना॥जातैंचैतनहैवरतांना ॥ ४८ ॥ जेसैंयहजडलोहावरतैं॥ चंबकसंगबहुत
विधिनिरतैं॥सोभगवानब्रह्मपुनिसोई॥सोपरमातमजानेकोई ॥४९ ॥मनअरुबुद्धिचितअरुप्राना॥इंद्रियदे
हशब्दअभिमाना ॥ कोइंतांहीपहुचिनहिसकै ॥ जातजातवैषरीथकै ॥५० ॥ जेसैंपावकलोहतपायो

॥ पावकसमांनतेजातिनपायौ॥सबप्रकासैंसबकौंजालैं॥परीपावकपरजोरनचालैं ॥५१॥यौंसबइंद्रियत्हृदय
अचेतन॥ताकेसंगहुतेसबचेतन॥औरसकलअर्थनिकौंजानै॥कौंनशकातिजोताहिपछानै॥५२॥लेलेअर्थ
बखांनेंबेदा॥पारिप्रत्यक्षनजानेंभेदा ॥ यहनहींयहनहींयहनहींहोई ॥ यातेंपरेंसत्यहेंसोई ॥५३ ॥ सूषमयू
लनजावेंअरनी ॥ गगनपवनपावकजलधरनी ॥नहींमनबुधिचितअहंकारा॥ चिदानंदमयसबकेपारा ॥५४
नासोबालवृधनहीजुवा ॥ नासौंबिनसैंनांसोहुवा ॥ त्रियापुरुषक्लीवरनहोई ॥ सुरनरनागअसुरनहींसोई
॥ ५५ ॥ रक्तपितअसेतनहरिता ॥जातिबरनआश्रमनहिधरिता ॥ सीतउष्णचंदनहोसूरा ॥ दिवसन
रातनिकटनहींदूरा ॥ ५६ ॥सुषदुषराहितबसेंसबमांहीं ॥आपुहिआपलिपेंकहुंनाहीं ॥बंध्योभावसोंआतम
अंसा ॥ सून्यसरोवराविलसेहंसा ॥ ५७ ॥ गगनपवनपावकअरुनीरा ॥धरानिबंधएकोएशरीरा ॥ पंच
वस्तुएपंचोबंधा ॥ शब्दसपरसरूपरसगंधा ॥ ५८ ॥ इंद्रियदशअरुतिनकेदेवा ॥ सातिकराजसताम
समेवा ॥ मनबुधिचितमहतत्वअहंकारा ॥ एकप्रकृतिकौंसकलपसारा ॥ ५९ ॥ एकब्रह्महैताकोकार
ण ॥ विनइच्छासबकौविस्तारण ॥ ज्यौंभुवमैंबहुघटउपजावें ॥ भुवमेंरहिभुवमाहिसमावें ॥ ६० ॥ तेस
बघटदीसेंविधिनाना ॥ परिभुवछोडकछूनहिंअना ॥ त्यौंसबजक्तआदिमधअंता॥ औरनकछूएकभगवं
ता ॥ ६१ ॥ सोनहिंउपजेंविनसैंनाहिं ॥ बालजुवादिकपरैंनछांहीं ॥ बढेंनघटेंचलैंनहिंडोले ॥ सोषनतौ
षमौननहींबोलें ॥ ६२ ॥ जहांतहांपूरएपरमअनूपा ॥ चिदानंदविज्ञानसरूपा ॥ देहभेदबहुधासोसोहें ॥

ज्ञानबिनासारोजगमोहैं ॥ ६३ ॥ जैसेंपवनएकहींप्राना ॥ दसइंद्रिसंगदोसेंनाना ॥ उद्भिजस्वेदजरायुन
अंडा ॥ चारिषानपूरनब्रह्मंडा ॥ ६४ ॥ लिंगदेहजादेहहिजावैं॥प्राएवायुतहांआनिमिलावै ॥ शब्दसु
परसरूपरसगंधा ॥ मनअहंकारबुधिचितबंधा ॥ ६५ ॥ लिंगदेहइनहीनवकौंहैं ॥ इनकेमिटैनिरंतरसो
हैं ॥ निंद्राबससुषपतिजबआवैं ॥ तबयहलिंगदेहछ्टिकावैं॥ ६६ ॥ अहंकारममताकहुंनाहीं॥मनअरु
बुधिचितसबजांहीं ॥ तबअद्वैतएकहैसोई ॥ द्वैतभावकौनामनकोई ॥ ६७॥मनचितबुधिअहंकारनर
हैं ॥ जागैंप्रथमबातजोकहैं ॥ जोकरनोतोजोतोकीयौ ॥ आगैंपिछैंलीनोदीयौ ॥ ६८ ॥जातैंसोहरिजान
नहारा ॥ याबिधिकीजैंज्ञानविचारा ॥ परिवासनासहिताहिरहैं ॥ तातैंदहेफेरकरीगहैं ॥ ६९ ॥ लिंगस
रिरसहीतवासना ॥ तांहिमिटेनवसासना ॥ तातैंहरीचर्णनचितलावैं॥ औरसकलबंधनछ्टिकावैं ॥७०
याविधिसकलचितमलनासैं ॥ रविसमानतबब्रह्मप्रकासैं ॥ जोनरप्रथमभक्तिनहींजानैं ॥ तोवहकर्मजोग
कोठांनै ॥ ७१ ॥ कर्मजोगतैंउपजैंभक्ति ॥ तबहरीचरएाबढैआसक्ति ॥ तातैंहोईब्रह्मप्रकासा ॥ छु
टैंकालजालभवपासा ॥ ७२ ॥ ॥ दोहा॥ ॥ एपिप्पलायनबेनसूनिकै॥निप्राष्णामिथलेस॥कर्मजोग
अबकरीकृपाकहोपरमजोगेस ॥ ७३ ॥ ॥ जनकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कर्मजोगअब
होगुसाई ॥ मैंआयोतुमरीसरनाई ॥ जाकेकीएकटैंसबकर्मा ॥उपजैंज्ञानहोइनिहभर्मा ॥७४ ॥ दुजी
मष्णकहोतुमरहा ॥ याकौंमेरैंअतिसंदेहा ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचारी ॥ब्रह्मपराइनब्रह्मविचारी ॥ ७५

एकवारकृपाकरिआए ॥ पितासमीपदरसमेंपाए ॥ यहप्रश्नमैंतिनसोंकीनो॥उत्तरनादियोह्रदैधरिलीनो ॥ ७६ ॥ नहीबोलेसोकहोनेंकारन ॥ यहमायाभवसागरतारन ॥ ऐसेंबचननृपतिजबभाषें ॥ आविरहोत छठतबआपें ॥ ७७ ॥ ॥ आविरहोत्रउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ राजासुनहुंकर्मगतिगहना ॥ तातेंजहांतहांबनेंनकहना ॥ यहज्योंहेत्योंबेदबषानें ॥ तातेंयाहिनकोईजानें ॥ ७८ ॥वेदप्रगटकरताहरि देवा ॥ ऋपिअरुपुरुपलहेक्योंभेवा ॥ भेवलहेंबिनुमिटेनमरनां ॥ लहेभेवपावेंहरिचरनां ॥ ७९ ॥ तातेंतु महुतेंतवनाला ॥ जातेंकरयोनकर्मबिसाला ॥ अबहींकहोंसुनोचितलाई ॥ जानेंजाहिज्ञानअधिकाई ॥ ८० ॥ कर्मजोगहेंतीनप्रकारा ॥ कर्मअकर्मविकर्मपसारा ॥ हरिनिमितसोकहिएकर्मा ॥ हरिबिहीनसो सकलविकर्मा ॥ ८१ ॥ सोअकर्मजोदोउत्यागें ॥ ज्ञानबिनासुषइहांनआगें ॥ कर्मकरतछूटेंसबकर्मा ॥ उपजेंज्ञानमिटेंभवभरमा ॥ ८२ ॥ कर्मतजनकौंकर्मग्रहावें ॥ तातेंबेदनसमझ्योंआवें ॥ पहिलेस्वर्गादि कफलभाषें ॥ आगेंसकलदुरिकरीनाषें ॥ ८३ ॥ ज्योंकोइबालकरोगीहोवे ॥ ओषदकटुकनामसुनी रोवे ॥ ताकोंलाडूपितादिषांवे ॥ ओषदकाजलोभउपजावें ॥ ८४ ॥ ओषदकोफललाडूनाहीं ॥ ओष दपीयेरोगसबजांही ॥ त्योंस्वर्गादिकलेभदिखावें॥ कर्मनासकौंकर्मकरावें ॥ ८५॥ स्वर्गादिकफलपहुपित वांनीं ॥ तोरेपहुपहोतफलहानी ॥ तातेंकरेंबेदकेकर्मा ॥ हरिकेहेतबडोयहधर्मा ॥८६ ॥ औरकछुफलभूल नजानै॥ हरिकेहेतकर्मसबठानें ॥ मेंकरतायोंकदेनभाषें ॥ जोकछुसोहरिकौकरीरोषें॥ ८७ ॥ याविधिप्रेम

भक्तिउपजावैं ॥ तवसबकर्मञापुहिजावैं ॥ तबहींप्रगटेज्ञानप्रकासा ॥ मिलैंरामछुटेभवपासा ॥८८॥ वेदकपं
तथकह्योमतोसौं॥अत्रसुनितांत्रिपंथपुनमोसौं॥ह्दैदेगांटकाटिजोचहैं॥सोविधिसोयोंपूजागहैं॥८९॥ वेदमि
लितभाषतहींपूजा॥जातेंमिटैंसकलभ्रमदूजा॥श्रीगुरुसोंपरसादहींपावैं॥सोज्योज्योंसबोवीधींहवतोंवें॥९०॥
जामुरतिपरिइछाहोई॥हरिजानिकरिपूजेंसोई॥अतिपवित्रहोइकरेअस्नांनां॥ मनकीतजेंवासनानाना ॥
॥ ९१ ॥ वायुअपानछींकजंभाई ॥ औरपवनगुएउठेनकाई॥सनमुषवेठिकरेंतनरिछा ॥ अंगन्या
समंत्रपाठिइछा ॥ ९२ ॥ आसनसुधसाजसेवाकी ॥ सबलेवेठेंतजेंनवाकी ॥ विष्णुरूपप्रतिमामेंआनें ॥
अर्घपादअरुविष्टरठांनें॥ ९३ ॥ मूलमंत्रकरीसेवाकरे ॥ औरनकछूवचनउचरे ॥ सकलअंगहरिनि
केंध्यावें ॥ शंषचक्रगदापदमनिलपावें ॥ ९४ ॥ भूषनबसनपारषदसहीता ॥ हस्तबदनदेषतदुषढहिता
विविधभांतिअसनानकरावें ॥ कारितिलकादिकवस्त्रपहिरावें ॥ ९५ ॥ बहुसुगंधमालापहिरावें ॥ बहुभां
तिकरिभोगलगावें ॥ गंधधूपआरतीउतारें ॥ घंटाआदिशब्दविसतारें ॥९६॥ याविधिमंत्रनिसोंसबकरैं
सांपीछैअस्तुतिविस्तरें ॥ बहुरिकरेदंडौतप्रनामा ॥ पढैंमंत्रलेवेंहारिनामा ॥ ९७॥ बाहिरवस्तुमिलेंतेआने
॥ औरनिमनसौंपूजाटांने॥तनमनभयेनिरंतरसेवें ॥वहप्रसादमाथेंकरीलेवें ॥९८ ॥ बहुरिदेवकौंहिरदेध
री ॥ मुरतिसयनपोटारिकरी ॥ याविधिहरिकेंआतमजानें ॥ यथाशक्तिसबपूजाठानें ॥ ९९ ॥ ज्ञान
ज्ञानकाजएसाधनभक्ति॥ ज्ञानपावैंतबहोवेंमुक्ति ॥ उभेप्रतिमाहरिकीसेवा ॥ साधूप्रगटसोहरिदेवा १००

 एसेंसर्वेउपजेज्ञाना॥बेगिआंनमिलेंभगवाना ॥ भवसागरतन्यौजोचहैं ॥ सेवासहितप्रीतमनगेंहे ॥ १०१
दोहा ॥ ॥ एसुनीबचनाबिदेहके ॥ बाढ्योंमनमेंप्यार ॥ तबगुणअरुकर्मसहित ॥ पूछेंहरिअवतार
 ॥ १०२ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेविदेहप्रश्नेतृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥ ॥ दोहा
॥ नारायणअवतारसबलीलाआदिअनाद ॥श्रीधरचौथेंध्यायमैंद्रुमिलजनकसंवाद ॥ १ ॥ ॥ जनक
उवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अबअवतारकथाविस्तारो ॥ गुणअरुकर्मसहीतउचारो ॥ जेजेलिएले
हीजेआगें ॥ अबहेंसबभाषोअनुरागें ॥ १ ॥ एसुनीनृपतिजनकेबेंनां ॥ कृपासिंधुकरुणाकेएनां ॥ तब
सातमेंद्रुमिलसेनामा ॥ बोलेवचनपरमदमअभिरामा ॥२ ॥॥द्रुमिलउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जे
अनंतकेगुणअवतारा ॥ तीनकौंनृपतिलहेंकोपारा॥भुमिरेनुकणीकाकोईगनें॥सोउकहासकलगुणभनें॥३॥
हरिकेगुणअवतारअनंता॥बालबुधिजोचाहेअंता॥तातेंकछूएकमेंभाषौ॥ तेरेंल्हदेसंसेनहिंराषौ ॥ ४॥पंचभू
तनिर्मितब्रह्मंडा॥राष्योनीरमांहिज्यौंअंडा॥ तामेंअंसआपनोधारा ॥ सोहेंआदिपुरुषअवतारा ॥ ५॥ ति
नकीदेहहुंतेसबदेहा ॥ दहमाहिंबरतेसबएहा॥तिनकेअंगबितेंसबअंगा ॥ इंद्रियअहंबुधीबहुरंगा॥ ६ ॥
सतरजतमतेंसकलपसारा ॥ उतपतिअरुपालनसंहारा ॥ प्रथमहींरजतेंब्रह्माकीयौं ॥ सात्विकीजन्मबिष्णु
कोंदीयौ ॥ ७ ॥ तामसकरीसंकरउपजाए ॥ तिनसौंसकललोकानिपजाए ॥ ब्रह्मारचेंविष्णुप्रतिपालें ॥
हररुद्रयौंभवपंथचालें ॥ ८ ॥ बहुरिसुनोहरिकेअवतारा ॥ भवसागरकेतारनाहारा ॥ धर्मपितारुअमुर

तिमाता॥तहांनरनारायणविख्याता॥९॥आतमज्ञानभक्तिविस्तारैं॥यासौंलागिजीवनिस्तारैं ॥ अबकहौंप्रग
टकरेआचरना॥नारदआदिनितसेवैंचरना ॥१०॥ एकवारसुरपतीमनओन्यो ॥ ममलोकलेवैंयोंजान्यों
॥ तबतिनआग्याकांमहिदीनी ॥ कामसंगसेनासबलीनी ॥ ११ ॥ रंभादिकअपछराअपारा॥ त्रिविध
पवनबसंतपसारा ॥ बदरीषंडसबैंचलीआए ॥ नरनारायणबैठेपाए ॥ १२ ॥ भरिभरिबांननिहनैंशरि
रा ॥ निहफलमएअग्नीज्यौंनीरा ॥ तबतैंमनमथबहुतहेरांनैं ॥ आपअग्निजीवनिगतिमांनैं ॥ १३ ॥ ह
रिअपराधइंद्रकृतजान्यों ॥ हासिबोलैंतिनकोभयभान्यो ॥ मतिभयोकरोपंचसरवीरा॥ देवनारभवप्राणश
मीरा ॥ १४ ॥ बैठौइहांअतिथकरवावौ ॥ हमआश्रमसुफलकरिजावौ ॥ एसुनीअभेदांनकैंबेनां ॥ ते
सबजोनीसकैंनहींनेना॥१५॥लजाभारनवाएसीसा॥बोलैंवचनजांनिजगदीसा ॥ हेप्रभुयहकछुनांहिंअचंभा
॥ तुमहौंप्रकृतिपुरुषकेयंभा ॥ १६ ॥ निरबिकारनिरगुननिरभेदा ॥ जिनकौंजानिसकेनहिंवेदा ॥ निजा
नंदपूरणमुनिसारे ॥ तेसेवतहैंचर्णतुमारे ॥ १७ ॥ तुमरेचर्णसरणाजोआवे ॥ तिनकौंसूरबहुविघनउप
वैं ॥ तिनकौंलोकदाबेपगनोचैं ॥ एचहेतुमरैंपदउंचे ॥ १८ ॥ तातैंविघनकरैंसबदेवा ॥ मिटतीजांने
आपनीसेवा ॥ औरकिसिकौंविघननकरहि ॥ यातैंतिनहिंदंडसबभरहीं ॥ १९ ॥ परितवजननहिंविघ
नसंतावैं ॥ विघनिसीसचर्णदेजावैं ॥ जोत्रिभुवनपतितुमरषवारैं ॥ कहांकरैंतबविघ्नविचारैं ॥ २० ॥ ता
तैंतुमरोकहांअचंभा ॥ जातैंमोहिसकीनाहिरंभां ॥ क्षुधातृषाअरुआलसनिंद्रा ॥ सीतउष्णवर्षारितुतंद्रा॥

२१ ॥ जिभ्याशिस्नादिकविस्तारा ॥ इनकेगुणतेंजलधिअपारा ॥ ताकोंबहुतकष्टकरितरें ॥ गोपदको
बूडितेमरे ॥ २२ ॥ तिनकौंतपसबमिथ्याहोई ॥ दहुलोकमेंएकनकोई ॥ तातेंसबसाधनजोकरें ॥
तुमरीभगतिबिनानहिंतरें ॥ २३ ॥ याबिधिदेववचनउचरे ॥ तबहरिजीएकअचंभाकरें ॥अतिअद्भुत
छबिनारिअनेका॥ मनमोहनीएकतेंएका॥२४॥तेसबसेवाकरतादिपाई॥मानोंरंभासखियनिसौंआई॥तो
नकेंगंधरूपसबमोहें ॥ चंद्रउदयउडगनज्यौंसोहें ॥ २५ ॥ तिनसौंहरिजीबोलेंबैना ॥ इनमेंएकलेहोतुम
मेनां ॥ स्वर्गलोककोभूषणरूपा ॥ जातेंएसबपरमअनूपा ॥ २६ तिनसबहरिकौंक्रीयोप्रनांमा ॥ लीनी
एकउरबसीनांमा ॥ करिप्रनामपुनीवारंवारा ॥ पहुचेंसकलइंद्रदरबारा ॥२७ ॥ तिनहीइंद्रप्रसंगसुना
यौ ॥ विस्मयत्रासइंद्रमनआयो ॥ बहुरिलीयोहंसअवतारा ॥ चारीभएसनकादिकुमारा ॥ २८ ॥
दत्तकपिलअरुपिताहमारा ॥ एआठहुंब्रह्मरूपविस्तारा ॥ हयग्रीवमधुप्राणनिवारें ॥ ताकरिहरिबेदउधा
रें ॥२९ ॥ सतवृतराजाहरिभक्ता ॥ तिनकौंहरिजीकीयोविरक्ता ॥ बिनहिप्रलयप्रलयदिषरायौ ॥ मा
छरूपहिंज्ञानहिंसमुझायौ ॥ ३० ॥ बहुरिवराहरूपहरिधार्यौ ॥ हिरण्याक्षदुष्टअतिमार्यो ॥ बहूरिमही
हुतिजलमांही ॥ सोउपरस्थापीपिलामांहि ॥ ३१ ॥ कूर्मव्हैमंदिरागिरधार्यौ ॥ अमृतकाढिसुरकारं
जसार्यों ॥ ग्राहग्योग्रजराजपुकार्यौं ॥ तबहरिजीततकालउबार्यौं ॥ ३२ ॥ बालषिल्यादिकजो
रिषिराजा ॥ अंगुष्ठसमअकारविराजा ॥ कस्यपकेंकाजेंएकवारा ॥ समधिनिकेतेबनहीसिधारा॥३३॥

॥ तहांगाइकेपगजलसौंभरिया ॥ तिनमैंआपुआपुसबपरिया ॥ हांसीकरेंइंद्रतहांखरेां॥ तबतिन
त्हदेहारिसंभरो ॥३४॥ जबआतमकोकोइनाहीं ॥ तबतुमनाथउधारणमांही ॥ तातेंअबहमभएअना
था ॥ करुनासींधुगहोकरहाथा ॥ ३५ ॥ इतनींसुनीहारतकीबानी ॥ तहांउठिधाएसारंगपानी ॥
तहांकरिगहिहरिसबानेउधारा ॥ बालखिल्यउधारनअवतारा ॥ ३६ ॥ ब्रह्महित्याभएइंद्रसंभाऱ्यौ ॥
तबाहिंहरिजीप्रगटउधाऱ्यौ ॥ सुरवनिताजबअसुरनिहरी॥तबतेंहरिशरनअनुशरी ॥ ३७॥ तबहारि
जीतेसकलउधारी ॥ असुरमारसबविपतीनिवारी ॥ पुनिनरसिंघरूपतनधाऱ्यौ ॥ असुरहिरन्यकस्यप
जिनमाऱ्यौ ॥ ३८ ॥ जनप्रहलादहिलीनौराषि ॥ जाकीप्रगटकहेसबसाषी ॥ जबजबअसुरप्रबलअ
तिभए ॥ देवनिकेअस्थलहारिलए ॥ ३९ ॥ तबतबसबमन्वंतरमाहीं ॥ विष्णुकलाअवतारधरांहीं ॥
मारिअसुरसबदुषनिमिटावें ॥ सरनांगतसुरनरसुषपावें ॥४०॥वामनरूपइंद्रकेकाजा ॥ भिक्षाछलछल्यो
बलराजा ॥ तीनलोकलेइंद्रहीदए ॥ बलिकीभक्तिआपवसभए ॥ ४१ ॥ बहुरिअधरमीउपजेराजा ॥
परसरामप्रगटेतिहकाजा ॥ एकाबिसवारकरीनिहक्षत्री ॥ भुवमैंकहुंनराष्योक्षत्री ॥ ४२ ॥ बहुरिभएद
शरथसुतरामा ॥ जेहैंप्रगटलोकअभिरामा ॥ सायरउपरिसैलजिनतारें ॥ रावनआदिदुष्टजिनमारें ॥
४३ ॥ आगैंरामकृष्णअवतारा ॥ भूकौंप्रबलहरेंगेंभारा ॥ यदुकुलजन्मकर्मतेंकरिहें ॥ जिनसौंलागि
जीवनिस्तारिहें ॥ ४४ ॥ असुरदेषियज्ञानिकेंकरतां ॥ जीवनिमारिउदरकेभरता ॥ बुधरूपहरिजातिबध

२१ ॥ जिभ्याशिस्नादिकविस्तारा ॥ इनकेगुणतेंजलधिअपारा ॥ ताकोंबहुतकष्टकरितरें ॥ गौपदक्रो
बूडितेमरे ॥ २२ ॥ तिनकौंतपसबमिथ्याहोई ॥ दहुलोकमेंएकनकोई ॥ तातेंसबसाधनजोकरें ॥
तुमरीभगतिबिनानहिंतरें ॥ २३ ॥ याबिधिदेववचनउचरे ॥ तबहरिजीएकअचंभाकरें ॥अतिअद्भुत
छबिनारिअनेका॥ मनमोहनीएकतेंएका॥२४॥तेसबसेवाकरतादिषाई॥मांनोंरंभासखियनिसौंआई॥ती
नकेंगंधरूपसबमोहैं ॥ चंद्रउदयउडगनज्यौंसोहैं ॥ २५ ॥ तिनसौंहरिजीबोलेंबैना ॥ इनमेंएकलेहोतुम
मेनां ॥ स्वर्गलोककोभूपणरूपा ॥ जातेंएसबपरमअनूपा ॥ २६ तिनसबहरिकौंकीयोप्रनांमा ॥ लीनी
एकउरबसींनांमा ॥ करिप्रनामपुनीवारंवारा ॥ पहुचेंसकलइंद्रदरबारा ॥२७ ॥ तिनहिइंद्रप्रसंगमुना
यो ॥ विस्मयत्रासइंद्रमनआयो ॥ बहुरिलीयोहंसअवतारा ॥ चारीभएसनकादिकुमारा ॥ २८ ॥
दत्तकपिलअरुपिताहमारा ॥ एआठहुंब्रह्मरूपविस्तारा ॥ हयग्रीवमधुमारएानिवारें ॥ ताकरिहरिबेदउधा
रें ॥२९॥ सतव्रतराजाहरिभक्ता ॥ तिनकौंहरिजीकीयोविरक्ता ॥ बिनहिप्रलयप्रलयदिषरायौ ॥ मा
छरूपीहंज्ञानहिंसमुझायौ ॥ ३० ॥ बहुरिवराहरूपहरिधार्यौ ॥ हिरण्याक्षदुष्टअतिमार्यो ॥ बहुरिमही
हुतिजलमांही ॥ सोउपरस्यापीपलामांहे ॥ ३१ ॥ कूर्मव्हैमंदिरागिरधार्यौ ॥ अमृतकाढिसुरकारं
जसार्यौ ॥ ग्राहग्रह्योग्रजराजपुकार्यौ ॥ तबहरिजीततकालउबार्यौ ॥ ३२ ॥ बालषिल्यादिकजो
रिपिराजा ॥ अंगुष्ठसमअकारविराजा ॥ कस्यपकेंकाजेंएकवारा ॥ समधिनिकेतेबनहीसिधारा॥३३॥

॥ तहांगाइकेपगजलसौंभरिया ॥ तिनमेंआपुआपुसबपरिया ॥ हांसीकरेंइंद्रतहांखरो॥ तबतिन
त्हदेहारिसंभरो ॥३४॥ जबआतमकोकोईनाहीं ॥ तबतुमनाथउधारणमांही ॥ तातेंअबहमभएअना
था ॥ करुनासींधुगहोकरहाथा ॥ ३५ ॥ इतनींसुनीहारतकीबानी ॥ तहांउठिधाएसारंगपानी ॥
तहांकरिगहिहरिसबानेउधारा ॥ बालखिल्यउधारनअवतारा ॥ ३६ ॥ ब्रह्महित्याभएइंद्रसंभान्यो ॥
तबहिंहरिजीप्रगटउधान्यो ॥ सुरवनिताजबअसुरनिहरी॥तबतेंहरिशरनअनुशरी ॥ ३७॥ तबहरि
जीतेंसकलउधारी ॥ असुरमारसबविपतीनिवारी ॥ पुनिनरसिंघरूपतनधान्यौं ॥ असुरहिरन्यकस्यप
जिनमान्यौ ॥ ३८ ॥ जनप्रहलादाहिलीनोंराषि ॥ जाकोप्रगटकहेसबसाषी ॥ जबजबअसुरप्रबलअ
तिभए ॥ देवनिकेअस्थलहरिलए ॥ ३९ ॥ तबतबसबमन्वंतरमाहीं ॥ विष्णुकलाअवतारधरांहीं ॥
मारिअसुरसबदुषनिमिटावें ॥ सरनांगतसुरनरसुषपावें ॥४०॥वामनरूपइंद्रकेकाजा ॥ भिक्षाछलछल्यो
बलराजा ॥ तीनलोकलेइंद्रहीदए ॥ बलिकीभक्तिआपवसभए ॥ ४१ ॥ बहुरिअधरमीउपजेराजा ॥
परसरामप्रगटेतिहकाजा ॥ एकबिसवारकरीनिहक्षत्री ॥ भुवमेंकहुंनराष्योक्षत्री ॥ ४२ ॥ बहुरिभएद
शरथसुतरामा ॥ जेहेंप्रगटलोकअभिरामा ॥ सायरउपरिसैंलजिनतारें ॥ रावनआदिदुष्टजिनमारें ॥
४३ ॥ आगेंरामकृष्णअवतारा ॥ भूकौप्रबलहरेंगेंभारा ॥ यदुकुलजन्मकर्मतेंकरिहें ॥ जिनसौंलागि
जीवनिस्तारिहें ॥ ४४ ॥ असुरदेषियज्ञानिकेंकरतां ॥ जीवनिमारिउदरकेभरता ॥ बुधरूपहारिजातिबध

रिहें ॥ यज्ञनिंदगाखंडविस्तारिहें ॥ ४५ ॥ बहुधरेंगेकलंकीरूपा ॥ अतिअपराधकरेंगभूपा ॥ कलीके
अंतसकलसंहरिहें ॥ बहुरिप्रवृतसतजुगकरिहें ॥ ४६ ॥ ऐसैंविष्णुकर्मअवतारा॥ कोईकहतनपावेंपा
॥१२॥ रा ॥ कछुएकमेंतुमसोंकहें ॥ औरहिकोटिअनंतनिरहें ॥ ४७॥ इनकौंकहेंसुनेंजोगावें ॥ प्रेमसहित
निसवासुरध्यावें ॥ सोभवसागरमेंनहींरहें ॥ पावेंज्ञानपरमपदलहें ॥ ४८ ॥ ॥ दोहा ॥ अबेंना
सुनिद्रुमिलके ॥ कीनोप्रष्णनरेंद्र ॥ प्रभुजीतिनकीकोनगति ॥ जेनभजेगोविंद ॥ ४९ ॥ ॥इतिश्री
भागवतेमहापुराणेंएकादशस्कंधेविदेहप्रष्णेचतुर्थोंऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥कर्मशुभाशुभभज
नाविधिसाधनज्ञानदृढांहि ॥ करभाजनअरुचमसमुनिकहीपांचमेंमांहि ॥ १ ॥ ॥ जनकउवाच ॥
॥ चौपाई ॥ ॥जेनहिकरहीहरिकीसेवा ॥ तिनकीकहोकोनगतिदेवा ॥ तिनकेतृपतिनसुपनेंआवें ॥
निसदिनतृष्णाअग्निजलावें ॥ १ ॥ परिजोबहुविधिधर्मउपावें ॥ तोमोहिकहोकछूसुषपावें ॥ एकहीवचन
जनकजबरहें ॥ अबुमेंचमसनामतबकहें ॥ २ ॥ चमसउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥हरिजीबिप्रब
दनतेंकरे ॥ बाहुनितेंक्षत्रीविस्तरें ॥ जंघनिव्हैवैश्यउपजाए ॥ सुद्रतिमिचर्णनितेंआए ॥ ३ ॥ याहीभां
तिकीएआश्रमां ॥ तातेंभजनसबनिकौधर्मा ॥ तातेंआपुहिंकरेप्रतिपाला ॥ आपुहींपोषेंदीनदयाला ॥४॥
ऐसेंप्रभुकौंजेनिसरे ॥ तेअपराधअपारनिकरें ॥ तेगुरुद्रोहीअरुमित्रद्रोही ॥ स्वामीद्रोहीकृतघनिओही ॥१२॥
॥ ५ ॥ तिनअपराधनअधमगतिजावें ॥ कवहुंभूलिनहिंसुषपावें ॥ सुद्रजोपिताअंतजआदि ॥ तिनकों

हरिकथाश्रवनादि ॥६॥ तेंमनमेंअभिमाननधरें ॥ तातेंतुमसौंक्रिपाहिकरें ॥ यातेंइनकौंहेंउधारा ॥ परिउंच
नकोवारनपारा ॥७॥ विप्रअरुक्षत्रीवैश्यात्रिवरनां॥ याकौंयज्ञविहितविधिकरनां॥ इनसबहिनकेतेंअधिकारी
तातेंबहुतभएविकारी ॥८॥ तातपर्यकौंजांनेंनाहीं॥ पशुपितवांनीमेंभरमाहीं॥ विष्णुंभजनउत्तमअधिकारा॥ पायो
ताहिनलषेंगवारा॥९॥ कर्मअकर्मविकर्मनजांनें॥ अतिकठोरआपहिंबहुमांनें॥ हमपंडितयज्ञनिकेकारक॥ औ
रबहुतकर्मनिविस्तारक॥१०॥ आगुभ्रमेंऔरनिभ्रमावें॥ प्रियबांनीबहुभांतिसुनावें॥ कामअरुअर्थअर्थकरिमांनें
पढिपढिबेदसाखिबहुआंनें ॥ ११ ॥ बहुसंकलपकरेंमनमांहिं ॥ बहुतक्रूरआरंभकराहीं ॥ त्योंहित्यों
राजसअधिकारा ॥ कामक्रोधरुलोभअहंकारा ॥ १२ ॥ दंभकपटचतुराइआनें ॥ हरिभक्तिनिकी
हांसीठांनें ॥ आपुआपुमिलिबेठेंजबहीं ॥ ग्रहकेसुषनिसराहेंतबहीं ॥ १३ ॥ जिनमेंआनंदक्षणहैनाहीं
॥ दंभमानसोंजज्ञकराहीं ॥ बहुतपसुनिमारेंअज्ञानि ॥ तीनअपराधसकेंनहींजांनी ॥ १४ ॥ इतनोधन
आयौयहयेहैं॥ एतौमिलेंएतोतबव्हैहैं ॥ कुलसंपतिविद्याठकुराई ॥ त्यागरुपबलकर्मबढाई ॥ १५ ॥ इ
नकौंबलबाढौअधिकाई ॥ तातेंह्रदयसमुझनहींआई ॥ हरिभक्तनसौंठांनेहांसी ॥ मगहदमैंरछांडिषल
कासी ॥ १६ ॥ थावरजंगमसबघटमांहीं ॥ हरिपूरणषालीकहुंनाहीं ॥ ज्योंआकासलिप्तनहींहोई ॥
त्यौंहरिबेदकहतहेंसोई ॥ १७ ॥ परिवेमूढनकबहुंजांनें ॥ जातेंहरिभक्तनिनाहींमानें ॥ बहुतमनोरथनिस
दिनकरें ॥ तृष्णातापजरतनहींटरें ॥ १८ ॥ मद्यपानअरुमांसअहारा ॥ नारीनेहसहितजगसारा ॥ तास

कलहित्यागेवेनिमित्ता ॥ विधिमेंवेदलगायोचित्ता ॥ १९ ॥ संगकमेतोंनारिबिवाही ॥ तांहुरेंबहुतैथितिना
हीं ॥ वनीताकौदेवेंरितुदांनां ॥ प्रजानिमिताचितनाहिंआंनां ॥ २० ॥ याविधिकर्मसकलछोडावें ॥ बहुरि
वेदसबत्यागकरावें ॥ ऐसेंहिआमिषअसेंमदपानां ॥ यज्ञमांहिनहींकहुंआना ॥ २१ ॥ बहुरिऊहांहुतैं
छाडावें ॥ एसोतातपर्यकौंपावें ॥ हरिकीसरनेंआवेंकोई ॥सारिविधिएकसमझसोई ॥२२॥ केजोतिनकी
सरनेंआवें ॥ अभिप्रायसारोसोपावें ॥ वेहरिजनअरुहारिहिनजांनें ॥ आपुहिकौंपंडितकारिमानैं ॥ २३
तातेंतातपर्यनहींजानें ॥ पढोपढिवेदअनर्थनिठानैं ॥ धनएसोजोकरेउधारा ॥ सोधनषोवेवृथागवांरा ॥ २४
जोधनहारिकेकाजलगावें ॥ सोतबप्रेमभक्तिकौंपावें ॥ तातेंहोईज्ञानप्रकासा ॥ तबहरिमिलेंमिटेंभवपासा ॥
२५ ॥ एसेंधनतेंमूढअजाना ॥ देहकाजषोवेंभरमांना ॥ कालनिरंतरहरतनदेषें ॥ बहुमंदमतिदूरकारि
लेषें ॥ २६ ॥ मद्यमांसमषमआनीजैं ॥ औरभूलिकहुंनामनलीजे ॥ तहांउआपुलेइग्रांनां ॥ षानपानते
अधगतिजांना ॥ २७ ॥ त्यौंवनीतारितुदांनहींदेवे ॥ औरभुलिकहुंनामनलेवें ॥ सोजबलागीएकसुतहो
ई ॥ सुतकेभयत्यागिएसोई ॥ २८ ॥ एसोसकलवर्णनिकोधर्मा ॥ ताकौंभूलिनपावेमर्मा ॥ मरमहीन
श्रुतिसुमृतिवषानें ॥ मूरषआपुहींपंडितमांने ॥ २९ ॥ तातेंवहुतकर्मआरंभे ॥ इंद्रीमनकदेनहींथंभे ॥ द्रो
हकरेंबहुजीवनिमारें ॥ तेबहुजन्मतिनहींसंघारैं ॥ ३० ॥ थावरजंगमसबघटमांहीं ॥ एकैहरिदूजाकोना
हीं ॥ तिनकौंद्रोहकरेंतनपोषें ॥ दारासुतनिआनसंतोषें ॥ ३१ ॥ नहींमूरषनहींतत्वगनानि ॥ पढीपढीग्रं

यहुहींअभिमांनी ॥ तेअसाधसेगोसिबजानी ॥ तिनसोंज्ञाननमांडेंज्ञानी ॥३२॥ तेसबकरेंआपनोघाता॥
सपनेंहूंनलहेंकुसलाता॥कर्मपंथमेंसुषकोंचांहे ॥ अमृतदेकरिविषाहीबेस्यांहें॥ ३३॥नानातापतपतजोंरहें॥
करेंमनोरथफलहिनलहें॥बहुतभांतिश्रमकरिउपजाए ॥ सुतवितदारासबमनभाए ॥ ३४ ॥ तिनसबनि
कौछोडईहांहीं ॥ बंधेंआपजमद्वारोंजांही ॥ जमकेंदूतनरकभोगावें ॥ तहांकिदुखकहेंनहींजावें ॥ ३५
तिनकोंकोनाहिराषनहारा ॥ हरिरक्षकसोनहींसंभारा ॥ कहांकहोंकछूकहेंनजांही ॥ हरिबिनकहूंपलक
सुखनाहीं ॥ ३६ ॥ ॥दोहा॥ ॥ चमसबचनसुनिभूपकें ॥ बाढोऐत्रासअरुप्यार ॥ तबजुगजु
गकोपूछीयो ॥ हरिकोभजनप्रकार ॥ ३७ ॥ ॥ विदेहउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कौनसमेंके
सोअवतारा ॥ केसोवर्णनामआकारा ॥ केहिविधिभजेंवर्णआश्रमा ॥ कहोज्ञानकेसाधनधर्मा ॥ ३८
॥ जिनतेंज्ञानलहेंसबत्यागें ॥ नितहरिचरणकमलअनुरागें ॥ सुनिनृपबेंनभक्तिकेसाजन ॥ तबबोलेंनव
मेंकरभाजन ॥ ३९ ॥ ॥ करभाजनउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सतत्रेताद्वापरकलिकाला ॥
बहुतभांतिभजोएगोपाला ॥ बहुविधिबरनबहुतआकारा ॥ बहुतनामबहुभजनप्रकारा ॥ ४० ॥ सतजु
गसुकलबरनभुजचारी ॥ सीसजटातनवलकलधारी ॥ कंठजनेउकरजपमाला ॥ दंडकमंडलअसमृग
छाला ॥ ४१ ॥ तबमनुषहोवेंसबसुधा ॥ समनिरवैरसुत्हृदपरिबुधा ॥ आस्थिरकरिइंद्रियमनप्राना ॥
करेंसबेंतिनहरिकोध्यानां ॥ ४२ ॥ हंससुपरमधर्मजगेश्वर ॥ निरमलपरमात्मअरुईश्वर ॥ पुरुषोत्तवै

कुंठअव्यक्ता ॥ ताकेनामहोइ यहव्यक्ता ॥ ४३ ॥ रक्तवरणत्रेताजुगमांही ॥ त्रिगुणमेषलागळेपहरा
ही ॥ पीतकेससर्वादिकहाथा ॥ ऋगयजुसामत्रयमैंनाथा ॥ ४४ ॥ तवतिनहेतयज्ञादिककरें ॥ वेदवि
हितकर्मनिविस्तरें ॥ सर्वदेवमयहरिकौंजांनें ॥ तवसवयौंहरिपूजाठानें॥४५॥प्रष्णीगर्भउरुगाकहीइजें ॥
विष्णुवृषाकपिजज्ञभनिजें॥ सर्ववेदउरुकृमविजयंत ॥ऐसेंनामकेंहसबसंत ॥४६ ॥ द्वापरपीतवसनघन
स्यामा ॥ शंपादिकआयुधअभिरामा ॥ चारिबाहुभृगुलाताधरना ॥ लक्ष्मीचिन्हबहुतआभरना ॥ ४७
॥ चामरछत्रआदिबहुसेनां ॥ महाराजलछनसुषदेनां ॥ वेदतंत्रविधिसेवाकरें ॥ सबअरपनपूजाविस्तरें
॥ ४८ ॥ वासुदेवसंकरषणदेवा ॥ प्रद्युमनअनिरुधअभेवा ॥ नाराइनभगवानअनंता ॥ जिनकौंकोईल
हैंनहींअंता ॥ ४९ ॥ विस्वरूपविस्वेस्वरस्वामी ॥ सर्वातमासर्वअंतरजांमी ॥ बहुतभांतिअस्तुतिविस्तरें॥
विधिसौंद्वापरपजांकरें ॥५०॥ कलिजुगपीतपीतांबरधारी ॥ कृष्णदेवघनस्याममुरारी ॥ सहतपारषदबहु
आभरनां ॥ श्रवनकीरतनपूजाकरनां ॥ ५१ ॥ इंद्रियमनबहुभरेंविकारा ॥ तिनतेंराषेंचरणतुमारा ॥ स
बविधिसर्वतीर्थकौवासा ॥ सुमरताहिंपुरेंसबआसा ॥ ५२ ॥ शिवविरंचिसुरनरमुनिध्यावें ॥ जाकौभेद
वेदनहींपावें ॥ राषीलेतशरणेजेआवें ॥ जनममरणसबदुषनिमिटावें ॥ ५३ ॥ केवलहोतदीनउधारें ॥
भवसागरकेपारउतारें ॥ ऐसेचरणतुमारेंगायो ॥ ताकीसरणदीनमेंआयो ॥ ५४ ॥ अतिसुषतबीसु
रवंछेनाकौं ॥ ऐसोराजछोडीकरीताकौं ॥ दशरथभगतवचनशतकरनां ॥ बनकोगवनकीयोजिनचर

नां॥५५॥हेममृगदयितामनभायो॥जोताकेपीछेउठिधायो ॥ जोभगवतनकेयोंआधीनां॥ऐसेंचरणशरणमें
लीना॥५६॥ऐसीविधिकलिअसक्तातिकरें ॥बहुविधिहरिनामनिउचरें ॥ मुनेंकहेंसुमरेंअरुध्यावें॥तेतत
कालतत्वकोंपावें॥५७॥याविधिजेजुगजुगहरिसेवें॥तिनतिनकोंहरिज्ञानहोदेवें ॥ज्ञानपाइनिजतत्वसमावें ॥
जहांजाइबहुरोनहींआवें ॥ ५८ ॥ जेकलजुगकेगुणकोंजानत ॥ तेबहुविधिअसक्तिकोंठानत ॥ जेसो
परमसारकलिमांही ॥ तैसोऔरजुगनिमेंनाहीं ॥ ५९ ॥ सतजुगध्यांनयज्ञत्रेतामही ॥ द्वापरप्रतिमापूजे
रामही॥कलीकेवलनामादिकगावें॥ सोसोफलततकालहिंपावें ॥ ६० ॥ याभवसागरमांहोनिरंतर॥ दुषित
जीवपरेंनाहिअंतर ॥ तांमेंहरिगुननामउचारन ॥ एकजिहाजसकलकोंतारन ॥ ६१ ॥ पापअघोरअपा
रकलमांहीं ॥ जामेंपुण्यलेसकहूंनाहीं ॥ यामेंहुहरिगुणनिउचारें ॥ तेतारेंआपऔनिकोतारें ॥ ६२ ॥
तेकृतकृत्यतेहोबडभागी ॥ जेकलिहरकीरतअनुरागी ॥ आपुसमरेंऔरनोसुमरावें ॥ तेजगजनमबहुरि
नहींआवें ॥ ६३ ॥ सतत्रेताद्वापुरअवतारहीं ॥ तेकलजुगकीवांछाकरहीं ॥ कलीकछुसाधनश्रमनाहीं
॥ हरिगुणगावतहरिहिसमाहीं ॥ ६४ ॥ अरुकहुंकोइदेसबिसुधा ॥ द्रावडादिमानवतहांबुधा ॥ जेउपजें
तेभक्तिकरें ॥ तातेंतहांबहुतउधरें ॥ ६५ ॥ अरुजहांताम्रपरणीकृतमाला॥कावेरिपयसुनोबिसाला ॥
अरुसरस्वतीपछमवाहनी ॥ गंगाआदिद्वरितदाहनी ॥ ६६ ॥ जेमानवजलपीवेंइनकों ॥ दूरिहोयत्ददें
मलतिनकों ॥ तेसर्वथाहोइहरिभक्ता ॥ साधनसंगहोवेंआसक्ता ॥ ६७ ॥ भूतकुटंबपितरऋषिदेवा ॥ इ

नकेरीतिकरैंसबसेवा ॥ सोईनरनहींसेदाकरैं ॥ सोसबतजिहरिकौंअनुसरैं ॥६८॥ जेविधतजीहरिचरणै
आंनें॥तिनकेमलहरिदुरिवहावैं॥ बहुर्‍यौमलउपजैंनहींकोई ॥ उपजैंकदेंहरेहरिसोई ॥ ६९ ॥ तातेंस
बविधिकोफलएका ॥ गहियेंहरिपदछांडिअनेका ॥ सबकैंप्रभुसबहींसुषदाता ॥ सरनागतपालकविख्या
ता ॥ ७० ॥जबजबजोजोसरनहीआयौ ॥ तबहींतबतिनहींहरिपायौ ॥ तातेंऔरसकलपरिहरीयें ॥
श्रीभगवानचर्णचितधरीयें ॥ ७१ ॥ ॥नारदउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसेंसुनिसबहूंकेंबे
नां ॥ जनकहृदेउपज्यौंअतिचैनां॥संसामिट्यौसकलभ्रमभाग्यौ ॥ ब्रह्मज्ञानसूतोसाजाग्यौ ॥ ७२ ॥ त
बतिनकीबहूपूजाकीनी ॥ विप्रनिसहितप्रदक्षिणादीनी ॥ याविधिदरसनपायेसबहीं ॥ अंतरध्यानभयेतेतब
हीं ॥ ७३ ॥ जनकविदेहऔरसबत्याग्यो ॥ हरिकेचर्णकमलअनुराग्यो ॥ याविधिब्रह्मपरायनभयो ॥
तरिभवसिंधुब्रह्ममेंगयो ॥ ७४ ॥ याहिविधितुमहींबडभागी ॥ भेहोहरिचरणाअनुरागी ॥ औरसकल
कौंतजिहोसंगा ॥ तबपावोगेब्रह्मप्रसंगा ॥ ७५ ॥ अरुतुमतोदेवकीवसुदेवा ॥ भयेकृतारथकरिहरिसेवा
तुमरेजशपूर्‍योजगसारा ॥जिनकेहरिलीनौअवतारा ॥ ७६ ॥ दरसनआलिंगनआलापा ॥ आसनभो
जनसयनमिलापा॥हरिसोंपुत्रजांनिचितदीनौं॥तातेंसकलभजनतुमकीनौ॥७७॥कपटवासुदेवशिशुपाला॥
दंतवक्रशल्यादिकराला॥वैरभावकृष्णहिंचितधार्‍यौ॥तिनिहुंकौंहरिदेवउधार्‍यो॥७८॥तोजेप्रेमप्रीतसौसेवें ॥२५॥
तिनकौंक्यौंनपरमपददेवें॥अबतुमपुत्रबुद्धिमातिआंनौं॥कृष्णदेवकौब्रह्महिंजानौं ॥ ७९॥ मायाकरिधारीन

रदेही ॥ पारब्रह्मतुमजांनोएहो॥ बाद्र्यौदेषिभूमअतिभारा ॥ मेटनकाजधर्योअवतारा ॥ ८० ॥ परम
पुनीतजसहींविस्तरहीं ॥ नासौंलागिजीवानिस्तरहीं ॥ जेजेइनसौंहितलगावें ॥ तेतेसकलपरमपदपावें ॥ ८१
॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसीसुनिनारदकीबांनी ॥ वसूदेवदेवकीअद्भुतमांनी ॥ आप
हुंदुहूंमुक्तकरिजान्यौ ॥ हरिमेंभावब्रह्मकौआंन्यौ ॥ ८२ ॥ यहइतिहासकथाजोभाषै ॥ सावधानसुनि
हिरदेराषैं॥ सोसबभवबंधनछिटकावें ॥ उपजैंज्ञानपरमपदपावें ॥ ८३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एभाख्यो
सक्षेपसौं ॥ हरिमिलनैंकोद्वार ॥ हरिउधवसंवादअब ॥ बरनौंकरिविस्तार ॥८४ ॥ ॥ इतिश्रीभाग
वतेमहापुराणेएकादशस्कंधेवसुदेवनारदसंवादेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ छठैबरणींद्वारि
काश्रीधरसुखश्रीकृष्ण ॥ ब्रह्मादिस्तुतिकरचलेउद्धवकीयोप्रश्ण ॥ १ ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ बहुरिसुनोनृपआतमविद्या॥ जांकिजांनिमिटैंअविद्या ॥ मिटैंअविद्याब्रह्महिंपावें ॥ ब्रह्मपाइ
फेरनहींआवे ॥ १ ॥ तबब्रह्मासनकादिकसंगा॥ नारदादिरंगेहारिरंगा ॥सकलप्रजापतिभृगुमरीच्यादिक
अरुमाहादेवलीनैंभूतादिक ॥ २ ॥ सुरसमुहसंगलेस्वरपाते ॥ पवनअस्वानिसूतग्रहपाते ॥वसुअंगिरा
रुद्रगनदेवा ॥ साध्यादिकअरुविश्वेदेवा ॥ ३ ॥ ऋषिगांधर्वपितरअरुनागा ॥ च्यारनासिद्धभयेअनुरा
गा ॥ अप्परअरुगुह्यकविद्याधर ॥ किंनरजक्षादिकमायाधर ॥ ४ ॥ कृष्णदेषिवैकारजसारे ॥ आ
नंदितद्वारिकापद्वारे ॥ केइनांचेकेइगावें ॥ केइबाजेंबहुतबजावें ॥ ५ ॥ केइजयजयशब्दउचारैं ॥

केईंकृष्णजसहिंविस्तारें ॥ याविधिकरेबहुतउछाहा ॥ मगनभयेंहारेंप्रेमप्रवाहा ॥ ६ ॥ श्रीभगवानमनुष
तनधारी ॥ दरसनसबमनहरनमुरारी ॥ लोकनिमांहिजसहींविस्तारें ॥ श्रवनादिकनिसकलउधारें ॥ ७
निधिरिधिपूरणद्वारावती ॥ जाकेसमनहींअमरावती ॥ तामैंब्रह्मादिकनालिआयें ॥ कृष्णदेवकेदरसनपा
ये ॥ ८ ॥ स्वर्गब्रक्षफूलनकीमाला ॥छांदितकीन्हेंदीनदयाला ॥ पावतदरसत्रिपतिनहींहोवें ॥ चित्रलिषें
सेसनमुषजोवें ॥ ९ ॥ चित्रवतबंदनआस्तुतिकरें ॥ उत्तमअर्थनिजसबिसतरें ॥ सहितबीमतीअरुपरना
मा ॥ दरसभयेसबपूरनकामा ॥ १० ॥ ॥ ब्रह्माउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुचर्णसरोज
तुमारा ॥ मनक्रमबचनचित्तआहंकारा ॥ इंद्रियबुधिप्रांनअरुदेहा ॥ वंदतहेहमप्रगटेएहा ॥ ११ ॥
जाकौंप्राणावचनमनसाधें ॥ सावधाननिसदिनआराधें ॥ भावसहितआभिअंतरध्यावें ॥ तेउयाविधिप्र
गटेनपावें ॥१२ ॥ धनधनहमधनभागहमारा ॥ प्रगटहिंदेषेंचर्णतुमारा ॥जिनकेंध्यानकीरतनश्रवना ॥
नहोरेनहोवेंआवागवनां ॥१३ ॥ तुमअद्वैतद्वैतयहकन्यौ ॥ अपनिमायासबनिसतन्यौ ॥तुमहीतेंउपजें
संसारा ॥ सदारहेंतुमरेंआधारा ॥ १४ ॥ तुमहींमांहिंलीनसबहोई ॥ तुमसोंपरससकेनहींकोई ॥ रा
गरहितआनंदस्वरूपा ॥ अजितअमिताचिद्रूपअनूपा ॥ १५ ॥ विद्याअध्ययनश्रवनअरुदाना ॥ क्रि
याउपासनतपअसनाना ॥ त्यागजोगयज्ञादिकजैतें ॥ आतमसुधकरेंनहिंएतें ॥ १६ ॥ तवगुनश्रवनपर
तअघनासें ॥ ज्यौंतममांहीसूर्यप्रकासें ॥ तातेंजन्मकर्मगुणधारौ ॥ दीनबंधुदीननउधारौ ॥ १७ ॥ जो

॥२६॥

तवचरणकमलमुनिध्यावें ।। भवभयभीतनपलछिटकावें ।। आरुनिजभगतनिरंतरसेवें ।। भयनहींसमुझैंनहीं कछूलेवें ।। १८ ।। अरुएकेंवैकुंठनिमिता ।। हृदयधरतांचर्णानिचिंता ।। बहुरिएकसेवेंसहकामा ।। एकभयेंचाहींनिहकामा ।। १९ ।। जीवनमुगतभएएकसेवें ।। प्रेमभावसोंअतिसुषलेवें ।। एकेजज्ञादिकसों भजें ।।सर्वदेवमयतुमकौंयजें ।। २० ।। एकेवर्णअदिआश्रमा ।। तुमरेहेतकरैसबधर्मा ।। एकएकरूप करिध्यावें ।। द्वैतभावकबहुंनहींल्यावें ।। २१ ।। एकेतुमप्रतिमाकौंसेवें ।। एकेनामनिरंतरलेवें ।। एकेश्रवनकीरतनध्यानं ।। कहांलगिकहियेंजेविधिनाना ।। २२ ।।ज्योंजेजेतवचर्णानिसेवें ।। तेतेसबवंछीतफललेवें ।। सोतवचणप्रगटहमपायो ।। तातेंअबदींजेंमनभायौं ।। २३ ।। यहहमवंछापूरनकरो ।। अपनेचरणकमलचितधरौ ।। भस्मकरोदूर्गोंवासना ।। जिनतेंउपजेंभवसासना ।। २४ ।। परमदयालपरमहितकारी ।। इछापूरकदेवमुरारी ।। इछापूरणकरोहमारी ।। निहचलउपजेंभक्तितुमारी ।। २५ ।। जोतवजन वनमालाकरें।।प्रेमसहिततवआगेंधरें।।कमलादेषिसपर्धाआनें।।ताकौंआपसहपतनीजांने।।२६ ।।परितुमए सेंदीनदयाल।।भगतीआधिनकरतप्रतिपाला।।तबइंदिरानिरादरकरौ ।। वनमालाताउपरधरौ ।। २७ ।। जोतवचरणभगतीस्त्ररकारन ।। दुष्टअसूरसेनासंहारन ।। असुरानिकौंअधगतिकेदाता ।। सुरनस्वर्गदीनेंविष्याता २८ ।। अभयदानअघनासनवांनौ ।। लोकवेदयहप्रगटबषानौ ।। बांधीधजागंगतोंहुंलोका ।। जाकेंदर्शमिटैंभवसोका २९ ।। व्रह्मादिकसुरनरअधिकारी ।। तुमरेंचरणकमलबसचारी ।। जोअतिब

लिवेकलतमीना ॥ नाहिंआगमनीआधीना ॥ ३० ॥ जनजबआसुरनतेंदुषपावें ॥तबतबसरनचरनकीआ
वें ॥ तबहींसुषउपजेंदुषभाजें ॥ आपनेअपनेठौरविराजें ॥ ३१ ॥ प्रकृतिपुरुषमहातत्वानियेंसा ॥ तुमइन
केआरनभगवंता ॥ तुमतेंपुरुशक्तिजोंपावे ॥ प्रकृतिमिलिमहतत्वउपावें ॥ ३२ ॥ तातेंउपजैंइहब्रह्मंडा ॥
जलअधरतरेज्योंअंडा ॥ थावरजंगमविधिप्रकारा ॥ तातेंहोइसकलविस्तारा ॥ ३३ तातेंतुमयासबके
करता ॥ उपजावनप्रतिपालनहरता ॥ तुमआधारसकलकेस्वामी ॥ तुमफलदाताअंतरजामी ॥ ३४ ॥
जोकछुहोइसकलजगमांही ॥ तुमकरतादूजोकोऊनाहीं ॥ परीकहूंलिप्तहोहूंनहिंदेवा ॥ कोउलषनिसकें
तवभेवा ॥ ३५ ॥ सोलहसएकसतआठा ॥ जिनकेह्रदयप्रेमअतिकाठा ॥ हावभावसोंप्रीतिबढावें ॥ म
दनआनबहुभांतिचलावें ३६ ॥ तुमतोहूनसहोवोनाहिं ॥ निश्चलनिजानंदपदमांही ॥ औरछोडिजेबैठोको
ई ॥ करतबासनाबंधेसोई ३७ ॥ एहनदीप्रगटतुमकीनी ॥ जिनकीमहिमापरेंनचीन्हीं ॥ एकगंगचर
णानिकोनीरा ॥ परसतानिरमलकरेंशरीरा ॥ ३८ ॥ दूजीतबकरीतिकीसरिता ॥ त्रिभुवनजहांतहांवि
स्तरता ॥ श्रवनकरतअंतरमलनासैं ॥ निरमलह्रदयब्रह्मप्रकासैं ॥ ३९ ॥ ब्रह्मप्रकाशभयेभवनाहीं ॥
येलेएकमेकमिलिमांहीं ॥इनदोनदीनभजेजेपंडित ॥ तिनकोंकालकरतनहिषंडित ॥ ४० ॥ तातेंनाथाक्रिपा
अजकीजें ॥ साधसंगहमकोंनितदीजें ॥ जिनमेंकथानदीहमपावें ॥ तातेंतवचणानिचितल्यावें ॥ ४१ ॥
श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यौंलेशीवशक्रादिकसंगा ॥ अस्तुतिकरिबहूतप्रसंगा॥ बहुर्यो

विधिएवचनसुनायें॥जाकेकाजसकलहमआयें ॥ ४२ ॥ ॥ ब्रह्माउवाच ॥ ॥ चौपाई॥हेप्रभुहम
तुमविनतीकीनी ॥ धरनीभारभईजबचीनी ॥ तातेंतुमलीनोअवतारा॥ सकलउताऱ्यौभूवकोभारा॥४३॥मि
टिअधर्मधर्मविसताऱ्यौ॥सबसंतनिकोकारजसाऱ्यौ ॥ औरकीरतीबहुविधिविस्तारि ॥ भवसागरतरवेकौंक
री४४॥लेअवतारभूपजदुवंसा॥सकलजननकोमिट्यौसंसा॥ बहुविधिकीनेंकर्मअपारा॥जिनसौंलागिजेहै
भवपारा ॥ ४५ ॥अरुजदुकुलद्विजआपविनास्यौ॥ नाहिरहिहैदिनद्वैहभास्यौ ॥ तातेंदेवकाजसबकऱ्यो ॥
करवेकुंकछुनाहींउवऱ्यौ ॥ ४६ ॥ गईबरषसतआवपचीसा ॥ तातेंहमबिनवेंजगदीसा ॥ अबकरिक्र
पाचलोनिजलोका ॥ करतपुनितहमारेओका ॥ ४७ ॥ हमहेंदासतुमारेंदेवा ॥ निसदिनकरेंतुमारीसेवा
॥ ऐसीसुनीब्रह्माकीवांनी ॥ तबहसीबोलेसारंगपानी ॥ ४८ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई
मेंसबसुनीतुमारीबांनी ॥ तुमरौकाजभयोमेंजांनी॥परियदुकुलयोंहींपरिहरौ ॥ तोनाससकलभुकोमेंकरौं॥
४९ ॥ ऐसबजादवबहुमदमता ॥ एनरहेसोमेरीसता ॥ मोहितजेंसबप्रबलईटांनें ॥ ज्योंसायरमजादा
भानें ॥ ५० ॥ तातेंनासहेतउपजायौ ॥ आपसबनिविप्रनतेंपायौ ॥ अबईनसबईनकौंबिनसाउं ॥ पीछे
तुमलोकनिमेंआंउ ॥ ५१ ॥ ऐसेंसुनिहारिजीकेबेना ॥ ह्रदयबद्योसबनिकौचैंना ॥ करिप्रणिपतिविन
तीसारें ॥ अपनेंअपनेंलोकपधारें ॥५२॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तबनरपतीकोस
भामझारें ॥ बेठेयदुकुलसहितमुरारी ॥ द्वारावतीउठेउतपाता ॥ तिनकौदेषिकाहिहारिवाता ॥ ५३ ॥

श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐंउतपातउठें द हुंओरा ॥ अतिभयदाईकदीसेंघोरा ॥ अ
रुद्विजश्रापभयोकुलमांही ॥ तातेंभलीदेखियतनाही ॥ ५४ ॥तातेंअबइहांनहींरहीयें ॥ तजीएवेगिजायो
जोचहीयें ॥ अतिपुनितक्षेत्रप्रभासा ॥ तहांवेगिचलीकीजेंवासा ॥ ५५ ॥ एकवारदक्षश्रापहींदयौ ॥
सशीकौंक्षेरोगतबभयौ ॥ जबसोसशीप्रभासहींन्हांयौ ॥ छूटरौंआपपरमसुखपायो ॥ ५६ ॥ तातेंअ
बप्रभासचलीजे ॥ तहांजाईअसनानाहिकीजें ॥ नृपतिदेवपितरनकोंकरीयें ॥ विप्रभोजनबहुविधिविस्तरीयें
॥५७॥ तिनकोंदानबहुताविधिदीजें ॥श्रद्धासहितप्रनामहीकीजें॥तिनप्रसाददुपारिपहरियें ॥ ज्योंनावनसों
सागरतरीयें ॥ ५८ ॥ ऐसीसुनीहरिजीकीबांनि ॥ तबजादवनिभलीकरीमानीं ॥ तबचलवेंकौंसकलवि
चारें ॥ अपनेंअपनेंरथनिसंवारें ॥५९॥ तबउद्धवहरिकौंनिजदासा ॥ दोषसकलबिधिभयौउदासा ॥
चलिएकांतहरिजीपैंआयौं ॥ चर्णनिपरिकेंवचनसुनायौं ॥ ६० ॥ ॥ उद्धवउवाच॥ ॥चौपाई ॥दे
वदेवईश्वरजोगेस॥श्रवनकीरतनहरनकलेस॥यदकुलकौंसंधाराहिंकरिहों ॥अबतुममृत्युलोकपरीहारिहों
॥६१॥विप्रश्रापमेंटनसामर्था॥नाहिमिटोसोयहहेंअर्था॥मेरेंजीवनचर्णतुमारा॥जैसेंमीनउदकआधारा॥६२
प्राणनाथअबएसीकीजें ॥ संगआपनेंमौकौंलीजें ॥ तुह्मरेंसबआचर्णअनूपा ॥ सबकौंअतिकल्याणस्व
रूपा ॥ ६३ ॥ जिनकौपाईऔरसबत्यागें ॥ त्रिभुवनकौंसुषदुषसेईलागें ॥ आसनगवनअसनअसनाना
॥ जागतअरुसोवतविधिनिना ॥ ६४ ॥ सदानिरंतरकौंमेदासा ॥ क्योंपलतजौतुमारीपासा ॥ माया

भयनहिंमेरैकहूं ॥ तुमबिनअर्धनिमिषनरहूं ॥६५॥ गंधवसनमालाआमरना ॥ तुमउतीरणकौमेंधरना
॥ महाप्रसादनिरंतरपोष्यो ॥ दरसपरसबहुविधिसंतोष्यो ॥ ६६ ॥ एसौमेंनिजदासतुमारो ॥ मायाक
रिहैकहाहमारो॥ मायाभयअरुतुमरेहेता ॥ होइंदिगंबरउरधेरता ॥ ६७ ॥ इंद्रियदेहप्राणमयसाधे ॥
सावधानतुमकौंआराधें ॥ ब्रह्मविचरिसदामनल्यावें ॥ तौनिजरूपतुमारोपावें ॥ ६८ ॥ हमकछुकमंत्रक
मंनजानें ॥ त्दृदयज्ञानवैरागआनैं ॥ तुमरेभगतनकोमिलिसंगा ॥ भवतारियेंमुनितवप्रसंगा ॥ ६९ ॥ तुम
रैकर्मवचनपरिहासा ॥ आवनगवनरूपप्रकासा ॥ कहतसुनतसुमरतसुषमांही ॥ भवसागरहमरहीयेनाहीं
॥ ७० ॥ तातेंमायाभवनहींआनौ ॥ आपहींसदामुक्तकरीमांनौं ॥ पारतुमबिनांप्राणतजेंजांही ॥ तातेंमो
हिछोडीयेंनाहीं ॥ ७१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवनिजभगतकें ॥सुनेंवचनगोपाल॥तबकरूणामयक
रीक्रिपा ॥ बोलेवचनरसाल ॥ ७२ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेभगवतउद्धवसंवादे
भाषाटीकायांषष्ठोऽध्यायः ॥ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उद्धवप्रतिश्रीकृष्णजीकह्योसातमेंज्ञान ॥
दत्तयदुसंवादमेंशिक्षाआटबषान ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥महाभागउ
द्धवयहयोंहीं ॥ ज्योंतुमकहीबातहेंयोंहीं ॥ शिवविरंचिसक्रादिदेवेसा ॥ वंछेममवैकुंठप्रवेसा ॥ १ ॥
भूमेंभारवदरोंजबभारी ॥तबब्रह्मापासपुकारी ॥ ब्रह्मादिकमिलबिनतिकरी ॥ तातेंमनुष्यदेहमेंधरी ॥ २ ॥
अबभूकौसबभारउतार्‍यो ॥ सकलसुरनिकोकारजसार्‍यो ॥ अरुजसकोकीनौविसतारा ॥ जातेंजीवजां

हींभवपारा ॥ ३ ॥ जदुकुलआपलह्योंदिजपासा ॥ आपुआपुमैव्हैहैनासा ॥ आजहूतेंसप्तदिनमांहीं ॥
सिंधुद्वारिकारापैनाहीं ॥ ४ ॥ जबहींमैंतजिहौंयहलोका ॥ तबपांवगोदुषभयसोका ॥ कलिजुगआनि
अधिष्टतहोई ॥ तातेंअधकारहेसबकोई ॥ ५ ॥ तातेंउद्धवसुतिनडभागा ॥ अबतूंकरसबहींकौत्यागा
॥ मोमेसदाचितथिरकरो ॥ समदरसीव्हैभूवविचरो ॥ ६ ॥ लोकछूकहतसुननमआवें ॥ मनअरुबुधि
जहांलगीजावे ॥ सोयहसबमनकौकृतजांनौ ॥ छिनभंगुरमायाकरिमानौ ॥ ७ ॥ जिनयहसकलसतक
रिजाना ॥ तिनकेभेदभयोहेनाना ॥ ताभेदहिब्रह्मकरिनहींजांनै ॥ विधिनिषेधतांहितैमानै ॥ ८ ॥ विधिनि
षेधजोभाषेवेदा॥सोतातौजाकोहेभेदा॥भेदामिटेत्रिनकरेनत्यागा॥तातेंएदूँकौयेंविभागा॥९॥ज्यौंज्यौंतजेसुषा
त्यौंहोई॥तातेंवेदबतावेदोई॥आगेजाईछुडावेसारै॥जैआपुहींहूतेंविसतारै ॥ १० ॥तातेंएसबामिथ्याजानौ
॥ऊंचनीचगुणदोषनमांनौ॥इंद्रियअरुमननिहचलकरौ॥अहंकारममतापरिहरौ ॥ ११ ॥ सुषमथूलस
कलविस्तारा ॥ ऐकहींआतमकेआधारा ॥ सोआधारब्रह्मकोमांनौ ॥ एसीविधभवकेभयभांनौ ॥१२
याविधिभेदअर्थकौजांनौ ॥ बहुरिदृढदेनिश्चलकरिमांनौ ॥ दुहूंलोककीआसाछांडौ ॥ याविधिअंतराय
सबपांडौ ॥ १३ ॥ जितनीयाकेआसाहोई ॥ तेतौविधनकरैसबकाई ॥ ज्यौंज्यौंतजतेजावेंआसा ॥ त्यौं
त्यौंमिटेविधनकोपासा ॥ १४ ॥ जबयहहोईआतमरामां ॥ तबतहांनहींआसाकौधामा ॥ तबविधनानिके
करतादेवा ॥ तेहीउलटीकरैंतासेवा ॥ १५ ॥ तातेंविधिनिषेधसबनगाषौ ॥ आसाछांडिदृढदेहरिराषौ ॥

दूजोकबहूंभूलिनलेषौ ॥ १६ ॥ अरुनिजपायौब्रह्मग्याना ॥ तिनकोंविधिनिषेधनहींनाना ॥ परितिनकैंनि
ताहिंविधिहोई ॥ कदेनिषेधनपरसैंसोई ॥ १७ ॥ वेसुषदुषगुणदोपनजांनैं ॥ बालकसमआचर्णनिटानैं ॥
परिविधिसारीसेवाकरैं ॥ अरुनिषेधआपुहिपरिहरैं ॥ १८ ॥ सबपरिसुत्द्दसदांअतिसांत ॥ ज्ञानविज्ञा
नसहीतनीतदांत ॥ सबजगब्रह्मजांनिथिरहोई ॥ बहुरौजनमनपावैसोई ॥ १९ ॥ ऐसैंसुनीहरिजीकेबै
नां ॥ अतिदुष्करअरुअतिसुषदेनां ॥ तत्वसुननकीबाटीप्यासा ॥ तबबोलैंउद्धवनिजदासा ॥ २० ॥
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जोगस्वरूपजोगउपजावन ॥ जोगदांनजोगेंस्वरभावन ॥ तुम
त्यागकत्यौसौमेरेहेत ॥ सोदुष्करआवैंनहीचेत ॥ २१ ॥ क्यौंहोवैंविषयनिकोत्यागा ॥ पुत्रकलत्रादिकअनुरा
गा ॥ यहतनयहधनएसुतमेरैं ॥ यहबनितायहग्रहयहचेरैं ॥ २२ ॥ याविधिमनअहंकारसमुद्रा ॥ बु
डिरत्यौमेमतिकौक्षुद्रा ॥ तुमरीमायाअतिभ्रमायौ ॥ तातैंज्ञानत्द्दिनहींआयौ ॥ २३ ॥ अबतुममोहिंशि
ष्याहिंउपदेसो ॥ मेरेउरकछूज्ञानप्रवेसो ॥ तातैंअबबहुविधिसमझ्यावौ ॥ ममउरपूरनज्ञानबढावौ ॥ २४ ॥
जातैंसबतजितुमकौंपावों ॥ बहुरौजगतजन्मनहींआवौ ॥ अरुदूजोऐसोनहीकोई ॥ जातैंलाभज्ञानकोहो
ई ॥ २५ ॥ ब्रह्मादिकतनधारीजेते ॥ तवमायाबसकीनैंतेते ॥ तातैंमायाहीकौंदेषैं ॥ कर्मअरुभोगभलें
करीलेषैं ॥ २६ ॥ तातैंमेजनुतुमरीसरना ॥ सोकीजैंपावुंतुमरचना ॥ तुह्मरोआदिअंतनपारा ॥ ज्ञानरू
पसबहींतेंन्यारा ॥ २७ ॥ सोईतरैंगहोकरजाकौ ॥ मायाकछूनसकेकरीताकौ ॥ तुमहींतेंउपजैंयहजी

वा ॥ जैसेंअग्निहूंतेंबहूदीवा ॥ २८ ॥ सदांरहैंतुमरैआधारा ॥ नित्यउठीपोषैसिरजनहारा ॥ ऐसैंप्रभु
कोंसेवेंनहीं ॥ तातेंपरेपरमदुषमाहीं ॥ २९ ॥ याभवकेदुषकहेनजांहीं ॥ पर्यौनिरंतरमेंतिनमाहीं ॥ अब
मोकोंसरनांगतिजांनौ ॥ देकरिज्ञानसकलभयभांनौ ॥ ३० ॥ मेरेतनमनधनुतुमचरनां ॥ मनवचकर्मआ
योमेसरनां ॥ ऐसेंसुनिउद्धवकेबैनां ॥ हरिहसिबोलेंअंबुजनैनां ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥
चौपाई ॥ ॥ उद्धवमैकहदेवौज्ञांनां ॥ सतकहतहौंनांहींआंनां ॥ याजगसाधभयैहैजेतें ॥ आपुहिंआप
उधरेतेतें ॥ ३२ ॥ आपुहिंभलैबुरोपहिचांनै ॥ छोडिबुरौभलाकौठांनै ॥ गुरुआपुनौआपुहींहोई ॥ प
शुपंपीभावेजोकोई ॥ ३३ ॥ परिनरनतएसौहेंनीको ॥ ब्रह्माआदिसबनिकोटीको ॥ जातेंब्रह्मविचारहीं
पावें ॥ बहुरीजगतजनमनहींआवें ॥ ३४ ॥ एकपददूपैदात्रिपदएका ॥ चोपदादिबहुपादअनेका ॥ मेब
हुभांतिसृष्टिविसतारी ॥ तिनमेंप्रियनरदेहसमारी ३५ ॥ मोहिपावेंसोयाकरिपावें ॥ औरसबनिसुषदुषभो
गावें ॥ यामेंमेरोकरेंविचारा ॥ सावधानव्हैबहुतप्रकारा ॥ ३६ ॥ भाईयहतौजडहैदेहा ॥ इंद्रियादिक
अरुसकलसनेहा ॥ अपनेंअपनेंअरथनिगहैं ॥ सोएशकातिकोंनकोरहै ॥ ३७ ॥ अरुसौवतजबसूप
नांपावे ॥ तबतोंइंद्रियतनाछिटकावें ॥ सुपनमांहिसुषदूपकौंलहैं ॥ जागेवातसकलकोंकहैं ॥ ३८ ॥ ता
तेंमेतोयहतननाहीं ॥ मेतोवासकियौयामांहि ॥ तौबनितासुतबितपरिवारा ॥ मेरोतोनहींसकलपसारा ३९
एतौसकलदेहसंगजांहीं ॥ सोयहदेहकदेमेंनाहीं ॥ तातेंसुपनमांहींनहिकोई ॥ उहांसकलऔराहिहोई ४०

अरुभाईमेंतोंवहनाहीं ॥ जोतनदीसैंसुपनांमांहीं ॥ जातेंउहहुथीरनरहावैं॥वाकौंतजीयामोंफेरिआवैं ॥४१॥ वातेंयहयातेंवहझूठि ॥ यहानिजज्ञानगत्योमेंमूठी ॥ जोईनदोहूंदेहकोंलहैं ॥ जोइंद्रियनिव्हैंसबअर्थानिगहें ॥४२॥ इंद्रियबुध्यादिकअरुबानीं॥याकौंकोईसकेनहिंजानीं॥सोमेंनिपनिरंतरएका॥उपजेबिनसेदेहअनेका ॥ ४३ ॥ भाईसोमैंकहातैंआयौं ॥ किनतनादिनोंकिनउपजायौं॥अबतोंमेंदूदेहआधारा ॥ पलकोरहनसकौंनिरधारा ॥ ४४ ॥ एदोउतजिकहांमेंरहौं ॥ जोहैंसततांहिदृढगहौं ॥ ऐसैंबहुविधिकरैंविचारा ॥ त्यागेदेहादिकपरिवारा ॥ ४५ ॥ सोजहांतहांतेंलेवेज्ञाना ॥ कबहूंकछूनज्ञानेंआंना ॥ याविधिआपआपकौंतारैं ॥ लहैंब्रह्मभवदुषानिवारैं ॥ ४६ ॥ यहविचारमानवतनहोई॥दूजाभूलिनजांनेकोई ॥ तातैंतुममानवतनपायौ ॥ अरुकछूएकमेतौंहीलषायौ ॥ ४७ ॥ तातैंतजोसकलकोसंगा ॥ मनवचक्रमहोईनिहसंगा ॥ सबतैंपरैंआपकौंजानौं ॥ सोआधारब्रह्मकेमानौ ॥ ४८ ॥ जहांतहांदेषोयहउपदेसा ॥ याविधिकरोब्रह्मप्रवेसा ॥ ऐसैंजहांतहांलेवेज्ञाना ॥ बहुतकभयेब्रह्मपरवाना ॥ ४९ ॥ तिनमेंकहूंएककीवाता ॥ जोइतिहांसकथाविष्याता॥दत्तादिगंबरअरुयदुभूपा ॥ तिनकौंहेसंवादअनूपा ॥ ५० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सुनिउद्धवइतिहासअब ॥ भाषोपरमअनूप ॥ वक्तादत्तात्रेयजहां ॥ अरुपूछकजदुभूप ॥ ५१ ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकसमेंभूपातियदुनामां ॥ गएसिकारछोडीनिजधामां ॥ तबतानगरनिकटहैं सूता ॥ देष्यौएकपरमअवधूता ॥ ५२॥ निरभयनिश्चलइच्छाचारी॥तेजानिधांनतरुणतनधारी॥ करिप्र

णामबहुतप्रकारा ॥ यदुभूपतितबवचनउचारा ॥ ५३ ॥ ॥ यदुउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ हेप्रभूपूर
णपरमदयाला ॥ कहौंक्रिपाकरिहोहुक्रपाला ॥ एसिबुधिकहांतुमपाई ॥ जातोंबिचरौसहजसुभाई ॥५४
भयेअकर्त्ताइच्छाचारी ॥बालकसमसबचिंताटारी ॥ सबजगनिशदिनयहविचारैं ॥ धर्मअर्थकामविस्ता
रैं ॥ ५५ ॥ सोनहींउपजैंनहिंदुषपावै ॥ तिनसौंलागिसबआयुगमावैं ॥ तुमसमस्थसबहींविधिजांनौ ॥
क्रियानिपुनप्रियबैनबषांनौ ॥ ५६ ॥ सबविधिसरसतरुणतनसुंदर ॥ तुष्टपुष्टिकौंलिपैंनदुदंर ॥ नाकछूबं
छौनाकछूकरौ ॥ जडउनमतिगतिजिमिविचरौ ॥ ५७ ॥ तृष्णांकामलोभदैंलागी ॥ सकललोकदाझैति
नआगी ॥तूमअनंदमयदाझौंनाहिं ॥ ज्यौगयंदगंगोदकमांहीं ॥ ५८ ॥ देहअर्थसबहींतुमत्यागैं ॥ र
हौआनंदितशोकनहींलागैं ॥ संगनकोईराषोदेवा ॥ कोईलहिनसकैतवभेवा ॥५९॥ तातैंकहौंक्रिपाकरि
नाथा॥भवजलबूडतपकरौहाथा॥यौंजदुभूपबिनतीकरी॥तबअवधूतागिराउचरी॥६०॥ अवधूतउवाच॥
चौपाई ॥ ॥ सुनजदुभूपपरमबडभागी॥ जाकीमतिहारिसौंअनुरागी ॥ बहुतहैंमेरेगुरुदेवा ॥ जिनतैं
मैंज्ञान्यौंसबभेवा ॥ ६१ ॥ परिमैंमतौआपतैंलीनों ॥ तिनमेंमोसोंकिनहूंनदीनौ ॥ तेगुरुसकलसूनौतुममो
सों ॥ हारिजनजांनकहतहोंतोसौं ॥ ६२ ॥ धरनीगगनपवनअरूपांनी ॥ अनलचंद्ररविकपोतहींजांनी
॥ अजगरसिंधुपतगअभृंगा ॥ कुंजरमधुहरतारकुरंगा ॥ ६३ ॥ मीनपिंगलाकुररअरूबाला ॥
कन्यासरकरतअरूब्याला ॥ मकरिभृंगीएचोवीसा ॥ ईनतेंशिष्यौसुनोमहीसा ॥६४॥प्रथममेंधरनीमेंगुन

देष्यौ ॥ सोमेंपरमतत्वकरलेष्यौ ॥ सबैरहेंधरनीआधारा ॥ तापरिमूढकरैंअपकारा ॥६५॥ ठौरठौ
रअतिउत्तमअंगा ॥ ताकौंकरैंबहुतविधिभंगा ॥ ताकैंपरवतवृक्षअनंता ॥परउपगारसबैंवरतंता॥६६॥
परअपराधकछूनाहिंजानें ॥ उलटीआपअपकाराहिंठानैं ॥ ऐसीशिषधरनीकीलेवैं ॥ जोजनहरिचर्णानि
कौंसेवे ॥ ६७ ॥ ॥ प्रथमगुरु ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्राणवाईज्यौंलेहीआहारा ॥ स्वाद
कुस्वादनकोईप्यारा ॥ ज्यौंहरीजनआहारहींलेवैं ॥ स्वादकुस्वादनहिंचितदेवैं ॥ ६८ ॥ बिनाआहारवि
चारनआवैं ॥ स्वादकुस्वादनमनठहरावैं ॥ तातैंएतोलेईआहारा ॥ जेतोहोवैंप्राणआधारा ॥ ६९ ॥
अरुज्यौंपवनफिरेजुगमांही ॥ शुदअशुद्धालिपैंकछूनाहीं ॥ नानाभेदनिमेसंचरैं ॥ प्रियअप्रियगुणदोषनध
रे ॥ ७० ॥ योंविषयनिग्रहतैंजोगी ॥ मनवचनकर्मनहोवैभोगी ॥ भेदअनेकनिमेंअनुसरैं ॥ परीकछू
भेदत्वदेनहींधरैं ॥ ७१ ॥ अरुज्यौंपवनगंधसंजोगा॥लिप्तभयौजानैंसबलोगा॥परिसोपवनसदाएकरूपा॥
लिपैंनकबहुइंसोअनूपां ॥७२॥ पंचभूतनिर्मितत्यौंदेहा ॥ सकलविकारानिकोएग्रेहा॥तामेंजोगीलितनहोई ॥
औरलिप्तसबजानेंकोई ॥ ७३ ॥ ॥ द्वितीयगुरु ॥ २ ॥ ॥चौपाई ॥ ज्यौंसबहिंनमेंएकआका
शा ॥ अरुसबहिनकौंतामेंवासा ॥ सबउपजैंबिनसैंवरतांही ॥ गगननालिपैंकालातिहूंमाहीं ॥ ७४ ॥ त्यौं
बहुविधिसबजगतपसारा ॥ मुनिदेषैंआतमआधारा ॥ जोकछुदेषैंजडहैंसोई ॥ जाकैंसंगतैंचेतनहोई
॥ ७५ ॥ ज्यौंआतमदेहनिमेंदेषैं ॥ त्यौंपरमातमजहांतहांलेषैं ॥ एकअनंतनकहूंआवरनां ॥ लिपैनछि

पेजन्मनहींमरना ॥ ७६ ॥ सोपरमातमआतमएक ॥ कदैनदेषैंभुलिआनेका ॥ ज्यौंज्यौंगगनघटानिमें
होई ॥ बाहरहुंपुनिजहांतहांसोई ॥ ७७ ॥ कहिवेकोद्वैनांतरएका ॥ यौंआनमअरुब्रह्मविवेका ॥ ज्यौं
वहुमेहपवनदांमनी ॥ वरपैबहुंबासरजांमनी ॥ ७८ ॥ पारिनभालेतकदेनहींहोई ॥ औरालिप्तजांनेसबको
ई ॥ त्यौंआतममेंदेहअनंता ॥ उपजैंवरतेपावैंअंता ॥ ७९ ॥ परिआतमांलिमकहूंनाहीं ॥ साधाविचारैंयों
मनमांहीं ॥ यहअंबरगुनतोहिसुनायौ ॥ अवभाषौंजेजलतेपायो ॥ ८० ॥ ॥ तृतीयगुरु ॥ ३ ॥
चौपाई ॥ नितनिरमलऔरानिर्मलहरै ॥ तापमेटीसीतलताकरैं ॥ सबसुषदाईकाहितरसवंत ॥ एगुनज
लकेसषिसंत ॥ ८१ ॥ ॥ चतुर्थगुरु ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ॥ तेजवंतअरुदीपतजुक्ता ॥ क्षोभरहित
जहांतहांनिरमुक्ता ॥ स्वादरहितसबभक्षनकरैं ॥ अग्निनलिपैंसंचनहींधरैं ॥ ८२ ॥ त्यौंहिज्ञानतेजमयहो
ई ॥ इंद्रियादिकृतदीपतसोई ॥ जदपिबहुविधिभोजनकरैं ॥ स्वादरहितगुनदोषनधरैं ॥ ८३ ॥ काहु
हुंतेक्षोभनहींहोई ॥ काहूंकेगुणमिलेनसोई ॥ उदरप्रमांनलेहिअहारा ॥ कछनजानैंसंचैसारा ॥ ८४ ॥
गुप्तरहैंनहिभूलजनावै ॥ कन्हिंप्रगटप्रगटव्हैंआवैं ॥ परिइछातैंआहुतकोलेई ॥ तिनतेंपापरहैंनाहिदेई ॥
८५ ॥ त्यौंमुनिगुप्तआपतेंरहैं ॥ षोजिलेहिताकौंभ्रमदेहैं ॥ उत्तमभोजनआदिहोई ॥ परइछातेंलेवेसो
ई ॥ ८६ ॥ वहुज्यौंअग्निएकरसएका॥बहुविधिदिसैंकाष्टअनेका ॥ त्यौंआतमाएकसबमांहीं ॥ भेद
देहकृतसंचेनाहीं ॥ ८७ ॥ दिवामसालप्रगटज्यौंहोई ॥ ज्वालाजातलषेसबकोई ॥ परितेंदीसेंत्योंकेसोंहीं

प्रतिदिनदेहजातहैंयोंहीं ॥ ८८ ॥ ॥ पंचमोगुरु ॥ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
जैसेंशशीकोबढैंकला ॥ त्योंत्योंदिनदिनदीसैभला ॥ पूर्णव्हैकरिदिनदिननासैं॥सकलमिटैंतवनहींप्रकासैं ॥
८९ ॥ त्योंबालादिअवस्थाआवैं ॥ व्हैंकरितरुनक्रमहीक्रमजावैं ॥ तवआतमदेषीयतनाहीं ॥ परिहैं स
दाकालतिहूंमांहीं ॥ ९० ॥ ॥ गुरुछठो ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ज्योंरविकिरणनिसौंजलछेवें
समयपाईबहुर्योंसबदेवैं ॥ परिकबहुंअभिमाननआनैं ॥ लीयोदीयोआपुंनहींजांनैं ॥ ९१ ॥ त्योंमुनिसुनें
कहैंअरुदेषैं ॥ सकलअर्थइंद्रियकृतलेषैं ॥ नितआतमांअकरताजांनैं ॥ सबतजीब्रह्मविचारहिंठांनैं ॥
९२ ॥ ज्योंघटजलप्रतिबिंबतसूरा ॥ छिप्तदेखियेंपरिहैंदूरा ॥ त्योंआतमांदेहसनबंधा ॥ थूलदृष्टिजांनतहैं
अंधा ॥ ९३ ॥ ॥ सतमगुरु ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अबकपोतकीकथासुनाऊं ॥ तेरेमन
कोभ्रमहिंमिटाउं ॥ एककपोतकपोतीसंगा ॥ बनमेंकीनोयेंहप्रसंगा ॥ ९४ ॥ आपुआपुमेंअतिअश
क्ता ॥ आठपहरमेंपलनविरक्ता ॥ मनसोंमनअंगनिसोंअंगा ॥ नैंनत्रीनैंनबुहूरोबहुरंगा॥९५ ॥अवनगव
नअसनअस्थाना ॥ सैनबैनसारीविधिनाना ॥ मिलिसकलकर्मनिकोंकरैं ॥ निरभयरहेंनकाहूंतेंडरैं ॥
॥ ९६ ॥ सोकपोतबनिताबसकीओ ॥हावभावतनमनहरिलिओ ॥ वनिताजोवंछेसोल्यावे ॥ कष्टसहित
नोहीविधिपावें ॥ ९७ ॥ सौअस्त्रीजीतच्यौंतुमराजा ॥ अपनौलषेनकानअकाजा ॥ तनमयभयौनिरंतर
चहैं ॥ प्राणनिहूंतैंताहिप्रियकहैं ॥ ९८ ॥ ताकीत्रीयाअंडउपजायें ॥ तिनमैंमनदूनोमिलिलाये ॥ तवह

रिमायाशिशुनिरमये ॥ कोमलअंगरोमतवभये ॥ ९९ ॥ तबहुंमिलीकरीतिनकोंपोषें ॥ बहुतभांतिता
कोंसंतोषें ॥ कोमलवचनसुनेंमुषदरसें ॥ अपनेंअंगअंगसोंपरसें॥१००॥हरिकीमायाबहुतभुलाये ॥
आपुआपुमेंसकलबंधाये ॥ पुत्रसनेहरहेंअनुरागें ॥ सिरपरकालनलषैंअभागें ॥ १ ॥ एकवारबालक
केकारन ॥ चारोलेंनगएतेआरन ॥ तांहिसमेंव्याधिएकआयौ ॥ बालकदेषिजालबिछरायौ ॥ २ ॥
देष्योकनिकनदेष्योजाला ॥ बंधेआनिसकलषगबाला ॥ तबदोउचाराकोल्याये ॥ जिनिग्रहमांहिनबा
लकपायें ॥ ३ ॥ तबदेषेंमातातेबाला ॥ बंधेजालमांहिंबिहाला ॥ तबसोतहांपुकारतधाई ॥ जालमांहि
सुतहेंतबधाई ॥ ४ ॥ तबकपोतदेषेंसबबंधे ॥ हरिमायाकीनेंअतिअंधे ॥ तबबहुभांतिकरैविलापा ॥
लेपेंबहुतआपनेंपापा ॥ ५ ॥ हाहापापकोंनमेंकीनें ॥ ऐसेंदुषदेवमोहिदीनें ॥ जाकीयहपतिव्रतानारी ॥
पुत्रनिलेसुरलोकसिधारी ॥ ६ ॥ मोहिछोडसूंनेंग्रहमांहीं ॥ सबमिलिआपुइंद्रपुरजांहीं ॥ नामेंसुषभो
गएयहलोका ॥ नहिंसाधनपायोपरलोका ॥ ७ ॥ धर्मअर्थकामसबजांमें ॥ कछुवैनहींरह्योग्रहतामें ॥
अबप्राननिराख्योंकहुनाहीं ॥घरीघरीमेंदुषअधिकाही ॥ ८ ॥ याविधिभयोबहुतबिहाला ॥ बंधदेषेबनी
ताअरुबाला ॥ व्याकुलबुधिविचारनकर्‍यौ ॥ आपहूंआईजालेमेपर्‍यौ ॥ ९ ॥ सहितकुटुंबकपोतहींपा
यौ ॥ तबहींभयौव्याधिमनभायौ ॥ ऐसेमेंकपोतकीदेषी ॥ तबहींरहदैआपुनेंयहलेषी ॥ ११० ॥ यों
हींकुटंबहीवेंजाकें ॥ तृष्णारागबढैअतिताकें ॥जीवानिअतिआरंभनिकरैं ॥सहितकुटंबकालमुषपरैं॥११

॥याविधिजोमानवतनपावें ॥ सोतोद्वारब्रह्मकेआवें ताहुंपरिजोंयहाहितकरैं ॥सोनरब्रह्मद्वारचढीपरैं ॥१२॥
तातैंभोगकुटंबअरूग्रेहा ॥तिनकरिजीवलहैंप्रतिदेहा॥एसौमानवतननगवैयैं॥ज़ाकरिदेवनिरंजनपैयैं॥१३॥
दोहा॥ यहभाषीगुरूआठकी ॥ शिष्यामेंतुमपास ॥ अबऔरनकीकहतहौं ॥ज्यौंछूटेभवपास ॥११४॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेअवधूतेतिहासोपाख्यानेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
दोहा ॥ ॥ शिक्षानवमिआदिलेकहीआठमैंमांहि ॥ ज्यौंज्यौंभाषतदत्तजीत्यौंयदुमनहर्षांही ॥ १ ॥
॥ अवधूतउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ जैंइंद्रियसुषकछुकहावैं ॥ तैंतोंस्वर्गनर्कहूंआवैं ॥ जौंसुकरकू
करसुषमांहीं ॥ त्यौंहींदेवऔरकछूनांहीं ॥ १ ॥ अरुजोसुषआपुहींतेंआवैं ॥ कर्मालिप्योसोकोईनामि
टावैं ॥ अरुज्यौंकोंईदुषकौंनहींचहैं ॥ परिदुषआपुआपुहींरहैं ॥ २ ॥ त्यौंहींसुषआपुहींतेंआवैं ॥ वि
तजानेंनरबहुदुषपावैं ॥ तातैंधनसुषनामनलेवैं ॥ होईअकरताहरिपदसेवैं ॥ ३ ॥ स्वादकुंस्वादबहुतके
थोरा ॥ जोहरिजीपठवेतिसबोरा ॥ ताकोंभक्षेंरहेंउदासा ॥ अजगरव्रतिगहैंयहदासा ॥ ४ ॥ जोक
बहुंअहारनआवैं ॥ तोंथीररहैनकछुमनलावैं ॥ कर्मआधिनदेहकोंजानै ॥मनकृमवचनउद्यमठांनैं ॥५॥
अतिसांमर्थइंद्रियमनदेहा ॥ परिकछुउद्यमकरैंनएहा ॥ निश्चलब्रह्मनिरंतरसेवैं ॥ यहशिष्याअजगर
तेंलेवैं ॥ ६ ॥ ॥ गुरूनवमो ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥दर्शनपरसनपरमगंभीरा ॥ अधिकअगाधज्ञान
सोनीरा ॥ वारपारकोंईथाहनलहै ॥ एगुनमुनिसायरकैगहै ॥ ७ ॥ ज्यौंबरषाबहुनीरप्रवेश ॥ सायर

कछुअटेनलेसा ॥ ग्रीषममेंकछूहीननहोई ॥ सदासमर्थआपतेंसोई ॥ ८ ॥ ज्यौंकोईबहुविधिअरचावै ॥ भोजनवस्त्रादिकपहीरावैं ॥ अरुअतिमानवडाईदेवैं ॥ बहुतभांतिबहुतेंमिलिसेवैं ॥ ९ ॥ अरुएकोलै जाहिंउतारी ॥ निंदादिकएकठानैभारी ॥ परिनारायणमयमुनिमांहि ॥रागद्वेषकछूउपजैंनाहीं ॥ १० ॥ गुरुदशमो ॥१०॥ चौपाई ॥ ॥ बनितावस्त्रकनकआभरनां ॥ बहूविधिमायाकेउपकरना॥इनमेंआई परेंजोकोई ॥ अग्निपतंगसमानसोहोई ॥११॥ ॥ गुरुईग्यारमो ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ज्योंलगीमुनिसमझैनिजदेहा ॥ ज्याचाअहारलेईबहूग्रेहा ॥ यातैंबहूअनुरागनबढैं ॥ यहशिष्यामधूकर तेंपढैं ॥ १२ ॥ छोटेंबढेंबहूताविधिग्रंथा ॥ तिनतेंसारगहैंहरिपंथा ॥ ज्यौंमधूकरबहूफूलनिमांहिं ॥ वास गहैंफूलनिकौंनांहीं ॥ १३ ॥ सोमधूकरद्वैविधकौंकेहीयैं ॥ दहूपासतेंशिष्यालहीये ॥ बहूतग्रहनीतेलेई अहारा ॥ उदरंप्रमानएकहीवारा ॥ १४ ॥ ॥ गुरुबारमों ॥ ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ दूजेकोकछूसंचनधरैं ॥ निर्भयब्रह्मविचारहींकरैं ॥ संग्रहभूलिकरेजोकबहीं ॥ मधुमाषीज्यौंविनसैंतब हीं ॥ १५ ॥ जोकोईधनसंग्रहकरैं ॥ सोकोईऔरहींपरिहरैं ॥ ज्यौंमधूमाषीमधसंग्रहैं ॥ मधूआसोउ दमविनलहैं ॥ १६ ॥ ॥ गुरुतेरमो ॥ १३ ॥ ॥चौपाई ॥ ॥ पुतलाकाष्टहूंकीजोहोई ॥ पग हूंबुधिपरसैंमतिकोई ॥ परसकरतहावैंदृढबंधा ॥ ज्योंकरिदकरिनिसंबंधा॥१७॥मृत्युजांनिबनिताकौंत जैं ॥ पंडितकबहूंभूलिनभजैं ॥ भजतेंहोवैंकरीसमाना ॥ एकहिंमिलिमारेगजनांना ॥ १८ ॥ ॥ गुरु

चउदमो॥१४॥चौपाई॥ ॥ हरिविनगीतसुनैंनहीं औरा॥गयोचाहैजैहरिकेठौरा॥औरसुनगतातेहोवेअैसी
॥व्याधगीतहरिनांकीजैसी१९॥सुनोहरिनगातिसुनिबहुरंगा॥सृंगीरिषिज्यौंगनिकासंगा॥अबलाधनिमुक्त
नहीहोई॥तिनकैंशब्दसुनैंनहींकोई॥२० ॥गुरूपनरमो ॥१५॥ ॥चौपाई॥ ॥ मुनिजिव्हाअ
सक्तनकरैं॥ स्वादकुस्वादशकलपरहरैं॥ जिव्हारसतेंहोवेंकाला ॥ जैसैंमीनमरैंततकाला॥ २१॥
जेमुनिसबअर्थनिपारिहरैं ॥ जाईएकांतबासकौकरैं॥ सहजइंद्रियसबहोवेंक्षीना ॥ परिरसनानहींहोई
अधीनां॥ २२ ॥ रसनासबकौंफिरिजिवावें॥ जबाहिंरससंजोगहींपावें ॥ यौंसबइंद्रियजीतैंकोई ॥
परिरसनांकरमैंनहींहोई॥ २३॥ यौंलगिसकलव्रथाकरिजांनो॥ रसनाजीतजीतकरिमांनो ॥ तातैंमु
निरसनांबसकरैं ॥ औरसकलसाधनपरिहरैं॥ २४ ॥ यौंजेएकएकवसभयै॥तेसबजमकेंद्वारैंगयैं ॥
परिजोएकपंचबसहोई ॥ ताकैंदुषजांनेंगोसोई॥ २५ ॥ ॥गुरूसोलमो॥ १६ ॥ ॥चौपाई॥
बहुरिएकगनिकाप्यंगला॥ तातेमेंशिष्योगुनभला ॥ सोतुमसौंभाषतहोंराजा॥ जातेंसरैंतुमारेंकोजा ॥
॥ २६ ॥ जनकाविदेहपुरीमेंवासा ॥ नामापिंगलारूपनिवासा ॥ एकवारशृंगारवनायौ ॥ धनिकपुरूषम
नमेंठहरायो॥ २७॥ बेठिनिकासिभवनकेंद्वारा ॥ आगेचल्यौजाईबाजारा ॥ कोईभलोआवंतादेषें ॥
यहआवेंगोयोंकरिलेषें॥ २८ जबवेआगेंकोचलिजावें ॥ तबपिंगलाऔरकौंध्यावें ॥ औरौआइआ
ईचलिजांहिं॥ यौंयहदुषपावैंमनमांहीं॥ २९ ॥ तबहूंउठिंभीतरकौंजावें ॥ कबहूंव्याकुलबाहिरआवें॥

अर्द्धरातिएसोविधिभयो ॥ लोकबजारचलतरहगयो ॥ ३० ॥ तबवहभग्नमनोरथभई ॥ चिंतादुषअ
तुलअनुभई ॥ अपनोतिरस्कारकरिमांन्यौं ॥ सबतैंहीनआपकौंजांन्यौं ॥ ३१ ॥ तबताकौंकोईबडभा
गा ॥ जातेंउपज्यौंदृढवैरागा ॥ ज्यौंलगिनहिंउपजेंनिरवेदा ॥ त्यौंलगिनहिमिटेंभवषेदा ॥ ३२ ॥ याभव
नपाशिपदुपअनेका ॥ तामेंपरमरत्नसुषएका ॥ बंधनबंध्योजीवअपारा ॥ तिनकौहरिजिरच्यौकुठारा
।३३॥ताकीमाहिमाकहीनजावें॥जाकेभागबडेसोपावें ॥ जाकौंनामकहैवैरागा ॥ सोताहारिकोदीयोसुहागा
॥ ३४ ॥ जांहिदेईसोईपेंपावें॥ भवभयछोडिब्रह्ममेंजावें ॥ तातेंमानवसबाछिटकावे ॥ ज्यौंत्यौंकरिवैराग
उपावें ॥ ३५ ॥ तवपिंगलावचनउचारें ॥ बहुतभांतिआपुहींधीकारें ॥ गएदिननकौंअतिपछितावें ॥
सबतेंदृढवैरागबढावें ॥ ३६ ॥ ॥ पिंगलाउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ अहोएकमेरोअज्ञानां
॥ जाकैत्हदैबदूरौभ्रमनानां॥।जलबुदबुदासमजोनरदेहा॥।तासोंशुषहितकीयोसनेहा ॥ ३७ ॥ पुरनसर
ततताजिजलपासा ॥ मृगजलधाईकरीजलआसा ॥ चारपदारथदाईकदेवा॥सदानिकटकौंलद्योनभेवा ॥
॥ ३८ ॥ सत्यसदासुषदाइकस्वामी ॥ सोछांडयौनिजपतिधननांमी ॥ जुठोसदाकालमुषमांहीं ॥ जातेंदु
पसोकआधिकाहि ॥ ३९ ॥ एसोपुरुषताहीमेंभज्यो ॥ आपहिंदुषआपकौंसज्यौं ॥ देहवेचमेंदेहहीपो
ष्यौ ॥ यांहिभांतिमनहींसंतोष्यौ ॥ ४० ॥ अखिलंपटतृष्णादाल्यौ ॥ दुषितनरनसौंमेंसुषचाल्यौ
॥ हाडेमदमंजाअरुअंता ॥ मांसरुधिरत्वकरोमअनंता ॥ ४१ ॥ विष्ठामुत्रस्वेदक्रामिएहा ॥

झरैंद्वारनपवऐसीढेहा ॥तामेंकहोरमितक्योंहोई ॥ मोसीमूढऔरनहींकोई ॥ ४२ ॥ यापुरमांहिंजनकनृ
पएसै ॥ सूरअधिकारसुरेखरजैसैं ॥ तोहूंपरिसबसुषकौंतजैं ॥ व्हौंवेदेहहरिचर्णनिभजैं ॥ ४३ ॥ अ
रूसबप्रजाभजेहरिचरनां ॥ जातेंमिटैंजन्मअरूमरनां ॥ जाकौंभजैंब्रह्मशिवसेषा ॥ परिसोतिनहूंकदैनदे
षा ॥ ४४ ॥ एसैंप्रभूकौंजेनरसेवैं ॥ तिनकौंरिझिआपकौंदेवैं ॥ ऐसोंप्रभूमेंनहींआराध्यौ ॥ कीओ
अनर्थअर्थनहीसाध्यौ ॥ ४५ ॥ अबमेंआपनिवेदनकरौं ॥ औरसकलउरतेंपरिहरौं ॥ अप
नेपतिहरजीकेसंगा ॥ सदारमौंज्यौंश्रीअरधंगा ॥ ४६ ॥ कहाऔरसुरनरप्रियकरीहैं ॥ जे
बापुरेंआपुहीमरीहैं ॥ अरुतेसुषकोईथिरनाहीं ॥ देषतसकलपलकमेंजांहीं ॥ ४७ ॥ मेरोदृष्टीदु
षिसबअवैं ॥ कालाधीनकहांसुषपावैं ॥ तातैंमेंयहनिश्चैंजांनी ॥ क्रपाकरीहैंसारंगपानी ॥ ४८ ॥ जि
नमेरेवैरागउपायौ ॥ अपनेंचर्णकमलचितलायौं ॥ यहहरिक्रपाविनानहींहोई ॥ जोवैंरागलहैंनरकोई
॥ ४९ ॥ जातेंसबबंधनभवनासैं ॥ ह्रदयरमापतिआपप्रकासैं ॥ मेंतोमंदभागनीऐसी ॥ त्रिभुवनमांहिंन
हींकोजेसी ॥ ५० ॥ ताकौंकिसौहरिकौंभजनौं ॥ केसोकालजालकौंतजनौं ॥ परितेंदीनबंधुगोपाला ॥
पतितउधारनपरमदयाला ॥ ५१ ॥ तिनहींआपक्रपायहकरी ॥ जिनमेंरेंउरऐसीधरी ॥ आबलेयापर
सादहिंसीसा ॥ निसादिनभज्यौंचरनजगदीसा ॥ ५२ ॥ जितनेंयादेहिनिरवाहौं ॥ सोईनहिआरंभसबा
हौं ॥ सहजमांहिंजोहरिजीलियावैं ॥ ताकरियादेहविरतावैं ॥ ५३ ॥ याभवकूंपपर्यौनितप्रांनी ॥ विषेआ

वरनदृष्टिछिपांनी ॥ तापरिअजगरकालगिरास्यो ॥ यौंनरबहूतपाससौंपास्यौ ॥ ५४॥ ताकौंहरिविनकौं
नछोडावैं ॥ आपहीकोंनहींछूटनपावैंअरुआपहीआपकौंराषैं ॥ जबसबवस्तुवृत्तदैमैंनाषैं ॥ ५५ ॥
॥२६॥ जबहीहरिकीसिरनहींआवैं ॥ तबहींआपहींअपुछोडावैं ॥ वेप्रभूनिजानंदमयदेवा ॥ कहांकरैंकोतिनकी
सेवा ॥ ५६ ॥ परिसबजगतकालछिटकावैं ॥ हरिकीसिरनआपुसुषपावैं ॥ तातैंऔरसकलकौंत
जौं ॥ प्रेमभावहरिचर्णानिभजौं ॥ ५७ ॥ याविधिआपुहींआपउधारौं ॥ आपनहींभवसागरडारौं ॥
॥ अवधूतउवाच ॥ ॥ योंपिंगलापरमगतिपाई ॥ दुहूंलोककीआसामिटाई ॥ ५८ ॥ सीतल
व्हैंसेजामेंगई ॥ परमानंदहिप्रापतभई ॥ यहशिष्यामैंयातेंलीनी ॥ भलीजानीउरस्थिरकीनि ॥ ५९ ॥
ज्यौंलगीआसकरैंनरकोई ॥ त्यौंलगिसुषीकदेनहींहोई ॥ जबहींसकलआसाछिटकावैं ॥ तबततकाल
परमपदपावैं ॥ ६० ॥ ॥ गुरूसतरमो ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहगुरूसत्रहकीकही ॥
शिष्योंमेंसमुझाई ॥ अबऔरनकोकहतहौं ॥ सुनियोहितचितलाई ॥ ६१ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेम
हापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानउद्धवसवोदअवधूतोतिहासोपाष्यानेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥
श्रीधरनवमेंध्यायमैंशिक्षाकहींअनूप ॥ गुणचौवीसौंसुनतहींभयोक्रतारथभूप ॥ १ ॥ ॥ अवधूतउवा
च ॥ चौपाई ॥ ॥ जोजोहितकरिसंग्रहकरैं ॥ सोईसोअतिदुषविस्तरैं ॥ जबहिहितसंग्रहछिटकावैं ॥२६॥
॥ तबअपारसुपसागरपावैं ॥ १ ॥ कुररपंषीकहूंआमिषपायौ॥सोलेउड्योबहुताहितलायौ॥ तबबहूतेंकुर

रनिदुपदयौ ।। आमिषतज्यौंसुषीतनभयौ ।। २ ।। यहमैंशिष्याकुररतैंपाई।।तातैंसंग्रहकरौनकाई ।। ।।
गुरुअठारमो ।। १८ ।। ।। बहुरिशिष्यबालकतैंपाई ।। मेरेउरजातैंमातिआई ।। ३ ।। नमेमानअ
पमानहींजांनौ ।। चिंताकछूचिंतनहींआनौ ।। निशदिनरहोआतमारामा ।। कबहूंकछूनउपजैंकामा ।।
४ ।। याभवमांहिद्वैकौंसुषहैं ।। औरसकलजीवनिकौंदुषहैं ।। उद्यमरहितबालकमतिहीनां ।। अरुजोगु
णातीतपदलीना ।। ५ ।। ।। गुरुउगणीसमो ।। १९ ।। चौपाई ।। ।। एकविप्रकेहुतिकुमारी ।।
ताविवाहकीविप्रविचारी ।। ताकेमातपिताएकवारा ।। औरगांमकीहूंकांमसिधारा ।। ६ ।। समाचारए
कविप्रनिपाई ।। व्याहकाजतिनकैंघरआएं ।। कन्यावचनाकिसासौंभाषें ।। तिनतौंद्विजआदरकरीराषैं ।।
७ ।। तबतिनकैंभोजनकीधारी ।। चावरषोटनलगीकुमारी ।। तबताकैकरज्यौंज्यौंदोलैं ।। त्यौंहींत्यौंकर
कंकनबोलैं ।। ८ ।। तिनलजितव्हैंसकलउतारें ।। द्वैद्वैदहुंहाथनिमेंधारैं ।। बहुरिलगिजबचावरछरनैं ।।
तोहूलगिशब्दतैंकरनैं ।। ९ ।। तबतिनएकएकहींराष्यौं ।। चुपकरिरहैंबहुरिनहींभाष्यो ।। मैंविचरतहों
इछाचारी ।। तातैंदेषित्हृदयमैंधारी ।। १० ।। बहुतनिसंगबढैंबकवादा ।। द्वैजैंहूतैंहोईअनुवादा ।। तातैं
रहैंअकेलाजोगी ।। सदाविचारब्रह्मरसभोगी ।। ११ ।। ।। गुरुवीसमो ।। २० ।। चौपाई ।। आस
नप्रांनदेहमनबंधैं ।। दृढवैरागत्हृदेमैंसंधे ।। निहचलव्हैंनितब्रह्मविचारैं ।। यौंक्रमक्रमरजतमकौंजारैं।।१२
।। त्यौंत्यौंनिहचलव्हैसमाधी ।। तजतेजावेसकलउपाधी ।। तबज्योंपावकईंधनहींना ।। त्यौंहोवैनिजपदमें

लीना ॥ १३ ॥ तवकबहूंकछूदैतनजानै ॥ सिलासमानदेहगुएभानें ॥ ज्योंआगेंव्हैंनृपतिगयौ ॥ सेना
शब्दबहुतविधिभयौ ॥ १४ ॥ परिसरकरभेदनहींपायौ ॥ याविधिसरमैंचित्तलगायौ ॥ एशिष्यलईमें
यातें ॥ निहचलबुद्धिभईममतातैं ॥ १५ ॥ ॥ गुरुएकवीसमो ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ज्यो
लोकनितेंडरैभुजंगा ॥ बसैंगुहामेंरहेअसंगा ॥ सावधानआतिथोरोबोले ॥ गत्यादिकअंतरनहींखोलें ॥
१६ ॥ यहआरंभदुषकौमूला ॥ तेआरंभेजेनरभूला ॥ सरपपराएग्रहमेंरहें ॥ याविधिमुनीअहीशिष्यागहें
॥ १७ ॥ ॥ गुरुबावीसमो ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ॥ एकेआपनिरंजनदेवा ॥ जाकौंकोइलहैंनहीं
भेवा ॥ आपहींतेंमायाविस्तारें ॥ सतरजतमबहुभेदपसारें ॥ १८ ॥ बहुरिंआपहींसबसंग्रहें ॥ निजानं
दमयएकैरहें ॥ तातेंएसबमिथ्याजांनौ ॥ याकौंकरतासोंसतमांनौ ॥ १९ ॥ यहशिष्यामकरितेंलेवें ॥
सबतेंदरेंब्रह्मकौंसेवें ॥ ॥ गुरुत्रेवीसमो ॥ २३ ॥ ॥ जहांजहांयहमनकौंधारें ॥ निसवासरकबहुं
नहींटारै ॥ २० ॥ रागद्वेषभयैक्यौंहिहोई ॥ होतरूपतांहींकोसोई ॥ भृंगिकीटहुंतेयहलीनों ॥ तोमनहरि
चर्णैथिरकीनों ॥ २१ ॥ ॥ गुरुचोवीसमो ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ यहचौवीसगुरुनकीशि
ष्या ॥ तोंसोंमेंभाषंदृढदिष्या ॥ अबतनतेंसीष्योंसोंकहों ॥ तेरेंसबअज्ञानहींदहों ॥ २२ ॥ मे
रीदेहमोहीसमझावें ॥ ह्रदयज्ञानवैरागउपावें ॥ ज्यौंबालापनगयोविलाई ॥ त्यौंअबयहजोबनबी
जाई ॥ २३ ॥ आवेजरामरणतेआगैं ॥ बहुविधिदुषदेकौंलागैं ॥ स्वानसृगालनिकौंयहभक्षा

तिनसौंप्रीतनजोरेदक्षा ॥ २४ ॥ पुत्रकलत्रअर्थपशुगेहा ॥ कुलकुटुंबअबअरुसेवकजेहा॥ तिनसौंमि
लिजादेहाहिसेवैं ॥ सोईअंतमहादुषदेवैं ॥ २५ ॥ आगेकुबहूंकर्मकमावैं ॥ अबजमकेदरबारपठावै
॥ रसनिमितषैंचैंनितरसना ॥ प्राणसदाचाएजलअसना॥२६॥ नेनरूपअरुशब्दहिंश्रवनां ॥ इंद्रियचा
हैंनारिकौंवरना ॥ त्वचारूपरसनासिकागंधा ॥ चरनगवनकरकारिहैंधंधा ॥ २७ ॥ याविधिसबमिलि
लूटेताकौं ॥ बंध्योदेहसौंदेषेजाकौं ॥ तातैंनेहदेहकौंतजिये ॥ सदानिरंतरहरिकौंभजिये ॥ २८ ॥ हरि
जबमायागुणविस्तारै ॥ तबनानाविधिदेहसंवारैं ॥ तिनतिनमनसंतुष्टनभयौ ॥ बहूंयौमानवतननिरमयौ ॥
२९ ॥ ताकौंदेषिपरमसुषपायौं ॥ तामेंअपनोधामबनायौ ॥ तबहूंरिजीबोलेयहबानी ॥ जोप्रगटयहबेद
बखानी ॥ ३० ॥ मोहीलहैंसोयाकरिलहै॥ याकरिसबभवबंधनदहैं ॥ जबमेरोहितकरैंउपायी ॥ तबमैं
याकौंकरौंसहाई ॥ ३१ ॥ तातैंयहअतिदुर्लभदेहा ॥ श्रीभगवानरच्योंनिजगेहा ॥ अतिदुर्लभकिहूंजत
ननपावै ॥ जोपावतोथिरनरहावैं ॥ ३२ ॥ प्रतिदिनमृत्युनिरंतरग्रासैं ॥ एकदिनांततकालबिनासैं ॥ ज
रारोगभयसोकनिधाना ॥ जामेंपलकसुषीनहिप्राना ॥ ३३ ॥ तातैंताहीपाईंकरिराजा ॥ करिलीजीमैं
आपनोंकाजा ॥ जातैंयहछूटेसंसारा ॥ जाकेदुषकौंवारनपारा ॥ ३४ ॥ निशदिनदेवनिरंजनभजियैं ॥
व्हेभयभीतविषैसबतजियैं ॥ विषयषानपानसुतदारा ॥ एसबदेहनिवारंवारा ॥ ३५ ॥ तातैंत्यागसकल
कौंकीजै ॥ हरिकेचरणकमलचितदीजैं ॥ याविधिईनतोंशिष्यापाई ॥ तबमैंऔरसकलछिटकाई ॥

॥ ३६ ॥ भूवमेविचरौंव्हैनिहसंगा ॥ यातनहूकौंछांड्यौसंगा ॥ सदारहौंहारिचर्णानिवासा ॥ बहुविधिदे
ष्यौंसकलतमासा ॥ ३७ ॥ बहुतगुरुकीतैपूरणज्ञाना ॥ जहांतहांलेवेंसाधुसुजाना ॥ छूटैअहंकारअरु
ममता ॥ व्हदयआनिविराजेसमता ॥ ३८ ॥ निरगुनसगुनभेदपहिचाने ॥ सारअसारअस्थिरास्थिर
जानें ॥ जहांतहांलेलेदृष्टांता ॥ संसैद्वैतमिटावेसांता ॥ ३९ ॥ पारिएपरमारथगुरुनाहीं ॥ एसबगुरुहैसत
गुरुमाही ॥ सतगुरुतेंसबज्ञानहिंपावें ॥ तबसनजगअग्यानमिटावें ॥ ४० ॥ तातेंमेरेसदाआनंदा ॥ व्ह
दयविराजैपरमानंदा ॥ याविधिजेजेहरिकौंसेवें ॥ तिनकौंहरिचर्णानिजदेवें ॥ ४१ ॥ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसेंजदुकौंबचनसुनाये ॥ मनकेभ्रमसंदेहगमाये ॥ राजाबहुविधिपूजाकी
नी ॥ करिप्रणामविनतीकीनी ॥ ४२ ॥ तबराजाकौंकरिसनमाना ॥ दत्तात्रयमुनिकीयोपयानां ॥ राजा
वचनधारिउरमांहीं ॥ सबकौंसगतज्योंखिनमाही ॥४३ ॥ ब्रह्मदृष्टिसबहीमेंआंनी ॥ ऐसोभयोपरमवि
ज्ञानी ॥ सोराजाजदुवडोहमारौ ॥ जिनअपनौभवसंकटटारौ ॥ ४४ ॥ तातेंउद्धवऔरनकोई ॥ गुरु
आपुनोआपुंहिंहोई ॥ आपुहिबूडेंआपुहितरैं ॥ आपुहिजमेंआपुहिमरैं ॥ ४५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
यहभाष्यौविज्ञानमय ॥ सबअद्वैतउपाई ॥ अबतोसौंसाधनकहौं ॥ बहुतभांतिसमुझाई ॥ ४६ ॥ ॥
इतिश्रीभागवेतमहापुराणेएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेनवमोऽध्याय ॥ ९ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ हो
तदेहसंबंधतें ॥ याकौंसंसृतिकाल ॥ अधिरदशमेंध्यायमें ॥ बरणतकृष्णकृपाल ॥ १ ॥ ॥ श्रीभ

गवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनउद्धवअबसाधनकहौं ॥ तेरोसबसंदेहहौंदहौं ॥ जातेंउपजतब्र
ह्मगिनाना ॥ छूटैऔरसकलभ्रमनाना ॥ १ ॥ ममभक्तनिजमारगभाषें ॥ तेसबतत्त्हदयबीठिमेंआपें ॥
तेकहियेंआतमकेधर्मा ॥ औरसबैबंधनकेकर्मा ॥ २ ॥ तिनाकौंसावधानव्हैजानें ॥ वर्णाश्रमकुलमें
थ्यामानें ॥ जैजैबहूआरंभनिकरैं ॥ सुषचाहैंनिसदिनदुषभरैं ॥ ३ ॥ आगैंकौंबंधनउपजावैं ॥ तिनकेसं
गजमदूरैंआवैं ॥ योंविचारीसबआरंभतजैं ॥ व्हैनिहकामचर्णममभजैं ॥ ४ ॥ जहांलगेंहैंनानाबूधी ॥
सोउद्धवसबजानकुबुद्धी ॥ द्वैतभावसोंभ्रमकारिजानौ ॥ सुपनमनोरथश्रमकारिमानौ ॥ ५ ॥ तातैंऔरक
र्मसबतजो ॥ नितनैमित्तिककछुएकजो ॥ तेउकछूसत्यनहींजानैं ॥ करैंतोकरैंनहींतोभानैं ॥ ६ ॥ भ
क्तिमाहींज्योअंतरपरैं ॥ तेतोभूलिनकबहूंकरैं ॥ जोजासमयनअंतरजानैं ॥ तोतासमयसहजमेंठानैं ॥
७ ॥ यमनिमांहींनिहचलचितधरें ॥ नियमनिकौंभावैंतोकरैं ॥ ब्रह्मविज्ञगुरूसरनहींजावैं ॥ तातेंभेदस
कलकौंपवें ॥ ८ ॥ यमअरुनियमकछुनाहीसेवैं ॥ सदगुरूकहेंशिष्यसोलेवैं ॥ मानरहितमच्छरनहीजा
नैं ॥ तनमनअरापिप्रीतिकोठानैं ॥ ९ ॥ जहांतहांतेंममतापरिहैरैं ॥ सावधानआलसनहिंकरें ॥ तजे
असूयावृथानबोलें ॥ तनमनानिहचलकदैनडोलैं ॥ १० ॥ श्रद्धासहितआसक्तीहोई ॥ गुरूचर्णनिशि
द्यसेवेसोई ॥ दारासुतावितगेहकुटुंबा ॥ सकलभूतआतमापितुअंबा ॥ ११ ॥ तिनसबहीनकौंसमकरि
देषे ॥ मेमेरोकारिकदैनलेषैं ॥ रहेंउदासआसापरिहरैं ॥ निसिदिनब्रह्मविचाराहिकरैं ॥ १२ ॥ सूक्ष्म

स्थूलदेहद्वैजेंहैं ॥ मर्मरूपमायाकेतेहैं ॥ इनिदूनौतैंआतमदूर ॥ स्वप्रकाशचैतनभरपूर ॥ १३ ॥ स्थूल
शरीरप्रगटजडएहा ॥ चैतनकरैताहीवहदेहा ॥ सोवहतनजडहैअंगा ॥ चेतनहोईआतमासंगा ॥ १४
सोआत्मादुहूतैंन्यारा ॥ दहुंप्रकासकदहुंआधारा ॥ ज्यौंएककाष्टअनलपरिजरैं ॥ सोदूजेप्रकासतकरैं
॥ १५ ॥ परीसोअनलदुहूंतैंन्यारा ॥ स्वप्रकाशआतमआधारा ॥ बहुधासोबहुकाठनिसंगा ॥ पावैउ
तपतिस्थितिअरुभंगा ॥ १६ ॥ स्यौंद्वैतनहारिमायाकीये ॥ तेआतमाआपुकरिलीये ॥ तिनसंगजन्मम
रणदुपावैं ॥ लहैंआनंदजबाहिछिटकावैं ॥ १७ ॥ तातैंबहूविधिकरैंविचारा ॥ आतमजानैंसबतैंन्या
रा ॥ एकअजन्माअरूअविनासी ॥ चैतनघनपूरणसुषराशी ॥ १८ ॥ तनउपजैविनसैंबरतांही ॥
परमअसूधशुधनकांहीं ॥ सकलविकारनिकौंसंघाता ॥ प्रगटदिसैंआवतजाता ॥ १९ ॥ मोसोंयासों
केसोसंगा ॥ मेचेतनयहजडबहुरंगा ॥ यौंविचारिंत्यागैंतनममता ॥ आतमदृष्टि सकलमेंसमता ॥ २०
याविधित्तदयहोईथिरज्ञाना ॥ मिलैब्रह्मछूटैसबनाना ॥ प्रथमअरणीआस्थिरगुरुदेवा ॥ दूजीशिष्यकरै
तिनसेवा ॥ २१ ॥ गुरुकेबचनश्रवनमंथाना ॥ याविधिउपजैंपावकज्ञाना ॥ उपजैंज्ञानतमकेगुनदहैं ॥
कर्मबीजकोईनहींरहै ॥ २२ ॥ तबज्यौंपावकतेजसमावैं ॥ इंधनाविनानपलकरहावै ॥ स्यौंआतमांब्रह्ममय
होई ॥ इंधनकर्मभस्मकरीसोई ॥ २३ ॥ अरुजेमूढनयहविधिजानैं ॥ तेबहुविधिकर्मनिकौंठानैं ॥ तें
कर्मनिकैंफलनिभोगावैं ॥ जन्ममरणकौंअंतनआवैं ॥ २४ ॥ जहांजहाजायेतहांतहांकाला ॥ निशिदिन

रहैसदांबेहाला ॥ यहजगदीसेंत्यौंकेंत्यौंहिं ॥ परिएकोपलरहेनयौंही ॥ २५ ॥ औरैंऔरहोईअकारा
॥ तिनसंगातिमनबहूतप्रकारा ॥ कबहूंज्ञानत्दृदैनाहिंआवैं ॥ जन्मजन्ममरिमरिदुषपावैं ॥ २६ ॥ कर्मनि
जोकर्मनिआचरैं ॥ सुषआरुजोदुषभोगनिकरैं ॥ एचारौदीसेपरितंत्रा ॥ तातेंसबतजियैंयहमित्रा ॥
२७ ॥ जेपंडितश्रुतिस्मृतिजानैं ॥ तत्वलहैंविनुकर्मानेठावैं ॥ तेमूरषदेहाअभिमानी ॥ आपुहिआपकाहा
वतज्ञानी ॥ २८ ॥ हरिजनसंगनकबहूकरैं ॥ तत्वनसुनैंकर्मविस्तरैं ॥ तिनतेंभलेजेकच्छूनहिंजांनैं ॥ त
त्ववचनसुनित्दृदयेंआनैं ॥ २९ ॥ जद्यपिअंतसुपनिकौंजांनैं ॥ अरुक्षणभंगुरदेहनिमांनैं ॥ परिसोत
त्वनसमझेंतेऊ ॥ जातेंलहैंभक्तिकोभेऊ ॥ ३० ॥ कालमृत्युजाकौंनित्यग्रासैं ॥ ताकौंकहोकहांसुखवा
सैं ॥ ज्यौंकोईमारनकौंलीजैं ॥ सूलीनिकटषरोलेकीजैं ॥ ३१ ॥ अरुताकौंजोभोगभोगावैं ॥ सोकि
धौंकहौंकेसोसुषपावैं ॥ अरुयौंहीनस्वरपरलोका ॥ मदमत्सरनिंद्याभयशोका ॥ ३२ ॥ तिनकेहेतज
तनबहूकरैं ॥ सिद्धनहोईविघनआतपरैं ॥ ज्यौंषेतिमेंविघनअनेका ॥ त्यौंस्वर्गादिकलहैंकोएका ॥ ३३
॥ अरुजोलह्यौंतोथिरनाहीं ॥ देषतविनसीजाईपलमांही ॥ ईहांयज्ञकरैंबहुकोई ॥ अरुजांअंतराईन
हिहोई ॥ ३४ ॥ तबसोस्वर्गलोककौंजावैं ॥ व्हैकरिदेवदेवसुषपावैं ॥ अपनेंपुण्यनिकौंउपजायौं ॥ उत
मजाहींविमानहीपायौं ॥ ३५ ॥ बहुगांधर्वगानकौंकरैं ॥ बहुसुंदरनारिमनहरैं ॥ इच्छाहोवेंतहांचालिजा
वें ॥ सहितविमानाविलंबनलावैं॥ ३६ ॥ अमृतपानातिहानितकरैं ॥ वस्त्रआभर्णदेहबहूधरैं ॥ योनितमगन

वहुतसुनगवें ॥ परवेकीकछुचितनआवें ॥ ३७ ॥ जेतोंपुंजईहाकोहोई ॥ तेतोरहेस्वर्गमैंसोई ॥ पुन्य
क्षिणपुनिहोवेजवहीं ॥ कालतहांतेंढाहेतवहीं ॥ ३८ ॥ सोसुषकहोतज्यौंवयौंजावें ॥ तेसुषकीकच्छुकह
तनआवें ॥ रह्योचाहेंपरिक्यौंकारिरहैं ॥ कालअधीनमहादुषलहैं ॥ ३९ ॥ कोईसुषपावेंकहूंजेतौं ॥
छिनलियैहोवेंदुषतेतौं ॥ सोतजिस्वर्गभूमिमेंआवें ॥ पीछेंजोनिअनंतनिपावें ॥ ४० ॥ यहुभाषीविधिकी
गतितोसों ॥ अवनिषेधकसुनियोमोसों ॥ जोकुसंगमैंपानीपरें ॥ तोबहुभांतिअधर्मनिकरें ॥ ४१ ॥
णछेकामइंद्रियआधीना ॥ अस्त्रीलंपटलोभीअरुदीनां ॥ बहुजीवनकीहिंसाकरें ॥भूतप्रेतगणकौंअनुसरें
॥ ४२ ॥ मेहिएकवसोंसवमांहीं ॥ तिनकेद्रोहनकरमेंजांहीं ॥ बहूरिआनिथावरतनलहैं ॥ जन्मजन्म
वहुसंकटसहैं ॥ ४३ ॥ तातेंविधिनिषेधजेकरें ॥ तेसवजन्ममरनमेंपरें ॥ कर्मकरेंतिनतेतनधरें ॥ तनध
रिधरिवहुदुषसोंमरें ॥ ४४ ॥ तातेंप्रवृत्तिमेंसुखनाहीं ॥ भावेंब्रह्मलोकाकिनजांहिं ॥ लोकपालसवलोक
समेता ॥ इतनौरहैंब्रह्मादिनजेता ॥ ४५ सोईब्रह्माअंतनरहें ॥ तीतरबाजकालत्योंगहें ॥ अमरहेंमेरेंभ
यमांहीं ॥ पवनवहेंनिहचलपलनाहीं ॥ ४६ ॥ सूर्यचंद्रएकरसचलें ॥ मरजादातेसिंधुनटलें ॥ मृत्युनि
रंतरसवकौंग्रासै ॥ मेरेंकालरूपतेंत्रासैं ॥ ४७ ॥ तातेंकहूंनसुषप्रवृत्ती ॥ सुषचाहैसोगहेंनिवृत्ति ॥ अ
रुइंद्रियकर्मउपावें ॥ तिनकौंरजसततमवरतावें ॥ ४८ ॥ सोआतमाइंद्रियवसहोई ॥ तातेंसुषदुपपावें
सोई ॥ परिआतमाअकरताजानौं ॥ भोगरहीतताहींतेंमानौं ॥ ४९ ॥ कर्मअरुभोगादिकहेंजेते ॥ इंद्रि

यअरुगुणकृतसबतेंतें।।ज्यौंलगीयहइंद्रियगुणबंधा।।त्यौंलगिमिटेनगुणसंमंधा ।। ५० ।। तनमनबंधमिटेंनहीं
ज्यौंल्यौं।।नानाभांतिबहुतविधितोलौं।।नानाभावरहैंजबलगैं।।पराधीनआतमातबलगैं।।५१।।पराधीनजबलगी
यहरहैं ।। तबलगीकालनिरंतरगहैं।।तातेंज्योप्रवृत्तिरतहोवैं।।जुगजुगजन्मजन्मतेंरोवैं ।। ५२ ।। प्रथमहूंतो
मैंएकनिरंजन ।। ताहीतेंउपज्योंयहअंजन ।। कालआत्मालोकअरुवेद ।। धर्मसुभावबहुतविधिभेद ।।
५३ ।। एसबमायासत्यनकोई ।। तातेंबुधअनुरक्तनहोई ।। एकनिरंजनआत्माजानैं ।। तबसबसंकट
भवकैभानैं ५४ ।। लोकअरुवेदवासनातजैं ।। इंद्रियदेहविषैनहींभजैं ।। मनपहुंचेसोमिथ्यालेषे ।। मनाती
तसोजहांतहांदेषे ।। ५५ ।। ब्रह्मअरुआतमाएकविचारैं ।। याविधिसकलउपाधहीजारैं ।। तबहीएकब्र
ह्मकौंपावैं ।। छूटेंद्वैतबहुरोनहीआवैं ।। ५६ ।।यहआतमाअरुदेहविवेका ।। याकौंजानीयेंएककौंएका ।।
ऐसेंबचनकहैंजबकृष्ण ।। उद्धवदासकरितबप्रष्ण ।। ५७ ।। ।। उद्धवउवाच ।। ।। चौपाई ।।
हेप्रभुजोयहसारौंमर्मा ।। इंद्रियदेहविषेगुणकर्मा ।। अरुआतमाअनिहअबंधा ।। ताकौंकियौंकोनविधिबं
धा ।। ५८ ।। अरुजोबहुरिज्ञानकौंलहैं ।। छोडिउपाधिदेहमेरहैं ।। सोबहुर्‍यौक्यौंलिप्तनहोई ।। अरु
क्यौंकारिजानीजैंसोई ५९ ।। कैसेंबिचरैंकैसैंरहैं ।। कैसेजीवकैसैंकहैं ।। कैसेंपहरेंकैसेंसोवैं ।। कैसेंसुनै
कोनविधिजोवैं ।। ६० ।। अरुआतमएकैदूनाहीं ।। एकमुक्तक्यौंएकबंधाहीं ।। एकेबंधेंएकक्यौंमुक्ता
एतोबहूतएककौंउक्ता ।। ६१ ।। गुणअनादिआत्माअनादि ।। तातेंयहतोबंधनआदि ।। नित्यमुक्त

क्योंकहोयेंदेवा ॥ याकौमोहीबतावोभेवा ॥ ६२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवनिजभक्तिकैंसुनिकारि निर्मलबैन ॥ ताकौंप्रतिउत्तरकह्योंहारेजीकरुणाअयन ॥ ६३ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानउद्धवसंवादेभाषाटीकायांदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ बंधमोक्षहरिभक्तिभक्तइनकेलक्षणसार ॥कहेग्यारमैंध्यायमेंश्रीधरनंदकुमार ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ चौपाई ॥

॥ सुनिउद्धवअबपरमगीयाना ॥ जातेंभेदामिटेतुमनाना॥बंधअरुमुक्ततोहिसमझाऊं॥ तेरोसबअज्ञान मिटाऊं ॥ १ ॥ बंधमुक्तजौंकहियेंकोई ॥ सोतोसकलगुणनितेंहोई ॥ तेसबगुणमायाकेजानौ ॥ इनतें दूरिआतमामानौ ॥ २ ॥ सोकअरुमोहजन्मरुसुष ॥ भयमरनादिकअरुबहुदुष ॥ एसारेमायाकृतके वल॥सदाएकआत्मानिहकेवल ॥३॥ ज्यौंसपनैसुषदुषअनेका॥ तिनमैंआतमकौंनहीएका ॥ तेसबबुधिअरुमनकौंहोवैं ॥ इंद्रियदेहप्रगटतैंसोवैं ॥४ ॥पुनिबुध्यादिककछुनहिरहैं॥ताकौंप्रगटसुशोपतिकहैं ॥ तवयहआतमानिरंतरहोई ॥ परिताकौसुषदुषनहींकोई ॥ ५ ॥ ज्यौसुपपतिमेंआतमरहैं ॥ स्यौंव्यवहारपीछेंलगहैं ॥ परिताकौंकोईनविकारा ॥ एसबमायाकैंव्यवहारा ॥ ६ ॥ परिआतमाआपनहिमानैं तातैंसुषदुषबहुविधिजानैं ॥ परिआतमाएकरसानित्य ॥ बंधमोक्षएसकलअनित्य ॥ ७ ॥ उद्धवजानौएकअविद्या ॥ अरुदूजीजोकहीएविद्या ॥ एहैंदोऊमेरीशक्ती ॥ इनमेंसबहिंनकीयाशक्ती ॥ ८ ॥ बंधनकर्योंचाहौंमेंयाकौं ॥ मेरिअविद्यापठाऊंताकौं ॥ अरुजाकेंबंधनहीमिटाऊं ॥ ताकौंविद्याशक्तिप

टाऊं ॥ ९ ॥ एदोऊमुक्तअरुबंधा ॥ तेममशक्तनुंकैंसंबंधा ॥ आतमहेंसोमेरोरूप॥ सबतेंन्यारौपरम
अनूप ॥ १० ॥ ज्यौंशशिकैप्रतिबिंबअनेका ॥ परितेंबहुतनहिंसबएका ॥ अरुजाजाकोघटबिनसाई
॥ सोईसोसाशिमाहीसमाई ॥ ११ ॥ त्यौंसबआतममेरोअंसा ॥ परिबटसंगलहैंदुषसंसा ॥ घटकौंना
सकरैंसोतबहीं ॥ विद्याशक्तिजांहिंयोजबहीं ॥ १२ ॥ सोईसोतबसोकौंलहैं ॥ औरसकलभवहिमेरे
हैं ॥ अरुप्रतिबिंबघटनिहुंमांही ॥ सदाअलिप्तलिप्तकहुंनाहीं ॥ १३ ॥ परिघटसंगलिप्तसैंहोवैं ॥ अरु
सौंलिप्तओरऊंजोवैं ॥ त्यौंआतमासकलतैंन्यारा ॥ सदाअलिप्तनलिपैंविकारा ॥ १४ ॥ परियातनमें
आपबंधाना ॥ ताकैंसंगलेहैंदुषनाना ॥ अबमैंबंधमुक्तकोकहुं ॥ तेरेंसबसंदेहहोदहुं ॥ १५ ॥ एकदेह
मेंद्वैकोवासा ॥ परमात्माअत्मकैंपासा ॥ ज्यौंद्विपंषीरहैंतरुमांहीं ॥ तरुतैंभिन्नलिप्तकहुंनाहीं ॥ १६ ॥ दो
ऊचैतनएकसमाना ॥ सषारूपएकहिअस्थांनां ॥ आपहुंतैंतिनबासाकीयो ॥ तिनमैंएकतरुहिंचितदीयो
॥ १७ ॥ देहवृक्षकैंसुषफलपावैं ॥ तातेंदुषआपुहिंआवैं ॥ तबताकाजकर्मबहुकरैं ॥ तिनतेंजुगजुगजनम
मेंमरें ॥ १८ ॥ देहमरेंमरनौंकरिजानैं ॥ देहजन्मतेंजन्महिमानैं ॥ एसेंसदाबहुतदुषपावैं ॥ द्वैमैंसोअत
मांकहावें ॥ १९ ॥ परमातमादेहतरुमाही सुषफलकबहुंपावैनाहीं ॥ तातेंकछुकर्मनहिमहैं ॥ निजानंद
मयानिहचलरहैं २० ॥ यौंपरमातमआतमजानैं ॥ देहअतीतदूहूंकोंमानैं ॥ सुषफलअहारआरंभानितजैं
॥ मुक्तिहोइपरमात्माबजैं॥२१॥ज्यौंतनमांहिमुक्तिपरमात्मा॥विद्यापाईबसैंत्यौंआत्मा॥ तनमेंहैंपरितनमेंना

 हीं ॥ अपुंहिजानभयोथिरमांहीं ॥ २२ ॥ सुपनदेषिज्योंजागेंकोई ॥ सोसोसुपनचितारैसोई ॥ पारि
सोसुपनदेहअरुसुपनां ॥ मिथ्याजानिभरमतेंउपनां ॥ २३ ॥ अरुजोसहितअविद्याहोई ॥ सोतिनमें
 नाहिंपरिहेंसोई ॥ ज्योंसोवतसुपनांतपावें ॥ ताकौंआपजानिमनलावें ॥ २४ ॥ तनमेंबंधमुक्तजेजीवा ॥
बंधजीवमुक्तसोशिवा ॥ बहुरिकहोंमुक्तिकैलछान ॥ जिनकौंजानिहोइविचक्षन ॥ २५ ॥ देषेसुनेकहें
कछुकरें ॥ सोकछुकत्वदैनहिधरें ॥ सकलअर्थइंद्रियकृतजानें ॥ आपुहिंएकरतासबमानें ॥२६॥
पूर्वकर्मआधीनशरीरा ॥ कर्मकरेंइंद्रियमनसीरा ॥ तनमेंवासकीयोनहिजानें ॥ सुरपआपुहिकरतामानें
॥ २७ ॥ बहुरिमुक्तएसीविधिरहें ॥ अहंकारयातनकोदहें ॥ आसनअटनअसनअरुसघना ॥ दर
सपरसअघानरुवयनां ॥ २८ ॥ इनमेंइंद्रियकौवरतावें ॥ आपनकछुप्रीतिबहुलगावें ॥ रहेंमाहिपरिलि
तनहोई ॥ ज्योंआकाशपवनरावितोई ॥ २९ ॥ विद्यानामप्रसीइकपाई ॥ दृढवैरागरसनचदाई ॥ तासौं
काटेंसंसैसारें ॥ जागिसकलभ्रमभेदनिवारें ॥ ३० ॥ इंद्रियप्रानबुद्धिमनमांहीं ॥ कबहूंकछुवासनानाहीं
॥ सोजद्यपितनहूमेंदरसें ॥ परिसोमुक्तनहीनहींपरसें ॥ ३१ ॥ एकदुष्टतनपीडाकरें ॥ एकबहुतपूजा
विस्तरें ॥ परिनुधरोपतोपनहिंआनें ॥ सकलदेहकृतामिथ्यामानें ॥ ३२ ॥ विधिनिषेधजोकाईकरें ॥
किंवाकहेंग्रंथविस्तरें ॥ सुनिकछुभलोवुरोनाहिदेपें ॥ गुनअरुदोषरहितसमलेषें ॥ ३३ ॥ विधिनिषेधना
हीकछुकरें ॥ नाकछुकहैनत्वदेधरें ॥ निसिदिनरहेंब्रह्मरसमंत ॥ इच्छामेंज्योंजडउनमत ॥ ३४ ॥

ऐसेचिन्हमुक्तिमैंमानों ॥ अरुमुमुक्षकौसाधनजानौं ॥ मुक्तभयेजेंचाहैंकोई ॥ एसचसावधानसाधेसोई
॥ ३५ ॥ निजसबशब्दब्रह्महेंजान्यौं ॥ परिनिजतत्त्वनहींपहचांन्यों ॥ ईनसाधनमांहिरतनाहीं ॥ तिनके
श्रमसबमिथ्याजाहीं ॥ ३६ ॥ शब्दब्रह्मब्रह्मकेकाजा ॥ हरिजीअरुहरिभक्तनिसाजा ॥ तातैब्रह्मविनाश्र
मऐसें ॥ वंध्यागाईसेंईजेजैसें ॥ ३७ ॥ बंध्यागाईदुग्धबिनहोई ॥ पराधीनतनराषेकोई ॥ असतनारी
पुत्रअन्याई ॥ धर्मबिहूंनोंधनअधिकाई ॥ ३८ ॥ ज्योंइनतेंदिनदिनदुषहोई ॥ कबहूंसुषपावैंनहींकोई ॥
मोहिविनात्यौंबहुविधिवानी ॥ केवलबंधनहींकौंजानी ॥ ३९ ॥ मातेंजगतउतपतिसिंघारा ॥ सबप्रतिपाल
नविविधप्रकारा ॥ किंवाजन्मकर्मबहुतेरें ॥ जावानीमैंनाहींमेरें ॥ ४० ॥ मेरेनानाविधिसंबंधा ॥ जावानी
मैंनाहींनंधा॥बंध्याबानीताहींविचारैं ॥ निहफलजांनिनगंडितधारैं ॥ ४१ ॥ याविधिजानिबहुतप्रकारा ॥
बहुतभांतिकरिबहुतविचारा ॥ जांहांतांहातैंमनाहिनिवारैं ॥ पूरणएकब्रह्ममेंधारें ॥ ४२ ॥ जोतज्ञाढूजेना
नाअर्थ ॥ मनधारणकौंनहींसमर्थ ॥ सोममहेतकर्मसबकरैं ॥ प्रेममगनफलजसपरिहरें ॥ ४३ ॥ औ
रेकर्मअकर्मविकर्मा ॥ बंधनजानितसैंसबभर्मा ॥ जाहिंतैंउपजैंममभक्ति ॥ तांहिमेंराषेंअनुरक्ति ॥४४
॥ श्रद्धासहितसनेगुनमेरें ॥ जिनतेंकर्मनआवेनेरें ॥ गावेसमरैंअस्तुतिकरैं ॥ प्रेमसहितनिशदिनविस्तरैं
॥ ४५ ॥ जेकछुकर्मकामअरुअर्थ ॥ करैसकलतैंमेरेंअर्थ ॥ ममआधीननिरंतररहैं ॥ मनक्रमवचन
आननहींगहें ॥४६॥ याविधिहोवेनिश्चलभक्ति॥ औरसकलतैंसकलविरक्ती ॥तवमेरोनिजरूपाहेंजानें॥

...नामदहीभानैं ॥ ४७ ॥ तबताहीयदमाहींसमावैं ॥ जातैंजन्मफिरिनहींआवैं ॥ परियहसतसंगतवैं
होई ॥ संतसंगतीविनुलहैनकोई ॥ ४८ ॥ भक्तानिविनाभक्तिनहींपावैं ॥ भक्तिविनानहींमोमैंआवैं ॥ ता
तैंसतसंगतकूकरैं ॥ दूजोजतनसकलपरिहरैं ॥ ४९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसुनिहरजीकेवचन ॥ म
नमेंबाढीप्यास ॥ तबभक्तनीअरुभक्ति ॥ कैंलछनपूसेदास ॥ ५० ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ हेप्रभूपूरणपरमअनंता ॥ याजगबहूभांतीकेसंता ॥ जाकौंसंतकहौतुमदेवा ॥ ताकौंमोहींबतावोभे
वा ॥ ५१ ॥ अरुजोभक्तिकौंनजोठानैं ॥ तातैंतुमनिजरूपहिंजानैं ॥ तबउद्धवकोंदेबहूमाना ॥ कृपासिं
धुबोलेभगवांनां ॥ ५२ ॥ ॥श्रीभगवानुउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परमकृपालद्रोहनहींजानैं ॥
क्षमावंतअरुसत्यनपांनैं ॥ निंद्याराहितद्वंद्वसवसमता ॥ परउपकारत्हृदैनहींममता ॥ ५३ ॥ आएकाम
बुद्धिथिररहैं ॥ इंद्रियाजितकौमलतांगहैं ॥ सदाचारसंग्रहनहींजानैं ॥ लघुदीरवक्कबेहुनाहिंआनैं ॥ ५४
॥सीतलत्हृदैंबिचारहीकरैं ॥ धर्मआपनैंदृढताधरैं ॥ सावधानअरुराहितविकारा ॥ धीरजवंतदयाआधि
कारा ॥ ५५ ॥ सोकमोहअरुक्षुधापिपासा ॥ जरामृत्युजीतैंषटपासा ॥ आपुमानअपमानजानैं ॥
औरनकौवहुमानाहिठानैं ॥ ५६ ॥ जोकोईसरणांगतआवैं ॥ ताकौंजीत्यौंज्ञानउपावैं ॥ सबकौंमित्रशु
भाशुभजान ॥ दृढविश्वाससकलभ्रमभानैं ॥ ५७ ॥ ममआधिननिरंतरहैं ॥ साधनसौंबलक...
मोहिकौंकरताकारिजानैं ॥ कबहूंभुलनआपुंआनैं ॥ ५८ ॥ जद्यपि...

बताए ।। तोहूंविधिनिषेधसवतजैं ।। दृढनिश्चलममचर्णनीभजैं ।। ५९ ।। एसौभक्तनिजभक्तकहावैं ।। ताकैंसंगभक्तिकौंपावैं ।। देसरूकालरहितसर्वात्मा ।। चिदानंदमयप्रभुपरमात्मा ।। ६० ।। ऐसोंजानिजा
निमोहिभजैं ।। औरसकलसंकलपहीतजैं ।। सोमेरोकहियैनिजभक्ता ।। तासौंनितहूंजौअनुरक्ता ।। ६१
।। अरूजैएसोमोहिनजानैं ।। परिअत्यंतप्रीतिकौठानैं ।। लेकरिमोहिसकलपरिहरैं ।। तेजनमोहिआपवस
करैं ।। ६२ ।। एभक्तनकैंलक्षनकाहिये ।। मेरिकृपाहूंतेंतेलहिए ।। तिनकौंपाइभक्तिकौंपावैं ।। भक्तिपा
ईममचर्णनिआवैं ६३ ।। तातैंमोहिचहैंजोकोई ।।ममसंतनकौंसेवेसोई ।। आवमेंकहौंभक्तिकेअंगा ।।
जातेंहोवैंमेरोसंगा ।। ६४ ।। ममप्रतिमामेंमोकोभजै ।। मनक्रमवचनफलादिकतजैं ।। हितसौंदर्शपर्शपरि
चर्या ।। अस्तुतिअरूदंडवतसपर्या ।। ६५ ।। मेरीकथाविषेंआतिश्रद्धा ।। मोविनुकछुनकरैंपलअर्धा ।।
मेरेंजन्मकर्मगुनगावैं ।। सदानिरंतरमोकोंध्यावै ।।६६।। तनअरूतनकैंपिछेजेतें।।मोकोंसदांसमरपैंतैतैं ।।
जनमाष्टमीआदिजेपर्वा।।बहूतउछाहकरैंतेसर्वा।।६७।। नृत्यगीतअरूबहूविधिवाजा ।। मंदिरबहुतरूपविधिसा
जा ।। कथाकीरतनबहूविधिचर्चा।।जागरणादिकबहूविधिअर्चा।।६८।। ऐसेजानिबहुतउछाहा।।सबपरवणि
सबविधिनिरवाहा।।मथुरादिकहरिधामनिजावैं।।बहूतभांतिकरिप्रेमबढावै ।।६९।। औरनिकौंआचरणासिषा
वैं।।ठौरठौरप्रतिमापधरावैं।।बहुविधिकरैंबागफूलवाई।।क्रीडाथानसहितचतुराई ।।७०।। पुरमंदिरबहुभांत
करावैं ।। ज्योंहरिअरूहरिभक्तनिभावैं ।। आपमांहिजोंशक्तिनहोई।।तोहुउद्यठानेसोई ।।७१।।बहूविधिम

नें ॥ समदरसनयहपूजाठानें ॥ ८४ ॥ ईनसबठौरनिपूजाकरैं ॥ मेरोरूपत्हदेमेंधरैं ॥रूपचतुरभुजआ
युधचारी ॥ स्यामसरीरपींतांबरधारी ॥ ८५ ॥ सीसमुकुटसुभकुंडलकरना ॥ कौस्तुभआदिबहुविधि
आभरनां ॥ ऐसोरूपसबानिमेंध्यावें ॥ सावधानव्हेंप्रीतिबढावें ॥ ८६ ॥ याविधिवाईकूपसरबागा ॥
जपतपदानदयाव्रतजागा ॥ मेरेहेतकर्मजोकरैं ॥ मोबिनऔरत्हदेंनहींधरैं ॥ ८७ ॥ इनसाधननि
करैंनरजोई ॥ प्रेमभगतिममपावेंसोई ॥ एसाधनकरैंईनभांती ॥ साधुमिलापहोईदिनराती ॥८८ ॥ ति
नतेंऐसीजुगतीपावें ॥ जातेंज्ञानभक्तिउरआवें ॥ तातेंज्ञानभक्तिकौंकारन ॥ एकभक्तभवसागरतारन ॥
८९ ॥ तातेंभक्तनसौंहितलगावें ॥ जिनतेंमेरीभक्तिहिंपावें ॥ तिनकौंबनिजभक्तिकौंनित्या ॥ कबहूंऔ
रनआवेंचेंत्या ॥ ९० ॥ मेउनकोमेरोहेंसोई ॥ ऐसोभेदनजानेंकोई ॥ जोकछुकहोंकरोंमेसोई
॥ जद्यपिमेरेंमननहिहोई ॥ ९१ ॥ मोहिमिलनकोएकउपाया ॥ बहुविधिपोजतऔरनपाया ॥
साधुसंगमिलिभक्तिकरहीं ॥ सोईएकजगतजलचरही ॥ ९२ ॥ भक्तनविनाभक्तिनहिपावें ॥ भक्ती
बिनानहींमोमेंआवें ॥ मोबिनऔरजहांजहांजाईं ॥ तहांतहांकालनिरंतरषाईं ॥ ९३ ॥ यहअतिगोप्य
मतोहैमेरो ॥ मेरेआधीनचितहैंतेरो ॥ तातेंयौंयहतोसोकह्यौं ॥ आगेंकछुकहिवेनहींरह्यौं ॥ ९४ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिगोप्यआपनोमतोतोहीकह्योंसमुझाए ॥ जातेंछूटैंभक्तभयमोमेंरहेसमाए ॥ ९५ ॥
॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

हिमाकहेकहावें ॥ औरनिसौंमेलकरेंकरावें ॥ मंदिरादिवहुभांतिबोहारें ॥ वहूवेधिसींचिधूरनिवारे ॥
॥ ७२ ॥ चित्रविचित्रचोकविस्तारें ॥ व्हैकरिदासआपनिस्तारें ॥ मानरहितकदंभनजानें ॥ जोरछु
करेंसोनहिंवखानें ॥ ७३ ॥ मोकोंकरेंआरतीजासौं ॥ औरकछुनहिंदेषतसौं ॥ ममप्रसादप्रीतिसौंले
वें॥प्रीतिहीनजीवनहींदेवें॥७४॥योंहिज्योंज्योंउपजेप्रेमा॥त्योंत्योंअधिकवढावेंनेमा ॥ममभक्तनिकेरहैआधी
न॥तनमनधनसोंनितलौलीन॥७५॥अरुएकादशठोरनिभद्रा॥ममपूजाकरैरहैंअभद्रा॥सूर्यअग्निविप्रअ
रुगाई ॥ भक्तिवेषआकाशअरुवाई ॥ ७६ ॥ जलअरुधरनीआपमेंयोंहीं ॥ सबनिमांहिममपूजायोंहीं
॥ विद्यायत्रसूर्यकीपूजा ॥ मोकोंछांडिनजानेंदूजा ॥ ७७ ॥ वरषाराजसकरिउपजावें ॥ सात्विकसीतस
वनिवरतावें ॥ तामसग्रीषमसकलविनासें ॥ सकलजगतकोंआपुप्रकासें ॥ ७८ ॥ तातेंमेरीपरमविभूति ॥
ऐसेंजानीकरेंअस्तुती ॥ पावकमांहींहोमकरीज्यों ॥ विप्रनिअतिथिभावभजीजें ॥ ७९॥ तृणजलादि
गाइकीपूजा ॥ भक्तभेषमेंऔरनदूजा॥भक्तभेषनिजवंधवजानें ॥ अतिप्रसन्नव्हैपूजाठानें ॥ ८० ॥ ज्यों
आपनेंवंधुसंवंधी ॥ तिनसौंप्रीतिसबनिहेवंधी॥ तिनकौंवहुतभांतिकरिसेवें ॥तनमनधननिहचलकरीदेवें ॥
८१ ॥ सोंहिभगतआपनेभाई ॥ ऐसेंजानीकरैंअधिकाई ॥ तनमनधनसोंप्रीतिवढावे ॥ जिनतेंमेरेपदहीं
पावें ॥ ८२ ॥ ह्रदयाकासध्यानसोंसेवें ॥ सबआधारपवनचितदेवें ॥ जलाकोजलअरुफूलफलादि॥
भूधरणीपूजेमंत्रादि ॥ ८३ ॥ भोगनिसूंनिजदेहाहिभजे ॥ मोविचअंतरायसबतजें ॥ सबभूतनमेंमोकोंजा

नें ॥ समदरसनयहपूजाठानें ॥ ८४ ॥ इंनसबठौरनिपूजाकरें ॥ मेरोरूपत्हदेमेंधरें ॥रूपचतुरभुजआ
युधचारी ॥ स्यामसरीरपीतांबरधारी ॥ ८५ ॥ सीसमुकुटसुभकुंडलकरना ॥ कौस्तुभआदिबहुविधि
आभरनां ॥ ऐसोरूपसबनिमेंध्यावें ॥ सावधानव्हेंप्रीतिबढावें ॥ ८६ ॥ याविधिवाइकूपसरजागा ॥
जपतपदानदया,व्रतजागा ॥ मेरेंहेतकर्मजोकरें ॥ मोबिनऔरत्हदेंनहींधरें ॥ ८७ ॥ इनसाधननि
करेंनरजोई ॥ प्रेमभगतिममपावेंसोई ॥ एसाधनकरेंइंनभांती ॥ साधुमिलापहोईदिनराती ॥८८ ॥ ति
नतेंऐसीजुगतीपावें ॥ जातेंज्ञानभक्तिउरआवें ॥ तातेंज्ञानभक्तिकौंकारन ॥ एकभक्तभवसागरतारन ॥
८९ ॥ तातेंभक्तनसौंहितलगावें ॥ जिनतैंमेरीभक्तिहिंपावें ॥ तिनकौंबनिजभक्तिकौंनित्या ॥ कबहूऔ
रनआवें,चेंत्या ॥ ९० ॥ मेउनकोमेरोहेंसोई ॥ ऐसोभेदनजानेंकोई ॥ जोव छुकहोंकरोंमेंसोई
॥ जद्यपीमेरेंमननहिहोई ॥ ९१ ॥ मोहिमिलनकोएकउपाया ॥ बहुविधिखोजतऔरनपाया ॥
साधुसंग,मिलिभक्तिकरहीं ॥ सोईएकजगतजलचरही ॥ ९२ ॥ भक्तनविनाभक्तिनहिपावें ॥ भक्ती
बिनानहींमोमेंआवें ॥ मोबिनऔरजहांजहांजाईं ॥ तहांतहांकालनिरंतरषाईं ॥ ९३ ॥ यहअतिगोप्य
मतोहैमेरो ॥ मेरेआधीनचितहैतेरो ॥ तातेंयोंयहतोसोकह्यौं ॥ आगेंकछुकहिवेनहींरह्यौं ॥ ९४ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ बहुरिगोप्यआपनोमतोतोहीकह्यौसमुझाए ॥ जातेंछूटैभक्तभयमोमेंरहेसमाए ॥ ९५ ॥
॥ इतिश्री,भागवतेमहापुराणेएकादश,स्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

॥दोहा॥ ॥ महिमासंगतिसारतैंकर्मफलनकोत्याग॥कहीबारमैंध्यायमैंयथाव्यवस्थालाग॥१॥ ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवगोप्यसुतोसुनमेरो॥पावैंमोहिंमिटेभवफेरो॥आपमिलनकोमार्गदिखाऊं
॥३५॥ ॥औरसकलकुमार्गमिटाऊं ॥ १ ॥ जोगकहीजोअष्टप्रकारा ॥ सांख्यप्रवृत्तिपुरुषविचारा ॥ बहूविधि
वर्णाश्रमकेधर्मा ॥ सकलत्यागिहोवेनिहकर्मा ॥ २ ॥ वेदादिकबहुविद्याषाठा॥जहांलगहैंतपअतिकाठा
॥ होमजज्ञसरवापीकूपा ॥ इच्छादानसमयअनुरूपा ॥ ३ ॥ एकादशीआदिव्रतजेतें ॥ गुपतमंत्रमेरेहै
केतें ॥ ममप्रतिमापूजाआचरणा ॥ तीरथाटननियमयमकरनां ॥ ४ ॥ औरौसमदमआदिकजेते ॥ सा
धनसकलमुक्तकेतेते ॥ इनसबइनतैंमोहिनपावैं ॥ साधूजनपलमांहि ॥ ५ ॥ उनतैंमनकौंसंगतछूटैं ॥ म
मचरणनिमैंचित्तनहीचहूटैं ॥ तातैंमोहीनपावैंउनतैं ॥ पावैवचनसाधूकैंसुनतैं ॥ ६ ॥ साधूऐसेवचनसुना
वै ॥ शत्रूमित्रसुतदुषजनावैं ॥ सारअसारकालनिःकाला ॥साधूदिषावैसबसतकाला ॥ ७ ॥ सबतैंमन
कौंसंगमिटावै ॥ मेरेचरणकमललपटावैं ॥ ऐसीविधभवसागरतारैं ॥ मेरेजनततकालउधारैं ॥ ८ ॥ जे
तेतिरेतरेगेंजेतें॥अरूअबहूतरतेहेंकेते॥तेसबसाधुसंगततैंजानौ ॥दूजोऔरउपायनमानौ ॥ ९ ॥ षगमृ
ग जातूधानअसूरादिक॥चारणसिधनागगुह्यादिक॥अपसराविद्याधरगंधर्वा॥जितजिनपायौंततैंसरवा॥१०
॥वैस्यशूद्रअंतजअरुनारी॥बहूराजसतामसअधिकारी॥जुगजुगजेसतसंगतिआये॥तिनाहितिनमेरेपदपा
ए॥११॥वृत्रासूरवृषपर्वाबानां॥बलिप्रहलादविभीषणजाना॥मयसुग्रीवऋक्षहनुमंता॥गजअरुगीधव्याधअ

वंता ॥ १२ ॥ तुलाधारकुबजावृजगोपी॥ धर्मनिकीसिमाजिनलोपी ॥ जज्ञवंतविप्रनकीबनिता ॥ पुरुष
नकीकिनीअवमनिता ॥ १३ ॥ औरअनेककहांलोकहोयैं ॥ कहतकहूतकहूंअंतनलहीयैं ॥ तिनकछु
विद्यावेदनजानैं ॥ सांख्यरूजोगनहींपहिचांनैं ॥ १४ ॥ जपतपजज्ञव्रतादिनकीनैं ॥ औरनधर्मनकोईची
नैं ॥ परिसोसाधुसंगतिनपाया ॥ तेसबमेरेचर्णनिआया ॥ १५ ॥ अरुतूंउद्धवयौंमातिजानौ ॥ तिनकौ
संगतिमेरीमांनौं ॥ उद्धवसंतअरूमेंद्वैनाहीं ॥ मेहिहोसंतनउरमाही ॥ १६ ॥ किनहूंमिलौधारिकैतन
कौं ॥ मिलकरसोधोंतिनकेमनकौं ॥ ऐसीविधिएकनिकौंतारौं ॥ एकनिसाधूरूपउद्धारौं ॥ १७ ॥
साधूनिव्हेमनकेमलहरौ ॥ सोमनअपनेंचर्णनिधरौं ॥ ऐसिविधिएकानिउद्धारौं ॥ जहानारोताहांमोहिता
रो ॥ १८ ॥ साधूसंगसोमेरोसंगा ॥ साधूसकलहेंमेरोअंगा ॥ तातेंदोउसाधसंगब्यानों ॥ केतोदो
उमेरोतनमानौ ॥ १९ ॥ गोपीगाईवृक्षनवनागा ॥ औरोमूढबुधिबडभागा ॥ ममसतसंगप्रेमातिनबांध्यौं
॥ भावभक्तिमोकोंआराध्यौं ॥ २० औरकछूसाधननाहिजानौं ॥ अरुनहींब्रह्मरूपकरीमान्यौं ॥ परि
तिनकोहितमोसोंभयौं ॥ तातैंसबमनकोमलगयौ ॥ २१ ॥ श्रमहींबिनातिनमोकोपायौ ॥ अतिअपारभव
दुषमिटायौ ॥ जाकौंजोगसांख्यव्रतदाना ॥ जज्ञवेदविद्याविधिनाना ॥ २२ ॥ करिसयांसबहुतदुषगहैं
॥ तेउमोकोंकदेंनलहैं ॥ ताकौंतिनसुषहीमैंपायौ ॥ जेकेवलमनमोसोंलायों ॥ २३ ॥ रामसहितमोहिपा
यौंजबहीं ॥ चलेअक्रूरमधुपुरिंतबहीं ॥ तबतेगोपीमेरेहेत ॥ पाइमुरछाभयीअचेत ॥ २४ ॥ बहुरिस

मझमहादुषपावैं ।। निसवासरममचरणंनिध्यावैं ।। मोहिछोडिसबदुषमयलेषैं ।।२५।। जेनिसिमोसंगपल
सीवीते ।। तेइतिनकौंकल्पव्यतितैं ।।मेरेगुणनिसुनैंअरुगावैं ।। लीलारूपद्ददैमैंध्यावैं ।। २६ ।। कबहूंवि
।।३६।। रहमहादुषरोवैं ।। कबहूंतपतदशोदिशजावैं ।। कबहूंप्रानतनकीभाषैं ।। ममदरशनआशातैंराषैं ।।२७।।
निंदभूपत्रससकलगवांई ।। औरदेहगुनरत्योनकांई ।। तिनकैंदुषतेईजजानैं ।। केमैंतोजोकहावषानैं।।२८
।। विरहप्रचंडअनलअधिकारा ।। सकलविकारभएजरिछारा ।। प्रेमप्रवाहसकलमलछारैं ।। यौमोंचि
चकेअंतरटारैं ।। २९ ।। तबयहउपजीपरमअनूपा ।। भलिआपभलिममरूपा ।। जोजोगेस्वरब्रह्माहिध्यावैं
व्हैंकरिंब्रह्मआपुविसरावैं ।। ३० ।। अरुव्योंसरितासिंधुसमावैं ।। नामरूपगुणभेदगमावैं ।। त्यौंवेभईरू
पसबमेरौं ।। द्वैतभावकहूंरत्योननेरौ ।। ३१ ।। पापजोनिअबलातेसारी ।। सुरतिकीमरजादाटारी ।। नि
जपतिछोडाकियोविभचारा ।। असतिनमोकौंजान्योजारा ।। ३२।।ब्रह्मभावकछुएनहींजान्यौं।। तिनपरपु
रुषमोहिनितमान्यौ ।। परितोहूंभवसिंधुमिटायौ।।सतनिसहस्त्राणिममपदपायौ ।। ३३ ।। तातैंउद्धवसुनबडभा
गा ।। लोकवेदसबकौंकरत्यागा ।। जोहिंसुन्योसननकोजोई ।। प्रवृतिनिवृतिजोकछुहोई ।। ४४ ।। सबत
जिएकसरणममआवो ।। द्वैतभावमनतेंबीसरावों ।। जहांतहांममरूपाहिदेषौ ।। आपापरकछुऔरनलेषौ
।। ३५ ।। एसेंव्हेकरिमोकौंपैहौ ।। तातेंजगतजनमनहींऐंहौ ।। योंहरिजबबानीविस्तरी ।। तबउद्धवआंसं
काकरी ।। ३६ ।। ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभूतुमत्यागवेदकौंकह्यौं ॥ सोमेरेरस ।।३६।

॥ तुमरीआग्याबेदकहावैं ॥ ताहिंछोडिकेसेंसुषपावैं ॥ ३७ ॥ तुमहींश्रुतिमेंकरणेंभाषै ॥ तुमहीईहादू
रिकरिनाषैं ॥ तातेंमनभरमतहेंमेरो ॥ थिरकीजैंअपनेंजनकेरो ॥ ३८ ॥ किधोएसआकिधोंएद
वा॥याकोंमोहिवतावोंभेवा॥ तवगोपालवचनउचारैं ॥ ज्यौंरविउदयमध्यअधियारे ॥ ३९ ॥ ॥
श्रभिगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवअबसुनपरमागियाना ॥ तातैंतवछूटैभ्रमनाना ॥ प्रथमाहिं
आपानिरंजनएका ॥ औरकछूनहींहूंतोअनेका ॥ ४० ॥ बहूरिकियोमायाविस्तारा ॥ रच्यौदेहबहूअं
गप्रकारा ॥ तातेंआपुप्रवेसाकीयौ ॥ प्राणअरूशब्दसंगकरिलीयौ ॥ ४१ ॥ सोतांशब्दचक्रआधारा
॥ परानामकीनोआगारा ॥ मणिपूरकपश्यतिनामा ॥ चक्रविशुद्धमध्यमाधामा ॥ ४२ ॥ बाहिरप्रगट
वैषरीवानी ॥ जेइहलोकअरूबेदबषानी ॥ स्वरलघुमातरअक्षरजेतैं ॥ नानाभांतिविस्तरैंतेतैं ॥ ४३ ॥
लोकमांहिथोरेविस्तारैं ॥ वेदमांहितिएतहैंसारैं॥पारितिनकौंबहूविधिविस्तारा ॥ जाकौंकोईलहैंनाहिपारा॥
४४ ॥जैसेंअनलकाष्ठमाथिकाढ्यौ ॥ इंधनसंगपवनअतिवाढ्यौ ॥ यौंममवानीकौंविस्तारा ॥ जातेंप्रगट्यौं
सकलपसारा ॥ ४५ ॥ यहविस्तारशब्दकौसारौ ॥ जामेंचेतनरूपहमारौ ॥ इंद्रियउपजीदशप्रकारा ॥
सूत्रमनबुधिचितअहंकारा ॥ ४६ ॥ सतरजतममायागुणजानौं ॥ सबविस्तारतिहूंकौंमानौं ॥ जोअहै
तएकानिरधारा ॥ तिनकीनोमायाविस्तारा ॥ ४७ ॥ तिनमेंबहूतभांतिआभास्यौ ॥ उत्तममध्यमनीचप्र
कास्यौ ॥ विधिनिषेधतातैंकरिलये ॥ सुषदुषदेतिनकेफलभये ॥ ४८ ॥ इहसंसारएकतेंऐसें ॥ एकबी

 जतैंब्रह्मवनजैसैं ॥ तातैयहसबएकआधारा ॥ परिएकहिकैंसकलपसारा ॥ ४९ ॥ तैसैंवस्त्रतंतुमयहो
ई ॥ औतपोतदूजानहिकोई ॥ ऐसैंयहभवतरुहैएका ॥ द्वैफलअरुसाषअनेका ॥५० ॥ यहसबममचे
॥३७॥ तनआधारा ॥ परितोहूवैतनतैंन्यारा ॥ सोचेतनहेमेरोअंसा ॥ यामैंभूलनअनौसंसा ॥ ५१॥ यहसंसारवृ
छहैमसौं॥मैंभाषतहोंसुनियोतैसौं ॥ पापअरुपुन्यबीजद्वैयाकै ॥ मूलअपारवासनाताकै ॥ ५२ ॥ आद
हिकैत्रियगुणत्रयसाषा॥तिनतैंपंचभूतपरसाषा॥उपसाषामनअरुइंद्रीयदशा॥शब्दादिकसबैपंचोरस ॥५३
कफअरुवातपितत्रयबलकल॥सुषअरुदुषप्रगटहैद्वैफल॥तामैंद्वैपंषीकौवासा॥परमातमअरुआतमपासा॥
५४॥जेमूर्षयहभेदनजानैं॥तत्रहूंभांतिवेदविधिथानै॥तिनतेहोवैंबहुलविधिबंधा॥जुगजुगदुषपावैंतेअंधा॥५५
॥ जोयहदेहवृक्षकरिजानैं ॥ आपुहिपंषीन्यारोमानै ॥ वेदस्मृतिसबमायादेषैं ॥ सकलअतीतआपुकौं
लेषैं ॥ ५६ ॥ तबयहविधिनिषेधछाटिकावे ॥ सुषअरुदुषकेनिकटनआवैं ॥ सकलमांहिआपुहिकौंजा
नै॥ भेददेहकृतमायामानै॥५७॥चेतनशक्तिब्रह्मकरिदेषैं ॥ औरसकलमायाकरिलेषैं ॥ परियहभेदस
कलतबपावैं ॥ जबसतगुरकीसरनैंआवे ॥ ५८ ॥ सतगुरुबिनानपावैकोई ॥ ब्रह्मादिकभावैसोहोई ॥
तातैंगुरुकीसरनैंआवैं ॥ दृढउपासनभक्तिबढावैं ॥ ५९ ॥ गुरुसेवाकौऐसौप्रभाव ॥ तातैंउपजैमेरोभा
व ॥ गुरुसेवतैंपावैंभक्ति ॥ गुरुसेवासैंसकलविरक्ति ॥ ६० ॥ गुरुसेवातैंज्ञानहिलहैं ॥ गुरुसेवातैंकर्म
निदहैं ॥ गुरुसेवातैंपरमप्रकासा ॥ गुरुसेवाममचर्णनिवासा ॥ ६१ ॥ मोहोमिलनकौंयैहिउपाई ॥ गुरु

सेवाबिनऔरनकाईं ॥ तातैंगुरुकीसरनहींआवैं ॥ तनमनधनसौंहेतलगावैं ॥ ६२ ॥ जातैंउपजैंज्ञानकुठा
रा ॥ सबपासीनकौंकाटनहारा ॥ त्रयगुणलिंगशरीरउपाधि ॥ जोंआत्मकौंलागीव्याधी ॥ ६३ ॥ ज्ञा
नकोठारसकलकौंहिरैं ॥ याविधिआतमनिर्मलकरैं ॥ पीछैंग्यानध्यानसबत्यागैं ॥ निशदिनएकब्रह्मअनु
रागैं ॥ ६४ तबसोब्रह्ममांहीसमावैं ॥ बहुर्यौजगतजन्मनहींआवैं ॥ तातैंतुमसाधनसबत्यागौ ॥ निसदि
नएकब्रह्मअनुरागौ ॥ ६५ ॥ ॥दोहा ॥ ॥ यहउद्धवतोसौंकह्यौं॥भवमोचनममज्ञान ॥अबनहुर्यौं
साधनसहित॥भाषौंपरमनिधान॥ ६६ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवा
देद्वादशोऽध्यायः॥१२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ होतसत्वगुणवृद्धिकरज्ञानउदयक्रमजान ॥ कह्योतेरमें
ध्यायमेंहंसरूपआख्यान ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुनउद्धवअबपरम
ज्ञाना ॥ जातैंपावेपरमनिधाना ॥ जातैंज्ञानहोइसोकहौं ॥ याविधितुवअज्ञानहोदहौं ॥ १ ॥ सातिकरा
जसतामसजेहैं ॥ उद्धवतेगुणमायाकेहैं॥सुषदुषसबतिनहिंकेजानौं ॥ तिनतैंपरेंआतमामानौं ॥२॥ तातैंन
रसातिककौंगहैं ॥ सातिककरिरजतमकौंदहैं ॥ पीछैंब्रह्ममांहीथिरहोई ॥ सातिककौंतबत्यागैंसोई ॥३
ऐसोविधितीनोगुणदहैं ॥ तबव्हैंब्रह्मब्रह्ममैंरहैं ॥ ज्यौंज्यौंहोईसत्वअधिकारा ॥ त्यौंत्यौंप्रेमभक्तिविस्तारा
॥ ४ ॥ सकलवस्तुसात्विकजबभजैं ॥ तबहीसात्विकगुणउपजै ॥ सात्विकज्यौंज्यौंत्यौंत्यौंभक्ति ॥
त्यौंहीत्यौंअन्यत्रविरक्ति ॥ ५ ॥ तबरजतमदोउमिटजावै ॥ तातैंतनकेगुणनहींआवैं ॥ हरषअरुशोक

मानअपमाना ॥ निंद्राआलसगर्वगुमाना ॥ ६ ॥ रागद्वेषआदिकहैंजेते ॥ द्वंद्वसकलरजतमकेतेतें ॥
तातेंरजतमजत्रहींजाहीं ॥ तत्वातिनकेगुगउपजैंनाहीं ॥ ७ ॥ तातेंसात्विकसंगतीकरैं ॥ रजतमकीसंगतप

रिहरैं ॥ मूलसकलकौंसंगतिकारन ॥ संगतिवोरैंसंगतीतारन ॥ ८ ॥ देशअरुकालपवित्रजलपान ॥ ग्रं
थअरुकर्मजन्मअरुध्यान ॥ गर्भाधानआदिकसंसकार॥मंत्रजापएदसप्रकार ॥ ९॥ एदसजाकौंहोवैंजैसें
॥ गुणविस्तारैंताकौंतैसें ॥ सातिकतोसात्विकउपजावें ॥ राजसतौंराजसअधिकावें ॥ १० ॥ ताम
सतोतामसविस्तरैं ॥ जेंसेंएदशतेंसेंहोंकरैं ॥ जाहिजामेंजोगुणहोई ॥ सोसोउत्तमजानेसोई ॥११
॥ परिजोउत्तमसाधवषानैं ॥ सोवहसातिकउत्तमजानैं ॥ जोअतिनिंद्यतमोगुणसेहैं ॥ सोराजसक
छुमध्यमजोहैं ॥ १२ ॥ तातेंएदशसातिकसेवें ॥ राजसतामसनामनलेवें ॥ राजसतामसजोहितहोई ॥
तोहुंसबछिटकावोंसोई ॥ १३ ॥ सात्विकसंगतिउपजैंसत्व ॥ त्यौंत्यौंलहैंभक्तिकोतत्व ॥ त्यौंलगिदृढउप
जैंविज्ञाना ॥ देखेंएकसकलभगवाना ॥ १४॥ अरुदोनोदेहनिभ्रमजानैं ॥ सबविस्तारसुपनसममानैं ॥तब्रय
हब्रह्ममांहिस्थिरहोई॥ सातिकहूंकोबोनरजोई॥१५॥ ज्यौंबांसनितैंउपजेअनल ॥अरुहोवेंमारुततैंप्रबल ॥
सबकासानिकौंदाहेंसोई ॥ आपुत्रहूरिउपसम्यतहोई ॥ १६ ॥ त्यौंसाधनयातनतेंहोवैं ॥ होईप्रचंडयात
नकौंषोवैं ॥ बहुर्यौंआपुउपसामितहोई ॥ साधनलेसरहेंनहीकोई ॥ १७ ॥ गुणातीतसोंकहिएजोगी ॥

तीनोंकालब्रह्मरसभोगी ॥ सोवहुरौंभवमैंनहींआवैं ॥ मोहिमिल्यौंमोमांहिसमावैं ॥ १८ ॥ तातेंसबसाधन

छटिकावौं ॥ एकनिरंजनमौंकौंध्यावौ ॥ तबहरिकीसूनिअद्भुतबानी ॥ जबउद्धवयहप्रश्नबषानी ॥ १९ ॥
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूयहांएसोकहीयें॥ ज्ञानादिकतजेंसुषलहीयें ॥ परिजें
विषयसुपनिकौंचाहैं ॥ तातैंबहूआरंभसबाहैं ॥ २० ॥ तेवापुरंसदादुषमैंरहैं ॥ कबहूंभूलिनसुषकौंलहैं॥
परितेतोविषयनिदुषजानैं ॥ जानबूडवयौंउद्यमठानैं ॥ २१ ॥ ज्यौंबकरामारनकौंलेजें ॥ लेछेलनिमेटा
ढौंकीजैं ॥ वहनिलजकछुलाजनजांनैं ॥ तिनिसौमिलिविषयादिकठानैं ॥ २२ ॥ अरुजैसैंगरधभअरुकु
ता ॥ तिरस्कारतेंसहैंबहूता ॥ सुषकेहेतसबानिआधीना ॥ सदादुर्बलदृदयअतिदीना ॥ २३ ॥ वेंतोंमू
ढकछूनहींजानैं ॥ तातैंविषयानिउद्यमठानैं ॥ औतोनरजानैंसबबाता ॥ देषेजक्तचल्यौसबजाता ॥ २४ ॥
प्रथमेंतोसुपआवेंनाहीं ॥ जोआवेंतोथिरनरहांहीं ॥ अरुजौदिनचाररहिजावैं ॥ कालहूतेतोषननपावैं ॥
२५ ॥ कालनिरंतरग्रसतेंजावैं ॥ एकदिनाजमद्वारपठावैं ॥ तहांनरकहैंबहुतप्रकारा ॥ जिनकेदुषकौंअं
तनपारा ॥ २६ ॥ ऐसीसबविधिमानवजांनैं ॥ तोहूंवयौंआरंभनिठानै ॥ आपुआपजमद्वारपठावैं ॥ आ
पुआपुकौंदुषउपजावैं॥२७॥आगेचौर्‍यांशीभयभारैं॥विषयनिकौंबहुदुषविस्तारैं॥याभवजलकेदुषअपारा
कहोकहांलौंवारनपारा ॥ २८ ॥ सोयहसकलाक्रिपाकरिकहो ॥ मेरेउरकौसंसादहो ॥ यौंकहिकैंउद्धव
जबरहैं॥तबहरिजीप्रत्युत्तरकहैं ॥२९॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवयहआतमाअ
विनाशी ॥ ज्ञानरूपपरमसुषराशी ॥ सोजबहींयातनमैंआवैं ॥ तबस्वाधीनविबैंसुषपावैं ॥ ३० ॥ बहूर्‍यौ

तिनहितउद्यमगहैं ॥ नहींपावैतोदुषकौलहैं ॥ याविधिसुषदुषजबहींजानैं ॥ तबहींदेहआपुकरिमानैं ॥
३१ ॥ ऐसैंबढैदेहअहंकारा ॥ तबहीराजसकौअधिकारा ॥ राजसरहितजबहींमनहोई ॥ तबइहसु
पदुपजानैसोई ॥ ३२ ॥ तबसंकल्पविकल्पनिकरैं ॥ निशिदिनहृदयविषैंसुषधरैं ॥ तबजासुषहींसु
अरुदेषैं ॥ तबवशहैंनिजसुषकरिलेषैं ॥ ३३ ॥ तबहिंहृदेमैंबाढैकाम ॥ ज्ञानविचारनराषेनाम ॥ तातैंब
नहूराजसअधिकारा ॥ राजसतैंमनगहैंविकारा ॥ ३४ ॥ तबराजसकैंविगप्रचंडा ॥ ज्ञानहीमारिकरै
सतपंडा ॥ तातैंज्ञानसुनैंअरुजानैं ॥ अरुऔरनिसौंआपुवषानैं ॥ ३५ ॥ परिसोकामनहींठहिरावैं ॥
लेकरिपकरिकरमकरावैं ॥ परिजद्यापियानरकौबुधी ॥ रजतमतैंनहींपावैंसुधी ॥ ३६ ॥ तेहूंनिशदिन
दोषविचारैं ॥ उरतैंसकलकामनाटारैं ॥ सावधानआलसनहींकरैं ॥ क्रमक्रमममचर्णानिचितधरैं ॥ ३७॥
आसनजीतिकरैवसप्रान ॥ निषिदिनउराषैममध्यान ॥ अरुममशिष्यचारसनकादी ॥ सकलतत्वज्ञानि
नुकीआदि ॥ ३८ ॥ तिनविचारकरिजोगहींभाष्यौ ॥ सोतोइहैऔरसबनाष्यौ ॥ज्योंहोंज्योमनदूजोतजे
॥ अरुज्यौंज्यौंममचर्णनिभज्यैं ॥ ३९ ॥ याहीतैंसबमिठैविकारा ॥ याहीतैंछूटैंसंसारा ॥ याहीतैंममच
रणनिपावैं ॥ नहुरिजगतनमनहींआवैं ॥ ४० ॥ तातैंपरमजोगयहराष्यौ ॥ तातैंमेरैंशिष्यनिभाष्यौं ॥
जबयहबानीबोलैंकृष्ण ॥ तबउद्धवजनकीनोप्रष्ण ॥ ४१ ॥ ॥ उद्धववाच ॥ ॥ चौपाई ॥ हेप्रभु
कौंनसमेयारूपा ॥ तुमभाष्यौंयाज्ञानअनूपा॥सनकादिकानिकौंनविधिलत्यौ ॥ क्यूंपुछौंकेसंतुमकत्यौ॥४२

॥ ज्ञानसहितसबमोकौकहौ ॥ मेरेउरकौसंसेदहौ ॥ जबयहउद्धवकीनीप्रश्ण ॥ तबबोलेकरुणा
मयकृष्ण ॥ ४३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचारी ॥ जन्म
होतेतिनगहीनिवार्ति ॥ मनवचक्रमसोंतजीप्रवर्ती ॥ ४४ ॥ प्रश्णकरीतिनब्रह्माआगे ॥ एसोभेदसूवतज्यों
जागें ॥ अतिसुपमज्ञानिनहिपरैं ॥ उत्तरकहोकोनविधिकरैं ॥ ४५ ॥ सनकादिकवाच ॥ चौपाई ॥
हेप्रभूब्रह्ममयदेवा ॥ याकौहमहींवतावौभेवा ॥ विषयवासनाचितहोगह्यौ ॥ चितप्रीतीकारिकैंमिलिरह्यौ ॥
४६ ॥ दोउमिलेंआपुमेरसें ॥ नीरअरुपीरपरस्परजेसैं ॥ भिन्नभिन्नावनमुक्तनहोई ॥ क्योंकरिभिनहो
यएदोई ॥ ४७ ॥ यहबानीब्रह्मउरधारी ॥ उतरदेनकोबहुतविचारी ॥ परितोंहूंउतरनाहिआयौ ॥
जातिकर्मनीसोमनलायौ ॥ ४८ ॥ तबब्रह्मायहबुद्धिविचारी ॥ जाहिनकोईतांहींमुरारी ॥ तातेंक्योंचित
वनमेरो ॥ हंसरूपमेंप्रगट्यौमेरौ ॥ ४९ ॥ हंसरूपतातैंदिपरायौ ॥ जातेंयहआसयसमझायौ ॥ केज्ञोहं
सवृत्तिकोंग्रहें ॥ सोईयाकैभेदहिलहें ॥ ५० ॥ तबतिनदेषिमोहिसुषपायौ ॥ ब्रह्मामिलिउठिमाथौनायौ ॥
करिविनतीतबवचनबषानै ॥ हेप्रभूतुमकौंहमनहींजांनै ॥ ५१ ॥ तबतिनसोंजोमैंकछुकह्यों ॥ तिनकेउर
कासंसादह्यौ ॥ तेईवचनकहौंअबतोसौं ॥ सावधानव्हैसुनियोमोसौं ॥ ५२ ॥ तुमकौंहोयुंपूछेजबहीं ॥
कह्योंज्ञानउत्तरमैंतबहीं ॥ मनकौंसंसैसबहिंमिटायौ ॥ विद्यमानपरब्रह्मबतायौ ॥ ५३ ॥ हंसहरीजबह
सकरबोले ॥ कृपानिधानतबअंतरपोले ॥ ॥ हंसउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ विप्रहुंप्रश्णकरीतु

मऐसी ॥ करनेनहींसंभवेतेसी ॥ वस्त्कविचारेंद्वैतनकोई ॥ तौयाकौउत्तरक्यौंहोई ॥ ५४ ॥
अरुजोदेहरूपहूंकहियें ॥ तोहूंकछुद्वैतनलहीयें ॥ पंचभूतनिर्मिततनसारैं ॥ जोकछुजहांलगौंविस्ता
रैं॥५५॥तातेंसकलएकद्वैनाहीं ॥ दूजोकौंनविचारौंमाही ॥ पुरुषदृष्टदेषेंतेंएका ॥ प्रकृतिदृष्टिहूंन
हींअनेका ॥ ५६ ॥ तातेंकेरीग्रष्णतुमऐसी ॥ बहुतनमांहिंकरीजैंजेसी ॥ अरुजोदीसेतत्त्ववि
चारा ॥ तोनहींप्रकृतिपुरुषविस्तारा ॥ ५७ ॥ जोकछुदीसेंसुनीएकहीयें ॥ मनअरुबुद्धिजहांलौं
लहिये ॥ सौसबमैंहीदूजोनाहीं ॥ ऐसौज्ञानधरौंमनमांहीं ॥ ५८ ॥ नामरूपतेंसकलविकारा ॥ आद्य
अंतमध्यमाटीसारा ॥ त्यौहींआदिअंतमध्यमाही ॥ मेंहोएकद्वैतकछुनाहीं ॥ ५९ ॥ द्वैतदृष्टिसोदुष
कोकारण ॥ ब्रह्मदृष्टिनिजसुषविस्तारण ॥ लगैंतरंगनिसौंदुषलहैं ॥ तबसुषजबहींतीजलगहें॥६० ॥
त्योंहीद्वैतदृष्टिसोईदुषा ॥ एकदृष्टिसोहैनिजसुषा ॥ अरुतुमग्रष्णविरिंचिसोकारिं ॥ सोमेंहृदयआपुनेंध
री ॥६१ ॥ विषयनिमांहिचितामिलिरह्यौ ॥ अरुविषयनिचितहीढगह्यौ ॥ हेपुत्रहूंयहयेहीसत्य ॥ प
रितेआत्मामांहिअसत्य ॥ ६२ ॥ विषयाचितएदोउमाया ॥ आत्मब्रह्मनिरंजनराया ॥ विषयनिसौंज
बचितलगायौ ॥ तबहिंचिततिनमेंसुषपायो ॥ ६३ ॥ तबविषयनिकांध्यानहींकरें ॥ तिनकैंहेत
कर्मविस्तरैं ॥ तातैंएकमेकमिलिरहैं ॥ ऐसैंजन्मजन्मदुषसहैं ॥ ६४ ॥ तातैंआत्ममेरौअंसा ॥ मेरि
शरणग्रहैंतजीसंसा॥त्राहिरहूंतेंविषयपरिहरैं ॥अरुचिततैंचितवननहींकरैं ॥ ६५ ॥ विषयचितवृथाकारि ॥४०॥

जानें ।। तिनतेंपरेंआपुकौंमानें ।। ब्रह्मरूपएकआविनासी ।। ज्ञानरूपचेतनसुषरासी ।। ६६ ।। मनअरु
बुद्धिचितअंहकारा ।। इंद्रियविषयदेहविस्तारा ।। एभरमरूपसकलहैंमाया ।। भूलिआत्माआपुबंधाया
।। ६७ ।। एसैंजानसकलछटिकावें ।। आपुहींमोहिएककरिध्यावें ।। जाग्रतस्वप्नसुपुतिबषांनौं ।। तेआ
चर्णांबुद्धिकेंजानौं ।। ६८ ।। तिनतेंपरेंआतमारूप ।। सदाएकरसपरमअनूप ।। सातिकहूतेंजागरनहोई
राजससुपनलहेंसबकोई ।। ६९ ।। सुषोपतितामसगुणतेंआवें ।। मनअरुबुद्धितिहुंरूपावें ।। एकरूप
आतमातिहुंमांहीं ।। सापिभूतलिपेंकहूंनाहीं ।। ७० ।। तातेंतिहूंगुणनितेंन्यारौ।। निजानंदमयरूपहमारौ ।।
तातैंस्थितव्हेकरेंविचारा ।। सहजाहिंछूटैत्रिगुणपसारा ।। ७१ ।। देहविषैंबंध्योअभिमाना ।। तातेंभेदउ
ठ्योयहनाना ।। तातेंनिजानंदविसरायौ ।। कालअसंष्यमाहादुषपायौ ।। ७२ ।। ऐसेंजानितजेअभिमाना
कदैनकरैंसुषानिकौध्याना ।। तिहूंगुणानितैंकरैंविरक्ति ।। चौथेंपदबांधेआसक्ति ।। ७३ ।। तबसहजेंमो
माहिसमावे ।। बहुर्योकदेदेहनाहिपावें ।। अरुजोसकलग्रंथविस्तरैं।।वेदधर्मनानाविधिकरैं ।। ७४ ।। प्रवृ
त्तिमांहीबहुतविधिजागैं।। परिजोजानिदैतनहींत्यागैं ।। सोनितसोवतजागतजानौ ।। ताकौमैंदृष्टांतबषांनौ।।
७५ ।। जेसैसयनकरैंनरकोई ।। सोवतसुपनलहैंपुनिसोई ।। बहुतभांतिकरैंव्यवहारा ।। लेनदेनजलपान
अहारा ।। ७६ ।। बहूरैंरेनभएतेंसोवें ।। दिवसभएत्यौंहीउठिजावें ।। एसेंविधकेयोंदिनवीतें ।। सोवत
जागतसकलव्यतीतैं ।। ७७ ।। बहूरोवहेएसीमनआनैं ।। रातिहूंदिनकौनिद्रभानैं ।। कदेनसोवतजागत

रहें ॥ सावधानआलशनहींगहैं ॥ ७८ ॥ ऐसैंकाजआपनौंकरैं ॥ चौरादिकधनकौनहींहरैं ॥
परिजनयहाजागिकगेदेपें ॥ तबवहसकलावृथाकरिलेषें ॥ ७९ ॥ सोवतजागतसबव्यवहारा ॥
जाकेंहितजागैसोसारा ॥ आपुंहिंसबमिथ्याकरिजानैं ॥ कबहूंभूलिसत्यनहींमानैं ॥ ८० ॥
सोहिंवेदधर्मआचरना ॥ अरुतेसुषजिनकेहितकरना ॥ तेसबस्वप्नरूपव्यवहारा ॥ पंडितछोडैंसकलप
सारा ॥ ८१ ॥ भ्रमतेंदेहधर्यौअभिमाना ॥ तातेंवर्णाश्रमभएनाना ॥ तातेंकरैंबहूतविधिकर्मा ॥ सुख
निमितविस्तारैंधर्मा ॥ ८२ ॥ परितेसकलवृथाकरिजानौ ॥ सुपनजागर्णसमकरिमानौ ॥ जोदेहादिक
सकलपसारा ॥ चेतनकरिवरतानवहारा ॥ ८३ ॥ सुषदुषभोगकरेंअरुजानें ॥ आपुहींसुषिदुषिकरि
मानें ॥बहुर्योंजबाहिसुपनकोंपावें ॥ बहूव्यवहारनिसौंमनलावें ॥ ८४ ॥ तबहूंजानैंसकलपसारा ॥ आ
पापरसुषदुषयवहारा ॥ बहूरिसुषोपतिमांहिसबजाई॥मनबुधिचितअहंकारनकाई ॥ ८५ ॥ तबआतमा
निरंतररहें ॥ जागैंसकलबातजोकहें ॥ लीयौदीयौअरुआयौगयौ ॥ जहांलगिपीछैअनुभयो ॥ ८६ ॥
सोआतमाएकरसरहैं ॥ तिहूकालकीबातनिकहैं ॥ यौंअविनासीआतमाएक ॥ दूजेमायाभेदअनेक ॥
८७ ॥ तीनअवस्थाहैयेमनके ॥ मनमेंआभासेहैंतिनकैं ॥ तिनातिनकौंतिनौगुणजेहैं ॥ तीनौगुणमायाकेत
हैं ॥ ८८ ॥ असैंविधनिश्चैसैंजानें ॥ निशदिनह्रदयविचारहिठानैं ॥ सकलउपाधिनकौआगारा ॥
ज्ञानपडगकाटैंअहंकारा ॥ ८९ ॥ ह्रदयमाहिमैंताकौभजौं ॥ सावधानव्हैंकदेंनतजौं ॥ यहसारौजग

॥४२॥

भ्रमकरीजानों ॥ मानकोकृतमिथ्याकरीमानो ॥ ९० ॥ ज्यौंएकनिकौंउपजतदेषै ॥ अरुएकानिकौंविन
सतपेषैं ॥ साईरीतसकलकीजानैं ॥ स्वप्नसमानत्हदैमैंमानें ॥ ९१ ॥ आग्निसाहितज्यौंलकरीहोई ॥
वालकलकरिफिरावेकोई ॥ औरभांतिहैंदीसेऔर ॥ धीरपरीचंचललहैंनठौर ॥ ९२ ॥ त्यौंयहंजगतर
हेंथिरानित्य ॥ परिअतिचंचलसकलअनित्य ॥ एकब्रह्ममेंसबआभास्यौ ॥ त्रिगुणपाईबहुभेदप्रकास्यौ ॥
९३ ॥ स्वप्नरूपगुणमेंज्यैंभोगी ॥ यौंबहूभांतिविचारेंजोगी ॥ तातेंजगतेंदृष्टिउतारैं ॥ सांचजानित्हदय
नहींधारैं ॥ ९४ ॥ तृष्णाछोडिनिश्चलव्हेंरहैं ॥ मनवचक्रमकछुकर्मनगहैं ॥ इहाराहितब्रह्मरसभोगे ॥ नि
जानंदमयहोवेंजोगी ॥ ९५ ॥ ऐसेंवृथाजानिसबत्यागैं ॥ निहचलह्वदेब्रह्मअनूरागैं ॥ सोजवरहैंदेहहुंमा
हीं ॥ तोहूंफिरिभ्रमउपजैंनाहीं ॥ ९६ ॥ जोयहदेहजाईकहुंआवैं ॥ बैठेंउठेंपीवैंअरुषावैं ॥ औरकछूक
रैव्यवहारा ॥ परिसोासिधनजानैसारा ॥ ९७ ॥ निश्चलरहेंनिरंजनमांही ॥ देहादिककछूजानैंनाही ॥
ज्योंकोईतनवस्त्रनिधरैं॥बहूज्यौंसूरापानकहूंकरैं ॥ ९८ ॥ सोतिनवस्त्रनिजानैंनाहीं ॥ प्रथमबंधेतातेंनहींजा
हीं ॥ कर्मरहेयातनकेजोलौं॥सहीतइंद्रियसबबरतेंतोलौं ॥ ९९ ॥ कर्मनिताकौंतनकोपोषैं ॥पानपानसौंनि
त्यसंतोषैं ॥ जोगीब्रह्ममांहिथीररहैं ॥ देहादिककछूशुद्धनलहैं ॥१००॥ जैसेंस्वप्नदेषिकरीजागैं ॥ तासु
पनासुनहींअनूरागैं॥तैसैमोहानिसातेंजाग्यौं॥बहूरिनालिपैंब्रह्मअनुराग्यौ ॥१०१॥देहथकांब्रह्म हिंमिलरत्यौ
॥भवकौसकलबीजातिनदत्यौ॥सोंबहूरोभवमैंनहींआवैं॥ब्रह्ममिल्यौंसोब्रह्मसमावैं॥२॥तातेंदेहआदिविस्तारा

मकरौतजोत्रिगुणमयसारा ॥ त्रिगुणातीतब्रह्मकोंसेवों ॥ विषयनिकौंकछुनामनलेवौ ॥ ३॥ विषयनिचित
दोउभ्रमजानौ ॥ ब्रह्ममांहिरहौदोनुभानौ ॥ सकलअतीतआपुकौंदेषों ॥ सबवटएकद्वैतनलेषौ ॥ ४ ॥
ब्रह्मअरुआपुएककरिमानौ ॥ द्वैतभावकबहूंजिनआनौ ॥ निशादिनब्रह्मविचारहिंकरौं ॥ परिबलमेरौहृ
दयमेंधरौं ॥ ५ ॥ ममआधीननिरंतररहौं ॥ याविधिजक्तबीजसबदहौं ॥ यातैंबहूरिनभवमैंआवौं ॥
ब्रह्मरूपव्हैंब्रह्मसमावौ ॥ ६ ॥ यहमेंतोसौंकह्योंविचारा ॥ सांख्यअरुजोगसकलकौंसारा ॥ मेरोगुह्यम
तोअतिजानौ ॥ बहुतभांतिहृदेमैंआनौ ॥ ७ ॥ तुमरोहितमनमांहिविचाऱ्यौं ॥ मैंहौंविष्णुहंसतनुधाऱ्यौं ॥
मैंहौंब्रह्मसकलकोईस ॥ मौंबिनऔरंसकलअनिस ॥ ८॥ सांख्यअरुसत्यतेजतपजोग ॥ प्रियसमदम
श्रीकिरतिभोग ॥ औरौंवस्तजहांलौसार ॥ तेसमस्तमेरैंअधारा ॥ ९ ॥ तातैंजोममशरणेंहिंआवैं ॥
उत्तमवस्तसकलकौंपावैं॥मौंबिनबहूसाधनहीगहैं॥तोहूंकदैंनसुषकोलहैं॥१०॥मैंनिरगुणअरिसबगुणसेवों
मैंनिरपेक्षसकलचितदेवों॥कछुनचहौंकरौंउपकार॥सबकौंहितसबकौंआधार ॥११॥ सबउपजावौंसबप्र
तिपारौं॥सबपोषैंसबसंकटटारौं॥तातैंमोहितजैंदुषपावैं ॥ तबहींसुपीसरणजबआवैं ॥१२॥ सरणागत
कौंविगिउधारौं ॥ आपुमिलाऊंभवभयटारौ ॥ तातैंसबतजीमोकौंभजौ ॥ पावोमोहिजगतभयतजो ॥१३॥
॥ उद्धवयहमैंज्ञानसुनायौ ॥ सनकादिकनिपरमसुषपायौ ॥ हृदयरहौसंदेहनकाई ॥ मोहमिलनकोसब
विधिपाई ॥ १४ ॥ बहूतभांतिममपूजाकरी ॥ बहूतभांतिअस्तुतिविस्तरी ॥ मेरोभजनहृदयमेंधाऱ्यो ॥

औरसकलततकालनिवार्यौ ॥ १५ ॥ आपुकतारथातिनकरिमान्यौ ॥ द्वैतभावताजिब्रह्मपाहिंचान्यौ ॥ तब
तिनकैंअसक्तातिकरितेहीं ॥ अरुब्रह्मादेषतआगेंही ॥ १६ ॥ सबहीनकौंआनंदबढायौ ॥ तबमेंअप
नेधामसिधायौ ॥ तातैंउद्धवयहतुमजांनौं ॥ अपनेंपरमभागकरिमांनौ ॥ १७ ॥ सनकादिकसमानतुमकी
यें॥तेईवचनमेंतुमकोदीयौं ॥ तातैंइहैंज्ञानउरधारौ ॥ ब्रह्मजानिसबद्वैतनिवारौ ॥११८॥ ममआधीनसद
हीरहौं ॥ दूजीसकलवासनादहौं ॥ एसैंहींनिजपदकौंपैहौ ॥ जातैंजगबहूरौनहींऐहौं ॥ ११९ ॥
॥ दोहा ॥ ॥ यहउद्धवतोसोंकह्योपरमज्ञानानिजसार ॥ जाकौंगहिनिजपदलह्योंछूटैसबसंसार
॥ १२० ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांहंसगीतायां
त्रयोदशाध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रीधरचवथैंध्यायमैंभक्तिश्रेयकल्याण ॥ ध्यानयोग
हरिकहतहैंसाधनसहितप्रणामा ॥ १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ऐसोसुनि
हरिजीसोंज्ञाना ॥ भक्तिउधारकभ्रमसबहांनां ॥ यहउद्धवदृढकरिउरधरी ॥ परिकछुप्रश्नकृष्णसौंक
री ॥ २ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ परमदयालदयानिधिदे
वा ॥ मोकौंबडौं बतायोभेवा ॥ भक्तिहूंतैंपहियेंतुमचरना ॥ छूटैजगतजन्मअरुमरना ॥ २ ॥परि
अबएकप्रश्नसौंकहौं ॥ मेरयासंदेहहिंदहौं ॥ जेबहुविधिश्रुतिसमरातिजानैं॥तेतौबहूसाधनवषानैं॥३॥ मु
क्तिहेतवहूपंथानिकहैं ॥ अरुतेबहुतैंमिलिगहैं ॥ तातैंतेउपंथअसेष ॥ भक्तिसमाकेकह्युविसेष ॥ ४ ॥

नानाप्रभुपंथनुमंपाछियें ॥ बहुरिमनमागरनहींएयें ॥ सोसोपंथकृपाकरिकहौ ॥ मेरीसकलमूढतादहौ

ाए० ॥ ५ ॥ तुमविनयहदूजोनहींकोई ॥ ज्ञानकहेंसोतुमसौंलहैं ॥ उद्धवऐसीपूछीवाणी ॥ तवउद्धवकीप्रश्नवषा

४३॥ णी ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाइ ॥ ॥ उद्धवकल्पसमयजबभयौ ॥ तबयहतत्वली

न ॥ पुनिममृष्टिममययलज्ञाना ॥ ब्रह्मासौंश्रुतितत्ववषाना ॥ ७ ॥ सोईश्रुतिपुनिब्रह्मपढायौ ॥ भृग्वा

नुगायौ ॥ सप्तमहाऋषिभृगुजनआदी ॥ अरुस्वायंभुमनूमन्वादि ॥ ८ ॥ तिनश्रेष्टनितैंयहावि

भांतिकेभेदअपारा ॥ सरनरअसुरासिद्धगंधर्व ॥ विद्याधरयक्षादिकसर्व ॥ ९ ॥ सप्तद्वी

॥ सतरजतमातिनकीउतपती ॥ तातैंबहूविधिभईप्रकृति ॥

निर्वेद ॥ वेदतत्वकितहुंरहगयो ॥ आपुसुभावसमतिनक

॥ त्यौंत्यौंजान्यौंश्रुतिकौभाव ॥ त्यौंहिंत्यौंआचरणनिकरैं ॥ त्यौंत्यौं

नकेश्रुतिसमृतिजोवैं ॥ तिनतैंआपुकरैंबहुग्रंथा ॥

ा ॥ ज्ञानधर्महोईसतपंडा ॥ मममायाकरिमोहित

पनीरुचिअनुमाना ॥ करेंकर्मअरुभाषैंज्ञाना ॥ नाना

५ ॥ एकैबहूविधिधर्मनिभाषैं ॥ तिनतैंमुक्तिभुक्तिकौं ॥४३॥

तसकलदुपानितैंतरीयैं ॥ १६ ॥ जाकौंजसयाजगमेंजोलौं ॥ सो

नररहेस्वर्गमेंतोलौं ।। एकाइहांहिकामबपानैं ।। आगेंस्वर्गनरकहींजानैं ।। १७ ।। जोतनईहांकरेभोग
निकों ।। ईहाहिछोडिजाईतातनकौं ।। आगेंसुषदुषलहैंनकोई ।। तातैंभोगकरौसबकोई ।। १८ ।। ए
सेग्रंथनिकहिश्रमावैं ।। धर्मरायकीषबरनपावैं ।। अेककहैंसमदमअरुसत्य ।। दूजोसाधनसकलअनित्य
।। १९ ।। जोगग्रंथबहूसापबषानैं ।। तिनतेंमुढमुक्तिकौंजानैं ।। सामअरुदामदंडबहूभेद ।। ईनकौंगहैं
एकपढीवेद ।। २० ।। न्यायसहितसबउद्यमकरैं ।। उत्तमधर्मजानिउरधरैं ।। दानभोगउत्तमकरिभाषैं
।। ईहमुक्तसाधनकरिराषैं ।। २१ ।। एकैंजज्ञदानतपगहैं ।। एकहींजमनियमसंग्रहैं ।। एकहिंतीर्थव्रतम
नधरैं ।। कहूंकहांलोंबहूविधिकरैं ।। २२ ।। तिनतैंस्वर्गादिकसुषपावैं ।। छिनभयेईहांफिरआवैं ।। बहु
न्योंनीचजोनीबहुलहैं ।। नरकनिमेंकेईजुगरहैं ।। २३ ।। अरूजबरहेंस्वर्गहूंमांहिं ।। तबहूंकछुसुषपावैंना
हीं ।। कामक्रोधनिंदाअपमाना ।।रागद्वेषइच्छाअभिमाना ।। २४।। इत्यादिकनिग्रसेंनित्यरहैं ।। तातैंकौन
भांतिसुपलहैं।।भक्तिविनाविधिलोकहिंजावैं।।कालतहूंतैंउलटढहावैं।। २५।।तातैंउद्धवभ्रमहैंसारा।।सुषममचर्ण
निकैंआधारा।।जिनमेरवर्णनिचितधर्यौ।।साधनसाधसकलपरिहर्यौ।।२६।।तिनकौंउद्धवजोसुषहोई ।। सो
कहूंनपावेकोई ।। सोसुषकर्म्योसुन्योनहींआवैं।।सोईपैंजानैंजोपावैं।।२७।।सोपावेजोमोसोंमागैं ।। औरसक
लआसयकौंत्यागैं ।। ममआधीननिरंतररहैं ।। दूजीसकलकामनादहैं ।। २८ ।। सकलवस्तुकौंको
नौंत्याग ।। अंतःकरणषरौवैराग ।। समदरसीनित्यसीतलचित ।। ममचिंतवनहदैदृढव्रत ।।२९।। ताकौं

जाजाप्रभुपंथतुमेंपहियैं ।। बहुरौंभवसागरनहींएयैं ।। सोसोपंथकृपाकरिकहौं ।। मेरीसकलमूढतादत्यौ
।। ५ ।। तुमविनयहदूजोनहीकिहैं ।। ज्ञानलहैंसोतुमसौंलहैं ।। उद्धवएसीपूछीवाणी ।। तवउद्धवकीप्रश्नवषा
 णीं ।। ६ ।। ।। श्रीभगवानउवाच ।। ।। चौपाइ ।। ।। उद्धवकल्पसमयजबभयौ।। तबयहतत्वली
नव्हैंगयौं ।। पुनिमेसृष्टिसमययहज्ञाना ।। ब्रह्मांसौंश्रुतितत्ववषाना ।। ७ ।। सोईश्रुतिपुनिब्रह्मपढायौ ।। भृग्वा
दिकस्वयंभूपायौ ।। सप्तमहाऋषिभृगुजनआदी ।। अरुस्वायंभुमनूमन्वादि ।। ८ ।। तिनअष्टनितेंयहावि
स्तारा ।। नानाभांतिकेभेदअपारा ।। सुरनरअसुरासिद्धगंधर्व ।। विद्याधरयक्षादिकसर्व ।। ९ ।। सप्तद्वी
पनरबहुतप्रकारा ।। किंनरकिंपुरुषादिअपारा ।। सतरजतमतिनकीउतपती ।। तातैंबहूविधिभईप्रकृति ।।
१० ।। तिनतेंभयबहूताविधिभेदा ।। तिनतेंसोईजानेंवेद ।। वेदतत्वकितहुंरहगयो ।। आपुसुभावसमतिनक
त्यौ ।। ११ ज्योंज्यौतिनकेभएसुभाव ।। त्योंत्योंजान्यौंश्रुतिकोभाव ।। त्योहिंत्योंआचरणनिकरैं ।। त्योंत्यौं
आपुस्मृतिविस्तरैं ।। १२ ।। परंपराजेतिनतेंहोवें ।। तिनकेश्रुतिसमृतिजोवें ।। तिनतैंआपुकरैंबहुग्रंथा ।।
नानाभांतिचलावैंपंथा ।। १३ ।। एसीविधिउपजेपाषंडा ।। ज्ञानधर्महोईसतपंडा ।। ममसायाकरिमोहित
होवें ।। तातेंतत्वपंथनहीजोनें ।। १४ ।। अपनीअपनीरुचिअनुमाना ।। करेकर्मअरुभाषैंज्ञाना ।। नाना
विधसाधनासुनावें ।। तिनतिनतैंकल्याणबतावें ।। १५ ।। एकैबहूविधिधर्मनिभाषैं ।। तिनतैंमुक्तिभुक्तिकौं
आषें ।। एकैकहैंजसहीविस्तरीयें ।। जातैंसकलदुपानैंतरीयैं ।। १६ ।। जाकौंजसयाजगमेंजोलौं ।। सो

नरकहैस्वर्गमेंतोलौं ॥ एकाइहांहिकामनषानैं ॥ आगेंस्वर्गनरकहींजानैं ॥ १७ ॥ जोतनईहांकरेभोग
निकों ॥ ईहांहिछोडिजाईतातनकौं ॥ आगेंसुपदुषलहैनकोई ॥ तातैंभोगकरौसबकोई ॥ १८ ॥ ए
सेग्रंथनिकहिभ्रमावैं ॥ धर्मरायऋषिवरनपावैं ॥ अेककहैंसमदमअरुसत्य ॥ दूजोसाधनसकलअनित्य
॥ १९ ॥ जोगग्रंथबहुसापबपानैं ॥ तिनतेंमुढमुक्तिकौंजानैं ॥ सामअरुदामदंडबहूभेद ॥ ईनकौंगहैं
एकपढीवेद ॥ २० ॥ न्यायसहितसबउद्यमकरैं ॥ उत्तमधर्मजानिउरधरैं ॥ दानभोगउत्तमकरिभाषैं
॥ ईहमुक्तसाधनकरिरापें ॥ २१ ॥ एकैंजज्ञदानतपगहैं ॥ एकहींजमनियमसंग्रहैं ॥ एकहिंतीर्थव्रतम
नधरैं ॥ कहूंकहांलोंबहूविधिकरैं ॥ २२ ॥ तिनतैंस्वर्गादिकसुषपावैं ॥ छिनभयेईहांफिरआवैं ॥ बहु
ज्यौंनीचजोनीवहुलहैं ॥ नरकनिमेंकेईजुगरहैं ॥ २३ ॥ अरुजबरहैंस्वर्गहूमांहिं ॥ तनहूंकछुसुषपावैंना
हीं ॥ कामक्रोधनिंदाअपमाना ॥रागद्वेषइच्छाअभिमाना ॥ २४॥ इत्यादिकनिग्रसैंनित्यरहैं ॥ तातैंकौन
भांतिसुपलहैं।भक्तिविनाविधिलोकहिंजावैं॥कालतहूतैंउलटढहावैं॥ २५॥तातैंउद्धवभ्रमहैंसारा॥सुषममचर्ण
निकेंआधारा॥जिनमेरचर्णनिचितधर्यो॥साधनसाधसकलपरिहर्यो॥२६॥तिनकोंउद्धवजोसुषहोई ॥ सो
कहूंनपावेकोई ॥सोसुषकत्थौसुन्यौनहींआवैं॥सोईपैंजानैंजोपावैं॥२७॥सोपावेजोमोसोंमागैं ॥ औरसक
लआसयकौंत्यागैं ॥ ममआधीननिरंतररहैं ॥ दूजीसकलकामनादहैं ॥ २८ ॥ सकलवस्तकौंकी
नौंत्याग ॥ अंतःकरणषरौवैराग ॥ समदरसीनित्यसीतलचित ॥ ममचिंतवनन्हदैदृढव्रत ॥२९॥ ताकों

दसोंदिशासुपरूप ॥ सोसुपजोअतिपरमअनूप ॥ जोजनमेरैंसूषकौंजानैं ॥ ताकौंमनकितहूंनाहिमानैं ॥
॥ ३० ॥ ताकेंसबआधीनहिंरहैं ॥ परिसोमोविनकछुनगहैं ॥ ब्रह्मलोककौंकदेंनलेवें ॥ इंद्रलोकपल
॥४४॥ चितनदेवें ॥ ३१ ॥ सबभूराजनेननहींदेपें॥सप्तपातालसुषत्रणकरिलेसैं ॥ जोगसिधीआणूमादिकअष्ट
॥ जोगीजनहितसाधेकष्ट ॥३२॥ तिनहूंकोंकबहूंनहींलेईं॥आपुहूतेंतिनसेंबेतेंई ॥मुक्तिनिकटहिंरहैंसदाई
परिमेरो जनळूवेंनकाई ॥३३॥ मेहीएकसदाप्रीयताकौं॥ममचर्णनिचितरातोजाकौं॥तांहितेंमेरेंप्रियसोई॥
ताबिनऔरप्रियनहींकोई ॥ ३४ ॥ त्यौंमेरोसुतविधिनहींप्यारो ॥ नहींसंकरज्यौंरूपहमारो ॥ नहींप्रिय
त्योंसंकर्षणभाई ॥ श्रीअर्धंगात्यौंनहींसाई ॥ ३५ ॥ योंनहींप्रियमेरेंममदेह ॥ जेसोतुमसोंपरमसनेह ॥
तुमसेंभक्तमहाप्रीयमेरें ॥ ताकौंरहोंनिरंतरनेरें ॥ ३६ ॥ इछारहीतअरुसीतलहृदय ॥ समनिरवैरस
बनिपरिसूहृदय ॥ ब्रह्मदृष्टिदेषेसबमांहीं ॥ ब्रह्मविचारतजेपलनाहीं ॥ ३७ ॥ मेंताकौंप्रथमयोंकरौं ॥
त्रिगुणपासबंधनविस्तरौं ॥ परिताकौंएसोबलभारी ॥ काटीमायाशक्तिहमारी ॥ ३८ ॥ एतपरिसब
औगुणतजैं ॥ उलटीआईममचर्णनिभजैं ॥ अरुसबसुपताकेंवसरहैं ॥ सोतजिमोहीकछूनगहैं ॥ ३९
॥ बहुतिनकेभवबंधनदहैं ॥ नामप्रगटकरिमेरौकहैं ॥ तिनतिकौंममचर्णनिल्यावें ॥ सदासबनितैंआपुलि
पावें ॥ ४० ॥ अहंकारममतानहींआनै ॥ मोहिछोडिदूजोनहींजानें ॥ गुणातीतताजनकेंपाछें ॥ यहतन ॥६४॥
धारिफिरोमेंआछें ॥ ४१ ॥ सातिकगुणधारीयहदेह ॥ करौंसूधताचर्णनिपेह ॥ निहकंचनतनहूंनाहिंर

क्त ॥ मोहि सोतिनहीं अनुरक्त ॥ ॥ ४२ ॥ सीतलहृदयविगतअभिमाना ॥ कृपावंतसबएकसमाना
॥केहूंकामचलैंनहींबुधी॥मोहीसेईपाइअतिसूधी॥४३॥मुक्तिहुतेंनिस्प्रेहरहैं॥तेजनमेरैंसुषकौलहैं ॥तासुष
कैं सुषजानैंतेई॥औरसकलसमझैंनहिंकेई॥४४॥निस्पृहजननिस्पृहसुषपावैं॥स्पृहावंतकेनिकटनआवै॥ वि
षयसुपनिकैंवसमानवहोई ॥ इंद्रियजीतसकैंनहिंकोई ॥ ४५ ॥ परिआधीनहोईममजबहीं ॥ विषयक
छुनसकैंकरितबहीं ॥ विषयशत्रूमेंसकलनिवारौं ॥ आपमिलाऊंभवभयटारौं ॥ ४६ ॥ पावकप्रगटकऱ्यौ
लेअसम ॥ होईप्रचंडकरैंसबभस्म॥त्यौंममभक्तिप्रगटजोहोई ॥ जारैंपापरहैंनहींकोई ॥ ४७ ॥ बहूरि
पापकोंनिकटनआवे भक्तिप्रतापमोहिसोंपावें ॥ सोधैंसिधजोगअष्टांग ॥ बहुविधिजज्ञहोईजोसांग ॥
४८ ॥ सांख्यविचारसकलसोजानें ॥ बेदपढैंदेवैंबहूदानैं ॥ तपहिकरैंइंद्रियमनबांधैं ॥ औरसकलधर्मनि
कोंसाधैं ॥ ४९ ॥ तोहूंमोहिंकदैंनहींपावें ॥ भक्तिमोहिततकालमिलावैं ॥ एकमोहिभक्तिबसकरैं ॥
दूजेतेंअतिअंतरपरैं ॥ ५० ॥ श्रद्धासहितकरेममभक्ति ॥ तासोंमेरीअतिआशक्ति ॥ मेब्रह्मादिकस
कलकोईस ॥ मोबिनऔरसकलअनीस ॥ ५१ ॥ सोमेंभक्तनकेआधीन ॥ तोमोसोंज्योंजलसोंमीन ॥
जोचंडालभक्तिमैंआवैं ॥ ताहीतननिरमलतापावैं ॥ ५२ ॥ वर्णआश्रुमवंदनकरैं ॥ तापदरेणुसीसपर
धरें ॥ तीनैंभवनदासबसताकैं ॥ मेरिभक्तिविराजैंजाकैं ॥ ५३ ॥ विद्यापढैंधर्मबहूकरैं ॥ जीवदयाब
हूविधिविस्तरैं ॥ सत्यवंतअरुदृढसंतोष ॥ कबहूंकहुकरैंनहिरोष ॥ ५४ ॥ कष्टसहितपरणतपसाधैं ॥

मनईंद्रियदेहादिकबांधैं ॥ तीरथवृतानिआदेदेजेतैं ॥ सबआचरणंकरैंजोतितैं ॥ ५५ ॥ परिजोमेरीभ
क्तिनहोई ॥ तोनिरमलनहींहोवैंकोई ॥ बिनरोमैंचद्रवेंविनचित ॥ आनंदाश्रुकलाविनानित्य ॥ ५६ ॥
॥ तौतोंसाधभक्तिनहींकहें ॥ भक्तिविनाउरसुधनलहें ॥ द्रवेप्रेमतोजाकोंचित ॥ कबहूंरोवेमेरेहित ॥
॥५७॥ कबहुंगदगदवाणीहोई ॥ कबहुंउंचैंगवैंसोई ॥ कबहुंमधुरमधुरसुरगावैं ॥ कबहुंप्रेममगनर
हिजावैं ॥ ५८ ॥ कबहुंनृत्यप्रेमवसकरैं ॥ कबहुंहसैंगुणानिविस्तरें ॥ लोकवेदकीलाजनजानैं ॥ ज्योंउ
नमतसकलयोंठानें ॥५९॥ जैएसोमेराजनहोई ॥ त्रिभुवनसुधकरतहैंसोई ॥ सकलभुवनकेपापनिवारैं
॥ सकलभुवनकोंसोजनतारैं ॥ ६० ॥ जैसैंहेममलीनताहोई ॥ बहुजलमाहिधोईजैसोई ॥ औरहिज
तनबहुतविधिकीजैं ॥ हेमहींनहूकसोटीदीजैं ॥ ६१ ॥ परिकेईबिधिशुद्धनहोई ॥ कोटिजतनकरैंजोको
ई ॥ सोईहेमआग्निमेंदीजैं ॥ देकरिफुंकतमअतिकीजैं ॥ ६२ ॥ तातेंकोईमलनहींरहें ॥ अपनेंसुध
रूपकोगहें ॥ त्योंहीजतनकरैंबहुकोई ॥ परिआतमानिरमलनहींहोई ॥ ६३ ॥ मेरीभक्तिमांहिजबआ
वें ॥ तबसबकर्ममेलिछिटकावें ॥ निरमलहोईलहेंनिजरूप ॥ पावैंमोहितजैंभवकूप ॥ ६४ ॥ ज्योंज्योंमे
रीभक्तिकरैं ॥ मेरेंगुणनित्हृदयमेंधरैं ॥ श्रुवनकीरतनसुमरनठानें ॥ ज्योंज्योंओरवासनाभानैं ॥ ६५ ॥
त्योंत्योंहृदयप्रकाशेज्ञान ॥ देषैंब्रह्ममिटसबआन ॥ द्वैतभावकतहूंनहींरहें ॥ निरभयनिजानंदपदलहैं ॥
॥ ६६ ॥ नेननोमांहींरोगज्योंहोई ॥ तातेंकछुनदेषैंसोई ॥ पुनिज्योंज्योंओषदाहिंलगावैं ॥ त्योंत्योंदृष्टि

होतनितआवैं ॥ ६७ ॥ त्यौंत्यौंवस्तसकलकौंदेषें ॥ आपुहिपरमसुषीकरिलेषें ॥ तातैंभक्तिरूपदृढअं
जन ॥ जातेंदेषेंदेवनिरंजन ६८ ॥ जोसंसारसुपनिकोंध्यावें ॥ सोसंसारमाहींवहिजावें ॥ अरुजोध्या
वेंमेरेरचना ॥ पावेंमोहिमिटेभवमरना ॥ ६९ ॥ तातैंसवसाधनभ्रमजानौं ॥ सुपनसमानद्वैतसवमानों
मनवचक्रमसकलकोंत्यागों ॥ निशदिनममचर्णनिअनुरागों ॥ ७० ॥ जोयाभवहींचहेंछटिकायौ ॥ आ
रूचाहेममचर्णनिआयो ॥ तेतिनकींसंगतिपरिहरे ॥ जेनरजुवतिसौंवातांहिंकरैं ॥ ७१ ॥ जुवतिसुष
सुननेंहीश्रवनां ॥ नेननदेषेंकरैंनहींगवना ॥ कवहूंभुलिहृदैनहींआनैं ॥मनक्रमवचनानिरंतरभानैं ॥७२॥
ऐसेंबंधनकहूंनहोई॥कोटिसंगकरैंजोकोई॥ड्यौंडयोषितअरुजोषितसंगी॥बंधनकरैंहोतप्रसंगी॥ ७३ ॥
तातेंतिनकीसंगतितजैं॥सावधानममचर्णनिभजैं॥निरभयठोरकरैंअस्थान॥मोबिनसंगतजैंसवआना ॥७४
॥मेरोध्याननिरंतरकरैं ॥ प्रेमसहितहृदेमेंधरैं ॥ कृष्णवचनसुणिहृदयेराषैं॥ उद्धवऔरप्रश्णकौंभाषौं ॥
॥ ७५ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुतुमहिंकोनाविधिध्यावें ॥ कौनरूपमेंचितलगावैं ॥
मेतोमुगतसेईतुवचरना ॥ परिजोचहैंमिटायौमरना ॥ ७६ ॥ कृपासिंधुतुमकरुणाकरौ ॥ ध्यानजोगवा
निविस्तरौं ॥ सुनिउद्धवनिजजनकीबांनि ॥ तवश्रीहरिजीआपुवषानी ॥ ७७ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच
॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवतोकूंध्यानसुनाऊं ॥ जोगसहितसवअंगवनावूं ॥ जोगसहितजोध्यानांहिंकरैं
तोमनवेगरजतमपरिहरौं ॥ ७८ ॥ समआसनमेंआस्थिरहोई ॥ जघनिपरिरापेंकरदोई ॥ देहसमानच

लैनहिंदोलैं ॥ नासादृष्टिकछुनहिंबोलैं ॥ ७९ ॥ ईडापूरिकुंभकस्थिरधारैं ॥ पुनिरेचकपिंगुलानिसारैं ॥
बहुरौंपूरिपिंगुलाद्वार ॥ इडानिसारैंवारंवार ॥ ८० ॥ इंद्रियअर्थसकलपरिहरैं ॥ मेरौहेतत्हृदेमेधरैं ॥
उद्धवद्वैविधिजोगकहावैं ॥ तातेंभेदसतगुरुतेंपावैं ॥ ८१ ॥ मंत्रसहितसोनामसगर्भ ॥ मंत्रबिनासोंकहींये
अगर्भ ॥ तातेंसोसगर्भसेंनाम ॥ सोउत्तमहैंप्राणायाम ॥ ८२॥ पूरेंराषैंरेंचककरैं ॥ ओंकारमंत्रउरध
रैं ॥ घंटानादतूलउरध्यावैं ॥ तासौंमिलिकरिप्राणचलावैं ॥ ८३ ॥ यौंत्रिकालअभ्यासेंकोई ॥ प्राणमा
सहीमेंस्थिरहोई ॥ बहूरौत्हृदयकमलकोंध्यावैं ॥ अष्टपाषरीसोंविगसावैं ॥ ८४ ॥ उंधेमुषसौंउर्द्धहोंक
रैं ॥ ताकेमध्यसूर्यहींधरैं ॥ सूर्यमेंपूरणससिआनैं ॥ शशिमेंअनलतेजमयजानैं ॥ ८५ ॥अनलमध्य
ममरूपहींध्यावैं ॥ परमप्रीतसौंमनहींलगावैं ॥ अंगुष्ठसमानचतुर्भुजरूप ॥ अतिसीतलसुषदानअनूप ॥
८६ ॥ नूतनसजलमेघतनस्यांम ॥ तडिततूलअंबररुचिधाम ॥ मंदहाससोभानिधिआनन ॥ मकराक
तकुंडलसुभकानन ॥ ८७ ॥ कंठेकौस्तुभमणिवनमाला ॥ उरभृगुलतालक्ष्मीविशाला ॥ शंखअरुच
क्रगदाअरुपद्म ॥ हस्तचारसोभाअतिसद्म ॥ ८८ ॥ हेममुगुटहीरामनिजर्यौ ॥ अतिसोभायमानौंसि
रधर्यौ ॥ भालतिलकअंबुजवरनैन ॥ भक्तप्रसादसुधाकीअयन ॥ ८९ ॥करकंकनअंगदमुद्रिका ॥
पगनूपुरकटिमेक्षुद्रिका ॥ अंकुशवज्रध्वजाअरुबिंद ॥ चिन्हतचरणहरणदुषर्दद ॥ ९० ॥ नषमणिग ॥४६॥
णकीप्रभाप्रकास ॥ उरअज्ञानअंधतमनास ॥ औरसकलअंगनिसबभूषन ॥ जिनकेध्यानमिटैंसबदूष

न ॥ ९१ ॥ वयकिसोरपरसकुमार ॥ नपासिरवध्यावैंवारंवार ॥ चर्णनितेंप्रतिअंगहींध्यावैं ॥ एकग
हैंएकहींछटिकावैं ॥ ९२ ॥ यौंलेनपतेंशिपापरजंत ॥ निसदिनतद्दयध्यावैंसंत ॥ औरवासनासबपरिह
रैं ॥ मेरोरूपअडिगमनधरैं ॥ ९३ ॥ याविधिमनजबनिहचलहोई ॥ तबाफिरिअंगनध्यावैंकोई ॥
अतिसुंदरसुपमैंमनधारैं ॥ औरसकलचिंतवननिवारैं ॥ ९४ ॥ याविधिमनअपनेवसहोई ॥ तबविराट
मेधारैंसोई ॥ सकलविराटरूपममजानै ॥ मोतेंभिनकछुनहींमानैं ॥ ९५ ॥ योविराटममरूपहींजा
नौं ॥ निहचलभयोभेदकौंभांनी ॥ तबताहूंतैंमनहिनिवारैं ॥ शुद्धनिरंजनब्रह्मविचारैं ॥ ९६ ॥
ब्रह्मविचारनिरंतरकरैं ॥ सबआकारदूरिपरिहरैं ॥ आतमब्रह्मएककरिदेषैं ॥ चैतनरूपअखंडि
तलेपैं ॥ ९७ ॥ निजानंदनिहचलानिरधारा ॥ सत्यस्वरूपवारनहींपारा ॥ एकअजन्माआपैंआपु ॥ सु
षदुषरहीतपुन्यनहींपापु ॥ ९८ ॥ कालनकर्मजविनहींमाया ॥ आपैंआपनिरंजनराया ॥ जैसैंअग्निअ
खंडितहोई ॥ तातैंउठेपतंगासोई ॥ ९९ ॥ बहुरिअग्निमांहींसमावें ॥ तबाहिपतंगानामगवावें ॥ ऐसे
आतमब्रह्मविचारैं ॥ एकजानिकरिद्वैतानिवारैं ॥ १०० ॥ ऐसीभांतिविचारहिंकरतैं ॥ निसिदिनिब्रह्म
विचारमनधरतैं ॥ त्रिगुणाकारसकलभ्रमभागैं ॥ होईब्रह्मसोवतज्यौंजागैं ॥ १ ॥ ॐकारिब्रह्मब्रह्मगि
लिजावैं ॥ जहाहुतेंबहुरिनहीआवैं ॥ ऐसीविधिभवदुषनिदहैं ॥ मेरोनिजानंदपदलहैं ॥ १०२ ॥ ॥
दोहा ॥ ॥ यहपेंडोतोसोंकत्यौंजाकारिहारीरिपुजाई ॥ पारियामैंबहुविधनहैतैंभाष्योसमुराई ॥ १० ३

॥ ॥इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशस्संधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४

॥ ॥दोहा॥ ॥कह्योपंदरहीध्यायमैंसिद्धिधारणाधार ॥ परमज्ञानमैंउपजैंअंतरायतिनलार ॥ १ ॥

॥४७॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवजोगपंथसमुजाउ ॥ तातेंबहुतविघ्नबताउ ॥ जोइद्रिय मनप्राणहिंबाधैं ॥ सावधानव्हैंजोगहिसाधैं ॥ १ ॥ मोमैंधरैंआपनोचित ॥ ताकौंसिद्धिविघ्नहैंनित ॥ जो तिनसिद्धिनिकौंपरिहरैं ॥ सोममचर्णनिकौंअनुसरैं ॥ २ ॥ तिनसौंकबहूंरहेभुलाई ॥ तौश्रमसकलवृथा हिंजाई ॥ अैसैंकृष्णवचनउरधारैं ॥ उद्धवकीनौप्रष्णविचारैं ॥ ३ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौ पाई ॥ ॥ केइप्रकारधारणादेव ॥ सिद्धिनकौंकेईविधिभेव ॥ तिनकेनामकृपाकरिकहौं ॥ जोगीनि केविघ्ननिकौंदहौं ॥ ४ ॥ तुमआधीनसिद्धिहेंसकल ॥ तुमरेकृपातेंहोईअकल ॥ उद्धवप्रष्णदृढैंमेंधा री ॥ तबबोलेगोपालमुरारी ॥ ५ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवसिद्धिअठा रहकहीयैं ॥ ममधारणाकरेतैंलहीयै ॥ तिनमैंअष्टसिद्धिप्रधान ॥ दशमध्यमतैंकरौंबषान ॥ ६ ॥ जातैं देहरूपअरुहोई ॥ कतहूंनहींआवरनकौंई ॥ अणुमासिद्धिनामयहजानौं ॥ महामोहनीमायामानौं ॥ ७॥ जोतनकरैंमहाविस्तार ॥ जहांतहाकछुवारनपार ॥ महीमानामसिद्धिसोंकहीयैं ॥ कबहूंताकौंभूलनगहीयैं ॥ ८ ॥ चोयहदेहहिंअतिलघुकरैं ॥ मुष्टिनआवैंदृष्टिनपरैं ॥ सोयहलघुमासिद्धिकहावैं ॥ ममजनयाकेंनि कटनआवैं ॥ ९ ॥ जेजेइंद्रियभोगनिकरैं ॥ जहांतहांविषयनिस्तरैं ॥ तिनसबभोगनिजाकरिलहियैं ॥ ॥४७॥

प्राप्तनामसिद्धिसोंकहीयें ॥ १० ॥ एकठौरनिबैठारहै ॥ देषैसुनेसकलकौकहैं।।ताहिअगोचररहैनकाई
॥ सोप्रकासकासिद्धिकहाई ॥ ११ ॥ इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ तिहुंलोकजिनकौजुस्थान ॥ तिनकौंसौं
प्रेरेज्योंजानैं ॥ ताहिईसतासिद्धिबषानैं ॥ १२ ॥ विपयसुषनिकौंकदैंनगहैं ॥ जातैंअतिआनंदितरहैं ॥
नामअवसितासिद्धिकहावैं ॥ मेरोभगतनिकटनआवैं ॥ १३ ॥ जोजोइच्छामनमेंल्यावे ॥ सोसोसकल
फलकमेपावें ॥ वसितानामासिद्धिहैसोई ॥ मेरोजनअदरैंनकोई ॥ १४ ॥ अष्टसिद्धिएअतिप्रधान ॥
इनतेंमध्यमभापौआन ॥ तिनकेगुणव्यापैंनहीकोई ॥ नामअनुरमीकहीयेंसोई ॥ १५ ॥ दूरश्रवनसुने
सबबेन ॥ दूरदरसदेपैंसबनेन ॥ मनकेबेगमनोजबध्यावैं ॥ कामरूपबहुरूपबनावैं ॥ १६ ॥ परकेतन
मेंकरेंप्रवेस ॥ सिद्धिछठीप्रकायप्रवेस ॥ निजइच्छातैंतजैशरीर ॥ सोस्वच्छंदमृत्युहैवीर ॥ १७॥ मिल
अपसरनिविचरेदेवा ॥ देषैतिन्हैंहिंलहैंसबभेवा ॥ सोस्वरक्रिडादरसनकहीयें ॥ मिथ्याफलहैंकदैंनगही
यें ॥ १८ ॥ जोसंकलपकरेसोहोई ॥ जथासंकलपीकहीयैंसोई ॥ जहांगयौंचाहैंतहांजावैं ॥ अप्रतिह
तगतिसिद्धकहावैं ॥ १९ ॥ एदशमिलिअष्टादशकहीयैं ॥ औरैपंचतुछनहींगहीयैं ॥ वरतमानअरुभू
तभाविष्य ॥ सबकछुजानैंलिष्यअलिष्य ॥ २० ॥ यहहैसिद्धित्रिकालज्ञान ॥ आगैंसिद्धिवषानौंआन ॥
सीतऊष्णआदिकजेद्वंद्व ॥ तिनहीजेनिवारैंसोअद्वंद्व ॥ २१ ॥ विषअरुअग्निसूर्यजलथंभा ॥ जातैंहोव
ईसोअचंभा ॥ प्रतिष्टंभसोसिधीकहावै ॥ हरिजनताकेंनिकटनआवै ॥ २२ ॥ वेअष्टादशअरुएपंच ॥

 मिलितेंईससकलप्रपंच॥एमेंमूलरूपउचारी ॥ साषाबहुतनहींविस्तारी ॥ २३ ॥ ममधारणाकरेंतैंआवें
॥ जोगिनकौंबहूविधिचलावें ॥ जोतिनतेंबेचलेनकबहीं ॥ तोममचर्णनिपावेंतबही ॥ २४ ॥ जोधारणा
 तेंजोआवें ॥ ऐसैंजोगीकूंविचलावें ॥ सोसबउद्धवतोसोंकहीं ॥ जोगपंथकेविघ्ननिंदहीं ॥ २५ ॥ सगुण
रूपजोकछुविस्तारा ॥ सोनानाविधरूपहमारा ॥ ताहिताहिमांहिंमनलावें ॥ तैसीतैसीसिद्धिहिपावें ॥२६॥
॥ शब्दस्पर्शरूपरसगंधा ॥ पंचभूतकेसूक्ष्मबंधा ॥ तिनमैंजाजामैंमनलावें ॥ ताताकेरूपहीमिलि
जावें ॥ २७ ॥ महत्तत्वकेमनहिंलगावें ॥ पंचभूतसाषाकरिंध्यावें ॥ जाजासाषामैंमनधारें ॥ ता
हिंतासमदेहनधारैं ॥ २८ ॥ पंचभूतकेजेप्रमानु॥तिनमेंजोगीधारेंध्यानु ॥ तातासमलघुदेहहींकरैं ॥ कहूं
सौंकहूंगह्योंनपरै ॥ २९ ॥ सातिकअहंकारमनधारैं ॥ ताकौंमेरोरूपविचारैं ॥ तबजेइंद्रियभोगनिकरैं
॥ बहूतभांतिविषयनिस्तरैं ॥ ३० ॥ तेतेसुषएजोगीपावे ॥ सोवहप्रातीसिद्धिकहावे ॥ मेरोसूत्ररूपमनिआ
नैं ॥ तातैंत्रिभुवनकीगतिजांनैं ॥ ३१ ॥ ज्यौंकरदीवालेकरदेषैं ॥ यौंत्रिभुवनअचर्णनिपेषैं ॥ मे
रेंकालरूपमनधारैं ॥ सबव्यापकसबईसविचारैं ॥ ३२ ॥ तातैंसिद्धिईसतापावें ॥ त्रिभुवनजानैंयौंवरतावें
जोदीसौंजोईकरवावें ॥ ताकेअंतरज्यैंउपजावें ॥ ३३ ॥ आदिपुरुषजोमेरोरूप ॥ तामैंधारेंचितअनू
प ॥ तातैंसिद्धिअवसितापावें ॥ विषयानिचितआनंदवढावें ॥ ३४ ॥ निरगुणब्रह्ममाहीमनधारैं ॥ सबक
रतासबईसविचारैं ॥ तातैंवसितासिद्धिहिलहैं ॥ सोईसोपावैंजोचहैं ॥ ३५ ॥ शुद्धसत्वमेंमोहिविचारै

॥ तामेंजोगीमनकोधारे॥तातेंसुधआपुहिंहोई॥षटउरमीयापेंनहींकोई॥ ३६ ॥ गगनाधारप्राणमनधारैं ॥
शब्दरूपउरमांहिविचारें ॥ तबजहांलागेपवनआकाश ॥ सुनेंतहांलौंवचनानिवास ॥ ३७ ॥ नैनानिमैसु
यकोंधारें ॥ अरुसुर्यमेंनैनाविचारैं॥ अप्रछन्नमोहिकोंलेषें ॥ तबसोतिहुंलोककूंदेषें॥ ३८ ॥ पवनसहि
तमोमेंमनधारैं ॥ जहांतहाममरूपविचारैं ॥ असैंमनकौंजहाचलावें ॥ मनकेवेगतहांउपजावैं ॥ ३९ ॥
सारेमेरेरूपविचारैं ॥ तिनहींतिनमेंमनकौंधारैं॥चाहैंभयोरूपतबजोई ॥ वारनलागैंहोवेंसोई ॥ ४० ॥ क
न्योंप्रवेसाहिंचाहेंजामें ॥ ध्यानआपुनौआनैतामें ॥ तबतातनमेंजावेंएसें ॥ भृंगफूलतेफूलहिजैसें ॥ ४१ ॥
मूलद्वारपगबंधलगावें ॥ प्राणचलाईसीसमेंल्यावें॥ ब्रह्मरंध्रहैगौनाहिंकरैं॥ जोमनहोईतांहिंअनुसरैं॥४२
॥ स्वर्गदेवसुरबनिताध्यावें ॥ मेरोरूपजानिंमनल्यावें ॥ तबतेसाहितविमानहिंआवें ॥ तेजोगीकूंसूखउप
जावें ॥ ४३ ॥ जोजोवस्तुत्ददेसेंधारैं ॥ ताताकोंप्रभूमोहीविचारैं ॥ सोईसोपावेततकाल ॥ जवहींचा
हेंकालअकाल ॥ ४४ ॥ सकलानियंतासबकौंईस ॥ निव्यस्वाधीनसकलकेसीस ॥जोगीएसोंमोकोंध्या
व ॥ ताकोआनानिकोईमिटावें ॥ ४५ ॥ ज्ञानरूपसबअंतरजामी ॥ ध्यावैंमोहिसकलकौंस्वामी ॥ अप
नीजानेजन्ममरनकी ॥ ज्ञानत्रिकालअरुसबकेमनकी ॥ ४६ ॥ प्रकृतिगुणनितेंन्यारौंजानौ ॥ असाति
नकोंस्वामीकरिमानौं ॥ ध्यावैंमोहिसदाअद्वंद्व ॥ तबकोइनहींव्यापैफंद्ध ॥ ४७ ॥ सबमेंव्यापकसकलअ
तीत ॥ लिपेनसरअगिनजलसीत ॥ एसोंमोकौंध्यावैंकोई ॥ असोलक्षणपावेंसोई ॥ ४८ ॥ जेमेरेअव

तारानिध्यावैं ॥ आयुधछत्रचामरमनल्यावैं ॥ ताकौंकहौंनपराजय्यहोई ॥ सबहिनमांहिविराजेसोई ॥४९
यैंधारणाकरैंममजोई ॥ सिद्धिनपावैजोगीसोई ॥ परिहेअंतरायींहेंसारैं ॥ मेरेभक्तिनिदूरनिवारैं ॥
५० ॥ मोतेंएइनतेंमैंनाहीं ॥ तातैममजननिकटनजांहीं ॥ मोहिनलहैंइनहींजेलेवैं ॥ मोहिभजेतिनकौंएसे
वैं ॥ ५१ ॥ मोहितैंउतपतिसबइनकि ॥ प्रेमतिपालकरौंतिनतिनकी ॥ ममआधीनासिद्धिअरुजोग ॥
सांष्यअरुज्ञानधर्मधनभोग ॥ ५२ ॥ सबकौंजनकसकलकौंस्वामी ॥ मेसबइनकौंअंतरजामी ॥सब
मेंबाहरभितरएक ॥ मोमैंवरतैंसकलअनेक ॥ ५३ ॥ पंचभूतसबभूतनिमाहीं ॥ बाहिरभिंतरदूजानाहीं
॥ सोसबमेहीनाहींआन ॥ आनदृष्टिसोईअज्ञान ॥ ५३ ॥ तातैंद्वैतभावनहींआनैं ॥ मेरोरूपसकलक
रिमानैं ॥ साधनासिद्धिसकलभ्रमतजैं ॥ मेरेचर्णनिरंतरभजैं ॥ ५५ ॥ ममप्रसादममचर्णनिपावैं ॥ अ
तिअपारभवदुषामिटावैं ॥ यहमैंतोसोंभाष्यौंज्ञान ॥ यातेंऔरसकलअज्ञान ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ए
कब्रह्मकरिदेषनौयहसुनिदुष्करज्ञान ॥ पूछिविष्णुविभूतितबउद्धवपरमसुजान ॥ ५७ ॥ ॥ इतिश्रीभा
गवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांपंचदशोध्यायः ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ कहतसोलमैंध्यायमैंप्रगटसूपइहदेस ॥ ज्ञानवीर्यप्रभावसबबर्णनकरीविशेषे ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवा
च॥चौपाई॥तुमहोपरब्रह्मअविनासी॥चिदानंदाविज्ञानप्रकासी॥आदिअंतमध्यनहींजाकौं ॥कोईभेदलहेन
हींताकौं॥१॥तुमाहिंसकलजगतउपजावौ॥ तुमप्रतिपालौतुमाविनसावौ॥तुमसबबाहिरअरुसबमांही॥ सदाअ

लिलिपीकहुंनाहीं॥२॥जहांतहांतुमहोहोऐका॥इहसबभ्रमजोदृष्टिअनेका॥ हेप्रभुयहजगअतिविस्तारा ॥ उंचनीचबहूविविधप्रकारा ॥ ३ ॥ अरुयाजीवसतकरिमान्यौं ॥ विषयनिसौंबहूभांतिबुधान्यौ ॥ याकेए कदृष्टिक्योंआवैं ॥ केसेंसकलब्रह्मकरिध्यावै ॥ ४ ॥ ज्ञानवंततबजनहेंजेतें ॥ ब्रह्मदृष्टिदेषतहेतेतैं ॥ ता तैंअबतुमकरुणाकरौं ॥ निजविभूतिमोसौंविस्तरौं ॥ ५ ॥ तिनमेंदेषिसबनिमेदेषौं ॥ तबअद्वैतब्रह्मकरि लेषौं ॥ सुनिउद्धवकेउत्तमबेन ॥ बोलेहरिजीकरुणानेन ॥ ६ ॥ ॥श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपा ई ॥ उद्धवप्रष्णभलीतुमकीन्ही ॥ जोंतेपरेंपरमगतिचीन्ही ॥ यहप्रष्णअर्जुनहीकरि ॥ तासोजामेंविधि उचरि ॥ ७ ॥ तेहीविधिअबतोहीसुनाऊं ॥ ऐसेब्रह्मदृष्टिउपजाऊं॥कौरवअरूपांडवकुरुषेत ॥ जबही जुरेंभारतकेहेत ॥ ८ ॥तबअर्जुनकौंरबहुविषैं ॥ सकलबंधुअपनेकरिलेषैं ॥ इनसबहींनकोजोमेमारौं॥ आपुहिंआपनरकमेंडारौं ॥ ९ ॥ ऐसीविधअान्यौअहंकार ॥ आपुहिंमान्यौमारनहार ॥ तबमेंताहींज्ञा नसमुडायौ ॥ ताकौंतबअज्ञानमिटायौं ॥ १० ॥ प्रष्णकरीअर्जुनतबएसी ॥ तुममोसोंकोनीहैंजेसी ॥ तातैंउत्तरकौंउचरौं ॥ याविधिब्रह्मदृष्टिकौंकरौं ॥ ११ ॥ उद्धवमेसबहींनकोस्वामी ॥ अरुसबहीनकों अंतरजामीं ॥ आपहुंतेंसबकोउपजाऊं ॥ सबपोषोंसबकौंबरताऊं ॥ १२ सकलरहैरेआधीन ॥ मोही मेसबहोवेलीन ॥ तातैंसबमेंदुजानाहीं ॥ यौंविभतिजानोंमनमांहीं ॥ १३ ॥ पारितोसोंविशेषसोंकहौं ॥ ते रीद्वैतदृष्टिकौंदहौं ॥ सबरक्षकनिमाहिमेंरक्षक ॥ तिनमेंकालसकलजेधक्षक ॥ १४ ॥ सोमेंप्रकृतिगु

णानिकीआदी ॥ पंचभूतमेंमेंभूतादि ॥ सूत्रसकलवेदनमैंजानों ॥ बडेतुमाहीमहत्तत्वाहिंमान्यों ॥ १५॥
सबसूक्ष्मनिमांहिजीवदेषौ ॥ सबदुर्जयनिमांहीमनलेषौ ॥ वेदयज्ञानिमांहींब्रह्मजानौ ॥ ओंकारमंत्रनिमैं
मांनों ॥ १६ ॥ छंदनिमांहीगायत्रीछंद ॥ मेंअकारअक्षरमेंवृंद॥ सबदेवनिमेंमध्यपुरंदर ॥ सकलवसू
मैंमैवैसंदर ॥ १७ ॥ नीलकंठएकादशहरमें ॥ विष्णुनामद्वादशदिनकरमैं ॥ तिनमेंभृगुजेसप्तमहाऋ
षी ॥ तिनमैंमनूजैसबैराजऋषी ॥ १८ ॥ देवऋषिनिमेंनारदजांनौ ॥ कामधेनुधेनुनमेंमानौं ॥ सिधनिमैं
कपिलस्वरूप ॥ पंक्षीयानिमांहिगुरूडममरूप ॥ १९ ॥ प्रजापतिमेंमेहोदक्ष ॥ तिनमेंमकरजहांलौंमक्ष ॥
वादनिमांहेअध्यात्मवाद ॥ सबअसूरनिमेंमैंप्रहलाद ॥ २० ॥ तपप्रकासमांहोंदिनेस ॥ जक्षरक्षगणा
मांहींधनेस ॥ तिनमेंसोमसकलजेउडगन ॥ सबधातूमेंमेंहौंकांचन ॥ २१ ॥ गजनिमामांहींमेंगजेएरा
वत ॥ मेंअनंगजेसृष्टिउपजावत ॥ तहांवरूणाजेसबजलजंत ॥ नागनिमेंममरूपअनंत ॥ २२ ॥ नरनि
माहींममरूपनरेस ॥ सर्पनिमांहींवासुकीसर्पेस ॥ उच्चैःश्रवाहयनिमैंजानौं ॥ दंडधरनीतिनमेंजममानौ ॥
२३ ॥ सकलमृगनिमैंमैंमृगराज ॥ सरितनमैंगंगासरिताज ॥ सबआश्रमनिमांहींसन्यास ॥ वर्णनि
मांहिविप्रममवास ॥ २४ ॥ सकलसरनमेंरूपसमुद्र ॥ सकलधनुषधारीनमैंरूद्र ॥ मेहोधनुषआयुधनिमा
हो ॥ परमनिवासमेरूमोमांहीं ॥ २५ ॥ जेअतिगहनहिमालयतिनमैं ॥ मेपीपलसबवनस्पतिनमैं ॥ मेपुरो
हितनिमांहीवासिष्ठः ॥ तहांबृहस्पतिजेब्रह्मिष्ठः ॥ २६ ॥ सेनापतिनमांहींसेनानी ॥ धरमप्रवृत्तकसौब्रह्मा

जानी ॥सकलऔषधीनमेंजवजानौं ॥ पितरनिमांहींअर्यमामानौं ॥ २७ ॥ ब्रह्मयज्ञसबयज्ञनिमांही ॥ वृत
अद्रोहसमाकोंनाहीं ॥ वायूअग्निजलसूर्यवांनीं ॥ अरूमनएपटसोधकजांनी ॥ २८ ॥चतूरदेहआतमा
विचार ॥ ब्रह्मचारीनमेसनतकुमार ॥ अस्त्रिनुमेसतरूपारानीं ॥ पुरुषनिमेस्वायंभूजानी ॥ २९ ॥ साव
धानतिनमेंसवत्सर ॥ अभयठौरतिनमेंउरअंतर ॥ मेहोधर्मअभयकोंदान ॥ गुह्यनमेंप्रियमोनसमान ॥
३० ॥ स्त्रीयापुरुपसंजोगीजेतें ॥ ब्रह्माहूंतेंउतरेसबतेतें ॥ सकलवानरनिमैंहनुमंत ॥ ऋतुनिमांहिममरूपव
संत ॥ ३१ ॥ मारगशिरमासनिमेंजानौं ॥ नक्षत्रमांहींअभिजितमानौं ॥ देवलअसीतरहितजेदुंदर ॥
कनलकौंससबहिनमेंसुंदर ॥ ३२ ॥ जुगनिमांहीसतजुगसेंनाम ॥ वेदनिमांहिवेदमेंसांम ॥ व्यासनमांही
व्यासद्वैपायन ॥ तिनमेंतुमजेंविष्णुपरायण ॥ ३३ ॥ कविनिमांहींकविशुक्राहिंजानौं ॥ सक्तिवंतममयहत
नमानौं ॥ विद्याधरतिनमेंसुदरसन ॥ पद्मरागतिनमेंजेमणीगन ॥ ३४ ॥ सबतृणजातिनमैंकुसजांनौं ॥ हो
मवस्तुमेंगोघृतमानौं ॥ तिनमैंधनजेसबव्यवसाय ॥ जयमार्गसवतिनमेंन्याय ॥ ३५ ॥ अंगसमाधीजो
गअंगनिमें ॥ मेहोक्षमाक्षमावंतातिनमैं ॥ धीरजमेंधीरजवंत ॥ मैंबलतिनमेंजेबलवंत ॥ ३६ ॥ छलहींमां
हींछलमेहोजुप ॥ मेरेहेतकर्ममममरूप ॥ वासुदेवसंकरषणवीर ॥ प्रद्युम्नअरूअनिरुद्धसरीर ॥ ३७ ॥
नारायणहयग्रीवमहीधर ॥ नरहरिअरूजमदग्निपुत्रवर ॥ व्यूहार्चननवपूजाजांनैं ॥ वासुदेवतहामोकौंमानैं
॥ ३८ ॥ तिनमेंथिरताजेसबभूधर पूरवचितनामतेअप्सर ॥ मेहोविश्वाबसुगंधर्व ॥ धरणीमांहींगंधमेंसर्व

॥ ३९ ॥ रसजलमांहिंशब्दआकाश ॥ रविशशितारनिमैंपरकास ॥तेजस्वानिमाहींपाकजानौं ॥ विप्र
भक्ततिनिमैंबलीमानौं ४० ॥ वीरतुमांहींअर्जुनसार ॥ मेसबउतपातिथितीसंसार ॥ इंद्रियमनबुध्यादिक
जेतें ॥ मेरीशक्तिप्रवृतेतेतैं ॥ ४१ ॥ सबहेतून्हेंअर्थानिगहौं॥ तेजडातिनमैंचेतनरहौं॥शब्दस्पर्शरूपरसगं
ध ॥ तिनमैंपंचभूतसंबंध ॥ ४२ ॥ इंद्रियमनमहतत्वअहंकार ॥ त्रिगुणसहितएप्रकृतिविकार ॥ प्रकृ
तिपुरुषजहांकछुजेतौं ॥ मेरोरूपसकलहेतेतौं ॥ ४३ ॥ मोबिनकछुकछुहैंनाहीं ॥ मेहीप्रगटरहौंसबमां
हीं ॥ जोप्रमाणगिणोमैंजबहीं ॥ तोतिनपारनपामोंतबहीं ॥४४॥ परिममनिरमितजेब्रह्मांड ॥ तिनकौंगन
तपैंनहींपंड ॥ तातैंकहौंविभूतिकहांलौं ॥ जोकछुमेरोरूपहेतहांलौं ॥ ४५ ॥ औरअबजुगतिविभूतिक
हौं॥द्वैतदृष्टिएसीविधिदहौं॥लाजतेजक्षमाधनदान॥सुंदरताऐश्वर्यअरुज्ञान॥४६॥बलसौभाग्यधीरजजहां
जहां॥ममविभूतिजानौतहांतहां॥एविभूतितोंसोंकछुकहीं।अतिअपारकहिवेंकोंरहीं॥४७॥ममथिरकाजकी
रयहजानौं ॥ इहअज्ञानकैंढमतिमानौं ॥ इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ निश्चलकरिदेषोभगवान ॥४८॥ मन
तेंसबआकारउतारौ ॥ चेतनमेंमेरोरूपबिचारौं ॥ एकअखंडितजहांतहांसोई ॥ आपापरदुजानहींकोई
॥ ४९ ॥ ऐसोंज्ञानब्रह्मकौपावौं ॥ ब्रह्महीपाईजगतनहींआवौं ॥ तनमनइंद्रियादिअरुप्राना ॥ थिरकारि
जिननधर्‍यौममध्याना ॥ ५० ॥ ताकेबहुतभांतिआचरना ॥ जपतपदानव्रतादिककरना ॥ काचैकलश
भर्‍यौजलजैसैं ॥ पलपलश्रविजावेंसबतैसैं ॥ ५१ ॥ तातैंवचनकायमनप्राण ॥ सबकौंबंधकरैंममध्या

न ॥ मोहिध्यायिमेंमाहीसमावें ॥ तत्रसंसारमांहीनहींआवै ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ ॥जोउद्धवतोसौंक
ह्यौंयहविभूतिकौंज्ञान ॥ त्यौंहिसूक्ष्मथूलसबदेषोश्रीभगवान ॥ ५३ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेए
कादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेविभूतिवर्णनेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ हंसउक्त
स्वधर्मपुनिभक्तिलक्षणाप्रीत ॥ कहीसतरमींध्यायमैंवर्णाश्रमकीरीत ॥ १ ॥ श्रीशुकवाच ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ दासनिमैंउद्धवनिजदास ॥ जाकेंहृदयज्ञानप्रकास ॥ जिनजीवनकीहितमनधरी ॥ तातेंप्र
श्नकृष्णसोंकरी ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ प्रभूतुमकलआदिउचार्यौ ॥ भ
क्तिनिमितधर्मविस्तार्यौ ॥ वर्णाश्रमआदिकनरजेते ॥ तिनधर्मनिसौंलागेंतेतैं ॥२॥ तिनमैंकोईभगतिहींपा
वें ॥ कोइकरमसिंधुबहिजावें ॥ तातेंतुमकरुणामयदेवा ॥ भाषोनरधरमनिकोभेवा ॥ ३ ॥ धर्मकरतज्यौं
आवेभक्ति ॥ तुमरेंचर्णवाढेंअनुरक्ति ॥ छूटेकालजालभवकूप ॥ लहेतुमारोब्रह्मस्वरूप ॥ ४ ॥ जद्यपि
पुनिविधिसोंविस्तार्यौ ॥ जबप्रभुहंसरूपतुमधार्यौं ॥ परिबहूकालकाहितेंभयौ ॥ तातेंधर्मलीनव्हैंगयौं ॥
५ ॥ हेकछुऔरकरेंकछुऔरें ॥ जातेंजीवनपावेंठोरें ॥ तातेतुमकरुणाकरिभाषौ ॥ वहेंजाततेंजीवनिरा
षौ ॥ ६ ॥ अरुयहतुमहीजानहुदेवा ॥ तुमबिनदूजोलहेंनभेवा ॥ तुमहीकहोंसुनोउरधरौं ॥ तुमरीराषौतु
महाकरों ॥७॥ ब्रह्महूंकीसभामुझारी ॥ वेदजहानितमूरतिधारी ॥ तहांऊंयहकोईनाहिंजानें ॥ ज्यौंबदे
सोंसबैबपानै ॥ ८ ॥ अरुयहकेसेंकरिंमनआवें ॥ कर्मकरेतिहिंभक्तिपावें ॥ अरुतुमयाहीकौंमनधारौ

॥ जातेनिजधर्मनिविस्तारौ ॥ ९ ॥ जोवैकुंठप्रयाणौकरीहैं ॥यहनिजधर्मनहींउचरीहैं ॥ तापीछैंकोईनहींक
हैं ॥ यहनिजधर्मगुनहीरहैं ॥ १० ॥ तातैंअबतुमकरूणाकरौ ॥ यहनिजधरमवेगिविस्तरौ ॥ ऐसोसुनोउ
द्धवकीबानी ॥ आपजुबोलेसारंगपानी ॥ ११ ॥ ॥ श्रीभगवानउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ ध
न्यधन्यउद्धवजनमेरे ॥ दूजोनाहिंबराबरतेरे ॥ मेरोनिजजनकहियैसोई ॥ हेतपराएवरतेजोई ॥ १२
॥ तातैंतुमपरकारजकऱ्यौ ॥ मोतैंपरमधर्मविस्तऱ्यौ॥उत्धवपरमधरमममभक्ति॥औरसकलतैंकरौविरक्ति
॥ १३ ॥ भक्तिविनाजोईजोधर्म ॥ सोसबजानौपरमअधर्म ॥ जबमैंकीयोप्रथमसंसार ॥ तबनहींहूतो
कर्मविस्तार ॥ १४ ॥ जेईजेमानवतनधरैं ॥ मोहीसेईतेतेउधरैं ॥ व्हैकृत्यकृत्यलहैंममधाम ॥ तातैंसो
कृतजुगसैंनाम ॥ १५ ॥ उमूकाररूपतबबेद ॥ ऐसेकछूनहूतेभेद ॥ सबइंद्रियमननिहचलकरैं ॥
मेरोध्याननिरंतरधरैं ॥ १६ ॥ ऐसैंसबपापानिपरीहरैं ॥ सबमेरेचर्णनिअनूसरैं ॥ त्रेताविषैभयमतिमंद
विपयानितैमानैंआनंद ॥ १७ ॥ तिननिमितबहूउद्यमकरैं ॥ राजसतैंपापनिबिस्तरैं ॥ तबतिनहेतबेदात्रि
स्तारैं ॥ बहुतभांतिकेकर्मनिवारैं ॥ १८ ॥ वर्णाश्रमभेदउपजाये ॥ न्यारेन्यारेकर्मग्रहाये॥ आपनौधरम
त्यागजोकरैं ॥ सोनरजाईनरकमेंपरैं ॥ १९ ॥ ऐसैंबहूविधिभयदिषायौ ॥ थोरेकर्मनिमेंठहरायौ ॥ ता
मेंषाप्यैउत्तमभजन ॥ सोविनसकलकर्मकौतजन ॥ २० ॥ बहूरोबहूआरंभनिचहैं ॥ राजसतैंनहींनिश्च
लरहैं ॥ तिनकेहेतयज्ञउपजायौ ॥ विष्णुरूपकहीसबनिसुनायौ ॥ २१ ॥ विष्णुजजनकीजेतामाहीं ॥ द्वै

तद्वाष्ट्रिआनिजैंनाहिं ॥ मैंमुषहूंतेंविप्रउपजायौ ॥ क्षात्रिबाहुनितैंननायौ ॥ २२ ॥ जंघनवैस्यपदनतेंसूद्रा ॥
पदानिचैंश्रौरैंसनक्षूद्रा ॥ पुनियहस्तजंघनतेंकीयौ ॥ ब्रह्मचर्यउरसंभवलीयौ ॥ २३ ॥ वक्षस्थलउपजौव
नबास ॥ मस्तकहुतेंरच्यौसन्यास ॥ तातेंपितासकलमेंएक ॥ मोतेंउपज्यौसकलअनेक ॥ २४ ॥ ता
तेंमोंहीमेटिजोकरैं ॥सोसबजाईबंधनमेंपरैं ॥ जाजाअंगहूतेंज्योउपज्यौं ॥ त्यौंत्यौंताकौंलक्षणनिपज्यौं ॥
॥ २५ ॥ ऊंचेअंगहूतेंसोंऊंचौ ॥ नीचेअंगहूतेंसोनीचौ ॥ तिनकेबहुविधिभयसूभाव ॥ तातेंउपजैंनाना
भाव ॥२६॥ समदमसतक्षमासंतोष ॥ सदादयालनउपजेरोष॥ तपअरुसौचनमृममभक्ति ॥ इनलक्षण
निविप्रअनूरक्ति ॥ २७ ॥ क्षमातेजजलउद्यमधीर ॥ सूरउदारअचलगंभीर ॥ विप्रभक्तमेरोदृढभाव
॥ एक्षात्रिकेभएसूभाव ॥ २८॥ बुधीआस्तिकदानअदंभ ॥ विप्रभक्तउद्यमआरंभ ॥ वैस्यभयोलीने
एलक्षण ॥ मंदबुद्धिपरमहाविचक्षण ॥ २९ ॥ गाईअरुतिहूंवर्णकोसेवैं ॥ तिनतैंकछूलहेंसोलेवै ॥ सम
संतोषकपटतानाहीं ॥ ऐसेंलक्षणशूद्रानिमांहीं ॥ ३० ॥ मिथ्यावादहिंसाअरुचोरी ॥ बुद्धिनास्तिकहृदैंक
ठोरी ॥ कामक्रोधअरुलेभविकारा ॥ वर्णनीचकैंयहप्रकारा ॥ ३१ ॥ कामक्रोधमदतृष्णांरहितसत्यपि
गापरस्वारथसहीत ॥ जीवदयाअरुतैंअधर्म ॥ यहसबकौंसाधारणधर्म ॥ ३२ ॥ ब्रह्मचर्यकेधर्मनि
कहौं ॥ जातैभक्तिउगाईचहौं ॥ विप्रक्षत्रीअरुवैस्यानिवरना ॥ इनकौंसकलवेदविधिकरनां ॥ ३३ ॥
गर्भाधानादिकसंसकार ॥ तिहूंवरणकौंयहआचार ॥ जबतैंवहूरिजनैंउपजावैं ॥ तबतैंगुरुकैंनिकटरहावैं

 || ३४ || बहूविधिगुरुकीसेवाकरैं || वेदपढैंअर्थनिउधरैं || जनेउमेषलाकरजपमाला || दंडकमंडलु
अरुमृगछाला || ३५ || दंतवस्त्रतनमलननिवारैं || सीसजटाहस्तनिकुशधारैं || आसनचंचलकदै
 नकरैं || लोकवार्तात्हदेनहीधरैं || ३६ || मूत्रपुरीषत्यागअसनाना || हामेअरुजपभोजनजलपाना
इनमैंबचननहींउचरैं || नषकेसादिकदूरनकरैं || ३७ || सदानिरंतरद्दढव्रतधारैं || कबहूंभूलिबिंदुन
हींडारैं || जोआपहूंतैंजावैंकबहीं ||बहूतभांतिपिछतावैंतबहीं || ३८ || करिअसनानाअरुप्राणायाम ||जापक
रैंत्रिपदीसेनाम || अग्निअर्कअरुविप्रगाई || सुरमुनिवृद्धनिनमीनकराई || ३९ || संध्याउपासनकरैत्रि
काल || वचननबोलेहालनचाल || गुरुकौंमेरौरुपहीजानैं || नरकोबुधीकदैनहींआनैं || ४० || सर्व
देवमयगुरुकौंलेषैं || तनकेकछूआचरणनदेषैं || भिक्षाआदिऔराकछुजोई || गुरुकौंआनिसमर्पैसोई
|| ४१ || जबगुरुताकौंआज्ञादेवैं || तबैप्रसादआपुहीलेवैं || बैठैंठाढैंआवतजात || भोजनसयनरातिप्र
भात || ४२ || नीचभांतिगुरुसेवाकरैं || अंगुलीसौंपीछैंअनुसरै || ऐसेब्रतअखंडितधारैं || मनहूंमैंन
हींभोगविचारैं || ४३ || ऐसैंकुलगुरुवरतैंसोई || ज्यौंलगिवेदसमापतिहोई || पुनिब्रह्माकेलोकहिचाहैं
|| तोगृहस्थतहांनहीसंबाहैं || ४४ || गुरुकौंदेहसमर्पणकरैं || वेदविचारहृदेमैंधरैं || गुरुअग्निआप
सबमांही || सेवैमोहीअवरकछूनाहीं || ४५ || जुवतिअरुजुवतिनकेसंगी || इनकौंकदैनहोतप्रसंगी
|| दरसपरसबानीपरहास || त्यागैंदुरमानिअतित्रास || ४६ || सौचआचमनऔरअसनान || स

ध्याउपासनगतअभिमान ॥ तीर्थसेवाजपतपाभिक्षा ॥ तजैंदरससंभाषणइक्षा ॥ ४७ ॥ मनअरुवचनदेह
वसकरैं ॥ मेरेचर्णत्हदेमैंधरैं ॥ अरुममभजनसवनिकौधर्म ॥ भजनविनासवधर्मअधर्म ॥ ४८ ॥ ऐसे
ब्रह्मचर्यव्रतधारी॥हढतपनिशादिनवेदविचारी ॥ विगतपापएसोविधिहोई ॥ मेरिभक्तिलहैंतवसोई ॥ ४९
॥ ऐसीविधिभवसागरतजैं ॥ मेरेपरमरूपकोंभजैं ॥ अरुजोकवहीहोईसकाम ॥ तवसोकरैंजुवतिअरु
धाम ॥ ५० ॥ केईनिहकामगहैवनवास ॥ कैअधीकारपाईसन्यास अरुजोउपजैमेरीभक्ती ॥ तोन
हींकरैंकहूंआसक्ति ॥ ५१ ॥ यहहैंब्रह्मचर्यकोधर्म ॥ जातेंदूजोसकलअधर्म ॥ अवगृहस्थकोधर्मसु
नाऊं ॥ सकलगृहस्थनिकौंसमझाऊं ॥ ५२ ॥ ब्रह्मचर्यजोनहींठरावें ॥ तोग्रहस्थाश्रममैंआवें ॥ गुरु
तेंवेदपढेसवजवहीं ॥ गुरुदाक्षिणादेवेंपुनितवहीं ॥ ५३ ॥ गुरुतेंअग्यालेउरधरैं ॥ तवविधिसोंआश्रम
हीकरैं ॥ तवदेपेंउत्तमकुललक्षण ॥ करैंविवाहात्रियाविचक्षण ॥ ५४ ॥ ज्योंदेपेंअपनोअधिकार ॥
त्योंहिकरैंव्यवहारविचारैं॥विप्रविवाहहैंचारौंवरन॥विप्रकोंछोडिछत्रिकोंकरन॥५५ ॥ वैस्यविविवाहवैस्य
अरुशूद्र॥शूद्रएकहीउंचनक्षूद्र॥उत्तमसोजोएकहिकरैं॥वहुतानिकष्टनहींविस्तरैं॥५६॥श्रुतिअध्ययनजज्ञ
अरुदान॥तिहूंवर्णकौंएकसमान॥दानग्रहनजज्ञकरवावन॥अधिकविप्रकैवेदपढावन॥५७॥पारिहेतीनवृत्ति
हैऐसें ॥ अग्निमध्यजलवरपेजैसें ॥ ईनतेंव्रह्मतेंजनहीरहें तातेंइनकोंविप्रनग्रहैं ॥ ५८ ॥
करिकैशिलादेहनिरवाहैं ॥ तातैंअधिककोंनहींसंवाहैं ॥ विप्रदेहपूरणतपपईयें ॥ सोविषयनिलागिनहींग

॥ ३४ ॥ बहूविधिगुरुकीसेवाकरैं ॥ वेदपढैंअर्थनिउधरैं ॥ जनेउमेषलाकरजपमाला ॥ दंडकमंडलु
अरुमृगछाला ॥ ३५ ॥ दंतवस्त्रतनमलननिवारैं ॥ सीसजटाहस्तनिकुशधारैं ॥ आसनचंचलकदै
 नकरैं ॥ लोकवार्तारुदेनहीधरैं ॥ ३६ ॥ मूत्रपुरीषत्यागअसनाना ॥ हामेअरुजपभोजनजलपाना
इनमेंबचननहींउचरैं ॥ नषकेसादिकदूरनकरैं ॥ ३७ ॥ सदानिरंतरदृढव्रतधारैं ॥ कबहूंभूलिबिंदुन
हींडारैं ॥ जोआपहूतेंजावेंकबहीं ॥ बहूतभांतिपिछतावेंतबहीं ॥ ३८ ॥ करिअसनानाअरुप्राणायाम ॥ जापक
रेंत्रिपदीसेनाम ॥ अग्निअर्कअरुविप्रगाई ॥ सुरमुनिवृद्धनिनमोनकराई ॥ ३९ ॥ संध्याउपासनकरैत्रि
काल ॥ वचननबोलेहालनचाल ॥ गुरुकौंमेरौरूपहीजानैं ॥ नरकोबुधीकदैनहींआनैं ॥ ४० ॥ सर्व
देवमयगुरुकौंलेषै ॥ तनकेकछूआचरणनदेषै ॥ भिक्षाआदिऔराकछुजोई ॥ गुरुकौंआनिसमर्पेसोई
॥ ४१ ॥ जबगुरुताकौंआज्ञादेवें ॥ तबेप्रसादआपुहीलेवैं ॥ बैठेंठाढेंआवतजात ॥ भोजनसयनरातिप्र
भात ॥ ४२ ॥ नीचभांतिगुरुसेवाकरैं ॥ अंजुलीसौंपीछैअनुसरै ॥ ऐसेब्रतअखंडितधारैं ॥ मनहूंमैंन
हीभोगविचारैं ॥ ४३ ॥ ऐसेंकुलगुरुवरतेंसोई ॥ ज्यौंलगिवेदसमापतिहोई ॥ पुनिब्रह्माकेलोकहिचाहैं
॥ तोगृहस्थतहांनहींसंबाहैं ॥ ४४ ॥ गुरुकौंदेहसमर्पणकरैं ॥ वेदविचारहृदेमेंधरैं ॥ गुरुअग्निआप
सबमांही ॥ सेवेमोहीअवरकछूनाहीं ॥ ४५ ॥ जुवातिअरुजुवतिनकेसंगी ॥ इनकौंकदैनहोतप्रसंगी
॥ दरसपरसबानीपरहास ॥ त्यागैदुरमानिआतित्रास ॥ ४६ ॥ सौचआचमनऔरअसनान ॥ स

ध्याउपासनगतअभिमान ॥ तीर्थसेवाजपतपाभिक्षा ॥ तजैंदरससंभाषणईक्षा ॥ ४७ ॥ मनअरुवचनदेह
वसकरैं ॥ मेरेचर्णत्हदेमेंधरैं ॥ अरुममभजनसबनिकौंधर्म ॥ भजनविनासबधर्मअधर्म ॥ ४८ ॥ ऐसे
ब्रह्मचर्यव्रतधारी॥दृढतपनिशादिनवेदविचारी ॥ विगतपापएसोविधिहोई ॥ मेरिभक्तिलहैतबसोई ॥ ४९
॥ ऐसोविधिभवसागरतजैं ॥ मेरेपरमरूपकोंभजैं ॥ अरुजोकबहीहोईसकाम ॥ तबसोकरैंजुवतिअरु
धाम ॥ ५० ॥ केईनिहकामगहैवनवास ॥ कैअधीकारपाईसंन्यास अरुजोउपजीमेरीभक्ती ॥ तोन
हींकरैंकहूंआसक्ति ॥ ५१ ॥ यहहैंब्रह्मचर्यकोधर्म ॥ जातेंदूजोसकलअधर्म ॥ अबगृहस्थकोधर्मसु
नाऊं ॥ सकलगृहस्थनिकौंसमझाऊं ॥ ५२ ॥ ब्रह्मचर्यजोनहींठरावें ॥ तोग्रहस्थाश्रममैंआवें ॥ गुरु
तेंबेदपढेसबजबहीं ॥ गुरुदाक्षिणादेवेंपुनितबहीं ॥ ५३ ॥ गुरुतेंअग्यालेउरधरैं ॥ तबविधिसोंआश्रम
हीकरैं ॥ तबदेषेंउत्तमकुललक्षण ॥ करैंविवाहात्रियाविचक्षण ॥ ५४ ॥ ज्योंदेपेंअपनोअधिकार ॥
त्यौंहिकरैंव्यवहारविचार॥विप्रविवाहहैंचारौंवरन॥विप्रकोंछोडिछत्रिकोंकरन॥५५॥ वैस्यविविवाहवैस्य
अरुशूद्र॥शूद्रएकहीउंचनक्षूद्र॥उत्तमसोजोएकाहिकरैं॥बहुतानिकष्टनहींविस्तरैं॥५६॥श्रुतिअध्ययनजज्ञ
अरुदान॥तिहूंवर्णकौंएकसमान॥दानग्रहनजज्ञकरवावन॥अधिकविप्रकौंवेदपढावन॥५७॥पारिहेतीनवृत्ति
हैऐसैं ॥ अग्निमध्यजलवरपैजैसैं ॥ ईनतेंब्रह्मतेंजनहींरहैं तातैंइनकोंविप्रनग्रहैं ॥ ५८ ॥
करिकैशिलादेहनिरबाहैं ॥ तातैंअधिककोंनहींसंवाहैं ॥ विप्रदेहपूरणतपपईयें ॥ सोविषयनिलागिनहींग

वईयें ॥ ५९ ॥ बहूतभांतिकष्टहिंतपकरीयें ॥ हरिभजोहरिकौंअनुसरीयें ॥ शिलाव्रतकारिराषेंदेह ॥ न
हींममताजुवतिसुतगेह ॥ ६० ॥ अतिथिपालनौरजतमनाहीं ॥ मोहीकौंदेषेंसबमाही ॥ जीवन्मुक्तहोई
सोविप्र ॥ मेरेचर्णानिपावेक्षिप्र ॥ ६१ ॥ जोकोईममभक्तिकरैं ॥ ताकौंकछूआपदापरै ॥ सोआपदामि
टावैंकोई ॥ सोमेरोहितकारीहोई ॥ ६२ ॥ ताकौंमैंउधारौंएसैं ॥ नावनसौंअंबोनिधजैसें ॥ परिक्षत्री
निजधर्मविचारैं ॥ सकलपालनाहित्दृदैधारैं ॥ ६३ ॥ क्षित्रीसबकेदुषनिहरैं ॥ सकलजीवप्रतिपालनक
रैं ॥ सोक्षित्रीसुरलोकाहिजावैं ॥ वासवसहीतमहासुषपावैं ॥ ६४ ॥ जोआपदाविप्रकौंपरैं ॥ तोसोंबनि
जवृत्तिकौंकरैं ॥ जद्यपिषडगवृत्तिहैंउंची ॥ परिसोआतिहिंसातेनीची ॥ ६५ ॥ जोक्षत्रीकौंपरैंविपत्ती ॥
तोसोंगहैंवनिजकीवृत्ति॥किंवाविप्रवृत्तिकौंगहैं ॥अथवामृगयाकरीनिरवहैं॥६६ ॥वैश्यहीपरैंआपदाजबहीं
शूद्रवृत्तिसौंधीरैंतबही ॥ अरूजोविपतिशूद्रकौंपरैं ॥ तोप्रतिलोमजूवृत्तिहिकरैं ॥ ६७ ॥ याविधिजबही
मिटैविपत्ति ॥ तबहीगहैंआपनीवृत्ति ॥ पंचजज्ञएप्रतिदिनकरणें ॥ ग्रहस्थकौनाहीपरिहरणें ॥ ६८ ॥
करिकैंपाठऋषिनकोभजैं ॥ करिकछुहोमदेवनिकौभजैं ॥ भूतनिबलिशुधासौंपितर ॥ जलअन्नादीसकल
देसोनर ॥ ६९ ॥ तिनसबनमोकौंजानैं ॥ औरसबनिपरिकरुणाआनैं ॥ जोकछुएसहजहिंधनपावैं॥
किंवान्यायतैंउपजावे ॥ ७०॥ तासौलोगआपनौंपोषैं ॥ औरयज्ञकरिमोहीसंतोषैं ॥ जेतीलागतघरमेंहो
ई ॥ तेतोइधनराषेसोई ॥ ७१ ॥ औरसकलममहेतलगावैं ॥ भूलिनदूजैंमारगजावे ॥ जद्यपिरहैंकुटुं

बहूंमांहीं ॥ तोहूंलिऐंकदेकहूंनाहीं ॥ ७२ ॥ निशदिनत्हदयकरैंविचार ॥ मिथ्याजानेंसबपरिवार ॥
अस्त्रिपुत्रबंधूसबएसैं ॥ जलकेनिकटबटाऊंजेसैं ॥ ७३ ॥ एसबयौंहिप्रतिदेहआवें ॥ ज्योंनिद्रामांतिसु
पनापावै ॥ ज्यौंज्यौंजागेवारंवारा ॥ त्यौंत्यौंमिटैंसूपनव्यवहारा ॥ ७४ ॥ यौंहीप्रतिदेहहिंएआवें ॥ देहत
जैसबतितजावै ॥ अस्यौंहीस्वर्गादिकलोक ॥ पायेहर्षगएअतिसोक ॥ ७५ ॥ तातेंसकलवासनादहैं
अतिथीसमानभवनमैंरहैं ॥ अहंकारममतानहींआनैं ॥ सबमायाबंधनकरीमानैं॥ ७६ ॥ सबकर्मनिमेरें
हेतकरैं ॥ मोविचअंतरायपरिहरें ॥ प्रेमभावहढउरमैंराषैं ॥ औरसकलह्रदैतैंनाषैं ॥ ७७ ॥ एकपुत्रभ
एवनजावें ॥ किंवाग्रेहहीमाहीरहावैं ॥ एसोग्रहीमुगतकरिमानौ ॥ औरकछुत्हदैनहींआनौ ॥ ७८ ॥
अरुजोहोईभवनआशक्ति ॥ जुवतीसुतादिनुसोंअनुरक्ति ॥ विषयालंपटतृष्णाआतूर ॥ ज्ञानरहीतकरम
नमेंचातूर ॥ ७९ ॥ आपुहिपरमसताहीनजानैं ॥ औरकीचिंताउरआनैं ॥ भाईवृद्धपिताहेमेरौ ॥ मोबि
नदुषलहैंबहूतेरौ ॥ ८० ॥ यहअबलालघुसंततजाकी ॥ मोबिनहोईकहांगतताकी ॥ एअनाथमोबिनस
बवाला ॥ क्यौंकरीजीवैंअतिविहाला ॥ ८१॥ मोबिनईनहींकोनूप्रतिपालैं ॥ कौंनविविधदुपनिकौंटालैं॥
ऐसैंनिशादिनआनैंचिंता ॥ कबहूंनहींहोवैंनिहचिंता ॥ ८२ ॥ कदेंनसुषपावेयालोक ॥ ग्रसोरहेंचिंताभ
यसोक ॥ याविधिचिंताकरतअपारा ॥ नरकहींजावैंवारंवारा ॥ ८३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ब्रह्मच
र्यग्रहचर्यकैंमैंभाष्यैंइहधर्म ॥ जातेंउद्धवबऔरकछुसोसबजानअधर्म ॥ ८४ ॥ ॥ इतिश्रीभागवते

महापुराणेएकादशस्कंधेभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ अष्टादशमीध्यायमैंज्ञानप्रस्थसन्यास ॥ अधिकारविशेषकरतद्गतकरतप्रकास ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥अबमैंकहूंधर्मबनवास ॥ अरुअधिकारसहीतसंन्यास ॥ जातेंमेरीभक्तिपावें ॥ भक्तीपाईममचर्णनिआवें ॥ १ ॥ बरषपचासहूंतेउपरांत ॥ तबवनजाईरहेंएकांत ॥ नारीसुतनमेंरहनेंदेई ॥ जोविधिबनैंसंगतोलेई ॥ २ ॥ कंदमूलफलवृतहींकरैं ॥ वलकलमृगछालातनधरैं ॥ त्रणपताकीसिज्यासंवारै ॥ इंद्रियनिकैंसबअर्थनिवारैं ॥ ३ ॥ केसरोमनषदूरजनकरैं ॥ देहदंतमलनहींपरिहरैं ॥ भूमिशयनत्रिकालअस्नान ॥ मलनउतारैंमुसलसमान ॥ ४ ॥ ग्रीषमऋतुपंचाग्निसाधें ॥ वरषामेंछायानहींबाधें ॥ सीससकलजलधारासहैं ॥ सीतकालजलसायररहैं ॥ ५ ॥ एसीभांतिकरेंतपदुष्कर ॥ द्वंद्वनव्यापैंज्यौंजलपुष्कर ॥ अग्निपकऋतुपकफलादी ॥ भोजनलघुपवित्रअनादी ॥ ६ ॥ मुसलउषलकेपाषान ॥ केईदंतनिसौंषोटैंधान ॥ देहजीवकाआपुहींआनैं ॥ अधिकनग्रहैंसंचनहींजानैं ॥ ॥ ७ ॥ तिनहींतिनसौंमोकौंजजैं ॥ औरजज्ञवनवासीतजैं ॥ अग्निहोत्रअरुपूरणमास ॥ त्यौंहीदरसअरुचातुरमास ॥ ८ ॥ इनसबहीनकौंममहेतकरैं ॥ मोबिनऔरत्त्वदैनहींधरैं ॥ यौंतपकरीमोकौंआराधे ॥ प्राणदेहइंद्रियमनबाधें ॥ ९ ॥ यौंव्हैंसुधलहैंममभक्ति ॥ औरात्रिगुणविस्ताराविरक्ति ॥ यौंतबहींममचर्णनिवावैं ॥ केईक्रमब्रह्मलोकव्हैंआवें ॥ १० ॥ अरुजोएसैंकष्टहकिरैं ॥ पारिकामनात्त्वदेमैंधरैं ॥

तासममूरषदूजानाहीं ॥ ताकेवृथासकलश्रमजाहीं ॥ ११ ॥ यौंपंचौत्तरवरषनिपाछैं ॥ ग्रहैसुधसन्यास
होय्आछैं ॥ सकलक्रियाकौत्यागहिंकरैं ॥ मनसोममसेवाअनुसरैं ॥ १२ ॥ कर्मरचितसबलोगनिजानैं
॥ तातैंछिनभंगुरकरीमांनैं ॥ तांहींहूंतेंकरैंसबत्याग ॥ मनवचक्रमसौंदृढवैराग ॥ १३ ॥ वेदविहितविधि
मोकौजजैं ॥ ऋत्विजकौंसर्वसदैतजैं ॥ जबकोईसन्यासहींकरैं ॥ तबहींसुरविघ्नविस्तरैं ॥ १४ ॥
परियहविघ्नगणेकछुनाहीं ॥ मेरेचर्णधरैंउरमांहीं ॥ जौंकबहींकछुवस्त्राहिराषैं ॥ तोकोपीनऔरस
बनाषैं ॥ १५ ॥ दंडकमंडलकरमेंधारैं ॥ ज्यौंमिलैंत्यौंनहींऔरविचारैं ॥ देपिदेषिधरणिपगधरैं॥
वस्त्रछानीजलपानहींकरैं ॥ १६ ॥ संतवंतबानीकोंबोलैं ॥ त्हदयविचारकढैंनहींडोलैं ॥ मौनधारीवानी
कोंदंडे ॥ अरुकायाकेकर्मनिषंडे ॥ १७ ॥ प्राणायाममनहींबसकरैं ॥ सबईंद्रियअर्थनिपरिहरैं ॥अ
रुएचिन्हनहींजामांहीं ॥ भेषधरैंजतीसोंनाहीं ॥ १८ ॥ भिक्षाकरैंसतघरविप्र ॥ औरकहूंगहैंनहिंक्षिप्र
॥ सोउविप्रचतुरविधजेते ॥ जानिरहैंविप्रकौंतितैं ॥ १९ ॥ विप्रकहिंजैंदशप्रकार ॥ तिनकौंतुमसौंकहौं
विचार ॥ देवविप्रऋषीविप्रहींजानौं ॥ विप्रविप्रअरुक्षत्रिसमानौं ॥२०॥ वैश्यशूद्रअरुएकविडाल॥पसु
अरुम्लेंछविप्रचंडाल ॥ भिक्षानितअरुपढैंपठावैं॥सकलअर्थअरुतत्वबतावैं २१ इंद्रियजीतसूशीलसंतोष
॥ देवविप्रसौंनिर्गतरोष ॥ तपअरुसत्यआहिंसाकरैं ॥ दिनदिनपटकर्मनिअनुसरैं ॥ २२ ॥ काललो
पकबहुंनहींहोई ॥ ऋषिब्राह्मणकहियतूंहेंसोई॥बिनाहिंस्याफलफूलानिल्यावैं ॥ तिनहींसौदेहवरतावैं ॥२३॥

वरपासीतउष्णसवसहैं ॥ विप्र,विप्रानिसशुद्रागहैं ॥ अस्वादिकनिकरैंआरोह ॥ रणमैंसूरतजैंतनमोह ॥
२४ ॥ नीतिसहीतठानैंआरंभ ॥ क्षत्रीविप्रत्द्दैनहींदंभ ॥ अरुजोउद्यमबनिजकौंकरैं ॥ पषुराषेषेतीवि
स्तरैं ॥ २५ ॥ सोवहवेस्यब्राह्मणकहीजैं ॥ तातैंलेभिक्षानाहिगहीजैं ॥ तेललूनघृतदूधअरुलक्षा ॥ ति
लअरुनीलमहीमधूमक्षा ॥ २६ ॥ इनकौंबनिजकरतुहैंजोई ॥ क्षुद्राविप्रकहियतुहैंसोई ॥ सबभूतनिकौं
द्रोहहिंकरैं ॥ सबकैंछिद्रनिदेषतफिरैं ॥ २७ ॥ प्रतिदिनहिंसोसोअधिकार ॥ बिप्रकहावेसोमंजार ॥
भक्षअभक्षअकारजकारज ॥ गम्यअगम्यनलषैंअनारज ॥ २८ ॥ कृतघनसकलपशुनकैंलक्षण ॥
सोपशुब्राह्मणकहेंविचक्षण ॥ वापीकूपतलावफुडावैं ॥ वनबागादिकनासकरावैं ॥ २९ ॥ संध्याअरुअस
नाननजानैं ॥ एसौविप्रमलेछवषानैं ॥ निंदकलोभीपरधनहरैं ॥ निरदयक्रूरापिसनताकरैं ॥ ३० ॥ सो
चंडालविप्रकरीमानैं ॥ ऐसैंदशविधिविप्रनिजानैं ॥ तातैंउत्तमभिक्षाकरैं ॥ औरसकलदूरपरिहरैं ॥ ३१

सातघरनितैंभिक्षालावैं ॥ ताहिकरिसंतोषउपावैं ॥ सोलेजावेनदीतडाग ॥ तातैंकछुकरैंएकविभाग ॥
३२ ॥ कोइमागेताकोंदेई ॥ केजलमांहींप्रवाहकरैंतेई ॥ विचरैंधरणीहोइनिहसंगा ॥ कदैंकछुनसंवा
रैंअंगा ॥ ३३ ॥ तनमनइंद्रियनिग्रहकरैं ॥ मेरोरूपत्द्दैमैंधरैं ॥ निशदिनरहैंआत्माराम ॥ विषयसु
षनिकौंसुनैननाम ॥ ३४ ॥ समदरसीअरुधीरजवंत ॥ सदारहैंनिर्भयएकांत ॥ मेरोभावभयौअतिसूध
॥ परमविवेकीज्यौंजलदूध॥ ३५ ॥आपुहिमोहिविचारैंएक॥कदैंनदषेभूलिअनेक॥आतमअंसब्रह्मकौंजा

नौं॥बंधमुगतदोउभ्रममानौं॥३६॥बंधनजबइंद्रियनिवसहोई॥मुगतइंद्रियननबंधेसोई॥ऐसैजानीइंद्रियनी
जीतैं॥मोहीसुमरीतेकालव्यतीतैं॥३७॥दहूंलोकतेंहोइविरक्ति॥तनहूंनहीहोवैआसक्ति॥पुरग्रामादिकआ
इजोपरै॥भिक्षाअर्थंप्रवेसहिकरै॥३८॥देसपवित्रसैलबनसरीता॥वानप्रस्थजहांआचरता॥ तहांतहांनितहीं
चलीजावै॥तिनआश्रमनिभिक्षापावै॥३९॥तिनकौंलहैंसिलाकौंअन्न॥तातेहोवैमनप्रसन्न॥ताहीतैनिरमलता
ग्रहै ॥ उपजैज्ञानसकलमलदहै ॥ ४०॥ इंद्रियअर्थनिसत्यनदेपैं ॥ छिनभंगुरसबनस्वरलेपैं ॥ तातैंस
बतैंग्रहैविरक्ति ॥ नहींउद्यमनविषैंआसक्ति ॥ ४१ ॥ यहसबअहंकारकृतजानैं ॥ आत्मविपैसुपनसब
मानैं ॥ कदैंनहींत्हदयचिंतवनकरैं ॥ मनवचक्रमदूरिपरिहरैं ॥ ४२ ॥ ऐसोविधजबउपजैंज्ञान ॥ तहैं
विरक्ततजैसबआन ॥ मेरीभक्तित्हदैमैंआवैं ॥ तबसबवर्णाश्रमछिटकावैं ॥ ४३ ॥ विधिनिषेधदोउभ्रम
जानैं ॥ वेदस्मृतिकीसंकनमानैं ॥ अतिबुद्धिबालकसमरहैं ॥ विधिनिषेधकछुकहेनगहैं ॥ ४४ ॥ सबज्ञा
नेपरिजोउनमंत ॥ चैतनमयादिसेजडवंत ॥ पुष्पीतबानीरतिनहींहोई ॥ कबहूंवादनठानैंसोई ॥ ४५ ॥
बाहरमध्यएकसमरहैं ॥ कबहूंकोईपक्षनहींगहैं ॥ ज्यौंज्यौंकहैसुनेत्यौंत्यौंही ॥ उत्तमतानहींत्यागैंवयौं
ही ॥ ४६ ॥ काहुहूंतैंउदवेगनआनैं ॥ अरुकाहूकेइंआपुनठानैं ॥ निंदाआदिसुनेदुखेन ॥ अंतरध
रैनिरंतरचैन ॥ ४७ ॥ काहूकौंआपमाननकरैं ॥ मनवचकर्मभानविस्तरैं ॥ पशुसमानवैरादिकनजानैं
॥ सकलविकारदेहकैंभांनौं ॥ ४८ ॥ ज्यौंआत्मअपनेतनमांही ॥ सोईसबमेंदूजानाहीं ॥ ज्यौंनहूघटनि

 माहिसत्रिएक ॥ नटनिसंगज्ञानियेंअनेक ॥ ४९ ॥ तातैंइष्टअनिष्टहिंकरैं ॥ सोसबअपुहीकौविस्तरैं
तातैंआतमबुधहिराषैं॥भेददेहकृतसोसबनाषैं॥५०॥असमेसमेभोजनहींआवैं॥तोहूकछुनहांमनमैंल्यावैं॥क
॥५७॥ रमरचितसबदेहानिजानैं॥तिनहींतैंसुबदुषसुषमानैं॥५१॥तेसबसुषदुषकर्मसरीरा॥योंआत्मेंमैंज्यौंमृगनीरा
॥ केवलअहारहीनहीनाषैं ॥उद्यमहूंकरिप्राणनिराषैं॥ ५२ ॥ प्राणनिराषैंव्हैंविचारा ॥ लहेमोहिछूटैसं
सारा ॥ जोमेरीइच्छातैंआवैं ॥ उत्तममध्यमजोकछूपावैं ॥ ५३ ॥ ज्यौंअसनवस्त्रादिकचहैं ॥ जैसो
आवैतेसोगहैं ॥ प्रियअप्रियकीबुद्धिनआनैं ॥ एदोउमिथ्याकरिमानैं ॥ ५४ ॥ कांइटेकनमनमैंधरैं ॥
मोबिनऔरसकलपरिहरैं ॥ सोचआचमनऔरअसनाना ॥ औरैंकछूआचर्णहिनाना ॥ ५५ ॥ ते
कछूसंकातैंनहिंकरैं ॥ जोकछूसोईइछाआचैंरं ॥ ज्यौंमेरेश्रुतिकौभयनाहीं ॥ दोउभ्रमजानतहोंमाहीं ॥
५६ ॥ परितथापिकर्मनिआचरौं ॥ लोकनिकौहितमनसैंधरौं ॥ त्यौंज्ञानीविधिकिंकरनाहीं ॥ विधिनिषेध
भ्रमजानैंमांही ॥ ५७ ॥ पारिइछाआपनीआचरैं ॥ लोकनिकोहेतत्द्दैमैंधरैं ॥ ताकौंभिदद्दष्टिकहुना
हीं ॥ ज्ञानद्दष्टिदेखतहैंमाही ॥ ५८ ॥ पूर्वसंसकारहेजोलौं ॥ देहमांहीसोबरतेतोलौं ॥ बहूरींभवमेंनहीं
आवैं ॥ मेरौनिजनिर्मलपदपावैं ॥ ५९ ॥ अरुजाकौंउपजैवैराग ॥ कन्यौचाहेआभवकोत्याग ॥ पारि
ममभजनजूक्तिनहींपावैं ॥ सोसंतगुरकीसरणेआवैं॥६०॥श्रमबिनालैहैंसोजुक्ति ॥पावैंमोहीलहेभवमुक्ति ॥५७॥
गुरुकौंब्रह्मरूपकरिदेषैं ॥ मानवबुद्धिकदैंनहिलेषैं ॥ ६१ ॥ श्रद्धासहितअसूयातजैं ॥ मनवचक्रमनिरंत

रभजैं ॥ ज्यौंलगिब्रह्मविचारनपावैं ॥ त्यौंलगिगुरूतजीकहूंनजावैं ॥ ६२ ॥ पीछैंज्यौंजानेत्यौंरहैं ॥ परम हंसकेधर्मनिगहैं ॥ अरिजिनषड्रिपुजीतेनाहीं ॥ इंद्रियअर्थविचारतमांही ॥ ६३ ॥ चंचलबुद्धिनज्ञानवै राग ॥ ताकौंसकलवृथाहैंत्याग ॥ भेषदिषाईजीवकाकरैं ॥ ताकौंदोषकह्यौंनहींपरैं ॥ ६४ ॥ देवपितर ऋषिभूलिननाषैं ॥ तिनकौंरिणअपनेसिररषैं ॥ अंतरगतिमेंताहींछिपावैं ॥ आपहिवांचैंबंधउपावैं ॥ ६५ ॥ सोशुषकौंनलहैंयालोक ॥ अरुत्यौंहिभृष्टहोईपरलोक ॥ एहैंवर्णाश्रमकैधर्म ॥ इनतैंभक्तिलहैंद हिकर्म ॥ ६६ ॥ अबचार्यौंकेधर्मप्रधान ॥ न्यारेंन्यारेंकरौंबषान ॥ समअरुअहिंसासंन्यासीकौं ॥ श्रुतिविचारपवनवासीकौं ॥ ६७ ॥ ग्रहमैंदयाजन्ममममकर्म ॥ ब्रह्मचर्यगुरुसेवाधर्म ॥ ब्रह्मचर्यतपसोचसं तोष ॥ सकलसुत्दृदकतहूंनहींरोष ॥६८॥ मेरोभजनसकलममकारण ॥ एसबहीनकैंधर्मसाधारण॥ग्रेही देईवनिताऋतुदाना ॥ भूलिनगमनकरैंदिनआंनां ॥६९॥ याविधिअपनेंअपनैंधर्म ॥ मेरेहेतकरैंसबकर्म सबमेंजानेंमेरोभाव ॥ कांह्रूंपरिनहींधरैंअभाव ॥७० ॥ सोपावैंमेरोदृढभक्ति ॥ औरसकलतेंकरैंविरक्ति तातैंउपजेमेरोज्ञान ॥ देषेंमोहिमिटेसबआना ॥ ७१ ॥ ऐसौव्हैंपावैंममरूप ॥ बहुरिनआवैंयाभवकूप जैहैंसकलवर्णाश्रम ॥ तिनकेंएसेंभाषेधर्म॥७२॥ भक्तिसहितएमोहिमिलावैं भक्तिविनाभवसिंधूबहावैं ॥ ऐसोतत्वलहैंसोतरैं ॥ औरसकलनितजन्मेंमरैं ॥ ७३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एउद्धवतोसौंकह्यौंवर्णा श्रमकोधर्म॥यातेंममभक्तिलहैंछुटैंबंधनकर्म ॥ ७४ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्री

भगवानुद्धवसंवादेअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पूर्वहिआश्रमधर्मतैनिर्णयज्ञानसुभाग
॥ उनबिंशतिअध्यायमैंज्ञानादिकतैंत्याग ॥ १ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ उद्धवएव
॥५८॥ र्णअरुआश्रमां ॥ तिनकेमैंभाषेसबधर्मा ॥ इनमेंरहीममभक्तिउपावैं तातैंमेरोज्ञानहीपावैं ॥ १ ॥ ज्ञानही
पाईंसकलभ्रमजांनैं ॥ वर्णाश्रममिथ्याकरिमानैं ॥ सबसाधनतजीमोकौंध्यावैं ॥ औरकछुत्वदैनहींल्यावैं
॥ २ ॥ ज्ञानीकौंमैंहिहौंसाधन ॥ अरुमेरौंहिकरौनैतआराधन ॥ मोहीकरिमोकौंअराधैं ॥ तनमनइंद्रि
यमोसौंसाधैं ॥ ३ ॥ मोबिनस्वर्गादिकनहींलेही ॥ मेरेहींचर्णनिचितदेई ॥ मोबिनमुगतकदैनहींगहैं ॥
मोबिनसकलवासनादहैं ॥ ४ ॥ मोहिसोहेतमैंताकौंप्रिय ॥ मोबिनऔरसकलअप्रीय ॥ जैहैंसहीतज्ञान
विज्ञान॥तेहीजांनैंमोहीसूजान॥ ५ ॥ज्ञानीतैंमेरेप्रियनाहीं॥सदाबसैंमेरैंमनमांहीं॥मेताकौंमेरौहैंसोई ॥दूजौन
हींपरसपरकोई॥६॥जपतपतीर्थव्रतअरुदाना॥कहौंकहांलौंजेविधिनाना॥जेविधिकरैंनहींफलएसौ ॥ ज्ञान
कलातेहोवैजेसौं॥७॥तातैंज्ञानत्वदैमैंधारौं ॥ औरैंसाधनसकलनिवारौं ॥सबमैंरूपआपनौजानौं ॥ मोही
जानिप्रभुसेवाठानौं ॥८ ॥ व्हैकरिसहीतज्ञानविज्ञान ॥देषैंसकलएकभगवान ॥बहुरिममनिजरूपसमावैं ॥
जहांजाइकोईनहीआवैं ॥९ ॥जबहीप्राणीज्ञानहींपावैं ॥ तबहींममनिजरूपसमावैं ॥ ज्ञानविज्ञानहीपावैंमो
ही ॥ यहानिजमतोंकहतहोंतोही ॥ १० ॥ उद्धवतोमैंविविधविकार ॥ जन्ममर्णसुषदुषप्रकार ॥ तेसम ॥५८॥
स्तयातनकैंजांनौं ॥ सोतनमायाभ्रमकीरमानौं ॥ ११ ॥ आपुहिसूधनिरंजनदेष्यौं ॥ द्वैतअतीतएकक

रिलेषौ ॥ एजेप्रगटसकलदेहादी ॥ तेआतममेहूतेनआदी ॥ १२ ॥ अरूअंतहूंरहैंकछुनाहीं ॥ अ
बअज्ञानहूंतेंबरतांई ॥ ज्ञानदृष्टकरवरतेंबबही ॥ त्रिगुणरहीतआपुहैंतबही ॥ १३ ॥ जेसैंरजुमांहीआहि
कहैं ॥ आदिनहुंतौंअंतनाहिरहैं ॥ भर्मतेंमध्यमंदमतिमानौं ॥ हेनाहीपरिहैंसोजानों ॥ १४ ॥ यौंदेहादि
कसकलभ्रमदेषो ॥ आपुहींसदाब्रह्ममयलेषौ ॥ एसोसुनिहरिजीसौंज्ञान ॥ उद्धवजनपूछयौभगवान ॥
१५ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुज्ञानकृपाकरिकहौं ॥ मेरेनानाभ्रमकौंदहौं ॥
अरूयौंहिभाषोविज्ञान ॥ भक्तिआपनीपरमनिधान ॥ १६ ॥ जाकौंचाहेसकलमहंत ॥ यातेंहोईजगत
कौंअंत ॥ याविनज्ञानध्यानकछूनाहीं ॥ साधनसकलवृथाहीजाहीं ॥ १७ ॥ याकौंपाइमुगतिनहीलेवैं ॥
औरसूपनिपरिदृष्टिनदेवैं ॥ एसीभक्तिकृपाकरिकहौं ॥ आपनेंजनहींऔरनिर्वहौं ॥ १८ ॥यहभवसा
गरविकटअनंत ॥ यामेंभ्रमतनआवेंअंत ॥ तापरितपेत्रिविधसंताप ॥ तिनमैंपरेंआपहिंआप ॥ १९ ॥
तातैंजीवमहादुषपावैं ॥ सुषठानैंसोदुषव्हैंआवैं ॥ तातैंदूजोरक्षकनाहीं ॥ मेविचारिदेष्यौमनमांही ॥ २०
॥ तुमरेचर्णछत्रासिरधारैं ॥ सोसमस्तसंतापनिवारैं ॥ ताकौंदशदिशिअमृतवर्षे ॥ ताकेदरशऔरसब
हर्षे ॥ २१ ॥ ज्यौंकाहूकंगालहीलीजैं ॥ ताकेशिरछत्रधरिदीजैं ॥ सोव्हैंभूपमहीसुषपावैं ॥ अरूऔर
निकैदुषमिटावैं ॥ २२ ॥ यौंतुमचर्णछत्रासिरधारैं ॥ सोआपुनैंसबदुषनिवारै ॥ सोभेतीनोंलोकाहिंमाही
॥ तासमऔरकहूंकौनाहीं ॥ २३ ॥ अरूजेताकेसर्णहींआवैं ॥ तेतेसकलपरमसुषपावैं ॥ याभवकूप

ज्यौविहाला ॥ तापरडर्‍यौमाहीअहिकाला ॥ २४ ॥ तातैंविषयविषयीसुषज्ञानै ॥ तिनानीमितबहुउद्यमठा
नैं ॥ तातैंसदाअमितदुषपावैं॥जाकौंकबहूंअंतनआवैं॥२५॥ताकौंकृपापीयूषापिवावौ॥काढीकूपतैंमृतकोजि
वावौ ॥वचनामृतकीबरषाकरौ॥अपनेगुणनिबाधीउद्धरौ ॥२६॥तुमहीजगतपिताजगस्वामी॥जगपालकज
गअंतरजामी॥एसैंबचनसुनेभगवान॥तबउद्धवसोंभाष्योज्ञान ॥२७॥श्रीभगवानुवाच ॥ चौपाई ॥ उद्धव
प्रश्नकरीतुमजोई ॥ धर्मपुत्रकीनीतिनसोई ॥ सरसिज्यामैंभीषमपरैं ॥ हमकूंसूनतवचनउचरैं ॥ २८॥
तेईअबमैंतुमहीसुनाउं ॥ भक्तिज्ञानविज्ञानबताउं ॥ प्रकृतिपुरुषमहतत्वअहंकारा ॥ शब्दादिकजेपंचप्र
कारा ॥ २९ ॥ त्रयगुणअरुइंद्रियदशएका ॥ पंचभूतमिलिभएअनेका ॥ थावरजंगमविविधप्रकारा॥
इनअठाईससकौविस्तारा ॥ ३० ॥ इनविनऔरकहूंकछुनाहीं ॥ एकदृष्टिदेषेसबमांहीं ॥ याकरिसक
लएकहिजानैं ॥ ताकौंसाधुज्ञानबपानैं ॥ ३१ ॥ अरुजबईहअठाईसतत्व ॥ मायाजानैंसकलअतत्व
आत्मएकब्रह्मकरिजानैं ॥ देहादिकसबमिथ्यामानैं ॥ ३२ ॥ रजुजानीज्यौंसर्पनिवारैं ॥ त्यौंसमस्तमम
रूपविचारैं ॥ जैसेंदिसामोहमिटजावैं ॥ आठौंदिसकीबरषहिंपावैं ॥ ३३ ॥ करतनिरंतरज्ञानविचारा॥
देषेब्रह्ममिटैविस्तारा ॥ ताकौंकहियतुंहेविज्ञान॥तातेलहैंमोहितजीआन ॥ ३४ ॥ आदिहूंतौअरुहीयेअं
त ॥ सोईहैंअबहुंबरतंत ॥ वरणआकारप्रगटहैंचैतैं ॥ आदिअरुअंतनहींहैंतेतैं ॥ ३५ ॥ तातअबहुं
मिथ्यादेपें ॥ तिहुंकालमोहीकौंलेषें ॥ जेजेंतिहुंकालमेधरणी ॥ घटनामादिकमिथ्याकरणी॥ ३६ ॥ शु

तिकौमतौल्हदेमैंआंनै ॥ नेतिनेतिश्रुतीसदाबषानैं ॥ नामआकारवेदभ्रमभाषै ॥ ब्रह्मसत्यदूजौसबनाषै
॥ ३७ ॥ सकलघठनिमैंएकबतावैं ॥ उंचनीचसबभेदामेटावैं ॥ ऐसीभांतिविचारैवेद ॥ जानैंमोहीमि
टावैभेद ॥ ३८ ॥ अरुयोंहीप्रगटसबलेषैं ॥ सप्तधातुकैंसबतनदेपैं ॥ अरुदेपैंसबउपजतांबिनसंत ॥
योंहीप्रत्यक्षविचारैंसंत ॥ ३९॥ सतपुरुषभयेहैजेतैं ॥ तिनकैंबचनविचारैंतेतैं ॥ एकमतोसबनिकौदेषैं ॥
जानैंमोहीभेदभ्रमलेषैं ॥ ४० ॥ अरुयौंअनुभवत्हदयाविचारैं ॥ चेतनराषिअचेतनटारैं ॥ सबदेपैचेत
नआधार ॥ इंद्रियदेहविविधविस्तार ॥४१ ॥ चेतनतेजडअर्थनिगहैं ॥ चैतनबिनाकोईनहींरहै ॥ यौं
वेदांततथाद्दष्टांत ॥ अनूभवअरुयोंहीसिद्धांत ॥ ४२ ॥ इनचारुहूंकौंमतौंविचारैं ॥ मोहीजानीसबभेद
निवारैं ॥ सकलद्दश्यतेहोईविरक्ति ॥ चेतनब्रह्मसदाअनुरक्ति ॥ ४३ ॥ कर्मरचितसबमिथ्यामानैं ॥
ब्रह्मलोककौंनस्वरजांनैं ॥देष्योसूनैंत्हदेमैंआवैं ॥ सोसबबंधनजानिबहावैं॥४४॥मेरीभक्तित्हदेमैंधरैं॥
जिनतैंभक्तिहोईतेंकरैं॥भक्तअरुभक्तिहेतहैंजतैं॥ तुमसौंपीछेंभापेतेतैं ॥४५ ॥अबहूंबहूरोतबहेतविचारौं ॥
भक्तभक्तिसाधनउचारौं ॥ मेरीकथासुनैंअबकहैं ॥ प्रीतिसहितउरअंतरगहैं ॥ ४६ ॥पूजामैंअतिनेष्ठा
धारैं ॥ बहूतभांतिअस्तुतिविस्तारैं ॥ वंदनकरैंप्रदाक्षिणादेई ॥ अरुअष्टांगप्रणामकरेई ॥ ४७॥ सब
भूतनमैंमोकौंजानैं ॥ परिममजनमेरोतनमानैं ॥ममभक्तिनिकौंबहुविधिसेवैं॥ तनमनधनतिनहिकौंदेवैं ॥४८
॥ मेरेहेतकरैंजोकरैं॥ मोबिनसकलपरिहरैं ॥ मेरेंगुणनिकहैंउरधारैं॥ दूजिकामनासकलनिवारैं ॥ ४९

मेरेअर्थअर्थसबत्यागें ॥ सूषअरुभोगनितेंवैरागें ॥ जपतपजोगजज्ञव्रतदाना॥सयनासनभोजनजलपानां॥
५० ॥ इत्यादिकसबममहितकरैं ॥ यातैंअंतरसबपरिहरैं ॥ सदाआपुकौंमोहिनिवेदैं ॥ प्रेमशब्दउरयं
थहीभेदैं ॥ ५१ ॥ अैसैंजबममभक्तिलहैं ॥ तबअबसेषकछूनहींरहैं ॥ साधनासिध्यलहैंसोंसकल ॥
कालकर्मतेहोवेअकल ५२ ॥ जबमोविषैंचितकौंधारैं ॥ तबव्हैंसातिकरजतमकौंटारैं ॥ धर्मऐश्वर्यज्ञा
नवैराग ॥ इनकौंसहजलहैंबडभाग ॥ ५३ ॥ अरुजोमेरीमुक्तिनपावैं ॥ देहगेहसोंचितलगावैं ॥ तब
होवैंरजतमअधिकारा ॥ बंधेअधर्मपरैंसंसारा ॥ ५४ ॥ बंधमुक्तकौंचितहैंकारण ॥ बोरैंचिताचितहैंता
रण ॥ मोमैंधारैंमोकौंलहैं ॥ भवमैंधारैंभवमैंवहैं ॥ ५५ ॥ तातैंधर्मज्ञानवैराग ॥ ईस्वरताआदिकजेभा
ग ॥ तेसमस्तमेरेआधीन ॥ तातैंहोवैंममलौलीन ॥ ५६ ॥ सेवतमोहीसकलएपावैं ॥ मोबिनकोईनिक
टनआवैं ॥ मेरीभगतिकहावैंधर्म ॥ उद्धवदूजोसकलअधर्म ॥ ५७ ॥ एकब्रह्मदरसनसौंज्ञान ॥ याबि
नऔरसकलअज्ञान ॥ अरुउद्धवसोंहैवैराग ॥ जोसमसतविषयानिकौंत्याग ॥ ५८ ॥अरुऐश्वर्यासिद्धि
अणूमादी ॥ ममसेवककीसेवकआदी ॥ तातैंजेममसरणहींआवैं ॥ तैंईमुक्तिभुक्तिसुषपावैं ॥ ५९
॥ दोहा ॥ अैसैंअदभुतबेनजबकहैंकृपाकारिकृष्ण ॥ तबउद्धवजनहसाषिकरीकीनीहारिसौंप्रष्ण ॥६०
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूपूरणकृपाकरौ ॥ ज्यौंहैंत्यौंबहुविधिविस्तरौ ॥ जोतुम ॥६०॥
धर्मभक्तिकृतभाष्यौ ॥ ब्रह्मदृष्टिकौंज्ञानाहिंराष्यौ ॥ ६१ ॥ अबवैरागादिकसमझायो ॥ मेरेसबसंदेहामि

ढायौ ।। त्यौंहीसकलतत्वसौंभाषौं ।। होईअतत्वदूरिकरिनाषौं ।।६२।। जमकहियेसोकेइप्रकारा ।। अ
रुत्यौंकहौंनियमबिस्तारा ।। अरुसमकौनकौनदमदेवा ।। कौनक्षमाअरुधृतिकौभेवा ।। ६३ ।। कौनसूर
तातपअरुदान ।। कौनसत्यकौनऊठबषान ।। कौनत्यागकौनधनइष्ट ।। कौनजज्ञकौनदक्षिणावरिष्ठ ।।
६४ ।। बलअरुदयालाभअरुसुष ।। विद्यालज्जासोभादुष ।। पंडितमूरपग्रहस्तपंथ ।। स्वर्गनर्कअरुपं
थकुपंथ ।। ६५ ।। कौनदारिद्रीकौनधनवंत ।। कौनकृपनकौनईस्वरवंत ।। अरुईनेंतउलटीहैंजेती ।। स
मअरुदमआदिकहैंतेती ।। ६६ ।। मोसौंदेवकृपाकरिभाषौं ।। राषोंतत्वअतवहींनाषौं ।। यौंसूनिबद्धउद्ध
वकोप्रश्न ।। तबकृपाकरिबोलेकृष्ण ।। ६७ ।। श्रीभगवानुवाच ।। ।। चौपाई ।। ।। हिंसारहीव
सत्यअस्तेय ।। संगविवर्जितसबकोंहेय ।। लज्जामौनआस्तिकथीरा ।। ब्रह्मचर्यअरुक्षमागंभीरा ।। ६८
।। एद्वादशयमगहैंनिवर्ती ।। अरुत्यौंद्वादशानियमप्रवर्ती ।। सोचअरुकपटरहितधरमादर ।। जपतपअरु
धर्मपूजासादर ।। ६९ ।। तीरथअटनअतीतकौपोष ।। गुरुसेवाअरुदृढसंतोष ।। परउपकारहोम
विस्तारैं ।। भुक्तिमुक्तिचाहैंसोधारैं ।। ७० ।। समजोमोमेंनेष्ठबुद्धी ।। दमइंद्रियनिग्रहमनशुद्धी
।। जोदूषनिउपजावेंकोई ।। तिनतैंजाकैंदुषनहोई ।। ७१ ।। सकलसहैंकछुमननहिआंनैं ।।
ताकौममजनक्षमाबषानैं ।। जिभ्याइंद्रियचंचलहोई ।। तिनदोनोकौंत्यागेसोई ।। ७२ ।। रसअरुअब
लाकौनहींगहैं ।। ताकौंमेरोज्ञनधृतिकहैं ।। भूतद्रोहत्यागसोंदान ।। भोगतजनसोंतपनहींआन ।। ७३ ।।

सोईसूरजोजीतेसुभाव ॥ सोईसत्यसकलममभाव ॥ मोकौंलीयेबचनसौंसत्य ॥ मोबिनबोलेसकलअसत्य
॥ ७४ ॥ कर्मनिमेंजोहोईअसंग ॥ सोवहपरमसोचहैअंग ॥ सोहैत्यागतजैफलकर्म ॥ सोधनइष्टपरमम
मधर्म॥७५॥यज्ञरूपमेंहोंनहींआन॥सोदक्षिणादेईसमज्ञान॥प्राणायामपरमबलकहीयैं ॥ जाकरिबडोशत्रुम
नगहीयैं॥७६॥भाग्यजोममऐश्वर्यपावैं॥चेतननिजानंदव्हैआवैं॥मेरीभक्तिएकईहलाभ भक्तिविनासौंसक
लअलाभ॥७७॥जातिभेदमिटैसोविद्या॥उद्धवदूजीसकलअविद्या॥लज्जामानिअकरमनगहैं ॥ ममजनताकौं
लज्जाकहैं ॥ ७८ ॥ निहकिंचननिरपेक्षनिरलोभा ॥ इत्यादिकजेगुणतेसोभा ॥ सोसुषजोसुषदुषअनीत
॥ पुन्यनहींपापउष्णनहींसीत ॥ ७९ ॥ विषयनकीइच्छादुषजानौं ॥ गुणसंपन्नआढ्यसौंमानौं ॥ बंधमु
क्तकीयुक्तहिंजांनैं ॥ ममजनपंडिततांहिंवषानैं ॥ ८० ॥ अहंकारजाकेजगआदी ॥ आपनेकहेदेहगे
हादी ॥ सोसमस्तमूरुषहींजानौं ॥ यातेंऔरभांतिमतीमानौं ॥८१॥ जाकरिमोहीलहैसोपंथ ॥ जोप्रवृत्तिसो
सकलकुपंथ ॥ नितसंतोषीसीतलत्द्दय ॥ सातिकचितसबनिपारिसुत्द्दय ॥ ८२ ॥ यहहैस्वर्गसुषकौभं
डार ॥ नरकनिमैतामसअधिकार ॥ सतगुरुएकबंधुकरिजानौं ॥ औरसकलवैरीकरिमानौं ॥ ८३ ॥
सतगुरुहैसोमेरोरूप ॥ जातैंजीवतजैग्रहकूप ॥ सतगुरुबिनाबंधुनहींकोई ॥ सतगुरुविनाजोवैरीहोई॥८४॥
मानवतनसोईग्रहकहीयैं ॥ ताकैंग्रहैंग्रहीव्हैरहीयैं ॥ सोदारिद्रजोतृष्णावंत ॥ कृपणइंद्रियनिबसचरतंत ॥
८५ ॥ विषयनिअनासक्तसोईस ॥ विषयनिवसतेसकलअनीस ॥ इतनीप्रश्नकहीमैंतोसौं ॥ जाजावि

धितुमपूछीमोसौं ॥ ८६ ॥ विधिनिषेधकैलक्षणजेसैं ॥ महापुरुषजानतहेतेसैं ॥ विधिनिषेधकौंजोलौंजानैं ॥ उंचनीचभेदनिमानैं ॥ ८७ ॥ सोयहसकलनिषेधहिजानौं ॥ भेददृष्टिमेंविधिमतिमानौं ॥ विधिअरुनिषेधनिषेधहिदेष्यौं ॥ दहुंतेंपरैताहींविधिलेषौ ॥ ८८ ॥ विधिनिसेधपशुमानवमानैं ॥ पंडितकदैंहदैंनहींआने ॥ तातेंविधिनिषेधभ्रमजानौं ॥ मेरोरूपसलकरिमानौं ॥ ८९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विधिनिषेधभ्रमजाननौज्ञानकह्योजबकृष्ण ॥ वेदवचनतवसुमरिकरिउद्धवकीनीप्रष्ण ॥ ९० ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांएकोनविंशोध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहतबीसमेंध्यायमेंभक्तिक्रियात्मकज्ञान ॥ अधिकारीहुविभागतैंसुलभयोगत्रयजान ॥ १ ॥ ॥उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥हेप्रभूजीतुमकरुणाकरौ॥मेरोयहसंसैपरिहरौ॥तुमरीआज्ञाकहीयेंवेद॥ तांहोमेंदीसतुहेंभेद ॥१॥विधिनिषेधसोवेदबषानैं ॥ नाहींतैंसबकोईमानैं ॥ तुमरीआज्ञाक्योंभ्रमलेपैं॥ जातेंविधिनिषेधनहींदेषैं ॥ २ ॥अरुयहप्रगटदीसैदेंव ॥ विधिनिषेधकेबहुविधिभेव ॥ प्रगटविधिवर्णाअरुआश्रम ॥ तिनकौंविविधभांतिविविधकर्म ॥ ३ ॥ तिनकौंप्रगटफलस्वर्गादि ॥ अनकोनहींयहपंथअनादि ॥ अरुनिषेधप्रगटप्रातिलोम ॥ अंबष्ठादिकजैंअनुलोम ॥ ४ वर्णानिमेंशंकरहीजेतैं ॥ अरुतिनके कर्मपुनितेतैं ॥ तिनकैंप्रगटफलनरकादी ॥ कहैंहुंतैंफलजाईनबादी ॥ ५ ॥ जाकेफलहिवेदड्योंकहैं ॥ ताकौंकरीनस्त्योंहिलहैं ॥ अरुत्योंद्रव्यदेसवयकाल ॥ प्रकटविधिनिषेधगोपाल ॥ ६ ॥अरुजोविधिनिषे

धनहींसत्य ॥ तोसुषदुषअरुफलअसत्य ॥ कोईस्वर्गनर्कनहींजावैं ॥ तोबहुश्रमकरिविधिनकरावैं ॥ ७
अरुकहाकहीजैवारंवारा ॥ तुमरैंवचनअनेकप्रकारा ॥ यहतोकत्थौंतुमारेंवेद ॥ जातेंविधिनिषेधकैंभेद
॥ ८ ॥ देवपितरमुनिमानवजेतें ॥ वेदनयनदेषतहैंतेतैं ॥ विधिनिषेधतिनकैंफलजांनैं ॥ अरुत्यौंहित्यौंतेउ
वषानैं ॥ ९ ॥ सकलतुमारीआज्ञामांहीं ॥ ज्यौंज्यौंथपैंत्यौंबरताहीं ॥ सोमिथ्याक्यौंकहीयेंवेद ॥ या
कौंमोहीबतावोभेद ॥ १० ॥ द्विविधिवचनवढेंसंदेह ॥ वेहैंसत्यकौधौंप्रभूएह ॥ यहपूरणसंदेहमिटावौ॥
एकभांतिकेवचनसुनावौ ॥११ ॥ याविधिपरमज्ञानविस्तारौं ॥ अपनेरचेजीवनिस्तारौं ॥ सुनीउद्धव
कोऐसीबानी ॥ तबबोलेश्रीसारंगपानी ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवपरम
ज्ञानअबकहौं ॥ तेरेसबसंदेहाहिदहौं ॥ मैंभाषैंहैतीनउपाई ॥ कर्मअरुभक्तिज्ञानसमुझाई ॥ १३॥ज्यौं
ज्याकौंदेष्योअधिकार ॥ ताकौंतिसोकीयोबिचार ॥ जोभाषौंसबहीनसोज्ञान ॥ तातेंविषईतजैंनहीआन
॥ १४॥तातैंकर्मअकर्महोडाऊं॥लेकरिज्ञानमध्यठहराऊं॥तातैंवचनसकलममसत्य॥विधिनिषेधउनहींअ
सत्य ॥ १५ ॥ परिएसकलज्ञानकेंकारण ॥ ज्ञानलहैंतेंसकलनिवारण ॥ एतुमसैंढीब्रह्मकोज्ञांनौं ॥ ता
तैंकछूसंदेहनआंनौं ॥ १६ ॥ जिनभवसुषज्यौंहित्यौंजान्यौं ॥ ब्रह्मलोकलौंनस्वरमांन्यों ॥ तातेंतिनकैंउ
द्यमदहैं ॥ औरसकलतजीथीरव्हैंरहैं ॥ १७ ॥ तिनकौंज्ञानजोगअधिकार ॥ थीरव्हैंकरनौब्रह्मविचा
र॥अरुजिनविषयसुषनहींजानैं॥अरुतिनकेउद्यमनहींभानैं ॥ १८ ॥पारिममगुणसुनिसुषमानैं॥मेरोभजनभ

लौकरिजानैं ॥ ताकौंभक्तिजोगहितकारी ॥ ऐसैंजानैंतत्वविचारी ॥ १९ ॥ अरुजेविषयनिकेआधी
न ॥ तिनकैंउद्यमसौलौलीन ॥ कथासुननकौंनहींअवकास ॥ अरुममप्रीतिनहींअभ्यास ॥ २० ॥
तिनकौंकर्मजोगसुषदाई ॥ ईनतैंऔरनश्रेयउपाई ॥ एतीनौंभाषतहौंतोसौं ॥ निश्चलचितव्हैंसुनियोमोसौं
॥२१॥ प्रथमहीजोगकर्मविस्तारौ ॥ विषईजीवनिकौंनिस्तारौं॥मेरेबहुविधिगुणाविस्तारा॥कथाप्रसंगीवविध
प्रकारा ॥ २२ ॥ तिनमैंप्रीतिनउपजैंतोलौ ॥ ममजनसंगकरैंनहींजोलौं ॥ अरुजोलौंनबढैंवैराग ॥
विषयीनकौंनहोवैंत्याग ॥ २३ ॥ तोलौंकर्मजोगनहीतेडा ॥ कर्मोनकरिमाकाभज ॥ अपनेंधर्ममांहीथि
तिरहैं ॥ कबहूंभूलिनिषेधनगहैं ॥ २४ ॥ यज्ञमहोत्सवबहूंविधिकरैं ॥ सकलकर्ममहितविस्तरै ॥ म
नतेंईछासकलमिटावैं ॥ सोनरस्वर्गनर्कनहींजावैं ॥ २५ ॥ ऐसैंज्ञानभक्तिकौंलहैं ॥ तातैंकर्मकालमहा
दहैं ॥ उद्धवयहमानवतनश्रेसौ ॥ सकलसृष्टीमांहींनहींजैसौ ॥ २६ ॥ स्वर्गनर्ककेईबंछेजाकौं ॥ परि
क्यौंहीनहींपावेताकौं ॥ ज्ञानभक्तियातनकरिलहैं ॥ औरसबनिकरिभवजलवहैं ॥ २७ ॥ जोएसोमान
वतनपावैं ॥ सोसमस्तकामनामिटावैं ॥ तजैनिषेधएसकलकर्म ॥ अरुकामनाहेतजेधर्म ॥ २८ ॥ अ
रुफिरिनहिंवंछेनरदेहा ॥ परमरतननहींषोवेंएहा ॥ जद्यपिबहूरौनरतनपावैं ॥ परिज्ञानादिककछुनराहावैं
॥ २९ ॥ मातपिताभाईकुललोग ॥ ज्ञानमिटावैंकरिसंयोग ॥ षानपानआदिकबहुंसाधैं ॥ बालापनसौं
ताकौंबाधैं ॥ ३० ॥ तातैंज्यौंलागिनाहींमरैं ॥ त्यौंलागिजतननिरंतरकरैं ॥ यातनकौंमिथ्याकरिजानौं ॥

अरुब्रह्मदानीकरीमांनौं ॥ ३१ ॥ तातैंजनतानिरंतरकरैं ॥ सावधानताहित्दृदैंधरैं ॥ यातनमैंआशक्ता
नहोई ॥ करैउपायमुगतकोसोई ॥ ३२ ॥ ज्यौंपंषीतरुवासाकरैं ॥ तामैंप्रीतिमानमनधरैं ॥ अरुतावृक्ष
हिकांटेकोई ॥ जिनकैत्दृदैंदयानहींहोई ॥ ३३ ॥ वृक्षसंगजोपंषीपरैं ॥ तोतिनकैवसव्हैंकरिमरैं ॥ परि
सोप्रथमवृक्षहिंत्यागैं ॥ काटतदेषिआपउठिभागौं ॥ ३४ ॥ आपुहीऐसीभांतिविचावै ॥ पीछैंतहांरहैंजहा
भावैं ॥ त्यौंहीनरतनतरुआधारा ॥ आतमपंषकीयोआगारा ॥ ३५ ॥ ताकौंनिशदिनकरैंप्रहार ॥ स
दानिरंतरवारंवार ॥ ऐसोदेषिधरैतनत्रास ॥ प्रथमहींत्यागैंतरुकौवास ॥ ३६ ॥ मोमैंआईबसेराकरैं ॥
तातैंबहुरिनजन्मैंमरैं ॥ मानवतनभवसागरनावा ॥ मेरिकृपाहुंतैंयहपावा ॥ ३७ ॥ जामैंगुरुषेवटसुषदाई
सानकूलमैंपवनसहाई ॥ तोहुंआपुहिजोनहींतारैं ॥ नावछोडीभवसागरडारैं ॥ ३८ ॥ ताकौंआतमघाती
मानौं ॥ दूजोआतमघातनजानौं ॥ अरुजोभवतेहोईविरक्ति ॥ दुषमयजाननिहोवैरक्ति ॥ ३९ ॥ सो
समस्तइंद्रियवसकरैं ॥ मननिश्चलकरिमोमैंधरैं ॥ जोमनधारतअचलनहोई ॥ तोहूआतुरनहोवेकोई ॥
४० ॥ एकहीवारनसकलनिवारैं ॥ कर्मसकलउपाधीटारैं ॥ कछूएकआसपूरेमनकी ॥ त्दृदैंराषैंमूल
सघननकी ॥ ४१ ॥ देवेसोवजवेकेहेत ॥ सावधाननिरंतररहैंसुचेत ॥ आगैंफलकोअवधीबतावैं ॥
दुषादिपाइविरक्तिउपारैं ॥ ४२ ॥ ऐसेंक्रमहिक्रममनधारैं ॥ कर्मसकलविकारनिवारैं ॥ इंद्रियगुणत्दृ
दयनहींअन्नैं ॥ स्वासजीतिमनकीगतिभानें ॥ ४३ ॥ मनजीतनकौंपरमउपाई ॥ जातैंमनगतिजानीज.

नीजाई ।। जैसैंअवसतुरंगमहोई ।। अस्वनारवसनहोयेसोई ।। ४४ ।। तवतापरीचढीकरिअस्ववार ।। हठनहींक
रैंएकहीवार ।। कछुहयकोंरूपसहितचलावै ।। पीछैंदेचाबुकदोरावै ।। ४५ ।। ऐसीविधिहयकोवसकरै
।। त्यौंजोगीकर्मकर्ममनधरें ।। सांख्यविचारानिरंतरकरे ।। याविधियहजगजन्मैंमरैं ।। ४६ ।। तत्वनकीउत्प
त्तिविचारैं ।। ज्योंज्योंविनसेंयैंमनधारैं ।। सकलउपाधीउरैंकीदेपैं ।। आगुहिपरैंसकलतैंलेषैं ।। ४७ ।।
याविधिजौंलगिमनवसहोई ।। तौंलगिकरैविचारहिंसोई ।। ऐसिविधजवसांख्यविचारैं ।। गुरुकेवचनतदृ
देमैंधारैं ।। ४८ ।। तवसवहितेंहेइविरक्ति ।। मनमेंसैंहोवेंअनूरक्ति ।। जोगपंथजेअष्टप्रकारा ।। अरु
यहआतमादेहविचारा ।। ४९ ।। अरुममश्रवनकीर्तनध्यान ।। मनजीतनकौंपंथनआन ।। जोगअरुभ
क्तिसांख्यएतीन ।। सबग्रंथनिमैंलीनैंवीन ।। ५० ।। ईनतैंचोथोनहींठपाई ।। तातिंमनमेंमैंठहराई ।। ।। तातैं
चोथोकछुनकरणौं ।। ईनपंथनिमोकौंअनुसरणौं ।। ५१ ।। अरुजोकदेंपापव्हैंआवें ।। सावधानताउरन
रहावैं ।। तोहूऔरनकरैंउपाई ।। सोसोपापईहेतैंजाई ।। ५२ ।। औरकरैंनानाविधिजोई ।। सोसोअ
धिकअधिकमलहोई ।। विधिनिषेधसवहीमलजानौं ।। कबहुंकछुउत्तममतिमानौं ।। ५३ ।। विधिनिषे
धएकीनिंदोई ।। जातैंवंधरहेंसवकोई ।। भयतैंवहुआरंभनिकरैं ।। अपनेअपनेविधिआचरें ।। ५४ ।। ता
पीछेंसववंधजनाऊं ।। करीअवंधसकलछोडाऊं ।। सकलनत्यागेंएकहीवार ।। तातैंकीनैंवहुतप्रकार
५५ ।। तातेंविधिनिषेधनहींकरणा ।। सकलत्यागीमोमेंमनधरणा ।। विधिनिषेधजनमिथ्याजानैं ।। अरु

भवसुषसवद्रुपकरीमानैं ॥ ५६ ॥ पारिसमरथतजिवैकौनाहीं ॥ प्रबलज्ञानप्रगट्यौनहींमांहीं ॥ ताकोंभक्ति
जोगअधिकार ॥ सहजैछूटैसकलविकार ॥ ५७ ॥ मेरीकथानिरंतरसूनैं ॥ त्द्ददेमांहिमेरेगुनगुनैं ॥
द्दढविश्वासत्द्ददैमैराषैं ॥ मेरेगुणनामानितभाषैं ॥ ५८ ॥ योंजद्यपिविषयनिमैंरहैं ॥ पारिमनवचकर्मत्यागैं
चहैं ॥ सोनितभक्तिजोगसोंभजैं ॥ मोविचअंतरायसोंतजैं ॥ ५९ ॥ तंत्रपंथपूजाविस्तरैं ॥ ममहेतजो
कछूसोकरैं ॥ याविधिसकलवासनानासैं ॥ मेरोरूपत्द्ददयप्रकासैं ॥ ६० ॥ तातैंब्रह्मरूपकरिजानैं ॥
द्वैतभावमिथ्याकरिमानैं ॥ संसयकर्मभर्मसवभागैं ॥ अहंकारतजिसोवतज्यौंजागैं ॥ ६१ ॥ जहांतहांमो
हिकौंदेषैं ॥ मोबिनऔरकछुनहीलेषैं ॥ ऐसोऽहैममरूपसमावैं ॥ याहीजन्मऔरनहीपावैं ॥ ६२ ॥
तातैंजाकौमेरीभक्ति ॥ निशदिनममचर्णनिअनुरक्ति ॥ तातैंजद्यपिनाहींज्ञान ॥ अरुनाहिंवैरागनिदान
॥ ६३ ॥ तोहूसौंमोकौंअनुसरैं ॥ अतिदुस्तरभवसागरतरैं ॥ वर्णाश्रमकेधर्मनिकरैं ॥ बहुतभांतितप
कौंअनुसरैं ॥ ६४ ॥ निशदिनसांष्यज्ञानविचारैं ॥ गहीवैरागसकलअघजारैं ॥ साधेजोगअष्टप्र
कार ॥ दानव्रतादिकबहुविस्तार ॥ ६५ ॥ असबआपुहिंतचलीआवैं ॥ ममजनकेआधीनरहावैं
॥ मेरीभक्तिसकलसिरताजा ॥ जैसैंसकलनरोनिमैंराजा ॥ ६६ ॥ भुक्तिमुक्तिपलनहींपरींहरैं
ममजनकौनितसेवाकरैं ॥ अरुमैंजद्यपिबहुविधिकहौं ॥ भुक्तिमुक्तिकछुदीनोचहौं ॥ ६७ ॥ परीमेरौनि
जजनहींलेवैं ॥ सकलत्यागिममचर्णनिसेवैं ॥ निरपेक्षतापरमहैश्रेय॥ मौबिनसकलवस्तकौंदेयें ॥६८॥

निस्पृहतायहसुषअपार ॥ जहांनहींकालकर्मअधिकार ॥ मैंनिस्पृहानिस्पृहजोहोई ॥ मेरोभक्तकहीजैसो
ई ॥ ६९ ॥ मेरेशमीलक्षणहेंजामैं ॥ मेरोरूपजानीयौंतामैं ॥ सबतेनिस्पृहनितममभक्त ॥ मैंनिस्पृहता
सौंअनूरक्त ॥ ७० ॥ तातेंनिस्पृहतासुषऐसौ ॥ सकलविस्वमेंनाहींजेसौ ॥ निस्पृहजनमेरोसुषपावैं ॥ स्पृ
हावंतमैंनिकटनआवैं ॥ ७१ ॥ जेएकांतभक्तहेमेरे ॥ तिनकेंपुन्यपापनहींनेरे ॥ रागद्वेषवर्जितसमदरसैं
॥ गुणातीतब्रह्मकौंपरसैं ॥ ७२ ॥ जोगभक्तिसांख्यएतीन ॥ तीनौंएकैकहैंप्रवीन ॥ इनकौंपाईमोकौंपा
वैं ॥ एबिनपाएनमोमैंआवैं ॥ ७३ ॥ अेसाधनहेंतीन्यौंनीकैं ॥ इनबिनऔरनतारकजीकैं ॥ एसाधनहैं
मेरोरूप ॥ इनतेंतत्वनऔरअनूप ॥ ७४ ॥ मेरोगोप्यरहस्यहेंजोग ॥ जीवब्रह्मकौंक्षिप्रसंजोग ॥ छूटै
सकलअविद्याभोग ॥ कालजालनहींसंसेरोग ॥ ७५ ॥ एमैंतीनपंथविस्तारैं ॥ इनकरीबहुतजीवविस्ता
रैं ॥ जेइनजेजनइनमैंआवैं ॥ तेइतेमेरोपदपावैं ॥ ७६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जेइनपंथनिकौंतजैं ॥
करेकर्मविकार ॥ तिनपशुजीवनिकौंकहैं ॥ विधिनिषेधविस्तार ॥ ७७ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्रीधर
श्रीलक्ष्मीनृसिंहपरानंदसंदोह ॥ तिनकीकृपाकटाक्षतेंदूरहोतमनमोह ॥ १ ॥ ज्ञानक्रियाहरिभक्तिमैंजिन
कौंनहिसंतोष ॥ तिनकाम्यौंकेहितकह्याद्रव्यदेशगुणदोष ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई
॥ ॥ ज्ञानभक्तिअरुकर्मउपाई ॥ आपमिलनकौंदिएबताई ॥ परिजेअतिहिपशुअज्ञान ॥ इनकौं

छोडिकरैंकछुआन ॥ १ ॥ बहूतकामनातदेंधरें ॥ तिनहितबहुकर्मनिविस्तरें ॥ तेपशुदुषनिरंतरपावें ॥
भवप्रवाहमांहिबहिजावें ॥ २ ॥ तिनहितविधिनिषेधउचारें ॥ तिनकेंबहुआरंभनिवारें ॥ आपनौहिपनौअ
॥६५॥ धिकारा ॥ तामेंवरतेतजोविस्तार ॥ ३ ॥ उंचोनीचौसबगरिहरें ॥ आनेकर्ममांहीअनुसरें ॥ सोसोतिन
तिनकौंविधिजानौं ॥ तातेंऔरानिषेधाहिमांनों ॥ ४ ॥ एकछुवस्तबुद्धमितिदेषों ॥ पशुजीवनकौं
बंधनलेपों ॥ उपजीवस्तसमस्तअसुध ॥ परिकहींभावेंसुधअसुध ॥ ५ ॥ कर्मसकलछोडा
वनकारण ॥ मेंयहकीयोवेदउचारण ॥ पापछोडाईधर्मग्रहवाऊ ॥ याविधिबहुआरंभछूडाऊं ॥ ६ ॥
यहसमस्तजगकोंव्यवहार ॥ जातेंजगकौंवारनपार ॥ क्षितिजलपवनतेजआकास ॥ सबजगपंचभूत
परकास ॥ ७ ॥ ब्रह्मादिकथावरपरजंत ॥ पंचभूतकरिसबवरतंत ॥ अरुएकैआत्मसबमांही ॥
तातैंभेदकहुंकछुनाहीं ॥ ८ ॥ परितथापिमेंभाष्योवेद ॥ ताकरिकीनेनानाभेद ॥ तिनकेस्वार्थसुषकेहेत ॥
विधिउचारीफलनिसमेत ॥ ९ ॥ देशकालगुणद्रव्यसुभाव ॥ इनकौंभाष्योंनानाभाव ॥एकानिषेधएकवि
धिभापें ॥ योंसंकोचमाहीसबरापें॥१०॥अरुजिनदेशकृष्णमृगनाहीं॥अरुजहांद्विजसेवानकरांहीं ॥ अ
रुजो कृष्णमृगजबरहैं ॥ परिमिलेछतहावासागहैं ॥ ११ ॥ अरुजद्यपितुरकऊतहांनाहीं ॥ परिमघहट
आदिनूकोंमांहीं ॥ अरुजोमगधादिकपरिहरैं ॥ परिकदरजतादूरनकरें ॥ १२ ॥ अरुकदरजतामें
॥६६॥ टीहोई ॥ परिजो उसरहेवेंसोई ॥ सोसोदेसनिषेधकहीजें ॥ तिनमेंवासादिकनहींकीजै ॥ १३ ॥ तिन

तैंऔरदेसरुचोजानै ॥ तिनमांहिंवासादिकठांनैं ॥ औरजोकालकर्मकौंनाहीं ॥ सूतकआदिभयजामांहीं
॥ १४ ॥ सोसोकालनिषेधकहींजैं ॥ उतमसोजामेंविधिकीजै ॥ वस्त्रादिकजलादिकसूध ॥ मुत्रादिक
तेंहोइअसूध ॥ १५ ॥ सूधअसूधवचनतेंयौंही ॥ सूंघतेपुष्पादिकयोंहीं ॥ तवहींपावकन्यौसोसूध ॥
बहूतकालतैंहोइअसूध ॥ १६ ॥ कहींयेंभूमींमसानअसूध ॥ बहुतकालतेंकहींयेंसूध ॥ भूमींमेंवरपाज
लहोई ॥ बहूतकालतेंशुद्धहींसोई ॥ १७ ॥ ऐसीभांतिऔरउजानों ॥ शुद्धअशुद्धभेदपहींचांनौं ॥ वि
नुंगानसुधबालादिक ॥ स्नानादिकतैंशुधजुवादिक ॥ १८ ॥ जीरणवस्त्रअधनकोसूध ॥ द्रववतकौंपरम
असूध ॥ औरौसकलशक्तिउनमान ॥ शुधअशुधाहिकीयोंजषान ॥ १९ ॥ सोसबदेशकालअनुसा
र ॥ विधिनिषेधकौंकत्यौंविचार ॥ धनअरुपात्रवस्त्रगजदंत ॥ तेलअरुघृतहेमांदिअनंत ॥ २० ॥ का
लाग्निजलमाटीवाई ॥ जथाजोगहेंसुधकराई ॥ अरुजोकछुलग्योदुर्गंध ॥ ज्योंलगिधोएमीटेनहींगंध ॥
२१ ॥ सोंलगिजानीअसूधनगहींयें ॥ गंधगएतेनिमलकाहियें ॥ शक्तिअवस्थातपअस्नान ॥ संसका
रसुभकर्मअरुदान ॥ २२ ॥ ममसुमरणतेंहोवेसूध ॥ करेअन्यथाहोइअसूध ॥ मेरोमंत्रलीयेंविधिजा
नौं ॥ मंत्रविहीनानिषेधाहेमानौं ॥ २३ ॥ अपंमोऽसुधरुवकर्म ॥ करेविपर्ययहोइअधर्म ॥ देशकाल
कर्मअरकरुता ॥ द्रव्यमंत्रएषटआचरता ॥ २४ ॥ एजोसुधहोईतोसूध ॥ एअसूधतोहोइअसूध
अरुकहुंहोवेंशुधअशुध ॥ कहुंअशुधयौंहोवेंशुध ॥ २५ ॥ सुधअसुधभेदहैंजाकैं ॥ रागद्वेषहोवेगो

ताकैं ॥ जोकहीयेउंचेकोधर्म ॥ नीचैंकोहिंउचैंअधर्म ॥ २६ ॥ अरुजोकछुधर्मनीचेकूं ॥ सोईहैंअ
धर्मऊंचेकूं ॥ तांहितेंदोउभ्रमजानैं ॥ मेरोभक्तकदैंनहिमानैं ॥ २७॥ जोकबहुंविषअमृतलीजैं ॥ ले
ऊंचेनीचेकुंदीजैं ॥ तोतिनमेंभेदनहोई ॥ मरनोअमरएकसमदोई ॥ २८ ॥ योविधिनिषेधउहोवैं ॥ उं
चनीचकोठौरनजावैं ॥ परिएदोउहेकछुनाहीं ॥ आपविचारीअंतरमांही ॥ २९ ॥ नीचैंनीचकर्मआ
चरैं॥मदिरापानादिकउचरैं॥तोहुंइनकौंदूषणनाहीं॥सोनितहीहैंदूषणमांही ॥३०॥अरुजोग्रहीकरतहैसंग
ऋतुकेसमयजुवतिप्रसंग ॥ तोताकौंकछुदूषणनाहीं ॥ सोनितहीहैदूषणमांही ॥ ३१ ॥ जैसैंपर्योधरणी
परकोई ॥ ताहीनपरनीकोंभयहोई ॥ परिजेंकछुचढेहैंऊंचें ॥ संगकरिदहिआवैंनीचैं ॥ ३२ ॥ तातें
तिनकौंसंगनकरणो ॥ मनवचक्रमसंगपरिहरणो ॥ ज्यौंज्यौंप्राणीछोडेकर्म ॥ त्यौंत्यौंछुटैंपावैंमर्म ॥ ३३
॥ क्षेमधर्मसबनिकौंएह ॥ मिटेसोकमोहसंदेह ॥ यानिमितमेंभेदसूनायें ॥ थोरैंथोरैंमेंठहरायें ॥ ३४ ॥
पीछेंभ्रमकहीसकलनिवारैं ॥ ऐसीभांतिजीवनिविस्तारैं ॥ जबनरविषयनिउत्तमजानैं ॥ तबतिनमेंअश
क्तिहिठानैं ॥ ३५ ॥ तातेंहृदयउपजैंकाम ॥ तातेंतहांकलहकौंधाम ॥ ताहिंहुतैंक्रोधउपजावैं ॥ तब
अविवेकआपुहीआवैं ॥ ३६ ॥ सोअविवेकहरैंसबज्ञान ॥ तातेंप्रानिमृतकसमान ॥ तातेंकाजअकाजन
जानैं ॥ निशदिनबहुविधिचिंताठांनैं ॥ ३७॥ सबपुरुषारथहोवैंछीन ॥ निशदिनरहैंदुषितअरुदीन ॥
तातेंसमुझेआपुनआन ॥ मिथ्याजीवैवृपभसमान ॥ ३८ ॥ ज्योंहोवेलौहारकेषाल ॥ स्वासलेतयोंपोवैंकाल

अरुपुनिकहैंकर्मफलजेतैं ॥ स्वर्गादिकनानाविधितेतैं ॥ ३९ ॥ तेतेकहीकारिरुचीउपजाई ॥ मेटीनिषेध
निवधिकरवाई ॥ जैसैंऔषधकटुकषवावैं ॥ वालककौंलाडूहिंदिपावैं ॥ ४० ॥ औषधकौंफललाडूना
हीं ॥ औषधहूंतैंरोगसबजाहीं ॥ स्वर्गहेतजोकर्मनिकरैं ॥ पुनिसुन्तित्वफलहिंपरिहरैं ॥ ४१ ॥ तबअ
नर्थतजिअर्थहिंआवैं ॥मोमांहीनिहकर्मसमावैं॥अरुजबतेंजन्महीपावैं ॥ तबतैंआपुहिविपयकमावैं॥४२ ॥
पुत्रकलत्रकुटंबअरुप्राना ॥ इनकेहेतचहैंसुषनाना ॥ आपुआपुकौंकरैअनर्थ ॥ तिनकौंमूरषजानैंआ
रथ ॥ ४३ ॥ ऐसैयाभवमैंनितभर्मैं ॥ कदैंनजानैंसुषकेमर्मैं ॥ अरुतिनकौजोभरमतदेषैं ॥ सदानिरंतर
दुषीतलेषैं ॥ ४४ ॥ सोतिनकौंकबहूंनबहावैं ॥ अर्थअरुकामनकदेंदृढावैं ॥ तातेंमेतोसबविधिजांनो॥ कै
सैकामअरुअर्थबषानो ॥ ४५ ॥ परिजेकछुश्रुतिमांहीसुनायें ॥ अर्थधर्मअरुकामबतायें ॥ तेतेसकल
छुडावनकारण ॥ हेतबिचारकीयोउचारण ॥ ४६ ॥ एसोबेदतत्वनहिंजानैं ॥ मूरषपुष्पितबैनबपानें ॥
फलनिहेतआरंभकेकर्म ॥ तिनकौंकदैंनछूटेभर्म ॥ ४७ ॥ कामीकृपणलोभअधिकारी ॥ तृष्णाआकुल
सदाबिकारी ॥ फूलहिंमांहीफलकरीमानैं ॥ कामनिलागतत्वनहींजानैं ॥ ४८ ॥ मैंतिनकेनितह्वदैमाही
॥ परितौहूतौजानैनाहीं ॥ जातैंयहसबजगतपसारा ॥ अरुसमस्तयाकैआधारा ॥ ४९ ॥ जाकीशक्ति
पाइसबवर्त्तैं ॥ चंबकसंगलोहाज्यौंनितैं ॥ जाकीआज्ञासबहींमानैं ॥ कोईमरजादानहींभानैं ॥ ५० ॥ ए
सोंहेसबहीनमेंईस ॥ जैसैंसकलदेहमेंसीस ॥ परितेकांमकर्मतेंअंध ॥ नामोहींदेषैंअर्थनिबंध ॥ ५१ ॥

 जेसैंनयनरोगमयहोवैं ॥ आगैंहोतिवस्तनजोवैं ॥ योंअज्ञानअंधकमिष्ठ ॥ देषेनहींनिकटमेइष्ट ॥ ५२
॥ तेमोविनमममतोनजांनैं ॥ हरिजीवनजज्ञादिकठांनैं ॥ तेफिरतिनहींहतेंपरलोक ॥ जन्मजन्मपावेभयसो
॥६७॥ क ॥ ५३ ॥ जबयाकैबहुहिंसादेषी ॥ हनिहनिजीवजीवकापेषी ॥ ताकेहेतकहोंतुमनी ॥
हिंसाजज्ञाहेमांहिवषानी ॥ ५४ ॥ पशुवधएकजज्ञमेंभष्यौ ॥ औरसमस्तदूरकरिनाख्यो ॥ जबप्राणी
तामेंउहरावें ॥ तबपुनिवेदसकलछुडावें ॥ ५५ ॥ वानिमितपसुहिंसाभाषी ॥ सोमूरषनितत्वकरिराषी ॥ ता
तैंबहुविधिकर्मनिकरें ॥ बहुकामत्हदैमेंधरैं ॥ ५६ ॥ पशुहिंसाकरिकरेंव्यवहार ॥ जेजेगावेंबहुप्रकार
॥ देवानितरभूतनकोंयजें ॥ उरतेंसुषइच्छानहींतजें ॥ ५७ ॥ सुगनतुलस्वर्गादिकभोग ॥ तिनकौंसुनिउ
त्तमयालोग ॥ तिनकीइच्छात्हदैमेंधरें ॥ द्रव्यभरीचकर्मनिविस्तरें ॥ ५८ ॥ विघ्नहोईबहुकर्म
निमांहीं ॥ स्वर्गादिकउागवेंगाहिं ॥ ज्योंकोईसाप्करपरहिंजावैं ॥ धनहितग्रहकेंधनहींलगावें ॥
॥ ५९ ॥ पाछेंपरेविघ्नजोकोई ॥ तादोन्योंतेंजावेंसोई ॥ योंजेबहुविधिकर्मअपावें ॥ तेपसुदुइलोकतैं
जावे ॥ ६० ॥ सातिकजेतेदेवनिभजैं ॥ जक्षादिकनिराजसजजैं ॥ तामसभूतप्रेतबहूहेवे ॥ तनमनधन
तिनतिनकोंदेवें ॥ ६१ ॥ इहांजज्ञबहुतविधिकीजैं ॥ विप्रनिबहूतदक्षिणादीजैं ॥ तातेंस्वर्गादिकसुषपाई
यें ॥ तहांबहुतविधभोगभोगईयें ॥ ६२ ॥ पुनिजबहोवेतिनकोंअंत ॥ तबहूवेभूवमेंदनरंत ॥ ऐसीभांति ॥६७॥
कामनाकरें ॥ तिननिमितकर्मनिविस्तरैं ॥ ६३ ॥ तिनकौंमेरिवातनभावैं ॥ भक्तिकहातैंत्हदेआवें ॥ ज

द्यपिवेदकमंउचारैं ॥ धर्मअर्थकामविस्तारैं ॥ ६४ ॥ परितथापिब्रह्महींनतावैं ॥ क्रमक्रमदूजौंसकलछो
डावैं ॥ परिश्रुतिकौंआसेनहींजानैं ॥ फिरिकछूऔरेऔरवषानैं ॥ ६५ ॥ शब्दब्रह्ममहांदुर्बोध ॥ पंडि
तहूंनहींपावैंसोध ॥ सुषमरूपथूलव्हैंजाकौं ॥ मोविनभेदलहैंकौताकौं ॥ ६६ ॥ प्राणसरूपपरासेनाम ॥ प
स्यंतिकौंमनमेंधाम ॥ तीजीकंठमध्यमामूल ॥ चोथीप्रगटवैषरीथूल ॥ ६७॥ भेदतिनकौंकोइनजानैं ॥ ता
तेंऔरेऔरवषानैं ॥ अंतपारकोइनहींपावैं ॥ ज्यौंसायरथाह्यौंनहींजावैं ॥ ६८ ॥ अतिगंभीरअर्थहेंजा
कौं ॥ कोईभेदनजानैंताकौं ॥ मेसबहिनमैंअंतरजांमीं ॥ शक्तिअनंतसकलकोस्वामी ॥ ६९ ॥ सर्वव्या
पकब्रह्मस्वरूप ॥ लिषनकबहूंपरमअनूप ॥ सोईव्यापकसबहिनूंमांहीं ॥ शब्दरूपदूजाकौंनाहीं ॥ ७० ॥
कमलनालमेंतंतूजेंसें ॥ शब्दरूपसबमेंमेऐसे ॥ सोईप्रगट्यौबहुविस्तार ॥ मनकरित्हदयहूंतेंमुषत्धार ॥
॥ ७१ ॥ज्यौंमकारितंतुनिविस्तारैं ॥ करिबिस्तारबहुरिसंहारैं ॥ वेदयौंहिममविस्तार ॥ ओंकारमूलआ
कार ॥७२॥ तातैंअक्षरबहुतप्रकार॥तिनतैंछंदवारनहींपार॥चारचारअक्षरअधिकांहीं॥ छंदहोतएसीवि
धिजांही॥७३ ॥ अेकहुंतेंयौंहोईअनेक॥बहुरौंसकलएककेएक ॥ गायत्रीअक्षरचौवीस ॥उष्णिकछं
दअष्टअरुवीस ॥ ७४॥ जोबत्तीसअनुष्टुपसोहैं ॥ बृहतिनामतीसषटकोहैं ॥ पंक्तिनामअक्षरचालीस ॥
सौंहात्रिष्टुपचौवालीस ॥ ७५ ॥जपातिछंदअष्टचालीस॥ कहतपारनहींकोटवरीस ॥ याविधिप्रगट्योबहुवि
स्तार ॥ जाकौंकछूंवारनहींपार ॥ ७६ ॥ कहांहदैमैंकहांवतावै ॥ लेकरिअंतकहांठहरावैं ॥ एसोमतो

नजानेंकोई ॥ मोबिनभावेंविधिकिनहोई ॥७७॥ जज्ञरूपकहीमोकौंराषें ॥ सकलदेवमयमोकौंभाषें ॥ मे
रेहेतक्रमंकरवावें ॥ मोतेंउपज्यौंसकलबतावें ॥ ७८ ॥ अंतसकलकौंभाषेनास ॥ मोकौंकहेंनित्यप्रकास
॥ नानारूपनिवृथाजमावें ॥ एकब्रह्मकहीसकलसुनावें ॥ ७९ ॥ जेसेंसापजेवरीमांही ॥ यौंसबजगतब
तावेंनाहीं ॥ मोकौंनित्यनिरंजनभाषें ॥ अंजनसकलदूरिकरिनाषें ॥ ८० ॥ तातेंश्रुतिनितमोहीबतावें ॥
परियहतत्वनकोईपावें ॥ सोपावेंजोममआधीन ॥ होईनिहकामरहेंलौलीन ॥ ८१ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ यौंसुनिकरिश्रुतितत्वकौंउद्धवलह्यौंआनंद ॥ प्रणकरिपुनिकृष्णसौंजातैंछूटैभवफंद ॥ ८२ ॥ ॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेएकाविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥
तत्वगणितबावीशमेंकह्यौंभेदसबएक ॥ जन्ममृत्युविधिआदिलेमायाब्रह्मविवेक ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवा
च ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥-हेदेवेशतत्वहेंकेतें ॥ कहौकृपाकरिमोसौंतेतें ॥ जिनकौंरचितसकलसं
सार ॥ जोदीसेनानाविस्तार ॥ १ ॥ तुमतौंअष्टाविंशतिकहें ॥ तेमेंदृढकरिमनमेंगहें ॥ परिबहूतेंमिलिब
हुविधिकहें ॥ अरुतिनतेंसुनियोंहिगहें ॥२॥ कोईकहेंतत्वछवीस ॥ अरुत्योंकोईकहेंपचीस ॥ केईषट
अरुकेईचार ॥ केईभाषेंशतविचार ॥ ३ ॥ केईनवकौंकरेंविवेक ॥ केईभाषेंदशअरुएक ॥ केईत
त्वमतेंषोडश ॥ अरुत्यौंएकेकहेंत्रयोदश ॥ ४ ॥ केईभाषेंदशअरुसात ॥ अंत्रऋषिमतेंस्मृतिविष्यात
॥ कोनप्रयोजनलेलेंभाषें ॥ यौंअपनेअपनेमतराषें॥५॥कृपाकरौनिजबेनसुनावौ ॥ सत्यमतोसोमोहीजनावौ

सुनिउद्धवकैबेनरसाल ॥ कृपासिंधूबोलेगोपाल ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
॥ हेउद्धवज्योंज्योंसबभाषैं ॥ जितनेजितनेतत्वनिराषैं॥ तेतैंतुमसबमानोसत्य ॥तत्वविचारैंसबैंअसत्य॥७॥
मायादेपिकहेंजोजेतैं ॥ मायामांहींसत्यहेंततैं ॥ मोहींदेषिजोतिनकौंदेषैं ॥ तोसमस्तमिथ्याकरीलेषैं ॥ ८
॥ मायामांहोंजुक्तविचारैं॥ अपनोअपनोमतोउचारैं ॥ यहयोंयहयोंयहयोंनांहीं॥ कहैंसबैंमिलिआपुनमांहीं
॥९॥ यहयोंहीहैंजोमैंभाषों॥तेरीकहीसत्यनहींराषौं ॥ याविधिममायाभरमाए ॥ तिननानाविधिपंथचलाए
॥१०॥ममायाकीशक्तिअनंत॥तिनकेपंथनिकौंनहींअंत ॥ जबसमदमउरअंतरआवैं॥तबएसकलभेद
छिटकावैं॥११॥जेतेतत्वसकलमायाकैं॥जिनतैंभएसकलताताकैं॥क्रमक्रमतत्वउपजतेगए ॥ त्योंत्योंभेदब
हूतविधिभए॥१२॥जैसेंएकवृक्षाविस्तार ॥ ताकीसंपतिबहुतप्रकार॥कहुसाषाबहूंतपरेसाषा ॥अस्तिनकैं
बहूउपसाषा॥१३॥तिनकोंबहुतभांतिविस्तार॥पानफूलफलविविधप्रकार॥अस्तावृक्षहिंवरनेकोई॥ज्योंज्यों
कहैंसत्यत्योंहोई॥१४॥ थोरैहोईकहेसोसाषा ॥ बहुतैंहोईमिलिपरसाषा ॥ उपसाषामिसिबहुविधिहोवै ॥
तेसबपंथासत्यसबजोवैं ॥ १५ ॥ योंसंसारवृक्षविस्तार॥मायामूलसकलप्रकार ॥तत्वसकलसाषापरसाष
अस्तिनकेबहुविधिउपसाषा ॥ १६ ॥ तातैंज्योंवर्णेत्योंसत्य ॥ परिसबमायासकलअसत्य ॥ त्योंहित्योंजि
नकेमनआयौ ॥ त्योंहित्योंतिनवरनिसुनायौं ॥ १७ ॥ मायाकरीबंध्योसोआतम ॥ तातैंछोडैसोपरमात
म ॥ एद्वैतअरुजडचोवीस ॥ तिनकौंमिलैसकलछवीस ॥ १८ ॥ अरुजेबंधमुक्तहैदोई ॥ तेभर्ममा

यासत्यनकोई ॥ तातैंजीवब्रह्मद्वैनाहीं ॥ यौंपचवीसजानौमाही ॥ १९ ॥ सतरजतमएगुणहेजेतै ॥ जड
सरूपमायाकेतेतै ॥ रजउतपतिसातिकप्रतिपाल ॥ तामसरूपग्रसतहैकाल ॥ २० ॥ राजसहुतैंकर्मअधि
कार ॥ तामसतैंआविवेकअपार ॥ सातिकगुणतैंउपजेज्ञाना ॥ एहेमायाकेगुणनाना ॥ २१ ॥ इनतैंप
रेआतमामानौ॥तातैंब्रह्मरूपकरिजानौ ॥पंचवीसताहितेकरे ॥ त्यौंहितैसुनिऔरउगए ॥२२॥सोहेकाल
गुणनिविस्तारे ॥ सोउसभावसोशक्तिपसारे ॥ तातैंकालरूपहरिजानौं ॥ अरुसुभावमहत्तत्वहिमानौं ॥
२३ ॥ तातैंतत्वअधिकनगहीयें ॥ पंचवीसछवीसहिकहीयें ॥ प्रकृतिपुरुषमहतत्वअहंकारा ॥ तनमात्र
एपंचप्रकारा ॥ २४ ॥ कर्णत्वचानयनरसघ्राणा ॥ एपंचौइंद्रियहैज्ञाना ॥ पायुउपस्थचर्णकरवानी ॥
पंचकर्मइंद्रिययहजानी ॥ २५ ॥ मनदशहुइंद्रियकौराजा ॥ जाकीशक्तिकरैंसबकाजा ॥ क्षितिचलप
वनतेजआकाश ॥ एअठाईसतीनगुणपास ॥ २६ ॥ गतिउत्सर्गकर्मअरुबचना ॥ एपांचौइंद्रियफल
रचनां ॥ तातैंअष्टाविंशतितत्व ॥ अधिकनभाषैंज्ञानसित्व ॥ २७ ॥ सृष्टिआदिथिमायाएक ॥ पु
रुषशक्तितैंभईअनेक ॥ तनमात्रामहतत्वअहंकार ॥ ऐहेकारणनवेप्रकार ॥ २८ ॥ पंचभूतमनइंद्रिय
दश ॥ कारजरूपप्रकृतिषोडश ॥ सत्वरजतमगुणतीनप्रकार ॥ तिनतैंरच्यौंसकलविस्तार ॥ २९ ॥का
रणकरणप्रकृतिजानौ॥पुरुषनिर्मितसाक्षीमानौं ॥ इच्छाशक्तिपुरुषतैंगावैं ॥ मिलिसमस्ततत्वसृष्टिउपावैं ॥
३० ॥ सतधातुकौसबविस्तारा ॥ आतमद्रष्टाकैआधारा ॥ सकलतत्वशतमैंआयें ॥ तातैंएकनिशपत्र

तायें ॥ ३१ ॥ पंचभूतआपाहिउपजायें ॥ तिनकैंबहुविधिदेहबनायें ॥ आपुप्रवेसकीयोहरितिनमें ॥ चे
तनदीसतुहैंजिनजिनमैं ॥ ३२ ॥ ऐसीविधषटकौविस्तार ॥ आपुमांहीसबकरैंविचार ॥ पृथिवीआपते
जत्रयतत्व ॥ अरुआतमानिर्मितसबसत्व ॥ ३३ ॥ याविधिचारतत्वविस्तार ॥ ऊंचौनीचौसबसंसार
॥ पंचभूततनमात्रापंच ॥ पचैंद्रियसबपरपंच ॥ ३४ ॥ मनआतमामिलिदशसात ॥ तत्वसत्तदशजानोत
त ॥ मनआतमाएककरिजानैं ॥ तेजनषोडशतत्वबषानें ॥ ३५ ॥ पंचभूतअरुइंद्रियपंच ॥ ब्रह्मजीव
मनकोपरपंच ॥ एसीविधिकरिपंथचलावैं ॥ तेहरकौंसबजगतबतावें ॥ ३६ ॥ इंद्रियपंचपंचहीभूत ॥
आत्मामिलिसबउद्भूत॥ऐसीविधएकादशकहैं॥जुक्तविचारत्दृढैमैगहें ॥३७॥ पंचभूतमनबुधअहंकार॥
आतमामिलिनवकोविस्तार॥ऐसीबहुविधिमारगकहैं॥जुक्तिविचारत्दृढैमैगहें॥३८॥प्रकृतिपुरुषकौलहैंविवे
क॥इनकौंजानिएककौंएक॥एसोसुनितत्वकौंज्ञान॥उद्धवपूछयोपरमसुजान॥३९॥उद्धवउवाच ॥चौपाई
॥हेप्रभुजीयहज्ञानसुनावौ॥मेरैंडरकोअज्ञानामिटावौ॥चैतनज्ञानरूपअविनासी ॥सुधानंदपरमप्रकासी॥४०
॥ऐसैंआतमतुमरोरूप ॥ परैंगुणनितैंपरमअनूप ॥ जडविनासमयपरमअसुध ॥ दुषरूपपलसुषनशुध
४१ ॥ ऐसीप्रकृतिपुरुषतैंन्यारी ॥ तोहूंभईपरस्परप्यारी ॥ प्रकृतिमांहीआत्मामिलिरत्यौं ॥ अरुआत
माप्रकृतिकारिगत्यौ ॥ ४२ ॥ इनमेंभेदनजान्यौंपरैं ॥ एकमेकव्हैसबअनुसरें ॥ इनमैंप्रकृतिकहालौं
कहीयें ॥ कोनआतमाजोदृढगहीयै ॥ ४३ ॥ करिकरुणाबानीविस्तरौं ॥ वचनबानसंशयपरिहरौं ॥

तुममामाबंध्योसंसार ॥ तुमहीहुतेंहोईउधार ॥ ४४ ॥ तुमहीमायाकीगतिजानों ॥ कृपाकरौतबतुमहीभा
नो ॥ बानीसुनीभक्तअपनेकी ॥ तबबोश्रीकृष्णविवेकी ॥ ४५ ॥ ॥ श्रीभगवनुवाच ॥ ॥ चौपा
ई ॥ ॥ हेउद्धवयहज्ञानअगाध ॥ कोईएकलहेंममसाध ॥ सोयहज्ञानसुनावोंतोही ॥ तुहैसदाअनुव्र
तमोही ॥ ४६ ॥ उद्धवप्रकृतिरचेसंसार ॥ सुषमथूलविविधप्रकार ॥ उपजेंबरतेंहोईबिनास॥तामेंआत्म
नित्यप्रकास ॥४७॥ उद्धवयहहेमेरीमाया ॥ तिनसतरजतमगुणउपजाया ॥ तिनकौंसकलत्रिविधविस्तार
॥ जाकोकछुपारनहींपार ॥ ४८ ॥ त्रिविधकहनकौंपरिकहूंभेद ॥ तिनतेंजीवलहेंनेत्यबेद ॥ अध्यात्म
अधिदैवअद्भुत ॥ त्रिविधरूपसबजगउदभूत ॥ ४९ ॥ दृगअध्यात्मरूपअधिभूत ॥ रविअधिदैवमिलि
अदभूत ॥ तीनोंमिलेपरसपरजबही ॥ तिनकौंकार्यसीजैंतबही ॥ ५० ॥ तीन्योंविनाकछुनहींहोई ॥ ती
नोमिलिबरतेंसबकोई ॥ त्वचास्पर्शपवनज्योंजानों ॥ कर्णनिशब्ददिगयोंमानों ॥ ५१ ॥ नासागंधअ
स्वनीसूता ॥ जिव्हारसवर्णजलजूता ॥ चितचेतनाअंतरजामी ॥ बुद्धिबोधनाब्रह्मास्वामी ॥ ५२ ॥
अहंकारअहंकरतारुद्र ॥ मनमानवोदेवताचंद्र ॥ याविधित्रिविधप्रपंचपसार ॥ सकलपरेंआत्मानजसी
र ॥ ५३ ॥ इनतीनोंविनजगतनहोई ॥ तेआतमाविनरहेंनकोई ॥ आदिसकलकेआतमएक ॥ जातें
चेतनहोईअनेक ॥ ५४ ॥ आत्मस्वप्रकाशअविनासी ॥ चेतनरूपसकलसुषराशी ॥ एसबाआतमे
केबंधाय ॥ अरुआतमासकलकेपार ॥ ५५ ॥ विनआतमाकछुनहींहोई ॥ अरुआतमानजानेंकोई

महत्तत्त्वज्यौंउमज्यौंअहंकार ॥ तिहुंगुणनिकौंत्रिविधप्रकार ॥ ५६ ॥ सोअज्ञानमूलकरिमानौं ॥ जा
कौंकीयौंजगतमयजानौं ॥ सोआतमांआपहिलीयौ ॥ भवभयआपुआपुकौंकीयौं ॥ ५७ ॥ आतमस
दाएकहीरूप ॥ अहंकारतेंपरेंअनूप ॥ सोजनरूपआपनोंजानें ॥ तबहीसकलउपाधीभानैं ॥ ५८ ॥
॥ सोकछूहोईनहींउपाधी ॥ परिआतमालेईकरिव्याधी ॥ समुझेजबहीआपनोंरूप ॥ तबआतमातजेभव
कूप ॥ ६९ ॥ अरुतवरूपआपनौंजानैं ॥ जबममचर्णन्हदेमेंआनैं ॥ जद्यपिमिथ्याव्संसार ॥
॥ जोकछूदीजें विविधप्रकार ॥ ६० ॥ परिजौलौंनहींमोकौंभजैं ॥ तोलौंनिजअज्ञाननतजैं ॥
जबहींमेरेसरणाहिंआवें ॥ तबहीआतमज्ञानाहिंगावें ॥ ६१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसैंश्रीमुखबेनसुनिप्र
कृतिपुरुषकोज्ञान ॥ उद्धवकीनोप्रणतबहरिजनपरसुजान ॥ ६२ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥
॥ तुमकरिरहितबुधिहेजिनकी ॥ कहियेदेवकौनगतीतिनकी ॥ सकलव्यापिआत्माएक ॥ क्यौंक
रिपावेदेहअनेक॥६३॥अरुशुभअशुभकर्महेंजतें॥त्रिगुणरचितकहीयैंसबतेतैं ॥ तिनकर्मनिनिहकर्मबंधा
वें॥क्योंकरिजानीआजोनीपावें ॥६४॥अमरमरेकेसेंकाहिदेवा॥जाकौमाहीबतावौंभेवा ॥ यहतुमविनानको
ईजानै ॥ जद्यपिविद्यावेदवषानें ॥ ६५ ॥ जोकछुपढैबंधसोहोई ॥ तातैंतत्वनजानैंकोई ॥ याविधिउद्धव
पूछ्यौंज्ञान ॥ तबहंसीबोलेश्रीभगवान ॥ ६६ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धव
यहमनपरमविकारी ॥ सबइंद्रियनिमांहीआधिकारी ॥ इंद्रियनिव्हैंमनईसबकरै ॥ सुनहेतरुहुउद्यमाविस्त

रैं ॥ ६७ ॥ सोतनतजिदूजेंतनजावैं ॥ तहाहीतहाआतमाआवैं ॥ जिनजिनसुषानिसुनेअरुदेषै ॥ तिन तिनकौंउत्तमकारिलेषैं ॥ ६८ ॥ तिनकोसोमननिशिदिनिध्यावैं ॥ यहतनछीनभएतहांजावैं ॥ वहतनपाई बिसारेयाकौं ॥ जन्ममर्णकहियतुहैंताकौं ॥ ६९ ॥ जातनमेंबांधेआभिमान ॥ छोडैपूर्वतनकोआन ॥ ज न्ममरणआत्मकौंसोई ॥ दूजोजन्ममरणनहींकोई ॥ ७० ॥ जैसैंसुपनमनोरथजावै ॥ यहतनछोडीओ रहीपावैं ॥ तबयातनकीसुधीनरहैं ॥ वाहीतनकोंआपुहींकरैं ॥७१॥ जन्ममरणस्मृतिकोंहोई ॥ आतम जन्ममरणहेसोई ॥ औरकछुआत्मनहीमरैं ॥ अरुकबहुनाहींअवतरैं ॥ ७२ ॥ योंतनमेंमनकोअभि माना॥तातैंतनउपजतुहैंनाना॥तेसबआतमकेआधारा॥तनमनबुधिचितअहंकारा ॥७३ ॥जिनसंगतिआ त्मकौंदुष॥तिनहिंतजेविनपलनहींसुष॥उद्धवसकलदेहहैंजेतें ॥सदासकलविनशनहैंततैं ॥७४॥कालनदीप्र वाहप्रचंडताकरिपलकपरकनहींषंढ॥जैसैंनदीनिरंतरवहैं॥परिदेषनकौंत्यौंहीरहैं॥७५॥औरड्योंआर्चिनिरं तरजावैं ॥ परिदीपादीतिमहिंरहावैं ॥ अरुजैसैंसबवृक्षानिकैंफल ॥ दीसैंत्यौंपरिथिरनाहींपल ॥ ७६ ॥ त्यौंहिसबदेहानिकौंजानौं ॥ कालहींग्रसतानिसादिनमानौं ॥ जद्यपिअवस्थाजातिलेषैं ॥ बालकुमारजुवादि कदेषैं ॥ ७७ ॥ परितोहूंमूरषनहींजाने ॥ मेंवहईहौंयौंकरिमानैं ॥ यहआत्मासोसदाअजन्म ॥ देहसं गतेंपावेजन्म ॥ ७८ ॥ अरुत्यौंअमरनिरंतरजानौं ॥ देहसंगमरतोसौंमानौं ॥ जैसेंअग्निदारुकेसंग ॥ सदांलहेउतपतिअरुभंग ॥ ७९ ॥ ज्यौंलगितनकीसंगतीरहैं ॥ त्यौंलगिआत्माअतिदुषसहैं ॥ गर्भप्रवेसवृ

॥७१॥

द्विअवतार ॥ बालकअवस्थातथाकुमार ॥ ८० ॥ जौवनमध्यजराअरुमरनां ॥ नवअवस्थादेहआव
रना ॥ आतमएकरूपसबहिनमैं ॥ कबहुंनहिंलिषैंतिनतिनमैं ॥ ८१ ॥ ऐसेंजानिमुक्तितबहोई ॥
मेरीसरणांगतजेकोई ॥ अपनौंदादौपिताविचारौं ॥ तिनकौंमरणौंउरमैंधारौं ॥ ८२ ॥ भाईज्यौंअबमें
अनुरक्त ॥ त्यौंहितेहूंहूतेंआशन्क ॥ तेतोप्रगटकालवशभयें ॥ परवशभएछोडिसबगयै ॥ ८३ ॥ मे
रीयैंहैहैगतिऐसी ॥ भईबापदादाकेजेते॥अरुमेरेंअबबालकहैजैसैं ॥ हमहुंहुतौंपिताकैतैसै ॥ ८४ ॥ स
कलअवस्थासोममगई ॥ यहतोप्रगटऔराहिभई ॥ याविधिजैसैंसबदेह ॥ सबछूटहैंपुत्रधनगेह ॥ ८५
यौंउरमैंबहुभांतिविचारैं ॥ अपनेंबंधनसकलनिवारैं ॥ देहादिकसबसंगातितजैं ॥ सदानिरंतरमोकौंभजैं
॥ ८६ ॥ बीजजन्मपाकेतेंअंत ॥ षेषीषेषमाहींविरतंत ॥ षेतीकरणहारसोन्यारा ॥ यौंतनन्यारौंकरैंवि
चारा ॥ ८७ ॥ कर्मबीजविस्तारैंनाहीं ॥ दग्धकरेंजेहीतनमांही ॥ तिनतेंन्यारोआपुहींजानैं ॥ संगकरे
तेंसुषदुषमानैं ॥ ८८ ॥ तातैंतनकौंसंगनिवारैं ॥ याविधिआपुआपुकौंतारैं ॥ जोजनन्यारोआपुनजानैं
॥ तनसुषहेतकर्मसबठानैं ॥ ८९ ॥ तिनतेंनानादेहनिपावैं ॥ तिनहीजन्मीजन्मीमरीजावैं ॥ सातिकतैंसुर
कैंऋषिहोई ॥ राजसनरकौंदानवसोई ॥ ९० ॥ तामसपस्वादिककेभूत ॥ याविधित्रिगुणजगतअदभूत
॥ जद्यपिआत्मसदाअनीह ॥ कबहुंकछुंनकरेसनीह ॥ ९१ ॥ परितनकरतेंकरताहोई ॥ संगदोषबं
धतहैसोई ॥ जैसैंनाचैगावैंकोई ॥ तिनकौंदूजोद्रष्टाहोई ॥ ९२ ॥ सौंयौंआबहुबेठकरैं ॥ तानतालरा

गाहेउरधरैं ॥ त्यौंमायागुणकर्मनिठानैं ॥ आत्मकरैंआपकौंमानौं ॥ ९३ ॥ तिनहींकर्मनिबंधेआपु ॥ जोकछुकरैंहोईसोपापु ॥ तिनकौंतनतजैंनहीजोलौ ॥ जनममरणदुषमिटेनतोलौं ॥ ९४ ॥ जलप्रवाहठि गठाठौकोई ॥ तबवृक्षानिदेषैंचलतेसोई ॥ नयनभ्रमतजौकोईदेषैं ॥ तबसबभ्रमतिधरातिलेषैं ॥ ९५ ॥ तेसैंयहआत्माथिरजांनौं ॥ औरसकलचंचलकरीमानौ ॥ निश्चलमनकरीदेषैंजबही ॥ निश्चलब्रह्मरूप हैंतबहीं ॥ ९६ ॥ जेसैंस्वप्नमनोरथमृषा ॥ यौंसबजगतअरूविषयतृषा ॥ परिजद्यपिजगसत्यनकोई ॥ तोहूंकदैंनिवृतनहोई ॥ ९७ ॥ जैसैंसुपनसत्यकछुनाहीं ॥ परिजोलोहेनिद्रामांहीं ॥ तोलगिसकलसत्यई जानैं ॥ सुषदुषपावैंउद्यमठानैं ॥ ९८ ॥ त्यौंअज्ञाननिंदसबजोलौं ॥ जनममरणभवमिटेनतोलौं ॥ तौंतैं उद्धवसबभ्रमजानौं ॥ महाअनर्थरूपकरिमानौं ॥ ९९ ॥ विषयनिकौउद्यमछाटिकावौ ॥ अरूजेहेतेस कलमिटावौ ॥ ज्यौंलगिआपुहिसमुझैनाहीं ॥ त्यौंलगिहैंनानाभयमाहि ॥ १०० ॥ आपुहिसमुझैनहींतो लौं ॥ ममआधीननहोईजोलौं ॥ ममआधीननिरंतररहै ॥ जगउपहाससीससबसहैं ॥ १०१ ॥ केई एककरेअपमानां ॥ केहिगईबांधेअज्ञाना ॥ केईमूतेथुंकेतनमें ॥ डारैंधूरभीषकेअनमें ॥ २ ॥ एकै डहीकैमूढडिगावै ॥ एकेनिंदेचोटलगावैं ॥ ऐसैंबहुविधिदुषउपजावैं ॥ बहुविधिभयकैंबैनसुनावै ॥ ३ ॥ परिजोअपनोश्रेयबिचारैं॥सोएकोमनमैंनहींधारैं॥बहुकष्टनितैंमनानिडिगावैं॥सोभवतजीममचर्णनिआवैं॥४ ॥७२॥ मेरोपंथपडगकीधारा ॥ जोनहींडिगेसोउतरेपारा ॥ हरिकेबैननिदुष्करजांनीं ॥ उद्धवप्रष्णकरीभयमानीं

॥ १०५ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ प्रभुतुमऐसेंबेनसुनायैं ॥ तेमेरेमनदुष्करआयैं ॥
जोअसाधवेकाजधिकावें ॥ तातैंसहैंकोनविधजावें ॥ १०६ ॥ मेरेत्हदैज्ञानठहरावौं ॥ सहनउपाईमो
हीसमुझावौं ॥ जेसहनोउत्तमकारिजानैं ॥ अरुत्यौंऔरनिपासबषानौ ॥ १०७ ॥ पारेतैंआईपरेनही
सहैं ॥ अंतप्रकृतिकेबसव्हैंरहैं ॥ केवलजेतुमचर्णआधारा ॥ तिनमेंकोईनहींविकारा ॥ १०८ ॥ ते
नितानिश्चलसंतिलरूप ॥ नितआनंदितपरमअनूप ॥ तिनकौंकर्देलिपेंकछुनाहीं ॥ सदाबसेतवचर्णनिमां
ही ॥ १०९ ॥ औरेसकलप्रकृतिआधीन ॥ सदाबिकारनिआगेदीन ॥ तातेंतुमहीकरुणाकरौ ॥ ज्ञा
नादिकममत्हदयेंधरौ ॥ ११० ॥ दोहा ॥ ॥ एसीकिनीप्रश्णतबउद्धवपरमसुजान ॥ भाष्योंसह
नउपाईतबभवभंजनभगवान ॥ १११ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसं
वादेभाषाटीकायांद्वाविंशोध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तिरसकारमनसहनतासंयमबुद्धिप्रकार ॥
कहीअध्यायतेवीशमेंभिक्षूगीतमझार ॥ १ ॥ दुष्टवचनशरतैंबुरेभलेशत्रुकेबान ॥ श्रीधरजोनरसहतहैं
तासमसाधुनआन ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेउद्धवऐसोनहींकोई ॥ दु
र्जनवचनक्षुभितनहींहोई ॥ दुर्जनचनबानजोसहैं ॥ मनक्रमबचनक्षोभनहींलहैं ॥ १ ॥ जोऐसोसोसाध
कहोवैं ॥ याबिनसाधपदईनहींपावैं ॥ षेंचीकसीसहनेगहीबान ॥ अरुतेंभेदेपरमअस्थान् ॥ २ ॥ तौति
नतैंदुषहोईनऐसों ॥ दुष्टवचनबाननतेंजैसौं ॥ परिमेतोहोउपाईसुनावौं ॥ सहनसीलताउरठहराऊं ॥३॥

मोसांसुनोएकईतिहास ॥ जातेंहोवेन्हदैप्रकास ॥ भिक्षुकएकज्ञानमयभाषी ॥ ताकीतोऊंसुनाऊंसाषी ॥ ४ ॥ कीयौअसाधुनिन्हूअपमाना ॥ तिरस्कारठान्यौविधिनाना ॥ तबताभिक्षुकगाथाकही ॥ कुमति आपनीसगरीदही ॥ ५ ॥ सोअबसुनौंसुचित्तह्वैमोसौं ॥ निजजनजानीकहतहौंतोसौं ॥ मालवदेशर हैंघरजाकौं ॥ षेतीवणिजजीविकाताकौं ॥ ६ ॥ क्रोधवंतलोभीअरुकामी ॥ विप्रनकैंअपजसकौंनामी ॥ जाकेंहोईद्रव्यअधीकाई ॥ अरुजोनहींदेहींनहींषाई ॥ ७ ॥ आपनकौंपीडाउपजावें ॥ पुत्रादिक षानेंनहींपावें ॥ देवपितरअतिथिनहींपोषें ॥ वैंनहूंकौनकदेंसंतोषें ॥ ८ ॥ सोकदरजएसोद्विजहोई ॥ तातेंनीचौऔरनकोई ॥ तातेंसोकदरजाद्विजभयौ ॥ सबजगमेंजिनअपजसलयौं ॥ ९ ॥ ज्ञातिअति थिबंधवनिजतनकौं ॥ ईनहींहेतनपरचैंधनकौं ॥ पुत्रादिककलपेंदुषलहैं ॥ ज्ञातिभृत्यदुर्वैननिकहैं ॥ १०॥ पुत्रकलत्रअरुकन्याभाई ॥ जहांलगेंसबबंधसगाई ॥ तेसबद्रोहानिरंतरकरैं ॥ ताकौंअप्रीयसबआ चरैं॥११ ॥ ऐसोदेषीपापअतिताकौं॥जक्षसमानवितहैंजाकौं॥धर्मकामदूनोकारहीन॥दुहूंलोककेसुषतैंछीन ॥१२॥जिनहेतपंचजज्ञानिनकरैं॥सकलग्रस्तदंडकौभरैं॥तिनतवकीयौदेवतिनकोप॥तातैंभयोविप्रधनलोप ॥ १३ ॥ कछुद्रव्यज्ञातिनीहरलयौ ॥ चौरिभएहुतैंकछूगयौ ॥ कछूअग्निलगेंतेजऱ्यौं ॥ कछुधरणीमांही विसऱ्यौ ॥ १४॥ कछुराजाविघ्नतेंगयो ॥ यौंबहुभांतिक्षिनसबभयौ ॥ जबताकौंधनसबहारिलियो ॥ तिर स्कारतबसबहीनकीयौं ॥ १५ ॥ बहुतकष्टकरिधनउपजायौ ॥ सोनहींदीयौनआपुनषायौं ॥ तातेंउपजी

चिंताचित ॥ निशादिनबर्यौम्हदेमैंवित ॥ १६ ॥ होवैंतनषेदकौपावैं ॥ आसुकंठबहूताविधिध्यावैं ॥ ऐसी
विधिउपज्येंवैराग ॥ जातैंसकलदुषनिकौत्याग ॥ १७ ॥ तबसोविप्रवचनउचारैं ॥ तबबहुतभांतिआ
पुहिधिकारैं॥अहोवृथामैंकष्टउपायौ॥आपआपकौंदुषउपजायौ॥१८॥बहुतैंश्रमउपजायौद्रव॥सुपनसमान
भयोसोसर्व॥नामेषरच्यौमामैंषायौ ॥ नामैंएकहुंअगलगायौ ॥ १९ ॥ द्रवकदरजकहैंजेतो ॥ एकहुंअ
र्थनआवैंतेतो ॥ नायहलोकनहीपरलोक ॥ केवलदुषवंटैंभयसोक ॥ २० ॥ बहुतकष्टसहिईहांउपायौ ॥
पुनिपरलोकनरकमैंजायौ ॥ परमजसस्विनकोजससुध ॥ अरुजेपंडितज्ञानप्रबुध ॥ २१ ॥ सकलगुण
निकेहैंगुणजेते ॥ लोभलेशतैंनासैंतेतैं ॥ जेसेंरूपवंतआतिकोई ॥ केहुअंगनहींनहोई ॥ २२ ॥ सेतकुष्ठ
कोछटीकाएक ॥ मेटेगुणअरुरूपअनेक ॥ यौंथोरोऊजोहोवैंलोभ ॥ मेटैंसकलरूपगुणसोभ ॥ २३ ॥
जबतैंधनकौंसाधनकरैं ॥ द्रव्यहेतउद्यमविस्तरै॥तबतेत्रासशोकभयलहैं ॥ चिंताअग्निनिरंतरदहैं ॥
२४॥सिद्धभयअरुरक्षितभोग॥नाशलगैंनहींसुषसंजोग॥चौरीहिंस्यामिथ्यादंभ॥कामक्रोधदिशमर्णाथंभ॥
२५॥ वैरअरुगर्भसपरधाभेद ॥ अप्रतितिचिंताभयषेद ॥ एपंद्रहजबहोईअनर्थ ॥ तबतिनहुंतैंहोवैंअर्थ
॥ २६ ॥ तातैंपरमअनर्थकहावैं ॥ भलोचहेसोदूरिबहावै ॥ अर्थनामसुनीभूलेलोक ॥ बिनविचारपावैंभ
यसोक ॥ २७ ॥ पुत्रकलत्रबंधवअरुभाई ॥ मातपितासहीतसजनसहाई ॥ द्रव्यहेतसबकरैंविरुधा ॥
आपुआपुमैंठानैंजुध ॥ २८ ॥ द्रव्यकाजअतिक्रोधहिंकरैं ॥ तिनकौंमारैंआपनमरैं ॥ धनहेतप्रीयमाण

निछटिकावैं ॥ आपुहिंमूढनरकमैंजावैं ॥ २९ ॥ जाकेदेवबहुतविधिध्यावैं ॥ परियानरदेहनहींपावैं ॥
सोनरतनतामेंद्विजदेह ॥ करुणामयहरिजीकोगेह ॥ ३० ॥ ताकौंपाईअर्थनहींसाधैं ॥ सब्रतजिहरिकौं
नाहींआराधैं ॥ महाअनर्थअर्थकोगहैं ॥ सोभवसिंधुआपुतैंवहैं ॥ ३१ ॥ तातैंदूजोनहींमतिमंद ॥ परैं
दुपमैंतजीआनंद।देवपितरऋषिभूतसहायी॥पुत्रकलत्रआपुहितभाई॥ ३२ ॥धनईपाईजोईनहींपोषैं॥औ
रनहूंकोंजोनहींसंतोषैं॥सोसवत्यागीनरकमैंजावैं॥तहांमूढनानादुषपावैं॥३३॥सोतनधनमैंव्रथागमायौ॥भवदु
षतेंनहींआपबचायौ॥जेहिपाईबधीऐसीकरैं॥तातैंबहुरिनिजनमैंमरैं॥३४॥सोनरतनमैंव्रथागमायौ॥छांड्यौ
अर्थअनर्थउपजायौ॥वयबलआयूसकलममगए॥नषशिखवृद्धअंगसबभए ॥३५॥ अबमैंअर्थकोनावि
धिसाधैं॥दुराराध्यहरिकौंआराधैं॥भाईजेअनर्थसबजानैं॥तेउक्यौंआरंभनिठानैं॥ ३६॥छोडेअर्थअनर्थ
उपावैं ॥ क्यौंसबआपुंआपुंदुषपावैं ॥ परिएकोईनहींस्वतंत्र ॥ सकलदेषीयतूहैपरतंत्र ॥ ३७ ॥ तेजा
कीमायाकरीमोहैं ॥ नटबाजीकेसमसबसोहै ॥ भाईसोप्रभुबडोवरिष्ठ ॥ ब्रह्माआदीसकलकौंइष्ट ॥
३८ ॥ जेधनअरुजेधनकेदाता ॥ जेकामांधअरुकामाविष्याता ॥ अरुबहुधर्मकर्महेजेंतें ॥ मातपितासु
षदाईतेतैं ॥ ३९ ॥ कहोकहातैंहेतआचरैं ॥ मृत्युग्रस्ततेंनहींपरिहरैं ॥ कालरूपशत्रुहैंजाकौं ॥ क
हौंकहांकोसुपहैंताकौं ॥ ४० ॥ परीजेदीनबंधुभगवान ॥ करुणासागरपरमनिधान ॥ तिनहींमोकों
करुणाकरी ॥ जातेंममउरऐसीधरी ॥ ४१ ॥ भवसागरतैंतारैंजाकौं ॥ देहीनामवैरागहीताकौं ॥ ता

तेंमोहीदीयोवैराग ॥ मेरेप्रगटेपूरणभाग ॥ ४२ ॥ अबजोआयूहोईकछुमेरौं ॥ ताकारिमजनकरौंहारि
केरौ ॥ यातनकेगुणसकलनिवारौं ॥ मनतैंसकलकामनाटारौ ॥ ४३ ॥ सकलसाधूअनुमोदनकरैं ॥
तथाअस्तुयौंकहीउचरैं ॥ जद्यपिआयूथोरोहैमेरौ ॥ तोहूंहरिकौंपदअतिनेरौ ॥ ४४ ॥ नृपषट्वांगज
बहींहरिध्यायौ ॥ एंकमूर्तिमेंहरीपायौ ॥ तातैंप्रभुसमकोईनाहीं ॥ जनकौंप्रगटहोतफलमांही ॥ ४५ ॥
मनबचकर्मअबताकौंभजौं ॥ दूजीसकलकामनांतजौं ॥ ऐसोनिश्चयमनमैंधर्‍यौ ॥ भिक्षुकभयोसकलपरि
हर्‍यौ ॥ ४६ ॥ सीतलत्द्दयतृषासबत्यागी ॥ निश्चलभयोविप्रबडभागी ॥ अहंकारममताकछूनाहीं ॥
एकाकीबिचरैंभूवमांही ॥ ४७ ॥ इंद्रियप्राणबचनममगयौ ॥ अंतरबाहारसंगसबदह्यौ ॥ आपुहीकाहु
कौंनलषावैं ॥ भिक्षाहेतग्रहनमैंआवैं ॥ ४८ ॥ संसकारनहींतबकौंजाकौं ॥ जीरणवस्त्रटुकतनताकौं ॥
भिक्षुकवृद्धविप्रकोंजोवैं ॥ तबबहुदुष्टघातकीहोवैं ॥ ४९ ॥ केईताकौंदंडछूडावौं ॥ केईपात्रपोषलेजावैं
॥ केईलहैंकमंडलकरतैं ॥ केईनिकशनदेईनघरतैं ॥ ५० ॥ केईधूरभीषमैंडारैं ॥ केईमूढक्रोधकरि
मारैं ॥ केईआसनकौंलेभागैं ॥ उरधकरकेईपगलागै ॥ ५१ ॥ केईकंथाकौंपारिहरैं ॥ मारुमारुबानी
उचरैं ॥ केईषोषलेईजपमाला ॥ केईवस्त्रजाहींलेबाला ॥ ५२ ॥ केईआनिआनिकरिदेवैं ॥ केईषो
सीषोंसीपुनिलेवैं ॥ केईभीषअनलेजांहीं ॥ भोजनकरणेंपावेनाहीं ॥५३॥ केईतनमैंथूंकेमूंते ॥ केईनिंदा
करैंबहुतें ॥ केईकाननिलागींपुकारैं ॥ केईसीसधूलिजलडारैं ॥ ५४ ॥ केईमोनछोडाईबोलावैं ॥ के

ईबोलतमोनगहावैं ॥ केईताहींबाधीकरिरापैं ॥ जाननपावैंकेईभापैं ॥ ५५ ॥ केईकरेबहुतअपमान ॥ निंदेबहुविधिमूढअजान ॥ यहहैंचोरज्ञानहींपावैं ॥ विनदेषेनिशिचोरीआवैं ॥५६॥ याकौंछिनभयोहैंबित्त ॥ तातैंयहहैंव्याकुलचित्त ॥ सकलकुटुंबयांहीपरिहर्यौ ॥ जीवनकाजभेषयहधर्यौ ॥ ५७ ॥ देखोयह केसोहैंमोटो ॥ महाप्रबलअंतरकोषोटो ॥ देषोहमपचीहारैंकेतैं ॥ परियाकेभेदेनहीतेतैं ॥ ५८ ॥ धीरज वंतअडिगयहएसो ॥ पवनप्रचंडमेरोगिरिजैसो ॥ याकौंजानिनहमकछुकह्यौं ॥ बकध्यौंध्यानमौनगहिर ह्यौं ॥ ५९ ॥ योंकरिक्रोधबंधलेडारैं ॥ काटमांहीदेउपरमारैं ॥ हांसीसहीतबिनतीकरैं ॥ हेतसोंबिषबे ननिउचरैं ॥ ६० ॥ एभोतिकदुषभासेजेसैं ॥ देवआत्मकपावेतेसैं ॥ सीतअरूऊष्णवरषादिदेवक ॥ जरारोगआदीकजेदेहीक ॥ ६१ ॥ ऐसैंबहुविधिपावैदुष ॥ कदेंनआवेंतनकोंशुष ॥ परिसोकदैंनमन मैंआनैं॥अपनेंकरेंकरमसबजानैं ॥६२॥ तबतिनभाषीगाथाएक ॥ त्दृदयधार्योपरमविवेक ॥ भिक्षूक कहैंबचनतबजेई ॥ मेतोसोंभाषतहोंतेई ॥ ६३ ॥ ॥ भिक्षूकउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सुषदुषदा ईकलोगणएतैं ॥ अरूनहींदेहनहीसुरजेतैं ॥ नाग्रहनहीकर्मनकाल ॥ एसमस्तहेमनकेष्याल॥६४॥ जा तचक्रमेंमनहींफिरावैं ॥ जीवमहादुषमनकैंपावैं ॥ मनहीकरैंविषयनिकौंभोग ॥ तातैंहोइकर्मसंजोग ॥ ६५ ॥ होवेंसतरजतमविस्तार ॥ जातेंजोनिविविधप्रकार ॥ तातैंदुषनिरंतरलहैं ॥ देहसंजोगतेंनिसदिन दहैं ॥ ६६ ॥ तातैंदुषदाईमनएक ॥ संतकहेयहपरमविवेक ॥ अपआतमासदाअनीह ॥ परिसोमनक

रिकरिसनिह ॥ ६७ ॥ मनसौंबंध्यौंअविद्यामांहीं ॥ जातेंबंधनजानेनाहीं ॥ विषसमानविषयनिकौंआवैं ॥ ताकेंसंगजीवदुषपावैं ॥ ६८ ॥ यहहेंजीवब्रह्मकोंअंग ॥ याकौंसुमृतिमनकेसंग ॥ मनकररिहतिब्रह्म सुषराशी ॥ सदाएकरसपरमप्रकासी ॥ ६९ ॥ तातेंबंधनमनहीकरैं ॥ संगआतमाजनमैंमरैं ॥ जबम नरहीतजीवयहहोई ॥ तबाशिवजीवभेदनहींकोई ॥ ७० ॥ तातैंजिनअपनोमनगह्यौं ॥ ताहींकछुकरणो नहींरह्यौं ॥ अरुजोमनबशकीनोनाहीं ॥ तोश्रमसकलवृथाहींजाहीं ॥ ७१ ॥ सुवर्णादिकदेवेंबहुदाना ॥ एकादशीआदीव्रतनाना ॥ अपनेंअपनेंधर्मनिकरैं ॥समदमजमनियमनिविस्तरैं॥७२ ॥विद्यावेदपढेंउचरैं ॥ औरसकलधर्मविस्तरैं ॥ परिजोनाहींबशमनएक ॥ तोमिथ्याआचर्णअनेक ॥ ७३ ॥ मनवशाकाज कहेंसबतेतें ॥ विधिआचर्णवेदमेंजेतें ॥ मननियहसौंउत्तमज्ञाना ॥ मननियहबिनसबअज्ञानां ॥ ७४ ॥ तातैंममजोनियहकरैं ॥ सोविधिकाहेकौंबिनिस्तरैं ॥ तातैंविधिहूंतेकछुनाहीं ॥ सबविधिहेमननियहमांहीं ॥ ७५ ॥ अरुजोबसनाहींमनएक ॥ तोविधिकीन्हैवृथाअनेक ॥ सबईनकोफलमनबसकर्णों ॥ मनवश काजसकलआचर्णों ॥ ७६ ॥ मनकौंबसकरेजोकोई ॥ इंद्रियगुणआपेंवसहोई ॥ मनवश बिनइंद्रियवशनाहीं ॥ करिकरिजतनबहुतमरीजाई ॥ ७७ ॥ मनबशभएसकलबसदेवा ॥ तीनो भवनकरेतासेवा ॥ सकलबलनुतेंमनबलवंत ॥ मारीकरीसबहीनकौंअंत ॥ ७८ ॥ मनकौंको ईजितिनाशकैं ॥ बहुतनिउपायकरिकरिथकैं ॥ ऐसैंमनकौंजीतैंकोई ॥ सबहीनमांहींप्रबलहैंसोई ॥ ७९

सोदुर्जयबसमननाहिंकरैं ॥ बाहिरजुधादिकबिस्तरैं ॥ वैरीमित्रबहूतविधिठानैं ॥ अनहेतअरुहेतातिनतैं
जानैं ॥८०॥ तेअतिमूढसुषीनहींहोवैं ॥ मनजीतेंबिनुजुगजुगरोवै ॥ दुषरूपजडमिथ्यातनकौं ॥ आपमा
॥७६॥ निकारिबांध्योंमनकौं ॥ ८१ ॥ तबबहुकीएदेहसंबंधी ॥ तिनसौंमूरषममताबंधी ॥ यहमैंएहसमस्तैंहमे
रें ॥ मित्रशत्रुठानैंबहुतेरैं ॥ ८२ ॥ तातैंमूढमहादुषपावैं ॥ उपजिउपजिपुनिमरीमरजावैं ॥ तातैंदुषकों
मनहीकारण ॥ अतमकौंभवजलमेंडारण ॥ ८३ ॥ अरुजोसुषदुषदाताएतैं ॥ मोकौंदुषदेतहैंतेतैं ॥ ते
सबसुषदुषमोकौंनाहीं ॥ देहएकसबआपुनमांही ॥ ८४ ॥ तेसुषदुषदेहहीसबपावैं ॥ आत्मकेकहुंनिक
टनआवैं ॥ अरूजद्यपिमनकेसंजोग ॥ करैंजीवएसुषदुषभोग ॥ ८५ ॥ ताहुंमेंदुषदेवौंकहांकौ ॥ रू
पसकलममदेषौंजाकौं ॥ आपआपकौंक्योंदुषदीजैं ॥ अपनौंअनाहितआपक्योंकीजैं ॥ ८६ ॥ यातन
मेंमेहिदुषपावौ ॥ अरुतिनहींमैंक्योंउपजावों ॥ दंतनिभूलिजीभकाटीजैं ॥ तोफिरितिनहींकहांदुषदीजैं ॥
॥ ८७ ॥ दंतनिअरुजिभहिंदुषदेई ॥ सोतोसकलआपकोंलेई ॥ इंद्रियअधिपतिदेवताजेतैं ॥ जोदुष
दानीहोईसबतेतैं ॥ ८८ ॥ तोहूंआपकोपक्योंकीजैं ॥ परकीउपाधीक्योंसिरलीजैं ॥ करदीजैंमुषमांही
असनसौं ॥ तोमुषकाटैंकरहिदसनसौं ॥ ८९ ॥ तोपावकअरुवासवजानैं ॥ रागदोषभावैंत्यौंठानैं ॥
योंसबइंद्रियनिकेसबदेवा ॥ करैंआपमैंदुषअरुसेवा ॥ ९० ॥ तेतेसबजानैंत्यौंकरैं ॥ ज्ञानीआपनेमन ॥७६॥
हींधरैं ॥ अरुजोसुषदुषदाताआप ॥ दूजैंकौंकछुनाहींपाप ॥ ९१ ॥ तोयहसबआपनौस्वभाव ॥ अ

रुकौनकौंअनीयेंअभाव ।।अरुआतमेंमसुषदुषनाहीं ।। उपजैंज्ञानसकलमिटजांहीं ।। ९२।। आपमूलि
सुषदुषकरिलीनैं ।। सबमिटिजाईआपकौंचीनैं ।। तातैंदोषकौनकौंधरीयें ।। जोअपनोमनवशहिकरीयें
।। ९३ ।। अरुजोग्रहसुषदुषकेदाता ।। लोकवेदकहीयेंविष्याता ।। तोआपनकौंक्रोधहिकीजैं ।। परकोदु
षआपक्यैंालीजैं ।। ९४ ।। ग्रहआकाशमाहीहेजेतें ।। द्वादशरासीबसेसबतेतैं ।। रागदोषआपनैंमेंकरैं
।। तिनकौंसुषदुषनितहींपरैं ।। ९५ ।। तातैंरासीजन्मजेपावैं ।। तिनकीसंगतिसुषदुषआवैं ।। तातैंअतम
सदाअजनमा ।। वारवारदेहनिकौंजनमां ।। ९६ ।। तातैंसुषदुषतनहींपावैं ।। निकटआत्माकेनहींआवैं
।। अरुजद्यपिसंगतदुषपरैं ।। आपुक्रोधतौंकहांसौंकरैं ।।९७ ।। करणहारतेंयहहीजानैं ।। रागदोषभावें
त्यौंठानैं।।अरुदुषदानिहोइजोकर्म।। तेतोसकलआपहीभर्म।।९८।।यहजडदेहकर्मतामांही ।।आतमनिकट
देहहींनाहीं।।आतमचैतनज्ञानस्वरूप।।परेंसकलतेंपरमअनूप।।९९।।तातैंक्रोधकौनकौंकरैं ।।काकौंदोषत्द
देमेंधरैं।।अरुजोदुषकालतेंकहीयैं।।तोआपनमेंकदैंनलहीयें ।। १००।। तनहींकालहुतेंदुषपावें ।। तेआत
मकेनिकटनआवैं ।। कालआतमाब्रह्मस्वरूप ।। देहविलक्षणसकलअनूप ।। १०१ ।। तातैंकालहुतेंदुषना
हीं ।। कालभयानकदेहिनमांहीं ।। ज्यौंलेअग्निअग्नमेंडारैं ।। सोवहअग्निनअग्निजारैं ।। १०२ ।। अरु
ज्यौंपालाकौंकनलीजैं ।। लेवहुतेपालामेंदीजैं ।। तौंतापालाकौंभयनाहीं ।। जद्यपिरहैसदातामांहीं ।।१०३
।। यौंहीएकआतमाअकाल ।। सुषदुषादिदेहनकेष्याल ।। आतमसबतेंसदांअनीत ।। इच्छारहीतअ

नीहत्र्प्रभीत ॥ १०४ ॥ अरुआतमापरेंतेंपरैं ॥ द्वंद्वजहांलौंतेसबडरैं ॥ कोईआतमाकौनहींजानैं ॥
सुषदुषकौनकौनकौंठानैं ॥ १०५ ॥ सुषअरुदुषजहांलौंजेतें ॥ एकप्रकृतिकेसबतेतें ॥ सोप्रकृतिआप
जडरूप ॥ चेतनआत्मब्रह्मस्वरूप ॥ १०६ ॥ केवलमानीलीयौसंसार ॥ सुषदुषतनमनसकलअसार
मोहनिशातेंजागेंजेतें ॥ निरभयभएसकलहींतेतें ॥ १०७ ॥ तातेंअबमेंभयनहींआनौं ॥ आपहीपरैंसक
लतेंजानौं ॥ हरिचर्णनिकीसेवाकरौं ॥ ऐसीविधभवसागरतरौं ॥ १०८ ॥ जेइजेआएहरिशरणां ॥
तिनहींतिनपाएंहरिचरणा ॥ तातैंमैंहरिचर्णनिभजौं ॥ मनक्रमवचनआनसबतजौं॥१०९॥ ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ उद्धवयौंद्विजभयौंविरक्त ॥ तनहुमेनरह्यौंअनुरक्त ॥बहुतअसाधुनिबहुत
डिगायौं ॥ परिसौकछूनमनमेंल्यायौं ॥ ११० ॥ एभाषैंअष्टादशश्लोक ॥ करिविचारमेंन्यौभयशोक
॥ तातैंउद्धवसुषदुषदाईक ॥ आतमकौंकोईनहीलायक ॥११॥ सुषदुषदातानाहींकोई ॥ जोतोकहूंद्वैत
कछूहोई ॥ सुषदुषभ्रमतेंजानेसकल॥आत्माएकअजन्माअकल ॥ २ ॥ भ्रमछूटैंदूजाकोऊनाहीं ॥
मेरोरूपामिलेमोमांही ॥ जबसुषदुषमिथ्याकरिमानैं ॥ मानामानद्वंदैनहींआनैं ॥ १३ ॥ धीरजधरीमम
चर्णनिभजैं ॥ देहादिककीआसातजैं ॥ तबभवसागरकौंतरिजावैं॥ मेरोनिजानंदपदपावैं ॥ १४ ॥ तातैं
उद्धवमनवचकर्म ॥ सकलद्वैतकौंजानैंभर्म ॥ सबतेंमनकौंनिग्रहकरौं ॥ निश्चलकरिममचर्णनिधरौं ॥
१५ ॥ याहीकौंकहीयतुहैंजोग ॥ जाकरिहोवेममसंजोग॥अरुजोयागाथाकौंधारैं ॥ सुनेसुनावैंसदाविचा

रैं ॥ २६ ॥ तिनकैंनिकटदूंदूनहींआवैं ॥ अंतकालममचर्णनिपावैं ॥ तातैंयाकौंसदाविचारौं ॥ मेरोव
लअंतरगतिधारौं ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यहउद्धवतोसोंकह्यौंमनसंजमदृढज्ञान ॥ अबभाषत
हौंसांष्यकौंसुनतामिटेज्यौंआन ॥ ११८ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धव
संवादेभाषाटीकायांत्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सांष्ययोगकरिकैंकह्यौंमनकोमोह
दहन ॥ चिंतातैंसबयोनिमैंआतमआवागवन ॥ १ ॥ भेदभावजीनकेत्हदयश्रीधरभेदमिटाय ॥ कृष्णक
ह्योउद्धवप्रतिचौवीशैंअध्याय ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवतोसौंसाष्य
हिकहौं ॥ द्वैतभ्रमभ्रमाहिविनदहौं ॥ जाहीसुनाकिछूटैद्वैत ॥ देषैंएकब्रह्मअद्वैत ॥ १ ॥ प्रथमाहिमहापुरुष
जोभये ॥ तोयहसांष्यप्रकटकरिगयैं ॥मुक्तसांष्यजानतहींहोई ॥ सांष्यविनानहिछूटेकोई ॥ २ ॥ सोई
सांष्यकहैंमितोसौं ॥ निश्चलमनव्हैसूनियोमोसौं ॥ उद्धवप्रथमहुंतोमेएक ॥ मोविनकछुनहूंतोअनेक ॥
३ ॥ तवमैंप्रकृतिआपतेंकरी ॥ जडचेतनद्वैविधविस्तरी ॥ तिनदोनोंतैंउपज्यौंपुत्र ॥ महातत्वकहीयतुहे
सूत्र ॥ ४ ॥ एकप्रकृतिकेतीनगुणकीनें ॥ लक्षणभिनतिहुंकेदीनै ॥ सूत्रहुतैंत्रिविधअहंकार ॥ भरमाव
नकौंवडोविकार ॥५ ॥ पंचभूतजेंपृथिवीआदि ॥ अरुपंचेतनसूक्ष्मशब्दादी ॥ तामसअहंकारतैंएतैं ॥
राजसतोंइंद्रियसबतेतैं ॥६॥ सातिकतेंमनअरुसबदेवा ॥जिनकौंपाइभयेबहुभेवा ॥तबसबहीनमैंप्रेरीमिला
यौ ॥ तिनसबहीनमिलिअंडउपायौ ॥ ७ ॥ अंडसलीलमांहीथिरकर्‌यौ ॥ तातेमेंनिजअंशहिधर्‌यौ ॥

आदिपुरुषसोमेरोरूप ॥ त्रिगुणानियंताज्ञानस्वरूप ॥ ८ ॥ तासनाभतेंउपज्योंपद्म ॥ तामेसकलभवनको
सद्म ॥ पद्महूंतेंतबब्रह्माभयो ॥ वरलेमोसोंजगनिरमयो ॥ ९ ॥ राजसअधिपतिभयोविरंच ॥ तातैंप्रग
ट्योसकलप्रपंच ॥ लोकपाललोकनसौंसारैं ॥ तीनोलोकत्रिविधाविस्तारैं ॥ १० ॥ स्वर्गलोकदेवनिकौंदी
यौं ॥ अंतरिक्षभूतनिग्रहकीयौं ॥ भूमिलोकमेंमानवराषैं ॥ असुरअहीनकौंनीचैंभाषैं ॥ ११ ॥ मह
रलोकजनतपसतलोक ॥ चार्योंमेंशिधनकेंवोक ॥ जोत्रिगुणकर्मनिकौंकरैं ॥ तेतीनोलोकनिमेंफिरैं ॥
१२ ॥तपअरुजोगतथासंन्यास॥इनितेंतिनवारौमेंवास ॥ भक्तिहुतैंजावैवैकुंठ ॥जोसबहीनकरीसदाअकुं
ठ ॥ १३ ॥ प्रबलकालरूपहेंमेरो ॥ जगतसकलभक्षातिहकेरो ॥ सत्यलोकहुमैंजोजावैं ॥ कालतहांउं
ताकौंषावैं ॥ १४ ॥ कबहुंजाईकष्टकरीउंचै ॥ तबहुंकालढहावतनीचैं ॥ ऐसीविधिसबभरमतरहैं ॥ज
न्मेंमरेंबहुतदुषसहैं ॥ १५ ॥उत्तममध्यमनीचेजेते ॥छोडेबंडेबहुतविधिकेतें ॥ जेकछुजहांलगेआका
र ॥ तेसबप्रकृतिपुरुषविस्तार ॥१६॥ प्रकृतिपुरुषविनअौरनकोई ॥ इंद्रियमनगोचरहैंजोई ॥ प्रथम
हिनिराकारमेंएक ॥ तातेंभएआकारअनेक ॥ १७ ॥ अरुपुनिमेंहीरहोहोअंत ॥ तातेंअबहूमेंवरतंत
॥ जाकीआदीअंतहैंजोई ॥ ताकेमध्यहूमेंपुनिसोई ॥ १८ ॥ ज्यौंमाटीतेंबहुघटभए ॥ अंतरफूटीमा
टीमिलिगए ॥ माटीआदीमाटीहेअंत ॥ तोमाटीमयमध्यवरतंत ॥ १९ ॥ ज्यौंकांचनकेबहुआभरना
॥ आदीअरुअंतएकहीसुवरना ॥ तोमध्यहुंअौरकछुनाहीं ॥ नामरूपमिथ्याहोईजाई ॥ २० ॥ त्यौं

जबदेषैंत्यजिव्यवहार ॥ तबमैंहौंसबविस्तार ॥ आदिअरुअंतमध्यमैंएक ॥ मिथ्यानामरूपअनेक॥
२१ ॥ मायातैंमहत्तत्वअहंकार ॥ तिनतैंहोईसकलविस्तार ॥ बहुरौनामसकलकौहोई ॥ महदादि
कौरहैंनकाई ॥ २२॥प्रकृतिमूलयोपुरुषआधारा॥अरुजोकालसकलकरतार॥ मेरीशक्तितीनयौंजांनौं
मोतैंद्वैतकदैमतीमानौं ॥ २३ ॥ याविधिचल्यौंजाइविस्तार ॥ नदीप्रवाहतुल्यसंसार ॥ परमात्माकीइच्छा
ज्यौंलौं ॥ वरतैंसकलनिरंतरतोलौं ॥ २४॥ बहुरौसकलप्रलयकौहोई ॥ सूषमथूलरहैंनाहिकोई ॥ म
हाबलिष्टशक्तिममकाल ॥ ताकौसकलजक्षग्रहष्याल ॥ २५ ॥ कालविनाशैंसकलब्रह्मंड ॥ कितहु
कछुनराषैषंड ॥ अनावृष्टिहोवैशतवर्ष ॥ तातैंदेहनिकौंअकर्ष ॥ २६ ॥ छोटेबडेदेहहेजेतें ॥ लीनअ
सनमोंहोवैंतेतैं ॥ असनभोमिमैंहोवैंलीन ॥ भूमीगंधामिलिहोवैलीन ॥ २७ ॥ गंधलीनहोवैंजलमांही ॥
जलसुषमरसमांहीसमांही ॥ रससबतेजमांहीमिलिजाई ॥ तेजरूपमेंजाईसमाई ॥ २८ ॥ रूपपवनमां
हीमिलिरहैं ॥ पवनहींतबस्पर्शगुणगहैं ॥ स्पर्शलीनहोईतबगगन ॥ गगनशब्दमैंहोवैंगमन ॥ २९ ॥
शब्दमिलैंतामसअहंकार ॥ सोअरुइंद्रियदशप्रकार ॥ तेसबमिलिराजसअहंकार ॥ मिलिकरिसक
लहोईसंसार ॥ ३० ॥ अहंकारमहत्तत्वहींमिलैं ॥ प्रकृतितबैंमहत्तत्वहीगलैं ॥ देवमनसातिकअहंकार
॥ मिलिकरीसकलहोईसंघारा ॥ ३१ ॥ प्रकृतिकालमैंहोवैंलीन ॥ कालपुरुषामिलिहोवैंलीन ॥ पुरुषामि
लेपुरुषोत्तममांही ॥ पुरुषोत्तमकाहिजावैंनाहीं ॥ ३२ ॥ भेदाभेदरहिततवएक ॥ नित्यानंदद्वैतवितरेक ॥

चेतननिरमलज्ञानस्वरूप ॥ पूरणअक्षयपरमअनूप ॥ २३॥तातेंउद्धवामिथ्याद्वैत ॥ आदिअंतमध्यअद्वैत ॥ जलबुदबुदासमसवआकार ॥ उत्तममध्यमाविविधप्रकार ॥ २४ ॥ एसेंसदाविचारेंकोई ॥ ताकौं कोनभांतिभ्रमहोई ॥ रविउद्योतरहैंतमकेसें ॥ नदीमध्यदावानलजैसें ॥ २५ ॥ यहमैंभाष्योसांख्यप्रकार॥ सकलद्वैतउतपतिसंहार ॥ जाकेज्ञाननसंसेरहैं ॥ अहंकारदृढग्रंथीहिंदहैं ॥ २६ ॥ छोडेरूपअरूपस मावें ॥ जातेंबहुरिनदुषकौंपावें ॥ तातैंयाकौंसदाविचारौं ॥ मोकौंजानिआपकौंतारौं ॥ २७ ॥ ॥ दो हा ॥ ॥ उद्धवयहतोसौंकह्यौसांख्यज्ञानविचार ॥ अवगुणवृत्तिनकोकहौंभिन्नभिन्नप्रकार ॥ २८ ॥

॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांचतुर्विंशोध्यायः ॥ २४॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पंचबीशैंध्यायमैंनिर्गुणतासुविवेक ॥ चितमैंवरतैंतीनगुणगुणकीवृत्तिअनेक ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवअबभाषोगुणवृत्ति ॥जिनकौंजानैंलहैंनिवृत्ति ॥ जागु णतेंजोलक्षणहोई ॥ भिन्नभिन्नभाषोंसोसोई ॥ १ ॥ समदमक्षमाविवेकस्वधर्म ॥ लजामाननकरैंविकर्म ॥ सत्यदयानहींभूलेंशुद्ध ॥ उत्तममारगमैंथिरबुध ॥ २ ॥ जसअरुसोभाधीरजवंत ॥ परउपकारसदा वरतंत ॥ बुध्धिआस्तिकनित्यनिहसंग ॥ संतोषीअरुदानअभंग ॥ ३ ॥ कोमलविनयदीनचतुराई ॥ सी तलह्रदयसकलदुषदाई ॥ एसीभांतिवहुतसंपति ॥ सातिकगुणकीजाणोवृत्ति ॥ ४ ॥ आतमइनसबनि तेंन्यारा ॥। चेतनकरीवरतावनहारा ॥ भोगसक्तिहृदैंबहुकाम ॥ धनअभिलाषाजसआराम ॥ ५ ॥

तृष्णाहासगर्वबलवंत ॥ रिपुमंत्रादिकभेदअनंत ॥ करीकामनाभजेसबदेव ॥ परमारथकौंलहैंनभेव ॥ ६ ॥ बहुआरंभनिमांहीउत्साह ॥ सदाकठोरसदाअतिचाह ॥ बहुतवृत्तिराजसकीऐसी ॥ तुमसोंभाषी मेंजेंसी ॥ ७ ॥ हिंसाक्रोधलोभअधिकाई ॥ जहांतहांदीनअरुदंडऊठाई ॥ श्रमअरुकलहसोकअरु मोह ॥ निद्राआलसभयपरद्रोह ॥ ८ ॥ निशदिनचिंताउद्यमहीन ॥ हृदयेंआसासाहसछीन ॥ ऐसी बहुतामसकीवृत्ति ॥ जिनतैंकदैंनलहैंनिवृत्ति ॥ ९ ॥ उपजैंममताअरुअहंकार ॥ तातैंकरैंविविधव्यवहा र ॥ तेसबमिलितगुणनिकीवृत्ति ॥ जिनतेंबहुविधिहोईप्रवृत्ति ॥ १० ॥ धर्मअर्थकामअनूरक्त ॥ श्र द्धालोभतथाआसक्त ॥ धर्मप्रवृतपराइणजैंतैं ॥ बहुतभांतिविस्तारेतेतैं ॥ ११ ॥ वरतेअपनेअपनेधर्म ॥ प्रियग्रहअरुग्रहसुषकर्म ॥ एसबमिलितगुणनिकीवृत्ति ॥ जिनतेंबहुविधिहोईप्रवृत्ति ॥ १२ ॥ समदम आदिजुक्तनरहोई ॥ सातिकलक्षणकहियैंसोई ॥ राजसकामादिकअधीकार ॥ तामसजहाक्रोधादिवि कार ॥ १३ ॥ जबस्वधर्मसोंमोकौंभजैं ॥ दूजीसकलकामनातजैं ॥ त्रियापुरुषभावेंसोहोई ॥ सातिकप्र कृतिकहींजेंसोई ॥ १४ ॥ सबकामनात्हदैंधरीलेवैं ॥ अपनेकर्मनिमोकौंसेवैं ॥ यहस्वभावराजसकोंकही यैं ॥ मुगतहेतकबहुंनहीगहीयैं ॥१५॥ जबहींसात्हदैंमेंआनै ॥ जिनकर्मनिममसेवाठानै ॥ सोवहतामसप्र कृतिकहावैं ॥ तातैंममसुषकदैंनपावैं ॥ १६ ॥ सतरजतमतिनौंगुणजेहैं ॥ जीवहीकौंबंधनसबतेहैं ॥ तेगु णमेरीआग्याकरैं ॥ तातेंमोहीभजेतेतरैं ॥ १७ ॥ चितहूंतैंउपजैंएसकल ॥ ईनकौंतजैंआतमाअकल ॥

इनकौंछोडीरहैंमोमांही ॥ बहुग्योउपजेविनसेंनाहीं ॥ १८ ॥ करिसाधनरजतमपरिहरैं ॥ सातिकगुण कीवृद्धिहीकरैं ॥ सातिकसुरजौंपरकास ॥ अतिसीतलज्यौंचंदविगास ॥ १९ ॥ सबकल्याणमूलसुष कारी ॥ निश्चलकरणसकलदुषहारी ॥ तातैंधर्मज्ञानसुषलहैं ॥ चिंतासोकमोहभयदहैं ॥ २० ॥ जब सातिकतामसनंहीरहैं ॥ राजसग्राईबसेरागहैं ॥ राजसरूपसंगबलभेद ॥ तातैंमानकर्मभयषेद ॥ २१ ॥ जबसातिकरजछुटैदोई ॥ केवलएकतमोगुणहोई ॥ तमग्रविवेकनासग्रावरना ॥ उद्यमरहीतजडता करना ॥ २२ ॥ तातैंसोकमोहकोवासा ॥ निंद्राग्रालसनिग्रादिनग्रासा ॥ जबछूटैइंद्रियनुकीवृत्ति ॥ त्तदृदयनहींइहांउतपति ॥ २३ ॥ चितप्रसंनसकलनिहसंग ॥ सोसातिकममयहहैंग्रंग ॥ जबइंद्रियतन मनबुधी ॥ थिरनहींरहैंलहैंनसुधी ॥ २४ ॥ ठानैंविविधकरमविस्तार ॥ सोजानौंराजसग्रधिकार ॥ जबविकारमनबहुविधिगहैं ॥ ग्रासाबंधनिरंतररहैं ॥ २५ ॥ सोकविषादचेतनाहीन ॥ सोतामसउद्यम बलछनि ॥ जबउपजैंसातिककौंभाव ॥ तबसबहोवैंदेवसुभाव ॥ २६ ॥ राजसतैंग्रसुरनकीवृ त्ति ॥ भूतगणनिकौंतमउतपति ॥ सातिकतैंजागर्णहोई ॥ राजसपावेसुपनासोई ॥ २७ ॥ ता मसहूतैंसुषपतिलहैं ॥ ब्रह्मतुरीयनिरंतररहैं ॥ सातिकऊर्ध्वलोकनितजावैं ॥ राजसनरग्रादीकतनपावैं ॥ २८ ॥ तामसनीचैंथावरग्रादी ॥ याविधिभरमेजीवग्रनादी ॥ सातिकवृद्धमानजोहोई ॥ तातैंमरणलहैं नरकोई ॥ २९ ॥ सोदेवनिकलोहिजावैं ॥ राजसतैंमरीनरतनपावैं ॥ तामसतैंमरीनर्कनीलहैं ॥ तीनो

गुणतजीमोमेंरहैं ॥ ३० ॥ मेरेहेतकर्मजोकरें ॥ तामेंदूजोफलनहींधरैं ॥ सोवहसातिककर्मकहावैं ॥ तातैंजीवमहासुषपावैं ॥ ३१ ॥ फलनिमितममकर्मनिठानैं ॥ ताकौंराजसकर्मबषानैं ॥ हींसाहेतकरेमम कर्म ॥ सोतामसहैंबडोअधर्म ॥ ३२ ॥ भेदरहितवहसातिकज्ञान ॥ देहभेदसौंराजसजांन ॥ बालकमू कतुलजोहोई ॥ तामसज्ञानकहींजैसोई ॥ ३३ ॥ आतमदेहरहितजोएक ॥ सोहैमेरोज्ञानविवेक ॥ हो ईविरक्तवसीएएकंत ॥ सातिकवासकहैसोसंत ॥ ३४ ॥ ग्रहमेंकहींयेंराजसवास ॥ तामसजहांसुराआ वास ॥ थावरचलममभूरतिजहां ॥ निरगुणवासकहीजैतहां ॥ ३५ ॥ सातिककर्ताजोनिहसंगी ॥ सो राजसकर्ताफलप्रसंगी ॥ विधिकरिरहीततामसीकर्ता ॥ आसालागिकर्मनिविस्तरता ॥ ३६ ॥ आप हीमेटीरहैंमर्मशर्णा ॥ ताकौंसबनिरगुणआचरणा ॥ सोजननिरगुणकरताकहीयैं ॥ ताकैंसंगपरमपदल हीयैं ॥ ३७ ॥ जोनिहकर्मआतमांजानैं ॥ सकलजतनकीश्रद्धाठानैं ॥ सकलत्यागिनिश्चलजोहोई ॥ सातिकश्रद्धाकहीयैंसोई ॥ ३८ ॥ राजसश्रद्धाठानैंकर्म ॥ तामसश्रद्धाकरेविकर्म ॥ निरगुणश्रद्धामेरीभ क्ति ॥ जातेंमिटेसकलआसक्ति ॥ ३९ ॥ पंथपवित्रविनाश्रमआवैं ॥ जामेंआपनोधर्मनजावैं ॥ जातें उपजेनहींविकार ॥ सोकहीजेसातिकआहार ॥ ४० ॥ षाटामीठातीषाषारा ॥ दुखदायीकराजसआहा रा ॥ जोअशुधहिंसातेंआवैं ॥ सोतामसआहारकहावैं ॥ ४१ ॥ ममजनअरुमेरेउच्छिष्ट ॥ सोनिरगुण भोजनअतिइष्ट ॥ इंद्रियसुषतृष्णादिकदहैं ॥ तजिआरंभनिथीरव्हैरहैं ॥ ४२ ॥ आतमतेंउपजेसुषजोई ॥

सातिकसुखकहीयतुहैंसोई ॥ इंद्रियसुषराजसंहागहीयैं॥ निद्राआलसतामसकहीए ॥ ४३ ॥ मेरेप्रेम
भक्तिसुषजोई ॥ निरगुणसुषकहतुहैंसोई ॥ इंद्रियसुखराजसहीगईऐं ॥ निद्राआलसतामसकहीए ॥
॥८१॥ ४४ ॥ मेरेप्रेमभक्तसुषजोई ॥ निरगुणसुषकहतुहैंसोई ॥ द्रव्यदेशफलकालअरूज्ञांन ॥ करताकर्मअ
वस्थादान ॥ ४५ ॥ श्रद्धानिष्ठाअरूआकार ॥ त्रिगुणनिर्मितसबविस्तार ॥ जोकच्छुकहौसुनौअरूदेषौ॥
मनअरूबुधीजहांलगिपेषो ॥ ४६ ॥ सोसबप्रकृतिपुरूषविस्तारा ॥ त्रिगुणनिर्मितसकलपसारा ॥ इनतैंजी
वलहैंसंसार ॥ त्रिगुणकर्ममयवारंवार ॥ ४७ ॥ जोईनतीनौगुणनिनिवारैं ॥ चितआपनौंमोमैंधारैं ॥
सोमेरोनिरगुणपदपावैं ॥ बहुरौयाभवमैंनहीआवैं ॥ ४८ ॥ जातैंयहऐसीनरदेह ॥ जाकरिमिटैसकल
संदेह ॥ होवैंप्रगटज्ञानविज्ञान ॥ पावैंमोहिमिटैसबआन ॥ ४९ ॥ तातैंपंडितसकलनिवारैं॥ मोकौंसेइआ
पकौंतारैं ॥ याविनसकलपंडितजांनौं ॥ तेतेआतमघातीमांनौं ॥ ५० ॥ सबहूंतैंहोवेनिहसंग ॥ सावधा
नपलपरैंनभंग ॥ इंद्रियदेहप्राणमनजीतैं ॥ ममचरचादिनरैंनवितीतैं ॥ ५१ ॥ सकलसातिककीसंगति
करैं ॥ राजसअरूतामसपरिहरैं ॥ देहादिकतेनिस्पृहहोई ॥ आगेईच्छाकरैंनकोई ॥ ५२ ॥ मोमैंधा
रैंनिहचलबुधी ॥ तवपावैंअंतरगतिशुधी ॥ याविधिसातिकहुंछटिकावैं ॥ तातैंलिंगशरीरामिटावैं ॥ ५३
॥ लिंगशरीरमिटेभवतजैं ॥ निरमलरूपआपनौंभजैं ॥ ऐसेंहोईमोहिकौंजानैं ॥ बाहिरभितरद्वैतनमानैं ॥ ॥८१॥
५४ ॥ मोमेंमिलिमोहिमैंरहैं॥ बहूरोकालअग्निगहीदहैं॥ रहैंनिरंतरमेरेसंग ॥ तातैंकदैंनहोवेभंग ॥ ५५

॥दोहा ॥ ॥ हेउद्धवतोसोंकहींतीनोगुणकीवृत्ति ॥ अबऔरौंज्ञानहिकहौंजातेंहोईनिवृत्ति ॥ ५६ ॥
॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांपंचविंशोऽध्याय : ॥
२५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ योगभ्रंशयोगीनकौहोतकुसंगतिपाय ॥ कहैंसुसंगतीकारणैंछब्बीसैंअध्याय
॥ १ ॥ जाययोसितासंगतैंयोगधारणाध्यान ॥ श्रीधरसदाबिचारियेऐलगीतआख्यान ॥ २ ॥ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवयहनरतनहैंऐसौं ॥ सकलसृष्टिमेंनाहींजैसौं ॥ यातन
करीममज्ञानहींपावैं ॥ तातैंभवतजीमोमेंआवैं ॥ १ ॥ तातैऐसैंतनकौंपाई ॥ मोमिलनेकोकरैंउपाई ॥
अंतरमाहीमोहीविचारैं ॥ औरैंसकलवासनाटारैं ॥२॥ ममभक्तनकैंलक्षणजानैं॥त्यौंत्यौंआपुआपुमैंठानैं
अनायासतवमोकौंपावैं ॥ कालव्यालबहुरोनहीपावैं ॥ ३ ॥ मायागुणतवमिथ्याजानैं ॥ मेरोज्ञानपाईंक
रीभानैं ॥ यौंव्हैंरहैदेहहूंमांही ॥ तोहूंफिरिलहैंकहुंनाहीं ॥ ४ ॥ परिजद्यपिहोवैंएसोऊं ॥ करैंअसाधूसं
गनहींतोऊं ॥ शिश्नअरूउदरपरायणजेतैं ॥ मनक्रमवचनत्यागिएतेतैं ॥ ५ ॥ करैंअसाधूएककौंसंग
॥ तोहूंज्ञानध्यानकौंभंग ॥ असंतसंगजबनरहिकरैं ॥ ताकेसंगनरकमेंपरैं ॥ ६ ॥ जैसैंअंधअंधकेसं
ग ॥ कूपपरैंहोवैंसुषभंग ॥ याकीगाथाभाषौंऐक ॥ तातैंउपजैंपरमविवेक ॥ ७ ॥ जबउरबसीबिरहतन
दह्यौ ॥ सोकमोहसागरमेंबह्यौ ॥ जबपुरूरवाभाषीजोई ॥ तोसोंभाषोगाथासोई ॥ ८ ॥ राजापुरूरवा
चक्रवरति ॥ ताकीआनजहांलौधरती ॥ शापहुंतैंउतरीउरबसी ॥ सोमिलिकैंनृपकेउरबसी ॥ ९ ॥

बहूर्‍यौआपभुक्तिजबभई ॥ तबताजिनृपाहिंउरबसीगई ॥ नृपतिविलापकरैंबहुरोवैं ॥ परिसोनृपकोऔरन
जोवैं ॥ १० ॥ राजानग्नदेहसुधनाहीं ॥ बानीबिकलदीनतामाहीं ॥ लजारहीतमंदमतीजैसैं ॥ चल्यौउर
बसीपीछैतैसैं ॥ ११ ॥ अहोप्रियातुमठाढीहोवो ॥ मेरीऔरकृपाकरीजोवो ॥ मोकोंमारकहांतुमजावैं ॥
कृपाकरौमेरेग्रहआवौ ॥ १२ ॥ मिलीउरबसीसंगसुषपायौ ॥ सोसोसकलदुषव्हैआयौ ॥ त्रपतनभयो
भोगवतभोग ॥ पाईउरभसीकोसंजोग ॥ १३ ॥ ताउरबसीज्ञानआकर्ष्यौ॥तातैंमलोमानकेंहर्ष्यौ ॥ तन
मनत्द्दयकछूनहींआन्यौं ॥ निशदिनमासबरषनहींजान्यौ ॥ १४ ॥ तबतानृपकेपूरणभाग ॥ जातेंप्रग
टभयोवैराग ॥ तबनृपबचनबषानेंजेई ॥ तोसोंमेंभाषतहोंतेंई ॥ १५ ॥ ॥ पुरूरवाउवाच ॥ ॥ चौपाई
॥ अहोएकदेषोममोह ॥ आपुहींकीयोआपनोद्रोह ॥ गहीयोकंठदेवकीमाया ॥ जिनमेरोसबआवग
माया ॥ १६ ॥ ईनमोंकोंडहीक्यौंबहुतेरौ ॥ सर्वसआपुलीयौहरिमेरौ ॥ मेंदिनरातनजान्यौंजात ॥ अ
मृतकरिमान्यौंविषघात ॥ १७ ॥ वरषसमूहगएममवीत ॥ सकलविकारनिलेनोजीत ॥ देषोमेंकेसौडहीं
कायौ ॥ अग्निकेकरआपाविकायौ ॥ १८ ॥ जोमेंराजाचक्रवर्ती ॥ जीतीसमस्तकरीबसधर्ती ॥ सक
लभूपममचर्णनिसेवैं ॥ तनमनधनसबमोकोंदेवैं ॥ १९ ॥ सोमेंबिकानोंअग्निहाथ ॥ ज्यौंवानरवाजिगरसा
थ ॥ ज्यौंअग्निमोहिनचायौ ॥ त्यौंत्यौंमेंमुरषसुषपायौं ॥ २० ॥ तापरराजसहीतताजिमोह ॥ त्रिणस
मानकरिचलीबिछोह ॥ नग्नभयोमेंपाछैंधायौं ॥ ज्यौंउनमत्तआपबिशरायौं ॥ २१ ॥कौनभांतिताकौंबल

होई ॥ तेजप्रतापरहैनहींकोई ॥ जोहोवैंअस्त्रिआधीन ॥ जेसेषेरीसंगषरदीन ॥ २२ ॥ विद्यामौनतप स्यात्याग ॥ बनमेंसबवोदृढबैराग ॥ एसमस्तकीनेंकछुनाहीं ॥ ज्यौंलगीत्रियाबसैंमनमाही ॥ २३ ॥ यहउरबसजिबहीतेंपाई ॥ कामअग्निबहुभांतिजगाई ॥ परियहअग्निनसीतलभई ॥ अधिकअधिक नितबधतिगई ॥ २४ ॥ जैसैंअग्निप्रज्वलितहोई ॥ तामैंइंधनडारैंकोई ॥ सोत्यौंअधिकअधिकप्रजरैं ॥ पलकोनहींसीतलताकरैं ॥ २५ ॥ मैंअपनौनजान्यौंअर्थ ॥ आपुआपुकौंकीयोअनर्थ ॥ मूरषआ पुहींपंडितमानैं ॥ परैंमृत्युमुषअमृतजानैं ॥ २६ ॥ जोमैंईससकलभुवकेरौ ॥ सोव्हैंरत्यौत्रियकौंचेरौ ॥ मैंमूरषताकौंधीकार ॥ जिननकीयोकछुज्ञानविचार ॥ २७ ॥ अस्त्रिकरिजाकौंचितहर्‍यौ ॥ ज्ञानवि चारसकलपरिहर्‍यौ ॥ ताकौंहरिबिनकौनछोडावैं ॥ दूजोआपनछूटनपावैं ॥ २८ ॥ तातैंमैंहरिसर्णानिग हौं ॥ सकलत्यागिहरिकौंव्हैरहौं ॥ जद्यपिदेवीमोहिबुझायौ ॥ त्रियाप्रीतिदुषकहीसमुझायौ ॥२९ ॥ तोहूं मैंमूरषनहींचान्यौ ॥ कामअंधसुषहीकरिमान्यौ ॥ तातैंताकौंनहींअपराध ॥ यहमेरोमनबुडैंअसाध ॥ ३० ॥ ज्योमेस्वर्गनरकहीदेष्यौं ॥ दुषहीमांहीसुषकरिलेष्यौ ॥ गुणमेंसापजानदुषपावैं ॥ अग्निपतंगपरैं मरीजावैं ॥ ३१ ॥ तोतिनकौंअपराधनकोई ॥ आपदुषकरिलेवेंसोई ॥ तातैंतिनकोयहसुभाव ॥ मैंम नमेंक्यौंधर्‍योअभाव ॥ ३२ ॥ जामैंआपअग्निमेंपरौं ॥ तोउरदुषकवनकौंधरौं ॥ देहमलीनमहादुर्गं ध ॥ सोकरिजानिविमलसुगंध ॥ ३३ ॥ सोअपनीअविद्याकर्‍यौ ॥ निजानंदआतमाविसर्‍यौ ॥

यहतनतोबहूतनकोकहीयैं ॥ तातैंममतागहीक्यौंरहीयैं ॥ ३४ ॥ मातपिताआपुनौंकारिकह्यौं ॥ अग्नि एकमेकामिलिरहैं ॥ केयहतनकहीयेराजाकौं॥केपावकभक्षनहैताकौं ॥ ३५ ॥ कैभूकोकेश्वानसृगाल॥ केअपनोमित्रकेकाल ॥ यहतनकीधोकहीयैंकिनाकिनकौं ॥प्रगटदीसतुहैंतिनतिनकौं॥ ३६ ॥महाअशुद्धदेह यहएसी ॥ प्रगटनरकषानहैंजेसी ॥ तहांकौनमनबाधेमतिमंद ॥ अग्निनामकालकौफंद ॥ ३७ ॥ त्वचारुधिरमांसअरुअंत ॥ मज्जामेदरोमनषदंत ॥ विष्ठामूत्रऋतुकृमिदाट ॥ अग्निप्रगटनरककीषाड ॥ ३८ ॥ तातैंअस्त्रीअरुतासंगी ॥ ताकौंनहींहुंजैप्रसंगी ॥ ताकेंदर्शक्षुभितमनहोई ॥ देषेबिनाबिचरेनकोई ॥ ३९ ॥ तातैंतिनकौंदर्शनहिकरीयैं ॥ आपहिंआपनरकमेंपरीयैं ॥ जोयहअर्थइंद्रियनिवारैं ॥ मनक्रमवचनहुंशंगतैंटारैं ॥ ४० ॥ तबयहमनसहजहिंथिरहोई ॥ कदेंविकारनपरसैंकोई ॥ अरुतातैंजेअग्निनिकौंभजैं ॥ अरुआग्नितिनकौंबुधतजैं ॥ ४१ ॥ दर्शपरसअरुश्रवननिवास ॥ सबभावनितैंमानेत्रास ॥ इंद्रियनिकौंविसवासनकरैं ॥ ज्ञानवंतानितहीपरिहरैं ॥ ४२ ॥ महापुरुषजेजीवनमुक्ता ॥ तिनकौंयहसबसंगअजुक्ता ॥ तोतैंजगतैंछूटैंचहैं॥तेंहमसेंक्यौंसंगतिगहैं ॥ ४३ ॥ तातैंमेंसबसंगतिनिवारौ ॥ श्रीपतिचर्णकमलउरधारौ ॥ दीनबंधूकरुणामयस्वामी ॥ कृपाकरीयहअंतरजामी ॥ ४४ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ याविधिबचनकहैनरराज ॥ तजिलरबसीलोकसबसाज ॥ ज्ञानलह्यौसबसंशयटारौ ॥ मनानिश्चलकरीमोमेंधार्‍यौ ॥ ४५ ॥ तातैंउद्धवयहपुरुषार्थ ॥ नरतनपायौंतबहींस्वार्थ ॥ ज

वसमस्तकौसंगतितजैं ॥ सतसंगतिगहिमोकौंभजैं ॥ ४६ ॥ संतबतावैंहेतउपदेश ॥ जिनतैंसंशेरहेनलेश
॥ मनकौसबआशक्तिनिवारैं ॥ संतमहाभवसागरतारैं ॥ ४७ ॥ निस्प्रहानिरारंभसमदरसैं ॥ संग्रह
रहीतद्वंद्वनहींपरसैं ॥ अहंकारममतानहींआनैं ॥ मोहिभजैंदूजौनहीजानैं ॥ ४८ ॥ मेरीकथाश्रवणजेंक
रैं ॥ तेसबपापनितैंनिस्तरैं ॥ सुनैकहैंअंतरगतिध्यावैं ॥ अतिआतुरसोप्रीतिद्दढावैं ४९ ॥ सोजद्यपिउ
पदेशनदेवैं ॥ तोहूंमोहिचहेतेसेवैं ॥ तहांकथामेरीनितहोवैं ॥ तेईअंधसंदेहनिषावैं ॥ ५० ॥ तेसहजहीं
लहेममभक्ति ॥ सहजहिंहोवेसकलविरक्ति ॥ मेरीभक्तिलहैंनरजबहीं ॥ पूरणकामभयोसोतबही ॥
५१ ॥ तातैंकछूनकरणोरहैं ॥ ज्ञानानंदरूपममलहैं ॥ सीतनिशाकहुंहोवेकोई ॥ तहाअग्निपरजारैंसोई ॥
५२ ॥ तमतुषारभयसहजहिजावैं ॥ त्यौंसाधुसबदुषमिटावैं ॥ यहअपारसागरसंसार ॥ जामैंबूडेजीव
अपार ॥ ५३ ॥ तिनकौंनामप्रगटएकएह ॥ संतरूपप्रगटममदेह ॥ ज्यौंप्राणनिराषैंअहार ॥
मेरीशरणदुषसंहार ॥ ५४ ॥ ज्यौंज्यौंपरलोकधर्मधनजानौं ॥ त्यौंभवतारकसाधूमानौ ॥ जिनकेंह्र्दयप्र
गटममचर्ण ॥ तिनविनऔरनयाभवशर्णं ॥ ५५ ॥ ज्यौंबाहरिरहैंसूर्यएक ॥यौंउरनयनउद्धारैंअनेक ॥
संतमातपिताहितकारी ॥ संतेदेवबंधूदुषहारी ॥ ५६ ॥ तातैंसंतसंगनितकरणौ ॥ औरउपायनह्र्दयें
धरणौ ॥ तिनतैंअनायासैंभवतरैं ॥ अनायासैमोकौंअनुसरैं ॥ ५७ ॥ तबपुरूरवाएसोकर्‍यौ ॥ सहत
उरबसीलोकपरिहर्‍यौ ॥ सबतजीभयौआतमाराम ॥ विचर्‍यौंभूवमैंव्हैनिःकाम ॥ ५८ ॥ तातैंअसंत

संगतिपरिहरैं ॥ साधुसंगतिनिरंतरकरैं ॥ साधूजनसूषहींभवतारैं ॥ सुषहीममचर्णनिचितधारैं ॥ ५९ ॥
दोहा ॥ ॥ ऐसोसाधूअसाधूकौंसुनोहरिजीसोसंग ॥ तबउद्धवजनपूछियौंकमंजोगपरसंग ॥ ६० ॥
॥इतिश्रीभागवतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांऐलगीतायांषट्विंशोऽध्यायः ॥
२६ ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीधरपूजनविधिसबैंमूरतिअष्टप्रकार ॥ सत्ताविशैंध्यायमैंचित्तशुद्धनिजसार ॥ १
॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभूकृपाकरौअबऐसी ॥ भाषौंक्रियाजोगविधिजैसी ॥जाके
करतहोईसतसंग॥पविज्ञानहोईनिहसंग ॥१॥ यहजोतुमप्रतिमाकीपूजा॥तातेंश्रेयकहेनहींदूजा॥याकौंकहैं
व्यासअरुनारद॥गुरुबृहस्पतिपरमविशारद॥२॥औरोसकलमुनीस्वरजेतें॥परमश्रेययहभाषेतेतें ॥ कलप
आदीतुमविधिसोकत्यौं॥सोदृढकरीविधित्हृदयगत्यौं ॥३॥ तिनभृग्वादिसुतनिसुनायौ ॥ शंभूहूंतैंभवानीपा
यौ ॥ जेतेसकलवर्णआश्रम ॥ अस्त्रिशूद्रहुसबकौधर्म ॥ ४ ॥ याविधिऔरधर्महीजेतैं ॥ याहीकाजक
हैंसबतेतैं ॥ याबिनुऔरधर्मजेकरैं ॥ तोतिनतेंफिरिबंधनपरैं ॥ ५ ॥ यहसबधर्मनिकौहैधर्म ॥ याहीहूंतें
काटैंसबकर्म ॥ तातेंपूजाविधिविस्तारौ ॥ कृपाकरौजीवनानिस्तारौ ॥ ६ ॥ तुमदयालसबकोहितकारी ॥
सुमरतसकलदुषभयटारी ॥ शुनिकैंपरउपकारीबेन ॥ बोलेहरषिकमलदलनैन ॥ ७ ॥ श्रीभगवानुवाच
॥ ॥चौपई ॥ उद्धवयाकौंअंतनपार ॥ ममपूजाविधिविस्तार ॥ पारितोकूंसंक्षेपसुनाऊं ॥ तामेंतत्व
सकलकौंल्याऊं ॥ ८ ॥ पूजाविधिहैतीनप्रकार ॥ वैदकतंत्रमिश्रितसार ॥ वेदमंत्रअरुवैदकअंग ॥ सो

कहीएवेंदकपरसंग ॥ ९ ॥ यौंहीतंत्रिकामिश्रितजानैं ॥ भावैतासौंपूजाठानैं ॥ विप्रक्षत्रीवैस्यत्रिवर्नो ॥ इ
नकौंयाविधिपूजाकरनां॥१०॥सोसमस्तविधितुमहींसुनाऊं ॥ जीवनिकौंकल्यानउपाऊं॥प्रतिमाभूमिअग्नि
जलवाई ॥ द्विजअरुआपअर्कअरुगाई ॥ ११ ॥ अरुसबहीनमैंमोकौंजानैं ॥ जथाजोगसबपूजाठां
नैं ॥ गुरुअरुमोंमैंभेदनराषें ॥ मानुषबुद्धीदूरिकरीनाषैं ॥ १२ ॥ शुद्धहोईजलमाटीसंग ॥ असनाना
दिसकलईअंग ॥ जेजेप्रगटवेदअरुतंत्र ॥ तेतेसकलपढैममंत्र ॥ १३ ॥ संध्योपासनादिजेकर्म ॥प्रग
टतिहूंवर्णकैंधर्म ॥ तिनतिनसौंनितमोकौंभजैं ॥ होईनिषेधसकलसौंतजैं ॥ १४ ॥ जाहीकरिममसुमिर
णहोई ॥ काटैंसबकर्मनिकौंसोई ॥ सोइसोकहीयैंममधर्म ॥ ममसुमिरणबिनबंधनकर्म ॥ १५॥ अब
भाषौंप्रतिमाकेभेद॥सेवतजिनहींमिटैभवषेद॥एकशिलाकीकहियैंमूरति॥एककाष्ठकीयौंममसूरति॥१६॥
एकलेपचंदनकीकरीयैं ॥ एकचित्रपुस्तकलिषिधरीयै ॥ प्रतिमाएकसुवर्णसंवारी ॥ एकमनोमयमनमैंधा
री ॥ १७ ॥ एकमृत्तिकाकीलेकीनी ॥ एकरतनमणिकीकरिलीनी ॥ एममप्रतिमाअष्टप्रकार ॥ जा
नैंममंदिरनिजसार ॥ १८ ॥ तिनमैंहोवैंनिश्चलजेती ॥ सयनादिकनकरावेतेती ॥ सालिगरामआदिहे
जेती ॥ मरौतनजांनैंनिततेती ॥ १९ ॥ औरसबनिकौंपूजाकाल ॥ किंवाजानैंनितगोपाल ॥ लेपीलिषी
नमाजंनकरैं ॥ औरअस्नानहींविस्तरैं ॥ २० ॥ उत्तमसामग्रीसौंसेवैं ॥ तनमनसबमोकौंदेवैं ॥ जोनिह
कामनिःकपटहोई ॥ करेभाववसमोंकौंसोई ॥ २१ ॥ उत्तमवस्तनिमनकरिल्यावैं ॥ प्रेमसहीतसबमो

होचढावैं ॥ उत्तमविधिअस्नानकरावैं ॥ वस्त्रआभरणादिकपहिरावैं ॥ २२ ॥ अग्निघृतादिकहोमही
करैं ॥ धरणिरविअरुक्तातिविस्तरैं ॥ जलकौंपूजेजलफलफूल ॥ जानेमोहीसकलकौंमूल ॥ २३ ॥ भ
क्तिसहितजोअर्पैतोई ॥ ताहुमेंमोकोंसुषहोई ॥ तोजेधूपदीपनैवेद ॥ मोकौंबहुविधिकरैंनिवेद ॥ २४ ॥
ताकीमहिमाकहावषानौं ॥ ज्यौंहिंयौंमेंहीपाहिचानौं ॥ तातैंमेंनित्यप्रतीतिआधीन ॥ तोषनमानौंप्रीतिविहीन
॥ २५ ॥ अबभाषौंपूजाविधितोसौं ॥ सावधानव्हैंसुनियोमासौं ॥ होईपवित्रकरैंअस्नान ॥ मनमेंराषैमे
रोध्यान ॥ २६ ॥ पूजासाजप्रथमसबलेई ॥ फिरिउठबैकौंरहननदेई ॥ बैठेउत्तरकेपूरवमुष ॥ निश्चल
प्रतिमाकेबलसन्मुष ॥ २७॥ दर्भनिसौंनिजआसनकरैं ॥ अंगनिकैंन्यासहींविस्तरैं ॥ न्यासकरैंममभू
रतिअंग ॥ तबठानैंअस्नानप्रसंग ॥ २८ ॥ उत्तमकलसतोयसौंभरैं ॥ दूजेजलकेपात्रहीधरैं ॥ जलमें
बहुतसुगंधमिलावैं ॥ तासौंमोहीअस्नानकरावैं ॥ २९ ॥ अर्धपादअरुविष्टरकरैं ॥ तीनपात्रतातैंजलभ
रैं॥गंधपुष्पतामेंबहुधरैं॥गायत्रीअभिमंत्रनिकरैं ॥३०॥ तबआपनौंकरेतनशुध ॥ कौउद्धारनहोईअशुध॥
र्हदयमांहीममरूपहिंध्यावैं॥उँकारजहांतैंआवैं॥३१॥जैसैंग्रहमेंदीपप्रकास॥यौंध्यावैंतनमांहींउजास ॥पूजौ
प्रेमसोतनमयहोई॥पुनिमूरतिमेंथपिसोई ॥३२॥ सांगोपांगकरैंतनपूजा॥कोईभावनउपजेंदूजा॥देवैंअर्घपाद
आचमन॥रचेअष्टदलपंकजभवन॥३३॥तापरअस्थापैंधरमादी ॥सकलशक्तिरविशशिअग्न्यादी॥शंष
चक्रगदाअसिअस्त्र॥धनुषअरुबानमूलहलशस्त्र ॥३४॥ एआठतेआठदिशिआनैं॥वनमालालताउरजा

न॥नंदसूनंदमहाबलचंड॥कुमुदेक्षणबलकुमुदप्रचंड॥३५॥अष्टदिसापारदससमग्र॥ठाढौगरुडजोरिकर अग्र॥विष्वक्सेनव्यासगुरुदेव॥गणपतिदुर्गाअरुसबदेव॥३६॥करजोरेहरिसन्मुषठाढैं॥हरषतवदनप्रेमअतिबाढैं॥सबहीनकौंपूजैंअर्घादि॥विनयनमृतावंदनआदी ॥३७॥चंदनअरुकपूरउशीर॥कुंकुमअगरसुगंधतनीर॥प्रथमहींकछुमधूपर्कचढावैं॥निरमलजलअचमनकरावैं॥३८॥पुनिसुगंधजलदेइसनान॥मंत्रवंदनमनक्रमनहींआन॥पुंडरीकलोचनभवभान॥आदिपुरुषसबकेउपजावन ॥३९॥जयजयब्रह्मसकलआधारनमोनमस्तेवारंवार ॥ एसैंमंत्रतंत्रहीउचारैं॥सहस्रशीर्षाश्रुतिबिस्तारैं॥४०॥वस्त्रजनेउअरुआभरना॥अंगअंगतिलकादिककरना ॥ उत्तममालाबहुतसुगंधा ॥ प्रेमसहितमोसैंमनबंधा ॥ ४१ ॥ बालभोगआचमनकरावैं ॥ कुसुमसुगंधधूषबनावैं ॥ बहुतभांतिआरतीउतारैं ॥ नानाविधिनैवेदसंवारैं ॥ ४२ ॥ षीरषांडघृतदधींलापसी ॥ लाडुपुवासुहारसुरसी ॥ विंजनकरैंऔरबहुतरें ॥ भोगलगावैंबहुहितमेरें ॥ ४३ ॥ नितदांतुनउवटनौतेल ॥ अन्हापैंचामृतमेल ॥ अलंकारदर्शनआदरस ॥ गीतनृत्यवाजिंत्रसुपरस ॥ ४४ ॥बहुतभांतिनैवेदसंवारैं ॥ नितनाहींतोपर्वनटारैं ॥ बहुरिकरैंपावकमेंपूजा ॥ मोबिनताहीनजानेंदूजा ॥ ४५ ॥ अग्निकुंडमैंअग्निधरैं ॥ समिधघृतादिकहोमहीकरैं ॥ होमकरैंपठीपिढिममंत्र ॥ जिनकौंकहैंबेदअरुतंत्र ॥ ४६ ॥ करीहोमआचमनकरावैं ॥ ताकोंमेरोरूपहीध्यावैं ॥ तप्तसुवर्णतुल्यछबीअंग॥चारुचतुर्भुजआयुधसंग ॥ ४७ ॥ पीतबसनकुंडलबनमाला ॥ सीसमुकुटकटीसूत्रविशाला ॥ भृगुलताआरु

लक्ष्मीआदि ॥ बहुविधिध्यावैंरूपअनादी ॥ ४८ ॥ पुनिनंदादिपारषदजेतें ॥ बलीविधानसौंपूजेंतेतें ॥ज
पैंमूलमंत्रबहुवार ॥ जाविधिबांधेप्रेमअधिकार ॥ ४९ ॥ पीछैंतापरसादहिलेवैं ॥ लेकरीममभक्तन
कौंदेवैं ॥ आग्यांपाइंआपतबपावैं ॥ प्रीतिसहितजेतोजीयभावैं ॥ ५० ॥ पुनिअर्पेंसुगंधतांबूल ॥ उत्तम
मालाउत्तमफूल॥ मेरेगुणउंचैसुरगावैं॥नामनिभाषैप्रेमबंधावै॥५१॥ मेरेगुणअरुकर्मसराहैं ॥पूरणप्रेमसि
धूअवगाहैं ॥ कथानितममसुनैंसुनावैं ॥मोंबिनकहुंनपलठहरावैं ॥५२॥ चर्णपलोटैंसयनकराई ॥ मुषतें
नामनबूलीजाई ॥ प्राकृतसंसकृतहैंअरुवेद ॥ जेइंजेंअस्तुतिकेभेद ॥ ५३ ॥ तिनतिनसौंममअस्तुति
करैं ॥ वारवारचर्णनिमेंपरैं ॥ पीछैंधारजोरकरदोई ॥ करेंदीनव्हैंविनतीसोई ॥ ५४ ॥ हेप्रभूभवसागर
तेंतारौं ॥ कालमृत्युभयशोकनिवारौ ॥ तुमबिनमेरेंऔरनकोई ॥ पाऊंचर्णनिकोंजैंसोई ॥ ५५ ॥ दृढ
दैंजोतिजोतिमेंधारैं ॥ मूरतिकौंसेव्याविस्तारैं ॥ यौंआकारजहांलौंदेषैं ॥ तेसमस्तममूरतिलेषैं ॥ ५६
करेंयथाविधिसबमेंपूजा ॥ मोंकौंछांडिनजानैंदूजा ॥ याविधिक्रियाजोगमनलावैं ॥ सोनरभुक्तिमुक्तिफ
लपावैं ॥ ५७ ॥ मैंकौंउत्तमग्रहसंवरावैं ॥ तामेंममप्रतिमापधरावैं ॥ मोकौंकरैंबागफूलवाई ॥ जन्ममहो
त्सवकीअधिकाई ॥ ५८ ॥ ममहितसदाव्रतादिकदेवैं ॥ बहुतभांतिममभक्तिनिसेवैं ॥ ममपूजाप्रवाहकै
हेत ॥ देवेंगामपुरहाटअरुषेत ॥ ५९ ॥ सोममसमईस्वरतापावैं ॥ तिहुंलोककौंईसकहावैं ॥ जोममप्रति
माथापनकरैं ॥ सोसबभूपतिव्हैंअवतरैं ॥ ६० ॥ जोमेरोमंदिरसंवरावैं ॥ तिहूंलोककाप्रिभूतापावैं ॥ पूजा

दिकनीब्रह्माकोलोक ॥ जहांनहींनानाभयसोक ॥ ६१ ॥ तीनौंकीएलहैंवैकुंठ ॥कालादिकसबतेंअकुं
ठ॥जोयौंसेवेंहैंनिहकाम॥सोममभक्तिलहैंसुषधाम ॥६२॥ निहकामीभांवैंत्यौंसेवैं॥जोतनमनधनसबमोको
देवैं ॥ सोपावेमेरोनिजज्ञान ॥ लहैंमोहिछूटैंसबआन ॥ ६३ ॥ वृत्तिसुरनिअरुविप्रनिकेरी ॥ अरुजो
करिहोएकछोमेरी ॥ दईऔरकौकिंवाआपु ॥ ताकैंहरेक्यौंसबपापु ॥ ६४ ॥ सोहोवेकृमिविष्टा
मांही ॥ बरषकोटिकहूंनिकसैंनाहीं ॥ करताप्रेरकतथासहाई ॥ अनुमोदकैजिनरुजिउपजाई ॥ ६५ ॥
सबहिनकौंफलहोईसमान ॥ भावेउत्तमभावेंआन ॥ तातेंममाहितकर्मनिकरैं ॥ सोबहूतनिलेभवजलतरैं ॥
६६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ याविधिपूजाकौंकरैंताकैंउपजैंज्ञान ॥ जातेंमेरोपदलहैंताकौंकरौंबषान ॥
॥ ६७ ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांसप्तविंशोऽध्यायः
॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ अष्टविंशतिध्यायमैंज्ञानयोगपुनिसार ॥ श्रीधरश्रीउद्धवप्रतिवर्णतनंदकुमार ॥
१ ॥ श्रीभगवनुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उद्धवताकौंभाषौंज्ञान ॥ जातेंलहेमोहितजोआन ॥ उत्त
ममध्यमकर्मसुभाव ॥ जेसबजगकेनानाभाव ॥ १ ॥ तिनतिनकीनिंद्यानहींकरैं ॥ अरुकछूनहींअस्तुति
विस्तरैं ॥ प्रकृतिपुरुषनिर्मितसबजानैं ॥ एकजानिसबभेदाहिभानैं ॥ २ ॥ ब्रह्माआदिकीटपरिजंत ॥ ए
करूपदेषेममसंत ॥ जेजबहुविधिकर्मसुभाव ॥ तिनकौंआनैंभावअभाव ॥ ३ ॥ तासोंहोईअर्थतेभ्रष्ट ॥
मायामोहचितआकृष्ट ॥ मिथ्यामाहिचितकौंधरैं ॥ तातेंमूरषजनमेंमरैं ॥ ४ ॥ लीनहोईजबइंद्रियदेह ॥

स्वप्नलहैंतब्रआतमएह ॥ जहांमनलग्यौंतहांतहांजावैं ॥ बहुतभांतिकेसुषदुषपावैं ॥ ५ ॥ पुनिसुषपतिमेंहोवे
लीन ॥ मरणोकहिएअहंममहीन ॥ यौंसुषपतिअरुदेषतमुपना ॥ जन्ममरणबहुसुषदुषउपनां ॥ ६ ॥
ज्यौंलगिसोवैंतोलगिपावैं ॥ जागैंकछुएनहींरहावैं ॥ त्यौंयहसुषपाप्अरुपुन्य ॥ जन्ममरणसबमानोंशू
न्य ॥ ७ ॥ जापेयहसबद्वैतअसत्य ॥ मोंबिनऔरकछूनहींसत्य ॥ देषनकहनसुननमेंआवैं ॥ मनअरु
बुद्धिजहांलगिजावैं ॥ ८ ॥ तेसमस्तजोकछुवैंनाहीं ॥ तोसुभअसुभकहैंकहामांहीं ॥ जद्यपिहेमिथ्यासंसा
र ॥ तोहूंदुषकौंवारनपार ॥ ९ ॥ ज्यौंलगींदेहबुधीनहिंछूटैं ॥ तोलगींभवभयपलकनटूटैं ॥ जेसैअपने
ध्वनिकीझांहीं ॥ अरुप्रतिबिंबसिंहकीनाहीं ॥ १० ॥ सीपरूपजेवरिमेंसाप ॥ अरुमृगतृष्णांमाहींआप
॥ हैंनाहींपरिहैंसोजानैं ॥ तिनतेंसुषदुषबहुविधिमानैं ॥ ११ ॥ ज्यौंलगिमिथ्थाजानैनाहीं ॥ तोलगिसकल
अनर्थनजाही ॥ ब्रह्मरूपयहसबसंसार ॥ जहांलगिकछुहैंआकार ॥ १२ ॥ ब्रह्मरूपब्रह्महीउपजावैं ॥
ब्रह्मब्रह्मआधाररहावैं ॥ ब्रह्महिकरैंब्रह्मप्रतिपाल ॥ ब्रह्मरूपब्रह्मकौंकाल ॥ १३ ॥ जैसैंजलबुदबुदजल
मंहीं ॥ जलकौंछोडिद्वैतकछुनाहीं ॥ त्यौंहीब्रह्मसरूपसबएक ॥ देषेभरमतेंजीवअनेक ॥ १४ ॥ पारि
यहसबजानोंनिरमूल ॥ ज्यौंमृगवारीगगनमेंफूल ॥ त्रिगुणरचितसबयहजगजानौं॥तेगुणमायाकेहीमानौं
॥ १५ ॥ जोयाविधिसबमिथ्याजानैं ॥ ब्रह्मभावनात्दृढैंआनैं ॥ परिजद्यपिसौंजगमेंरहें ॥ तोराविद्यागुण
दोषनगहैं ॥ १६ ॥ याजगमेंशुभअशुभनदेषैं ॥ मिथ्याजानेभरमकरीलेसें ॥ ज्यौंप्रतक्षघटादिकदेषें॥

उपजतविनसतमिथ्यालेषैं ॥ १७ ॥ धरनीआदिकालत्रयसत्य ॥ नामरूपतैंसकलअसत्य ॥ यौं
हीब्रह्मसत्यत्रिहुंकाल ॥ नामरूपामिथ्याजंजाल ॥ १८॥ अरुयौंकरिदेषेअनुमान ॥ भाईयहजडतनमन
प्रान ॥ शक्तिकौनकीचैतनरहैं ॥ अपनेअपनेअर्थनिगहैं ॥ १९ ॥ निराकारतेंचेतनहोई ॥ सबआ
कारजहांजोलोई ॥ तातैंसबमिथ्याआकार ॥ चेतनब्रह्मसकलआधार ॥ २० ॥ अरुश्रुतिकौंप्रमाण
विचारैं ॥ नेतिनेतिकहीवेदपुकारैं ॥ अरुयौंदेषैंअनूभवमाही ॥ नामरूपयहकछुहेनाहीं ॥ २१ ॥ अं
तनरहैंहूतेंनहींआदी ॥ आत्मनिश्चलब्रह्मअनादी ॥ ऐसोबहुविधिकौंविस्तार ॥ मिथ्याजानैंवर्णआकार
॥ २२ ॥ मनक्रमवचनहोईनिहसंग ॥ ब्रह्मविचारहिकरैंअभंग ॥ ऐसेबचनकहेभगवान ॥ तब
उद्धवपूछ्यौंनिजज्ञान ॥ २३ ॥ उद्धवउवाच ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुयहआतमअविनासी ॥
चेतनरूपस्वयंप्रकासी ॥ निरगुणनिराकारनितसुध ॥ सदाअनावृतसदाप्रबुध ॥ २४ ॥ ईहार
हितसदाआनंद ॥ सकलप्रकासकलिपैनदुंद ॥ अरुदेहैंशक्तिकरीहीन ॥ जडअसुधव्हैंजावैंलीन
॥ २५ ॥ तातैंतिनकोसंगनकोई ॥ महाविशेषपरसपरहोई ॥ कछूइच्छानहींआतममाही ॥ अरुत
नसोंकछूहोवेनाहीं ॥ २६ ॥ आतमाकौंबंधननंहीकोई ॥ अरुआत्मआवरणनहींहोई ॥ यहसंसारल
हैसोंकोन ॥ आत्मसूधसदासुषभोन ॥ २७ ॥ यहकरिकृपामोहीसमझावौ ॥ मेरेप्रभुसंदेहामिटावौ ॥ ऐ
सेंउद्धवपूछ्यौज्ञान ॥ तबबोलेंभवपतिभगवान ॥ २८ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥आत

मकोनाहींसंसार ॥ अरुतिनकोनाहींआकार ॥ तिनदोनोतेंजोअविवेक ॥ ताहीकोंभवदुषअनेक ॥२९
इंद्रियप्राणदेहमनबंध ॥ इनसोंचोआत्मसनबंध ॥ तातेंआभासेंसंसार ॥ महादुषनानापरकार ॥३०॥
जोंलगिलोंइनीसोंसंबंध ॥ तोंलगिआतमाजानेबंध ॥ सोअज्ञानकर्योंसबजानों ॥ नाहींकछूसकलकरी
मांनों ॥ ३१ जद्यपिहैंमिथ्यासंसार ॥ परितोहूंकहूंवारनपार ॥ सदाजीवदुषहीमेंरहैं ॥ वारवारतनछोंड
गहैं ॥ ३२ ॥ ज्योंसुनाकछुहोवैंनाहीं ॥ परिसबसाचौनिद्रामोही ॥ योंज्योंसुषदुषमनआध्यावैं ॥ सोसो
सकलसुपनमेंआवैं ॥ ३३ ॥ हैंनाहींपरिहैंसोजानैं ॥ नानाविधकेसुषदुषमानैं ॥ जागेहीकछुहीयेंनाहीं ॥
सबव्यवहारवृथाव्हैंजांहीं॥३४॥हरषशोकभयसोचअरुलोभ॥इच्छाक्रोधअसोभअरुसोभ॥जन्मअरुमर
णविकारजहांलौं॥अहंकारकेसकलतहांलौं ॥३५॥ आतमसदाएकरसरहैं ॥ अहंकारसंगतिदुषसहैं ॥
इंद्रियदेहबुद्धिमनप्रान ॥ सूत्रअरुमहत्तत्वअभिमान ॥ ३६ ॥ इनिसौंमिलिकरआतमएक ॥ याकैंसुष
दुषगहैंअनेक ॥ तिनतिनकेहितकर्मनिकरैं ॥ कर्मनिकैंवशजनमेमरैं ॥ ३७ ॥ लिंगबंध्योदेहनिमेंजावैं
॥ तिनकैंसंगमहादुषपावैं ॥ बुधवचनमनप्राणसमीर ॥ महत्तत्वइंद्रियकर्मशरीर ॥ ३८ ॥ सुषअरुदुष
ममताअहंकार ॥ तिनकौंनानाविधिसंसार ॥ सोनिरमूलसकलाहिजानैं ॥ ज्योंजेवरीसापज्योंमानैं ॥ ३९
॥ ज्ञानषडगभजीमोहीउपावैं ॥ गुरुसेवासौंसाधनधरावैं ॥ तासोकाटीव्हैंनिहसंग॥विचरैंसबदेषतममअंग
॥ ४० ॥ गुरुकेवचनदृढदेमैंधारैं ॥ आदीअंतलोश्रुतिविचारैं ॥ जनममरणदेषेप्रतक्ष ॥ तजीअज्ञानही

होवेदक्ष ॥ ४१ ॥ साधनधर्ममांहीथितहोई ॥ आतमदेहविचारोदोई ॥ जोयाजगकीआदीअरूअंत ॥ सोईमध्यविचारैसंत ॥ ४२ ॥ आदीअरूअंतमध्यमेंएक ॥ नामरूपभ्रमरूपअनेक ॥ हेमएकज्यों आदीअरूअंत ॥ मध्यकीएआभरणअनंत ॥ ४३ ॥ तोकछुहेमछोडीनहींआन ॥ जोविचारकरीदेषे ज्ञान ॥ मिथ्यासकलनामआकार ॥ हेमकालत्रयकरेविचार ॥ ४४ ॥ यौंजगआदीमधअरूअंत ॥ मोहीअरूपविचारैसंत ॥ आदीअंतमेंएकअरूप ॥ सोईमध्यवृथासबरूप ॥ ४५ ॥ जाग्रतसुपनसुषति अवस्था ॥ आदीअरूअंतमध्यमास्वस्था ॥ ईनकेनासभएजोरहैं ॥ सकलछोडताकौंबुधगहैं ॥ ४६ ॥ इंद्रियदेहइंद्रियनिकेदेव ॥ इंद्रियविषयनिकेबहुभेव ॥ तेसबजाकेकहींबिननाहीं ॥ सत्यब्रह्मजोषोजोमांहो ॥ ४७ ॥ जाहींप्रकासतसकलप्रकासैं ॥ जाकीशक्तिसत्यासिभासैं ॥ मुषकौंमुषकर्णनिकेकर्ण ॥ करा केकरचर्णनिकेचर्ण ॥ ४८ ॥ नाशानासनैनकेनैन ॥ जिभ्याजीभबेनकैंबेन ॥ याविधिसकलप्रकासकए क ॥ ताविनमिथ्यासकलअनेक ॥ ४९ ॥ एजैनामरूपविस्तार ॥ जिनसौंपूरणसबसंसार ॥ तेसबअ दोहुतैंकछुनाहीं ॥ अरूनहींरहीयैंअंतहूमांही ॥ ५० ॥ तातैंअबहुमिथ्यामानैं ॥ कारणब्रह्मनिरंतरजानैं ॥ नामधर्योसोसकलविकार ॥ तिहूंकालमेंमाटीसार ॥ ५१ ॥ यहजोकछुसोब्रह्मसमस्त ॥ आदीमध्य अरूसबकैअस्त ॥ ऐसैंबहुविधिवेदबषानैं ॥ ब्रह्मबतायद्वैतसबभानैं ॥ ५२ ॥ आदिसमस्तहूतौंकछुना हीं ॥ अबआभासतएमध्यमांही ॥ यातेंपरेंब्रह्ममरूप ॥ सकलप्रकासकआपअनुप ॥ ५३ ॥ बहुवि

चित्ततामैंत्राभासैं ॥ ताकीशक्तिशक्तिप्रकासैं ॥ तातैंसकलब्रह्महीलेषौ ॥ ताजिकरीरूपअरूपहीदेषौ ॥
५४ ॥ इनतैंपरैंरूपममजानौ ॥ अरुएसबममरूपहिंमानौ ॥ द्वैतछोडिनिश्चलव्हैरहौ ॥ जानिब्र
ह्मताब्रह्महींलहौ ॥ ५५ ॥ ऐसोजोनितकरैविचार ॥ मिथ्याजानैंसबअप्रकार ॥ गुरुसेवाकरीज्ञा
नवधावैं ॥ चेतनमोहीअखंडितध्यावैं ॥ ५६ ॥ यहजोतनसोआतमनाहीं ॥ तनघटरूपविचारोमांही
॥ अरुइंद्रियतेंदीपसमान ॥ इनहींप्रकासतआत्माज्ञान ॥ ५७ ॥ अरुयौंदेवपवनमनबुद्धी ॥
आतमकौनहींजानैंशुधी ॥ क्षितिजलतेजपवनआकास ॥ अहंकारगुणचितपरप्रकास ॥ ५८ ॥
श्यामप्रकृतितनमात्रापंच ॥ इनहींसौंसबद्वैतप्रपंच ॥ तेजडआत्मकौंनहींजानैं ॥ आतमशक्ति
इहांसोठानैं ॥ ५९ ॥ सकलप्रकाशकआतमएक ॥ एजडजाननसकैंअनेक ॥ याविधिजो
ममरूपविचारैं ॥ सकलउपाधीउरैकेटारैं ॥ ६० ॥ सोबनरहैंइंद्रियनिथंभै ॥ किंवापुरुषाविषयनिआरं
भैं ॥ तोहुंताकौंनहींगुणदोष ॥ जीवतहींजिनपायोमोक्ष ॥ ६१ ॥ जैसैंघनरविआडेआवे ॥ तोतिनसौंर
वीनछिपाए ॥ अरुजोमेघदूरिव्हैगयें ॥ तोकछुरविप्रकाशनभये ॥ ६२ ॥ रविहैंपरैंउरेघनवृंद ॥ जा
नेलिप्तलोकमतिमंद ॥ जैसैंप्रगटपवनघनतोई ॥ धूमधूलअरुदामनीहोई ॥ ६३ ॥ ऋतुकेगुणसीतउ
ष्णादी ॥ उपजतविनसतरहैंअनादी ॥ परिनहींलिप्तअलितआकास ॥ त्यौंआतमापरकास ॥ ६४ ॥
परितोहूंसंगतिनहींकरैं ॥ मायागुणनिंदूरिपरिहरैं ॥ ज्यालोकारिनमेरीदृढभक्ति ॥ छूटीनहीरजतमआ

शक्ति ॥ ६५ ॥ द्वैतभेदनहींभूलैजोलौं ॥ ममजनसंगकरैनहींतोलौं ॥ जैसैंरोगहोइतनमाहीं ॥ दृढक
रिमूलउषाऱ्यौंनाहीं ॥ ६६ ॥ सोतजीऔषधअपथ्यहींकरैं ॥ तोबहूरोजगमैंअबतरैं ॥ बंधुकुटंबशि
ष्यभहुतेरैं ॥ आवैंसकलसुरनकेप्रेरैं ॥ ६७ ॥ तेतेअंतराइंसबकरैं ॥ जोगीकौंकर्मनिविस्तरैं ॥ सोति
नतैंपावैअवतार ॥ बहुर्‍यौकरैभक्तिविस्तार ॥ ६८ ॥ कर्मपंथमैंभूलैंनाहीं ॥ मैंप्रेरकताकेउरमांहीं ॥
याविधिपाईज्ञानविज्ञान ॥ देषैमोहिमिठावैंआन ॥ ६९ ॥ तबताकौंकर्मकरमनीकरै ॥ लेनदेनभोजनवि
स्तरैं ॥ पूरवसंसकारकरवावै ॥ विधिकौंलिष्यौंमिथ्याजावैं ॥ ७० ॥ सोमुनिमगनब्रह्मसुषमांहि ॥ ता
तैंकरताजानैंनाहीं ॥ जोवैठोअरुठाढोहोई ॥ आवैजाईकहूंजेसोई ॥ ७१ ॥ अनषाईजलपिवैसोवैं ॥
जोव्यवहारदेवकौंहोवैं ॥ सोसोकछूनजानैंजोगी ॥ निश्चलरहैब्रह्मरसभोगी ॥ ७२ ॥ जोकबहूदेषैंसंसा
र ॥ इंद्रियगोचरविविधप्रकार ॥ तेतेकछूसत्यनहींजानैं ॥ सुपनसमानज्यौंजागैंमानैं ॥ ७३ ॥ प्रथम
आतमाहूंतोअबंध ॥ आपहीभयौप्रकृतिसोबंध ॥ बहूर्‍यौमेसोंविद्यापांवैं ॥ तबदुषजानिप्रकृतिछिटका
वैं ॥ ७४ ॥ तबबहुर्‍यौताकौंनहींगहैं ॥ मोहीजानिमोहीमेंरहैं ॥ प्रथमहिजबमोकौंनहोज्ञान्यौं ॥ तबमा
यासुषउत्तममान्यौं ॥ ७५ ॥ बहुरौजबममसर्णहीआवैं ॥ ममप्रसादअज्ञानामिटावैं ॥ तबमायाकोंदुषम
यजानैं ॥ परमानंदरूपमोहीमानैं ॥ ७६ ॥ तातैंआपहीगहीउपाधी ॥ ताकौंतैंजानीकरीव्याधी ॥ स
दानिरंतरमोमेंरहैं ॥ बहुर्‍यौभवसागरनहींबहैं ॥ ७७ ॥ ज्यौरबीअंशसकलहीअक्ष ॥ पारिरविबिनान

लैषंप्रतक्ष ॥ राविसंजोगबहुरिजबहोई ॥ तबसमस्तदेषैसोसोई ॥ ७८ ॥ रविबिनअंधकारतबहोवैं ॥
तातेकोइननंनहींजोवैं ॥ रविसंजोगप्रकासहिपावैं ॥ तबसबदेषैतमहींमिटावैं ॥ ७९ ॥ परितैनैनात्रिकाल
॥९०॥ अलेप ॥ अंधकारसोंभयेनलेप ॥ तस्यौंकेत्यौंतमहींमाही ॥ परिरावेबिनुकछूदेषैनाहीं ॥ ८०॥ रवितेउ
त्तमउपाधीपरिहरैं ॥ पाईप्रकाशप्रकासहीकरैं ॥ त्यौंयहआतममेरोरूप ॥ स्वयंप्रकाशकपरमअनूप॥
८१ ॥ जन्ममरणमरजादारहित ॥ कहुंकरीकबहुंनहींगहीत ॥ दूजैरहितआतमाएक ॥ ताहीकरिए
देहअनेक ॥ ८२ ॥ महाअनुभावसकलअनूभाव ॥ जामैंकदैनकर्मस्वभाव ॥ नित्यानंदसदाअतिशुद्ध
सदानिरीहसदाप्रबुध॥८३ ॥ जाकरिइंद्रियतनमनप्राना ॥ चेतनव्हैंवरतोंविधिनाना ॥ जोलोमनअरुवचन
नजावैं ॥ औरकौनाविधिताकौंपावैं ॥ ८४ ॥ परिजबमैंतैरहीतोभयौ ॥ तबताकौंसबबलमिटीगयौ ॥
अंधकारआयौअज्ञान ॥ जातेंदूरिभयौमैभान ॥ ८५ ॥ जबबहुरैाममशर्णीहआवैं ॥ तबसोज्ञानप्रका
सहींपावैं ॥ तातेंछोडिसकलउपाधी ॥ जोमोबिनकरलीनोव्याधी ॥ ८६ ॥ ताकौंअबहूंपरसैंनाहीं ॥ प
रिमोबिनतजीनहींजाहीं ॥ मोकौंपाइसकलपरिहरैं ॥ मेरेचर्णनिकौंअनुसरैं ॥ ८७ ॥ रविप्रकासमिटैत
मजैसे ॥ ममप्रकासद्वैतभ्रमएसैं ॥ सोपुनिमोकौंनहींविसरावैं ॥ मोहीसेंईमोमांहींसमावैं ॥ ८८ ॥ मोमेहु
तेंनमायाल्यावैं ॥ एसैामायामैंनहींआवैं ॥ तातेंनित्यहींमोमैंरहै ॥ मोमिलिपरमानंदलहैं ॥ ८९ ॥ उद्धव ॥९०॥
इतनोहोअज्ञाना ॥ जो!केवलमैंजानैंनाना ॥ ब्रह्मविनाकछुदूजोनाहीं ॥ जैसैंसापजेवरिमांहीं ॥ ९० ॥ द्वै

तदेहजडमिथ्याजानैं ॥ चैतनएकब्रह्मथीरमानें ॥ अरुयहपंचवरनविस्तार ॥ उरजैंविमसेंवारंवार ॥९१
जाकौंमिथ्यावेदबषानैं ॥ अरुत्यौंहीगुरुसाधूमानैं ॥ अरुअनुभवतेंत्यौंहीदेषैं ॥ जागेंसुपनजगतत्यौंलेषैं
॥ ९२ ॥ एसोजगतसत्यतेंजानैं ॥ पुसापितबानीबेदबषानैं ॥ अंतनश्रुतिवचनविचारैं ॥ उरेंकहेंतेंईउ
रधारैं ॥ ९३ ॥ तातेंकर्मकामबहुकहैं ॥ तेमूरषयाभवमेंबहैं ॥ कर्मविषैंहोतिनकीबुधी ॥ तातेंकदेंनपावें
सुधी ॥ ९४ तातैंतिनकौलगैनज्ञान ॥ मुरुषआपहिजांनेजान ॥ तातैंविषईजीवसमस्त ॥ तिनभ्रमायेंकरे
तेंअस्त ॥ ९५ ॥ तातेंउद्धवएहीज्ञान ॥ ब्रह्मजानीकरिछोडेंआन ॥ मेरोभजननिरंतरकरैं ॥ जाप्रका
सद्वैतपरिहरैं ॥ ९६ ॥ अरुउद्धवजोजोगकहावें ॥ अष्टअंगकोबेदबतावें ॥ सोज्यौंऔरविधित्यौंजा
नौं ॥ भवमोचनकबहूंमतीमानौ ॥ ९७ ॥ जबयाकैतनप्रबलविकार ॥ करीनसकैभक्तिअधिकार ॥
तातैंबहुविधिविस्तरैं ॥ ममविसवासपाईपरिहरें ॥ ९८ ॥ प्रथमाहिंजोगधारणाकरैं ॥ सीतऊष्ण
सोगहींपरिहरैं ॥ एसैंकरितपापनिवारैं ॥ मंत्रमहत्राधादिकटारैं ॥ ९९ ॥ भोजनक्षुधाऔषधी
रोग ॥ यौतनजतनएकहैंजोग ॥ कामादिकमानसविकार ॥ जीतिंममसुमिरणआधार ॥ १००
॥ ममभक्तनकीसेवाकरें ॥ तापरिदंभादिकपरिहरैं ॥ याविधिविघ्नसमस्तनिवारैं ॥ मेरोभजनत्हदैमैंधा
रैं ॥ १ ॥ अरुएकैमूढकेराजा ॥ साधेजोगदेहकैंकाजा ॥ जोयहदेहमिटाईचहीयैं ॥ देहामि
टमेरौपदलहीयैं ॥ २ ॥ मेरोअंसआतमाएह ॥ याकौंदुषदातायहदेह ॥ तादेहहींजोराख्यौंचहैं ॥

तेआपुहींयाभवमेंवहैं ॥ ३ ॥ तनकोरोगजरादीकटारैं ॥ स्वासजीतीकरिमृत्युनिवारैं ॥ अंतमृत्युहो
वेंकलपंत ॥ बहुर्योपावैंदेहअनंत ॥ ४ ॥ तातैंवृथाकरैश्रममूढ ॥ मेरोभजनपावैंगूढ ॥ तातैंमेंरहौंसंतनि
मांही ॥ तिनकौंकबहूंआदरनाहीं ॥ ५ ॥ अरुप्रथमजोजोगहीकरैं ॥ विघनिनिवारीभगतिविस्तरैं ॥ ता
कौंतनज्यौंनिश्चलहोई ॥ तोहुंआदरकरैनकोई ॥ ६ ॥ छोडैंजोगसमाधिसमेत ॥ गहीममचर्णबढावैंहेत
॥ जोगमांहीबढैंअहंकार ॥ तातैंनहींछूटैसंसार ॥ ७ ॥ तातैंसबनजोमोकौंभजैं ॥ ममआधीनव्हैआपत
जैं ॥ ममप्रसादतैंमोकौंपावैं ॥ बहुरौभवदुषमेंनहींआवैं ॥ ८ ॥ जोहोवैंमेरेआधीन ॥ आपामानैंसबबल
हीन ॥ मेंआधीनहोइताजनकैं ॥ जौंआधीनदेहयामनकैं ॥ ९ ॥ केवलजोममसरणहींआवैं ॥ ताहीकी
सबइच्छाजावैं ॥ तातैंविघननआवैंकोई ॥ विघ्नतहांजहांइच्छाहोई ॥११०॥ ममआनंदरहैआनंदीत ॥
सबदेवनकेहोवेंबंदीत ॥ तातैंउद्धवएहीकरनौ ॥ मेरोभजनत्हदैमेंधरनौं ॥ ११ ॥ जगअरुआपब्रह्मम
यजानैं ॥ द्वैतभावकबहूंनहींआनैं ॥ ब्रह्मभावतैंब्रह्महीपावैं ॥ जन्ममरणकेदुषविसरावैं ॥ ११२ ॥ ब्रह्म
भावनहींउपजेजोलौं ॥ जन्ममर्णदुषमिटैनतोलौ ॥ तातैंब्रह्मभावकौंकरैं ॥ दूजौंसकलजतनपरिहरैं ॥
११३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एसोसुनोश्रीकृष्णसौंअतिहींदुष्करज्ञान ॥ पूछ्यौंसुगमउपाइतबउद्धवप
रमसुजान ॥ ११४॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांअ
ष्टाविंशोध्यायः ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ उनतीसैंअध्यायमैंआगेंकोविस्तार ॥ श्रीधरभक्तियोग

पुनिउद्धवप्रतिनिरधार ॥ १ ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुतुमयहज्ञानबषान्यौं ॥ सोतोमैंअतिदुकरजान्यौं ॥ बशनाहींइंद्रियमनजिनकौं ॥ केसेंकाजहोयेप्रभुतिनकौं ॥ १ ॥ जेहेंपरमहं सदृढचित ॥ तिनकौंब्रह्मदृष्टिहेंनित ॥ औरोजेयहज्ञानविचारैं ॥ षैंचीषैंचीयामनकौंधारैं ॥ २ ॥ तिन कौंमनबशहोईनज्यौंज्यौं ॥ महाकलेशलहेंतेंत्यौंत्यौं ॥ तिनकैंमनबशहोईनक्यौंही ॥ श्रमकरिजन्मगमा वेंयोंही ॥ ३ ॥ तवपदपरमानंदसमुद्र ॥ ताकौंभेदनजानेक्षूद्र ॥ करैंजोगयज्ञादिककर्म ॥ तिनतेंकदैंन छुटैंभर्म ॥ ४ ॥ यातेंगर्भबंधेजोकरैं ॥ तातेंजुगजुगजनमैंमरैं ॥ केवलभक्ततुमारेजेतैं ॥ परमानंदलहैंस बतैंतैं ॥ ५ ॥ जबहीतेंतवसर्णहींआवैं ॥ तबहीतेंतवचर्णनिपावैं ॥ तबहितैंपूरणसुषपावैं ॥ मायानिकटन तिनकौंआवैं ॥ ६ ॥तातेंजगतहीसहजामिटावैं ॥ तुमचर्णनिमैंसहजसमावैं ॥ तुमब्रह्मादिकसकलकैनाय क ॥ सबइनकौंप्रभूताकैंदायका ॥ ७ ॥ तिनकैंचर्णागहेंजेदीन ॥ तुमतिनकौंहोवोआधीन ॥ अरूय हकहाअचंभास्वामी ॥ तुमसबकैप्रभुअंतरजामी ॥ ८ ॥ तिनकौंसबतजीसेवेजोई॥करेआपवशतुमको सोई ॥ सीसमुकुटधारीहेंजेतैं ॥ तवपदमुक्तिविचारेतेंतैं ॥ ९ ॥ रामरूपतुमभएमुरारी ॥ तिनकीनैवा नरअधिकारी ॥ वानरसकलसषातुमकरे ॥ सबहीनकैसबहितआचरे ॥ १० ॥ तातेंजोतुवकृतहीवि चारैं ॥ सोक्यौंपलतुमभजननिवारैं ॥ तुमहींनषशिषदेहसंवारी ॥ चेतनशक्तितुमहीपुनिधारी ॥ ११ ॥ सदारहेतुमरेआधार ॥ तुमहींतिनप्रतिपालनहार ॥ तोपरिजीवतुमहीनहिजानैं ॥ करताभरताऔरनिमानै

॥ १२ ॥ तोहुंतुमअवगुणनहींआनौं ॥ बहुविधिजहांतहांरक्षाठानौ ॥ पुनिजबहींतबसएंहीआवैं ॥ तब
तुमसोंचारौंफलपावैं ॥ १३ ॥ परितथापीसोअतिअज्ञान ॥ तुमकोंशोईलेईजोआन ॥ चारपदार्थसे
वकताकैं ॥ तुमरीभक्तिविराजेताकैं ॥ १४ ॥ एकजहांनाहींतुमभजनौ ॥ नरकजानिसोईसोतजनौ ॥
तातेंजोहोवेसर्वज्ञ ॥ तुमारेउपकारनिकौतज्ञ ॥ १५ ॥ अरुविधिसमआयुर्बलपावे ॥ बहुविधिप्रत्युप
कारबतावे ॥ तोहूंतुमहींअनृणनहींहोई ॥ ब्रह्मादिजहांलोजोई ॥ १६ ॥ तोंतुमबाहरसद्गुरुरूप॥
भिंतरचेतनशक्तिअनूप ॥ यौंजीवनिकैंपापनिवारौ ॥ आपहिंदेभवसंकटतारौं ॥ १७ ॥ तातेंभाषेभजना
नंद ॥ सहजामिलौतवछूटैफंद ॥ एपुनिप्रीयउद्धवकेबेन ॥ बोलेकृष्णकृपांकेअयन ॥ १८ ॥ ॥ श्री
भगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ धन्यधन्यउद्धवममभक्त ॥ सबजीवनकेहेतअनुरक्त ॥ तोसोंकहों
आपनौंधर्म ॥ जातेंमिटेसहजसबकर्म ॥ १९ ॥ करतेंसुषआगेंसुषपावैं ॥ छोडोभवभयमोमेंआवें॥
उद्धवकर्मकरेंनरजेते ॥ मेरेहेतकरेसबनेतें ॥ २० ॥ कर्मनिमेंभाषेंममनाम ॥ मेरेकारिराषेधनधाम ॥
मोमेंअरपेमनकीवृत्ति ॥ तातेंसबआचर्णनिवृत्ति ॥ २१ ॥ मेरीप्रीतिकरेंजोकरें ॥ मेरीप्रीतिरहितपरिह
रें ॥ जिनदेसनिमेंरेभक्त ॥ तिनकरीबासहोईअनुरक्त॥२२॥सुरअरुअसुरनानिमेंजेतें ॥ मेरेभक्तभये
हेकेतें ॥ तिनातिनकैंआचर्णनिजानैं ॥ त्यौंहीत्यौंआपुनहींठांनें ॥ २३ ॥ मेरेजन्ममहोच्छवकरैं ॥ परव
णिमेंमिलापविस्तरैं॥मेरीजहांजातराहोई ॥ तहांतहांचलिजावेंसोई॥२४॥गीतनृत्यवाजंत्रकरावैं॥छत्रचमर

आदिकअधिकवैं॥आतिउदारताकरिसबठानैं॥ममहेतलगैंभलौसोजानैं॥२५॥सबभूतनिमेंमोकौंदेषैं॥अं
तरवाहिरएकहीलेषैं॥आपआदीजगमेंमैंजानैं॥त्यौंआकाशअनावृतमानैं॥२६॥ योसबमेंजानैंममभाव॥
त्यागेसकलप्रवृत्तिसुभाव॥ सबहीनिकेसतकारहींकरैं॥ ज्ञानदृष्टिभेदहींपरिहरैं॥ २७॥एकैविप्रवेदअधि
कारी॥ एकेअंतजमहाविकारी॥ एकेविप्रानिकेधनहरता॥ अरुएकैधनकैविस्तरता॥२८॥ एकैतेजही
नबहुदेषैं॥ तेजवंतएकैबहुपेषैं॥ एकेक्रूरसकलदुषदाई॥एकेसातिकसकलसहाई॥२९॥ इत्यादिकनाना
विधिदेषें॥ परिजेभेदकहूंनहिंलेषैं॥ मेरीदृष्टसबनिमेंआनैं॥ ममजनपंडितताहिबषानैं॥ ३०॥ यावि
धिसबमेंमोकौंजानैं॥ देहभेदकछूयेनहिंआनैं॥ थोरेकालमांहिताजनकैं॥ सबविकारामिटजावैंमनकैं॥
३१॥ स्पर्धातिरस्कारअहंकार॥ सकलमिटैकछूलागैनवार॥ तातैंदेहदृष्टिनहिंधरैं॥ लोककुटुंबला
जपरिहरैं॥ ३२॥ हांसीकरेसकलहीलोक॥ परिसोआनैंहरषनसोक॥ तिनकीकछुमनमेंनहिंआनैं
॥ सबजीवनमैंमोकौंजानैं॥ ३३॥ षरषचरचांडालनिअंत॥ जहांलौमेरीसृष्टिअनंत॥ नमसकारति
नतिनकौंकरैं॥ दंडसमानधरनिमैंपरैं॥ ३४॥ जौंलगिथावरजंगममांही॥ मेरोभावहोईथिरनाहीं॥
त्यौंलगिमनवचकायसमेत॥ योंसबमेंठानैंममहेत॥ ३५॥ याविधिकरतरहेनरजोई॥ ताकौंसकलब्रह्म
मयहोई॥ मिटेअविद्याविद्यापावैं॥ तातैंबंधनसकलामिटावैं॥ ३६॥ उद्धवसकलमतैंहेजेतें॥ ममरूप
हिजानैंसबतेतैं॥ उद्धवएसोधर्महैमेरो॥ कथाप्रभावकहोतिनकेरो॥ ३७॥मनक्रमवचनजहांलौंजेते॥

वेदमध्यमैभाषैतेते ॥ तिनमैंयहमतोममसार ॥ जातैंवेगिमिटैंसंसार ॥ ३८ ॥ अणूरूपप्रगटजोहोई ॥
क्यौंहीबहुरिमिटैंनहिसोई ॥ जहांलगीगुणनिर्मितवस्त ॥ तहांलगिसबहोवैंअस्त ॥ ३९ ॥ मैंनिरगुण
सबगुणप्रकासी ॥ तातैंममधर्मंआविनासी ॥ मेरोनासकदैनहींक्यौंही ॥ मेरोधर्मथोरोउत्यौंही ॥ ४० ॥
अरुउद्धवयहकहाकहीजैं॥मेरोधर्मकदैंनहींछीजै॥उद्धवजोलौकिकव्यवहारा॥राजसतामसविविधप्रकारा॥
४१॥जिनतैंकेवलहोईअनर्थ॥प्रवृत्तिहुंकोमीटेनअर्थ ॥ नर्कनिमांहीडारनहार॥कामक्रोधद्वेषादिविकार॥
४२ ॥ जेतोउतैंमोमेंकरे॥तोहूंमोहीलहैंभवतरैं ॥ जैसैंकंसमरणभयकऱ्यौ॥मेरोधर्मनहींआचऱ्यौं ॥४३॥
परिसोभयउकरीमोमांही ॥ ममपदपहुंच्यौंभवमेंनाहीं ॥ अरुगोपीनकिएव्यभिचार ॥ लंघेबेदतजेभरतार
४४ ॥ परिव्यभिचारीमोमैंकऱ्यौं ॥ तोहुंतिनभवसागरतऱ्यौ ॥ अरुजोद्वेषकीयोशिशुपाल ॥ जातैंजीवनि
ग्रासैंकाल ॥ ४५ ॥ परिसोउमोमैंकरिदोष ॥ भवजलतजीकरीपहुंच्योमोष ॥ यौंविषरूपविकारहिंजेतें ॥
मोमैंआएअमृतभएतेतैं ॥ ४६ ॥ तातैंयहविवेकचतुराई ॥ एहैबुधीदूजीनहींकांई ॥ जोजूठेसोसाचहीं
लीजैं ॥ पूरणकाजआपनौंकीजैं ॥ ४७ ॥ यहझूठिक्षिणभंगुरदेह ॥ सकलविकारनिकोग्रेह ॥ ताकरी
पहियैंहरिअविनासी ॥ निरविकारपुणसुषराशी ॥ ४८ ॥ यहसबब्रह्मज्ञानकौसार ॥ जातैंमिटेसहजसं
सार ॥ मैंसंक्षेपमांहीसबकह्यौ ॥ जातैंसारनकहींबैरह्यौं ॥ ४९ ॥ यहनरतनअरुयहममज्ञान ॥ देवनिकौं
दुर्लभहीजान ॥ यद्यपिजीवलहैंनरदेह ॥ तोहूंज्ञाननपावैंएह ॥ ५० ॥ तातैंमैंभाष्योनिजज्ञान ॥ यातैंमोहील

हेतजिआन।।उद्धवम्रणकरीतुमजेती।।उतरसहीतकहींमेंतेती।।५१।।तेसबतत्वबेदकौजानौं।। मेरोपरमरूपक
रिमानौ।।यहतुमरौमेरोसंवाद।। अध्यात्मपरमात्मवाद।।५२।।ताकौंसुनित्द्दढमैंधारैं।।पांवेमोहीआपकौंतारैं।।
जोयहमेरोपूरणज्ञान ।। मेरेभक्तानिदेवेदांत ।। ५३ ।। सोकहीयतुहेमेरोदाता ।। जहांतहांकहीयतविख्याता
।। जोजोदेईलहैसोई ।। लोकबेदभाषतहैदोई ।। ५४ ।। तातेदानदेईजेमेरौ ।। मेंआधीनहोईतिहकेरो
मोहिदेइसोसौंकौंपावैं ।। तिनकौंलेमोमांझिसमावे ।। ५५ ।। जोजनयाकौंनितहींपढें ।। ताजनसोमोसोंहित
बढें ।। सोजनमेरोअतिप्रियहोई ।। ताकेंसमदूजोनहींकोई ।। ५६ ।। जोयहसुनेनितहींकरीसादर ।।औ
रसकलकौंकरैंअनादर ।। सोकर्मनिसौंलिप्तनहोई ।। मेरीभक्तिलहैद्दढसोई ।। ५७ ।। मेयहपरमज्ञानउ
चार्यौ ।। उद्धवतुमकछुत्द्दढैधार्यौ ।। सोकमोहभयभयोनिवर्त ।। निश्चलभयोत्द्दयआवर्त ।। ५८ ।। उ
द्धवयहजोमेरोज्ञान ।। सोमतिजानौमोतेंआन ।। तातेंदंभसहीतजोहोई ।। नास्तिककलहकुवासासोई।।५९
।। प्रीतिनजानैंनहींममभक्ति ।। दुर्विनीतविषयनिआसक्ति ।। तिनकौंज्ञानदनोएह ।। ज्यौंकलरभूमिबीजअ
रुमेह ।। ६० ।। ईनदोषनिकरिहोईविहीन ।। मेरोभक्तिप्रितिद्दढदीन ।। अस्त्रिसूद्रअरुएसोहोई ।। तिन
हीसोंअंतरनहींकोई ।। ६१ ।। एसीविधिसुज्ञानहिकहीयैं ।। तोतिनसहीतपरमपदलहीयैं ।। जोयहमेरोजा
नेंज्ञान ।। ताहिजानवेरहीतआन ।। ६२ ।। ज्यौंकोईपीवेपीयूष ।। ताकेदूजोरहेनभूष ।। ज्ञानअरुकर्मजोग
अष्टांग ।। कृषिवाणिज्यनीतिसबअंग ।। ६३ ।। धर्मअर्थमोक्षअरुकाम ।। इनसबहीनकोंमोमेंधाम ।।

तातैंआवेमोमेजोई ॥ इनसबईनकौंपावेसोई ॥ ६४ ॥ परिमेरोजनकछूनलेवे ॥ सकलत्यागकरीमो
कौंसेवें ॥ तातेंसाधअरुसाधनजेतें ॥ ममजनदेषेमोमेंतेतें ॥ ६५ ॥ सबतजीजबचर्णममसेवैं ॥ आपानी
वेदेकछुनहिलेवैं ॥ ताकेंसमदूजोप्रियनाहीं ॥ सोनितमोमेंमेतोमांहीं ॥ ६६ ॥ जबसुनिएसैंहरिजीकेबेन॥
उद्धवअश्रुकुलाकुलनैंन ॥ आगैंठाढौअंजुलिबंध ॥ प्रेममगनतनमनदृढबंध ॥ ६७ ॥ बेनहुतेंबोल्यौनहिं
जावें ॥ कंठहुतेंगदगदसुरआवें ॥ तातैंउद्धवचुपकरीरहैं ॥ कछुवेरकछुवैननकहैं ॥ ६८ ॥ बहुर्यौचित
थंभकरिधीरज ॥ पूरणप्रेमभयौअबकीरज ॥ निश्चलआपुकृतार्थमांन्यौं ॥ सबसंदेहदूदैतैंभान्यौ ॥ ६९
॥ हरिकेचरणनिमाथेधार्यो ॥ उद्धवभक्तवचनउचार्यौ ॥ जिनतेंहरिसोंबाढेप्रेम ॥ जिनसौंकहीसुनिउप
जैंक्षेम ॥ ७० ॥ ॥ उद्धवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नाथअजन्माअरुअविनासी ॥ परमानं
दपरमप्रकासी ॥ तिनकेसन्निधानजबआयौ ॥ तबहींसबअज्ञानमिटायौ ॥ ७१ ॥ सन्निधानपाककेजावे
॥ सहजैंतमभएसीतगमावैं ॥ अरुतापरतुमपरमदयालू ॥ मोनिजधनपरिभयेकृपालु ॥ ७२ ॥ यहविज्ञान
दीपमोहिंदीनौ ॥ जातेंसकलशुभकीनो ॥ तुमरैंचरणसरणभुवमांहीं ॥ दूजोठौरकदेसुषनाहीं ॥ ७३ ॥
जोकोईतुमकृतकौंजानैं ॥ अरुतोपरिभवकौंदुषमानैं ॥ जोतुमचर्णसर्णनहींआवैं ॥ तोदूजैंकहांतेंसुषपावें
॥ ७४ ॥ प्रभूजोतुमअतिकरुणाकरी ॥ ममभायाफांसीपारिहरी ॥ सकलजादवनिमैअस्नेह ॥ अरुजुव
तिसुतावितयहदेहा ॥ ७५ ॥ एसबमेरेमनतेंटरैं ॥ अपनेचर्णकमलचितधरैं ॥ तुमविस्तारिआपनीमाया

॥ जिनयहसकलजगतभरमाया ॥ ७६ ॥ सौतुमज्ञानषडगसौंछेदी ॥ होईकृपालनिजप्रीतिनिवेदी ॥ न
मोनमस्तेज्ञानप्रकासी ॥ जोगेस्वरईस्वरअविनासी ॥ ७७ ॥ दीजैमोहीएकवरदेवा ॥ निश्चलरहृदयतुमा
रीसेवा ॥ तुमहिछोडिदूजोनहींजानौं ॥ परिसेवकव्हैसेवाठानौं ॥ ७८ ॥ मोहिप्रसाददीजियेएह ॥ तुम
सौंनिश्चलबढेसनेह ॥ करीविनंतीउद्धवभक्त ॥ बोलैहरिजीव्हैअनुरक्त ॥ ७९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवा
च ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तथाअस्तुउद्धवममभक्त ॥ ममचर्णनिनिश्चलआसक्त ॥ अबतुमउद्धव
एसीकरौ ॥ लोकनिकौशिक्षाविस्तरौं ॥ ८० ॥ बदरिषंडआश्रमहैमेरौ ॥ अतिपुनीतदरसनतिहकेरौ
॥ तहांतीर्थममचर्णनिकौंजल ॥ दरसंपरअस्नानहरैमल ॥ ८१ ॥ नामअलकनंदासोगंगा ॥ निरमल
करैंदरससबअंगा ॥ तहांजाइतुमवासाकरौ ॥ फलभछनतरुबलकलधरौ ॥ ८२ ॥ दुंदुसीतउष्णादिक
सहौ ॥ विनयादिकसुभलक्षणगहौ ॥ इंद्रियनिकेअर्थनिपरिहरौं ॥ यहविज्ञानज्ञानउरधरौं ॥ ८३ ॥ मो
तेंसीष्यौज्ञानतुमजोई ॥ बैठेएकांतविचारोसोई ॥ बचनचितसबमोमेंधर्यौ ॥ मेरोधर्मसदाविस्तरौ ॥ ८४
॥ तवगुणतीनोकोपरिहरींहौं ॥ ममनिरगुणपदकौंअनुसरीहौ ॥ यहउद्धवप्रतिज्ञाहैमेरी ॥ फिरिउत्पत्तीनव्है
हैतेरी ॥ ८५ ॥याविधिकृष्णवचनउचारैं ॥ तेउद्धवलेमस्तकधारैं ॥ चर्णनिपरप्रदक्षिणादीनि ॥ तवच
लवेकीइच्छाकीनी ॥ ८६ ॥ जद्यपिदुंदुरहृदैनहींआवैं ॥ तोहूंहरिजतिजेनजावैं ॥ अश्रूकंठआतिआतुरबु
धी ॥ तनमनभयौनतनकीसुधी ॥ ८७ ॥ कृष्णवियोगानिअयौंकारिसहैं ॥ बारबारचलिफिरिफिरिरहैं ॥

तबअंतरजामीगोपाल ॥ जनकौंजानैंप्रेमविहाल ॥८८॥ निकटबुलाईंमिलेदेअंग ॥ ज्ञानरूपकीनोसर्वंग
तबअपनीपावरीदीनी ॥ तेउद्धवजनमाथैंलीनी ॥ ८९ ॥ तोहूंप्रथमहिकृष्णपधारैं ॥ जादवलेप्रभाससंहारैं
तबहीतहांउद्धचलीआए ॥ कृष्णएकहीबैठेपाये ॥ ९० ॥ पुनिमैत्रेयपधारेतहां ॥ कृष्णदेवबैठेहैंजहां ॥
दहुंकीयोहरिकौंपरनाम ॥ दरसनपायौंअतिअभिराम ॥ ९१ ॥ ठाढेभएजोरिकरदोई ॥ प्रेममगनक
छूकहैनकोई ॥ तबतिनकौंहरिभाष्योज्ञान ॥ जैसैंअंधकारकौंभान ॥ ९२ ॥ मैत्रेयकौंदीनौंआदेस ॥
विदुरहीकहीयोउपदेस ॥ आग्यादीतोउद्धवजनकौं ॥ अपनिशक्तिकियोथिरमनकौं ॥९३॥ तबउद्धवह
रिचर्णनिपरै ॥ हरित्दृदयनिश्चलकारिधरैं ॥ पुनिउद्धवजनपहुंचेतहां ॥ नरनारायणप्रगटैंजहां ॥ ९४ ॥
तहाजाईकीनोआचर्ण ॥ जेजेहरिभाषेतेकर्ण ॥ बलकलअंबरफलआहार ॥ प्रेममगननितब्रह्मविचार ॥
९५॥तबत्रिगुणविस्तारमिटायौ॥उद्धवब्रह्मनिरंजनपायौ॥यहहरिउद्धवकोसंवाद॥हरिजीकोहैपरमप्रसाद ॥
९६ ॥ जाकैंकृपाकरैंसोपावैं ॥ तजिभवसिंधुब्रह्ममैंजावैं ॥ तबतैंयाकौंभाषैंसुनैं ॥ प्रेमसहितत्दृदेमैंगुनैं॥
९७ ॥ तबतैंपावेपरमानंद ॥ श्रमहीविनामिटैंदुषद्वंद्व ॥ यहस्वयमेवआपहरिकह्यौ ॥ जामैंकछूसंदेहनरह्यौ
९८ ॥ यामैंएसोकृष्णप्रभाव ॥ मिटैंजगतउपजेहरिभाव॥ जिनहरिप्रगटअमृतदैंकरैं ॥ भक्तिनिपाईसक
लदुषहरैं ॥ ९९ ॥ एकजलधितैंअमृतउपायौ ॥ निजाधीनदेवनिकौंपायौं ॥ जरारोगआदिकदुषहरैं ॥
बलउपजाईविगतभयकरैं ॥ १०० ॥ अरुदूजोयहअमृतएक ॥ वेदसिंधुतैंब्रह्मविवेक ॥ सोअपनेजनन

कौंपायौं ॥ जनममरणभवयहिमिटायौ ॥ १ ॥ ऐसैंआदिपुरुषअविनासी ॥ सुनतमिटैजिनहिभवफासी ॥ कृष्णरामलीनौअवतार ॥ तिनकौंवंदनवारंवार ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ऐसैंसुनिशुकदेवसौंपरमतत्व उपदेश ॥ कृष्णकथाकेप्रेमसौंकीनीप्रष्णनरेस ॥ १०३ ॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधे श्रीभगवानुद्धवसंवादेभाषाटीकायांउद्धवमुक्तिनिरूपणंनामैकोनात्रिंशोध्यायः ॥ २९ ॥ ॥इतिभगवतउद्धवसंवादसंपूर्णः ॥ ॥सकलचौपाईदोहाः ॥ ॥दोहा ॥ ॥ इच्छाहैनिजधामकीमौशलछलकौंवार ॥ कहततसिवैंध्यायमैंयदुकुलकोसंहार ॥ १ ॥प्रथमसुणीसंक्षेपजोअबपूछोविस्तार ॥ श्रीधरकथावसानमैंनृपप्रतीश्रीशुकसार ॥ २ ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेप्रभुहरिकीकथासुनावौ ॥ कर्णपुटीनअमृतयहपावौ ॥ हरिउपदेशउद्धवयहदीनौ ॥ पीछैंआपकहातिनकीनौं ॥१॥जादवकुलकौंप्रगट्यौं श्राप ॥ हरिजीकहाकन्यौतवआप ॥ ईश्वरकौंबाधानहींकोई ॥ अरुद्विजश्रापनमिथ्याहोई ॥ २ ॥ सवकेतनमनमोहनदेह ॥ परमानंदसुधाकोगेह ॥ जोनारीहरिदरसनपावैं ॥ तिनसौनैंननषैंचैंजावैं ॥ ३ ॥ अरुजेहरिकेरूपाहिंगावैं ॥ वानीशहितमानतैंपावैं ॥ अरुजेसुनिकरित्दृदयेंधरैं ॥ तेपलकोनहींछोडेपरैं ॥ ४ ॥ भारतमेंअर्जुनरथमांहीं ॥ बैठेंदरसनलहेंजाजाहीं ॥ तिनातिहरिकीसमतापाई ॥ सबसंसृतितत कालगमाई ॥ ५ ॥ ऐसोतनहरित्याग्यौंकैसें ॥ कोईहरैंनागमणिजैसैं ॥ अैसैंवचनकहैंनरदेव ॥ उत्तरदीनौश्रीसुकदेव ॥ ६ ॥ ॥ श्रीशुकदेवउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ द्वारावतिउठैंउतपात ॥

तिनकौंदेषकहीहरिवात ॥ उग्रसेनआदिकसबलोक ॥ सभासुधर्माहरषनसोक ॥ ७ ॥ तिनसौंकृष्ण
वचनउचारैं ॥ हरिकौममंनलषैंविचारैं ॥ निजमायासौंमोहितकरैं ॥ ज्ञानविवेकसबनिकेहरैं ॥ ८ ॥
॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ हेजादवैंसुनोममवात ॥ द्वारावतीबहुतउतपात ॥ एउ
तपातैंमृत्युनिसांना ॥ तातैंत्याजियेयहअस्थांना ॥९॥ जुवतीबालवृधसबजेतें ॥ संषोद्धारपैठएतेतैं ॥औ
रोसकलप्रभासहींजेयें ॥ तहांपश्चिमसरस्वतीअन्हैयैं ॥ १० ॥ करीस्नानतननिरमलकरीयें ॥ सुध
रहृदयतीरथवृतधरीयैं ॥ जेजेबहुतपितृअरुदेवा ॥ तिनकीकरियेपूजासेवा ॥ ११ ॥ अरुवि
प्रनकीपुजाकीजैं ॥ करीसनमानदानबहुदीजैं ॥ गाईभूमिसोनोवस्त्रादी ॥ हयहाथीरथअन्नगृहा
दी ॥ १२ ॥ आसिरवादाद्विजनकीलीजैं ॥ जातेंविघ्नसकलहूंछीजैं ॥ देवअरुविप्रगाइकीपूजा ॥ पाप
हरणविधिधर्मनदूजा ॥ १३ ॥ ऐसीसुनीहरिजीकीबानी ॥ सबजादवनिभलीकरिमांनी ॥ नांवनिबैठि
सिंधुतैंउतरैं ॥ चढ़ीकरिरथनिप्रयाणौकरैं ॥ १४ ॥ ज्यौंहरितिनकौंआग्यादीनि ॥ त्यौंत्यौंसवनिसवैंवि
धिकीनी ॥ करिअस्नानधर्मबहुठानैं ॥ मध्यप्रभासआपबहुमांनैं ॥ १५ ॥ तबतिनकीयौंमदिरापान ॥
जातेंभूलिगएसबज्ञान ॥ तबतेमत्तसकलईभए ॥ हरिमायाविवेकहरिलयें ॥१६॥ तिनमैंकलहभयौउत
पन्न ॥ सबमेंप्रेरकहरिप्रछन्न ॥ तवतिनकीतांसभामझारी ॥ सात्यकीवीरागिराउचारी ॥ १७ ॥ कृतब्र
ह्माकौंकरीअपमान ॥ सातिकछोडेबाणीवांन ॥ भाईजोछत्रीतनधारी ॥ अरुबहुमेंकहीयैंअधिकारी ॥

१८ ॥ सोऐसीकौंकरैं ॥ सोवतबालनिकैसिरहरैं ॥ यहप्रद्युम्नवचनसतकाऱ्यौ ॥ कृतब्रह्मांकौअंतधी
काऱ्यौ ॥ १९ ॥ तबकृतवर्मांकीनौक्रुध ॥ बाणिबाणप्रकास्यौजुध ॥ अरेकरेछत्रीकोऐसी ॥ व्याधक्रू
रतुंकीनीजैसी ॥ २० ॥ भूरिश्रवानिरायुधभयौ ॥ जाकौंबाहुजुगलकटीगयौ ॥ ताकैंबधतेकीनौऐसैं ॥
व्याधकसाईकरैंनहींजैसैं ॥ २१ ॥ तबसातिकउठीबोलेबानी ॥सुनोसुनोहेसारंगपांनी ॥ इनकौंजसअरु
आपसरायौ ॥ तातिंएसौमतोन्हैंआयौ ॥ २२ ॥ एकहींवचनषडगतिनकाढ्यौ ॥ कृतवर्मांकौमस्तकबा
ढ्यौ ॥ जद्यपिसबमिलिबहुतनिवाऱ्यौ ॥ तोहूंसातिकक्रोधनटाऱ्यौ ॥ २३ ॥ तातैंसकलभएतेक्रुध ॥ सा
तिकहींसोंठान्योयुध ॥ तातैंसकलभएद्वैऔर ॥ जुधरच्यौसायरतटघोर ॥ २४ ॥ कोईधनुषबानसौंल
रैं ॥ केईषडगगहेसहरैं ॥ केईफरसीगदाकुठार ॥ केईलेहसिहाथप्रहार ॥ २५ ॥ केईगुरजगोफना
कोई ॥ वृक्षादिकनिलरैंतेतेई ॥ हरषितसबैंकरैंसंग्राम ॥ बैठेंदेषैंकृष्णअरुराम ॥२६॥ हयसौंहयहाथी
सोहाथी॥रथसोंरथसाथीसोंसाथी ॥ परसौंपरउठेउटनिसौं ॥ महिषरुमहीषबैलबैलनिसौं ॥२७॥ षचर
सौंषचरमिलिलरैं ॥ नरसौंनरमिलिजुद्धहींकरै ॥ महामतकछूलषैनऐसैं ॥ जुधकरैंबनमैंगजजैसैं ॥२८
॥ सांवप्रद्युम्नठान्योजुध ॥ त्यौंअक्रूरभोजअतिक्रुध ॥ तहांसंग्रामजीतअरुसुभद्र ॥ करैंजुधवीरनकौंभ
द्र ॥ २९ ॥ गदसेनामकृष्णकोभ्राता ॥ नामसुचारुपुत्रविष्याता ॥ त्यौंसातिकसौंमिलिअनिरुध ॥सुरथ
सुमित्रकरैंमिलिजूध ॥ ३० ॥ उल्मुकनिसठसहस्रसतजीत ॥ भानुआदीजोधाअपरिमीत ॥ आपुत्रा

पुमैंजुधहींठानैं॥हरीकरीमोहीकछुनहीजानैं॥३१॥वृष्णिवंसदासारहवंस॥सातवअंधकभोजवतंस ॥अरुबु
दसूरसेनअरुमाथुर॥देशविसर्जनकौतिरकुरकुर॥३२॥आपुआपुमिलिजुधहिठान्यौं॥सबनिपरस्परसुल्ह
दभांन्यौं ॥ पुत्रापिताभाईअरुभाई ॥ मामाअरुभानेंजलराई॥३३॥ककाभतीजेनातीनाना ॥ मित्रमित्रामि
लिजुधहीठाना॥सुल्हदसुल्हदज्ञातिनसौंज्ञाती॥सबमिलिभएपरसपरघाती॥३४॥तबसरक्षीणभएसबतिनकैं
॥टूटैधनूषतथाजिनजिनकैं॥आयुधसकलक्षीणजबभए॥तबतिनकरनिएरकालए॥३५॥भएमूसलचूरणते
जेतैं ॥ वज्रसमानासिंभूतटतैतैं ॥ तेतेसकलकरनिकरलीनैं ॥ हरिसौंजुधक्रोधहिंकीनैं ॥ ३६ ॥ रामकृ
ष्णबहूभांतिनिवारैं ॥ परतेंमूर्खकछूनविचारैं ॥ रामकृष्णकौंरिपुकरीजानैं ॥ युधबुधिअंतरगतिआनैं ॥
३७ ॥तबआपहूंकीयोतिनकोप ॥ कर्यौचहैंसबहींनकोलोप ॥ तबएरकाकरनिकरलीए ॥ थोरेमांहिप्र
लयसबकीए ॥ ३८ ॥ विप्रश्रापआच्छादितकरैं ॥ हरिमायाविचारसबहरैं ॥ पावकक्रोधप्रगटतहांभ
यौ ॥ बंसत्रिपनिकुलजरिमरिगयौ ॥ ३९ ॥ तबकुलसकलनष्टहरिदेष्यौ ॥ भूकोभारउतार्‍योलषौ॥ जा
कारणलीनौअवतार ॥ सोपरिहर्‍योधरणिकोभार ॥ ४० ॥ तबसमूद्रतटमैंबलिभद्र ॥ कीनोब्रह्मध्यानअ
तिभद्र ॥ आपुहींब्रह्ममाहींलेराष्यौ ॥ मानवदेहदूरिकरिनाष्यौ ॥ ४१ ॥ रामप्रयाणलष्यौहरिजबहीं ॥
लघूपीपलतलिबेठेंतबहीं ॥ निरमलरूपचतुरभुजधार्‍यौ ॥ दशहुंदिशिकोतिमरननिवार्‍यौ ॥ ४२ ॥ ज्यौं
विनुधूमपावकप्रकासा ॥ ऐसोप्रगटभयोउजासा ॥ पीतवस्त्रनौतनघनस्याम ॥ तप्तसुवर्णसोभाअभिराम॥

४३ ॥ सुंदरहाससहितमुखपद्म ॥ कमलनयनसोभाकेसद्म ॥ कर्णनिकुंडलमकराकार ॥ सीस मुकुटसोभाअधिकार ॥ ४४ ॥ रुचिरनीलशिरकेशविसाल ॥ उरभृगुलतामणिवनमाल ॥ कंठकौस्तु भकटिसूत्रविराजै ॥ क्षुद्रघंटिकानूपुरराजै ॥ ४५ ॥ बहूआभूषणभूषितअंग ॥ देषतमोहैंअमितअनंग ॥ आयुधमूरतिवंतसमस्त ॥ सुमरीजिनहीहोईभयअस्त ॥ ४६ ॥ उत्तमचर्णकमलआरक्त ॥ जिनकौंउर ध्यावैंनितभक्त ॥ दक्षिणजंघानीचैंकऱ्यौं ॥ वामचर्णताउपरधऱ्यौं ॥ ४७ ॥ यौंनिश्चलव्हैबैठेकृष्ण ॥ सुमिरतजि नहींमिटेभवतृष्ण ॥ अतिलघुमूशलषंडजोरत्यौं ॥ जलमेडाऱ्यौमछहिगत्यौं ॥ ४८ ॥ सोवहमछजालमैं आयौ ॥ ताकैउदरलोहसोपायौ ॥ जराव्याधभलकासोकीनौ ॥ लेकरीशरकेआगेदीनौं ॥ ४९ ॥सो वहव्याधहूतोवनमाहीं॥हरिकौपदतिनजान्योनाहीं॥हरिकौचर्णदृष्टजबपऱ्यौ ॥ मृगमुषजानिघाततिनकऱ्यौ॥ ५०॥सोईबाणलगायोचर्ण ॥ विप्रवचननहींमिथ्याकरण॥सोवहबधिकनिकटचलीआयौ॥रूपचतुरभुजद रसनपायौ ॥५१॥ चरणालग्योतबदेष्योबान॥जराभयोतबमृतकसमान॥चर्णनिपरिबोलैंभयभीत॥कंपतअं गलग्योंज्योंसीत॥५२॥ हेप्रभूमैंकीनोंअपराध॥तुमहींनजान्योमूरषव्याध॥यहमैंकीयौसकलअयानैं ॥ बान चलायोमृगमुषजानैं ॥ ५३ ॥ यहअपराधतुमहिंप्रभुटारौ ॥ जैंतुमनामलियेतैंतारौ ॥ तुमसुमिरणासबपा पाविनासैं ॥ मिटैंअज्ञानज्ञानप्रकासैं ॥५४॥ ब्रह्माआदिकरैंआराध॥तिनकोमैंकीनोंअपराध॥तातैंप्रभुजी विलंबनकऱ्यौ ॥ मोपापीकेप्राणनिहरौ ॥ ५५ ॥ जातैंबहुरौंकरौंनऐसो ॥ यहअपराधकऱ्यौमैंजै

सौ ॥ जिनकीमायाकौविस्तार ॥ ब्रह्माशिवसनकादीकुमार ॥५६॥ औरौश्रुतिदृष्टांतहैजेतैं ॥ क्यौंहिजा
नीसकैनहींतेतैं ॥ मोहीतसकलतुमारीमाया ॥ तातैंतिनहुंपारनपाया ॥ ५७ ॥ तिनकौपापजोनीहमजेतैं ॥
कोनभांतिकरिजानैंतेतैं ॥ तातैंअबदूजानाविचार्‌यौ ॥ वेगिमोपापनिकौमारौ ॥५८॥ ऐसीजराबधिककी
बानि ॥ सुनीनिहकपटसारंगपानी ॥ तबप्रभूआपवचनउचार्‌यौं ॥ ताकौंसकलसोकभयटार्‌यौं ॥ ५९
॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उठउठजराभयमतीआनैं ॥ अपनेंकर्‌यौंपापमतिजा
नैं ॥ यहसमस्तलीलाहैमेरी ॥ यामैंकहाशक्तिहैतेरी ॥ ६० ॥ मेरीकृपाजाईतुंस्वर्ग ॥ जहांमहासुषन
हीउपवर्ग ॥ ऐसैवचनकैहेहरिजबहीं ॥ ढर्‌यौविमानस्वर्गतैंतबहीं ॥ ६१ ॥ तीनपरीक्रमाअरुपरनाम ॥
करिकैबधिकगयौसुरधाम ॥ चढविमानस्वरलोकहिंगयौ ॥ जयजयशब्दजहांतहांभयौ ॥ ६२ ॥ तबर
थलीयेसारथीदेषैं ॥ परिहरिजीकौंकहुंनपेषैं ॥ तुलसीगंधपवनजबपायौ ॥ ताकेषोजकृष्णपैंआयौ ॥ ६३
॥ पींपलमूलकीयेंहेआसन ॥ प्रभामानौंशशिसूरहुताशन ॥ आयुधआगेंमूरतिवंत ॥ यौंदेषेनिजपतिभग
वंत ॥ ६४ ॥ तबदारुकधीरसनहिंकर्‌यौ ॥ रथतजीविहवलचर्णनिपर्‌यौ ॥ उमग्यौत्हृदयनैनजलछायौ
प्रेममगनमुषबैननआयौ ॥ ६५ ॥ तबकरिधीरजअसुनिवारैं ॥ करुणासहितवचनउचारैं ॥ हेप्रभुमेंतुम
चर्णनिनदेषैं ॥ तेपलपलककलपकरिलेषैं ॥ ६६ ॥ जबतेंनष्टदृष्टमेंभयौ ॥ सबदुषएकवारअनुभयौ॥ भू
लिदिशानकहुंसुषपायौ ॥ ज्यौंउडुपतिनिसामाहिछिपायौ ॥ ६७ ॥ तुमबिनमेंज्यौंतनाबिनप्रान ॥ जैसैंनैन

अंधविनभान ॥ एसेंवचनकहताहिसूत ॥ देष्योएकचरितअदभूत ॥ ६८ ॥ गगनहुतेंउत्तमरथआयौ
हयनिसहितअरुगरुडसुहायौ ॥ मुरतीवंतहरिआयुधजेतें ॥ रथमेंजाइचढेसबंतेतें ॥ ६९ ॥ यहचरीत्र
दारुकजबदेष्यौ ॥ विस्मयभयौअंचभालेष्यौ ॥ तबहरिसूतहिबचनसुनाए ॥ करिसनमानदुषविसराए ॥
७० ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ सूतद्वारकाकौतुमजावौ ॥ समाचारसबजाईसुना
वौं ॥ सबकौंमरणरामनिर्याण ॥ अरुमैंहूंअबकरतप्रयान ॥ ७१ ॥ द्वारामतीरहामतिकोई ॥ तनकौं
धारैंजहांलौंजाई ॥ यहनरलोकतजौंमेंजबहीं ॥ सिंधूद्वारिकाबोरैंतबहीं ॥ ७२ ॥ हमारेंमातपितादिकजे
ई ॥ लेअपनैंलोकनिंतैंतेई ॥ दिलीजईयौअर्जुनसंगा ॥ रहेंद्वारिकाऽहेहौंभंगा ॥ ७३ ॥ तिनकौंयहसं
देशसुनावौं ॥ अरुतुममममधर्मनिमनलावौं ॥ मममायारचनायहजांनौं ॥ नामरूपयहमिथ्यामानो ॥ ७४
॥ क्षिणभंगुरसबनानारूप ॥ निश्चलजानौंमोहिअनूप ॥ जहांतहांव्यापकमोकौंजानौं ॥ नामरूपसबमाया
मानौं ॥ ७५ ॥ मेरेंचर्णनिरंतरभजौ ॥ दूजीसकलवासनातजौ ॥ अैसैंव्हेआवोमोमांही ॥ जातेफिरि
दुपपावौनाही ॥७६॥ यहसुनिसूतकृष्णसोज्ञान ॥ छोड्यौसोकमोहभयआन ॥ नमस्कारकरिवारंवार
॥ प्रदक्षिणादेईविविधप्रकार ॥ ७७ ॥ हरिबिजोगतेंअतिदुषपायौ ॥ ज्ञानविचारचितठहरायौ ॥
॥ हरिकेचर्णकमलचितधारैं ॥ तवदारुकद्वारिकापधारैं ॥ ७८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
॥ यहनृपमैंतोसौंकह्यौंजदुकुलकौसंहार ॥ अबभाषौंहरिकौंगवनअरुहरिजनउद्धार ॥ ७९ ॥

॥ ॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादस्कंधेश्रीशुकपरिक्षितसंवादेभाषाटीकायांबलदेवनिर्याणोनामात्रिंशो ध्यायः ॥३०॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णगधारेधामकौंएकतीसवैंध्याय ॥ तिनकेपीछेप्रीतितैंवसुदेवा दिकजाय ॥१॥ हरिभक्तकेहेतकोलीलाविग्रहरूप ॥ श्रीधरभजैंसुभावतैंतजैंअंधभवकूप ॥ २ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥चौपाई ॥ तबब्रह्मासनकादिनुलीयैं ॥ भृग्वादिकनितथासंगकीयैं ॥ सहीतभवानी शंकरदेव ॥ इंद्रादिकअरूसुरउपदेव ॥ १ ॥ विद्याधरकिन्नरगंधर्व ॥ पितरमहोरगचारणसर्व ॥ गरूड लोकपंक्षीअरूसिद्ध ॥ हरिकैदरसकामनाबिध ॥ २ ॥ सबमिलिहरिदरसनकौंआए ॥ सबमिलिहरि केदरसनपाए ॥ हरिकैंजनमकरमगुणगावैं ॥ सबमिलिजयजयशब्दसुनावैं॥३॥सकलविमानानिछायौंग गन ॥ वरषेपुष्पप्रेमकरिमगन ॥ वारंवारकरैंपरनाम ॥ मुषतेंभाषैंहरिकोनाम ॥ ब्रह्मादिकसबकृष्णविभ ती ॥ कृष्णहीकरीतिनकीउदभूति ॥ तेसमस्तदेषैंभगवान ॥ नैनमुदीतबठान्योंध्यान ॥ ५ ब्रह्मआपएक करीध्यायौ ॥ द्वैतभावसबदूरिबहायो॥ निजतनलोकानिकोंआभिराम॥ध्यानधारणामंगलधाम॥६॥ताकौं अग्निधारणाकरी ॥ अग्निउपायभस्मसोकरी ॥ तबहरिजीवैकुंटेसिधारे ॥ याविधिसबकैकारजसारे ॥ ७ ॥ तबदुंदुभिवाजैसुरलोक॥उपज्जौंहरषमिटेभयशोक ॥ सत्यअरूकीर्तिधीरजधर्म ॥ सोभाअरूजेउ तमकर्म ॥ ८ ॥ तेसबगणसंजगदीस ॥ जातेंहरिसबहीनकेईस ॥ तातेंजहांकथाहरिजीकी ॥ पूजाध्यान धारणानिकी ॥ ९ ॥ तहांसमस्तरहैतेईतैं ॥ इत्यादिकसबविधिजेईतैं ॥ ब्रह्माआदिसकलसुरजेतैं ॥ ह

रिकीगतिनजांनैंतैं ॥ १० ॥ हरिवैकुंठप्रयाणोकर्‍यौ ॥ सोकिनहुंकौंजाननपर्‍यौ ॥ कहुंनहीतिनहरिकों
दष्यौं ॥ बडौअचंभासबहींनलेष्यौं ॥ ११ ॥ जैसैंमेघहुंहोआकाश ॥अरुदामनीगगटघनपास ॥ ते
करीप्रगटगुपतव्हैंजावैं ॥ ताकौंषोजनकोइपावें ॥ १२ ॥ त्योंहरिकीयोप्रयाणौजबही ॥ काहुतिनहीनदे
ष्योंतबही ॥ भुमेप्रगटहुतेंतबदेषें ॥ गुतभएकीनहुनहीपेषें ॥ १३ ॥ हेनृपयहअचंभानाहीं ॥ शक्तिअ
नंतसदाहरिमांही ॥ जदुकुलमैंहरिकौअवतार ॥ अरुकरीवौनानाव्यवहार ॥१४॥ सोसमस्तमायाकरी
जानौं ॥ हरिकीशक्तिहोतसबमानौं ॥ हरिजीसदाएकरसरहैं ॥ कर्मनकरैंजनमनहींगहैं ॥१५ ॥ औ
रैंकरमकरतसबजानैं ॥ जनमलीयोहरिजीकौंमानैं ॥ एसबदेहनिकैंव्यवहार ॥ हरिजीइनसबहीनकेपार
॥ १६ ॥ जैसैंनटबाजीविस्तारें ॥ बहुर्‍यौंआपहिसकलनिवार्‍यौ ॥ बाजिगरसकलतेंन्यारा ॥ यौंहरि
कैकर्मअरुअवतार ॥ १७॥ जिनहरिरच्यौत्रिगुणसंसारा ॥ नानांभांतिप्रगटआकारा ॥आपप्रवेशकी
यौतिनतिनमैं ॥ सबबरताईबिनासेछिनमैं ॥ १८ ॥अंतआपकैंआपहींरहैं ॥ सौंहीइनअवतारनिगहैं ॥
गुरुकेमृतकपुत्रजिनिआन्यौं ॥ कालमृत्युकौंगर्वहीभान्यौं ॥ १९ ॥ ब्रह्मशस्त्रनैंतुमहींबचायौ॥ बधीकहीं
स्वर्गसंदेहपठायौ ॥ तेजौआपनीरक्षाकरते ॥ तोतिनकौंकाहेपरिहरतें ॥ २० ॥ सबजगकौउतपतीप्रति
पाल ॥ नासकरैंजिनिकैबलकाल ॥ एसैंसकलशक्तिमयदेवा ॥ ब्रह्माआदिकरैजासेवा ॥ २१ ॥ह
रिवेकौंभरनीकौभार ॥ धन्योंहुतौंमानुपअवतार ॥ तासूंभूकौंभारउतार्‍यौं ॥ पीछैंरहेंहूरिकारिआर्‍यौ ॥

२२ ॥ ज्योंकांटोलागेपगमांही ॥ सोकांटाबिननिकसेनाहीं ॥ कांटेकांटोकाढ्यौजबहीं ॥ वहऊडारिदी
नोंपुनितबहीं ॥ २३ ॥ त्योंहारिमृतकदेहक्योंराषे ॥ निजानंदपदसौंक्यौंनाषें ॥ अरुएकहींअतिहिअ
ज्ञान ॥ तिनकौप्रगटदिषायौंज्ञान ॥ २४ ॥ जोगसाधनकरिराषेदेह ॥ पुरुषार्थकरिमानैंएह॥
सकलविकारनिकोआगार ॥ ताकौंराषितजैंसुषसार ॥ २५ ॥ तातैंतिनकोमोहमिटायौ ॥ दे
हतजेतैंब्रह्मबतायौ ॥ ऐसैतनकौंकीयोअनादर ॥ तातैंकोईकरैंनहींआदर ॥ २६ ॥ तातैंहरिवैकुंठपधारैं
॥ बाजीज्यौंदेहादिनिवारैं ॥ ब्रह्मारुद्रइंद्रादिकजेतें ॥ देषिप्रयाणौंहारिकोंतेतैं ॥२७॥ विस्मयभएकृष्णगु
णगावैं ॥ अपनेअपनेलोकनिजावैं ॥ जोहरिचरितपढैंउठिप्रात ॥ कृष्णदेवकीनिरमलबात ॥ २८ ॥ सो
दृढभक्तिकृष्णकीपावैं ॥ जातैंकृष्णलोकमैंजावैं ॥ हरिदारुकद्वारकांपठायौ ॥ सोवसुदेवनृपतिपैंआयौ ॥
२९ ॥ कृष्णवियोगविकलअतिचित ॥ जैसैंकृपणगएतैंवित ॥ तिनदूनोकैचर्णनिपरैं ॥ तबसारथीबचनउ
चरैं ॥ ३० ॥ आंसुप्रवाहलैनैननितैं ॥ अतिव्याकुलअटपटैबैननितैं ॥ सबजदुकुलकौनाससुनायौ ॥
अरुबलकौनिर्याणजनायौ ॥ ३१ ॥ यौंसुनिलोकतप्तसबभयैं ॥ करतविलापप्रभासहीगयैं ॥ तहांजाई
हरिजीनहींदेषें ॥ तबवैकुंठगएकरिलेषें ॥ ३२ ॥ तबरोहणीदेवकीवसुदेव ॥ उग्रसेनराजानरदेव ॥ ह
रिवियोगतैंउपज्यौंसोक ॥ तातैंचहूंतजौंनरलोक ॥ ३३ ॥ रामकृष्णकोएसोविजोग ॥ जातैमिथ्यौदेहसं
जोग ॥ बलजुवातैसबलैबलदेह ॥ अगनिप्रवेशकीयौअतिनेह ॥३४॥ वसुदेवहींलेषोडशनारी ॥ की

यौसहगवनाचितासंवारी ॥ प्रद्युम्नादीजहांलौजेतौं ॥ तिनकीत्रियनिलीयेंसबतेतें ॥ ३५ ॥ रानहीनकौअ
तोकृष्णविजोग ॥ तातेंकर्‍यौअग्निसंजोग ॥ हरिकीवधूजहांलौजेती ॥ रुकमनिआदिसकलमिलितेती
॥ ३६ ॥ हरिकौंरूपहृदेमैंधर्‍यौं ॥ अग्निप्रवेशसकलमिलिकर्‍यौ ॥ अर्जुनपरमसपाहरिजीकौं ॥ कृ
ष्णविजोगप्रहारकजीकौं ॥ ३७ ॥ तातेंअर्जुनअतिदुपपार्यौं ॥ कृष्णज्ञानतबाहिंहृदेंआयौं ॥ गीतामा
हिकर्‍यौहारिज्ञान ॥ मिथ्यादेहसत्यभगवान ॥ ३८ ॥ ऐसौबहुविधिज्ञानविचार्‍यौ ॥ कृष्णवियोगदुःख
सबटार्‍यौ ॥ आपआपमैंमोरजेतैं ॥ अपनेंबंधुजातिप्रीयतेतें ॥ ३९ ॥ तिनकौंजेपिंडादिकदाना
॥ मृतकक्रियाजेतीविधिनाना ॥ सोईसोअर्जुनसबकरी ॥ कृष्णप्रीतिनैनहोंपरिहरी ॥ ४० ॥ तब
द्वारिकाकृष्णविनुभई ॥ सायरबौरिपलमैंलई ॥ केवलहरिजिकेयहनैंतें ॥ सोहारहैंसकलठौने
॥ ४१ ॥ नितविहारजहांहरिजीकौं ॥ सुमरतसुनतउधारणजीकौं ॥ मंगलसकलमंगलनिकारी ॥
त्रिभुवनहोवैंनितचेरौ ॥ ४२ ॥ अखिबालवृधसबजेतें ॥ मरनमरतउबरेतेकौने ॥ तेअर्जुनादिलोंलआ
ए ॥ समाचारपांडवनिसुनाए ॥ ४३ ॥ तुमरेसकलपितामहजेतें ॥ कृष्णप्रयाणहोंसुनकारिनैतें ॥ तुमहीं
वंशधरराजाकीयौ ॥ मथुरातिलकवज्रकोंदीयौं ॥ ४४ ॥ तेसबतानिउत्तरदिशिगए ॥ कृष्णहीमेंउ
कृष्णमयभए ॥ जोयहहरिजीकोअवनार ॥ जोमैंकर्मगुणविस्तार ॥ ४५ ॥ तिनकौंकहैंसुनैंअघजांई
॥ सबपापनितैंछूटैंसोई ॥ याविधिहरिजीकेअवतार ॥ बालापननैंकर्मअपार ॥ ४६ ॥ लोकअरुवेदपे

प्रगटजेते ॥ गावैंसुनैंविचारैंतेतैं ॥ तबतैंलहैंपरमआनंद ॥ मिलैंकृष्णछूटैंदुषदंद ॥ ४७ ॥ ॥ दोहा
यहहरिकोअवतारमैंतुमसौंकह्यौंसूनाई ॥ याकौंकहिसुनिसुमरननरनारायणमैंजाई ॥ ४८ ॥ ॥ चौपाई
ब्रह्मनिरीहनिरंजनस्वामी ॥ सकललोककेअंतरजामी ॥ भक्तिनिहितधरैंअवतार॥नानाभांतिकरैंउद्धार॥
४९ ॥ तिनमैंकृष्णस्वयंभगवान ॥ ज्ञानक्रियासबशक्तिप्रधान ॥ जिनकैंगुणनिकहैंशुकदेव ॥ सुनताहित
न्यौपारिक्षतदेव ॥ ५० ॥ जिनकोनामालियेभवनाहीं ॥ लेकारिराषेनिजपदमांहीं ॥ असैंकृष्णसंतनिकौवि
त्त ॥ नमस्कारतिनप्रभुकौंनित ॥ ५१ ॥ तेअबसंनदासकेराम ॥ देहधरीजीवनकेकाम ॥ कृपानिधान
भक्तिकरवावैं ॥ अपनिशक्तिल्हदैमैंल्यावैं ॥ ५२ ॥ ऐसोविधभवदुषामिटावैं ॥ अपनेपरमपदपहुचावैं॥
कृष्णरूपतिनज्ञानसुनायौ ॥ उद्धवजननिजपदपहुचायौ ॥ ५३ ॥ सोलेकह्यौसंस्कृतव्यास ॥ तातेंहोइअ
नर्थप्रकास ॥ जोपंडितजानेपैसोई ॥ दूजोकदैंनजानेकोई ॥ ५४ ॥ तातेंतिनअबकरुणाकीनी ॥ मोसेव
कक्यौंआग्यादीनि ॥ सबलोकनिकोहितमनधारी ॥ ममउरल्हैंभाषाविस्तारी॥ ५५॥याकौंवाचेसुनैंसुना
वैं ॥ ध्यानकरैंउंचेंसुरगावैं ॥ तेतैलहैंज्ञानवैराग ॥ प्रेमभक्तिहरिकौअनुराग ॥ ५६ ॥ प्रेमप्रवाहमगन
नितरहैं ॥ भवदावाग्निकदैंनहींदहैं ॥ ऐसेल्हैंकरिब्रह्मसमावैं ॥ ताजिआनंदजत्तनहींआवैं ॥ ५७ ॥ क
वहुंकौरकमनाकोई ॥ यातेंलहैंसकलसोसोई ॥ तातेंजेजेहोइसहकाम ॥ अबजेबडभागीनिहकाम॥
५८ ॥ तिनसबनिकौंभाषाएह ॥ भक्तिअरुमुक्तिकोगेह ॥ तातेंयासौंकीजैप्रीति ॥ यहहैसकलसंतन

करीति ॥ ५९ ॥ संवतसोलसहबाणवा ॥ ज्येष्ठसुक्लसष्टीकुजादिवा ॥ संतदासगुरुआज्ञादीनि ॥ चतुर
दासयहभाषाकीनी ॥ ६० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परमज्ञानपरगटकियोममघटव्हैनिजदेव ॥ तेमेरेउर
नितवसेंसंतदासगुरुदेव ॥ ६१ ॥ विद्वज्जनतेंविनतीश्रीधरकरतप्रवीन॥ एकादशएकतीसपेंदोहाकियानवी
न ॥ ६२ ॥ पुष्करछायामध्यैहैंपरशुरामसुषग्राम ॥ श्लेमबादजाकौंकहैंश्रीधरकवितानाम ॥ ६३ ॥
श्रीधरपुनिशोधनकीयोसंवताविक्रमाधीश ॥ माधवसितप्रतिपदशनीचवधोत्तरएकुणीस ॥ ६४ ॥ ॥
॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीशुकदेवपरिक्षितसंवादेभाषाटीकायांश्रीकृष्णप्रयाणोनामएकात्रिं
शोऽध्यायः ॥ ३१ ॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हेंपुस्तक भाषाएकादशस्कंध मुंबईत बापूसदाशिवशेटहेगिष्टेशेयेयांणीं आपलेछापखान्यांत छापिलेंठिकाण
हनुमानगल्ली शके १७८८ क्षयनामसंवत्सरे ज्येष्ठकृष्णप्रतिपदिगुरुवासरेसमाप्तं श्रीगजाननार्पणमस्तु

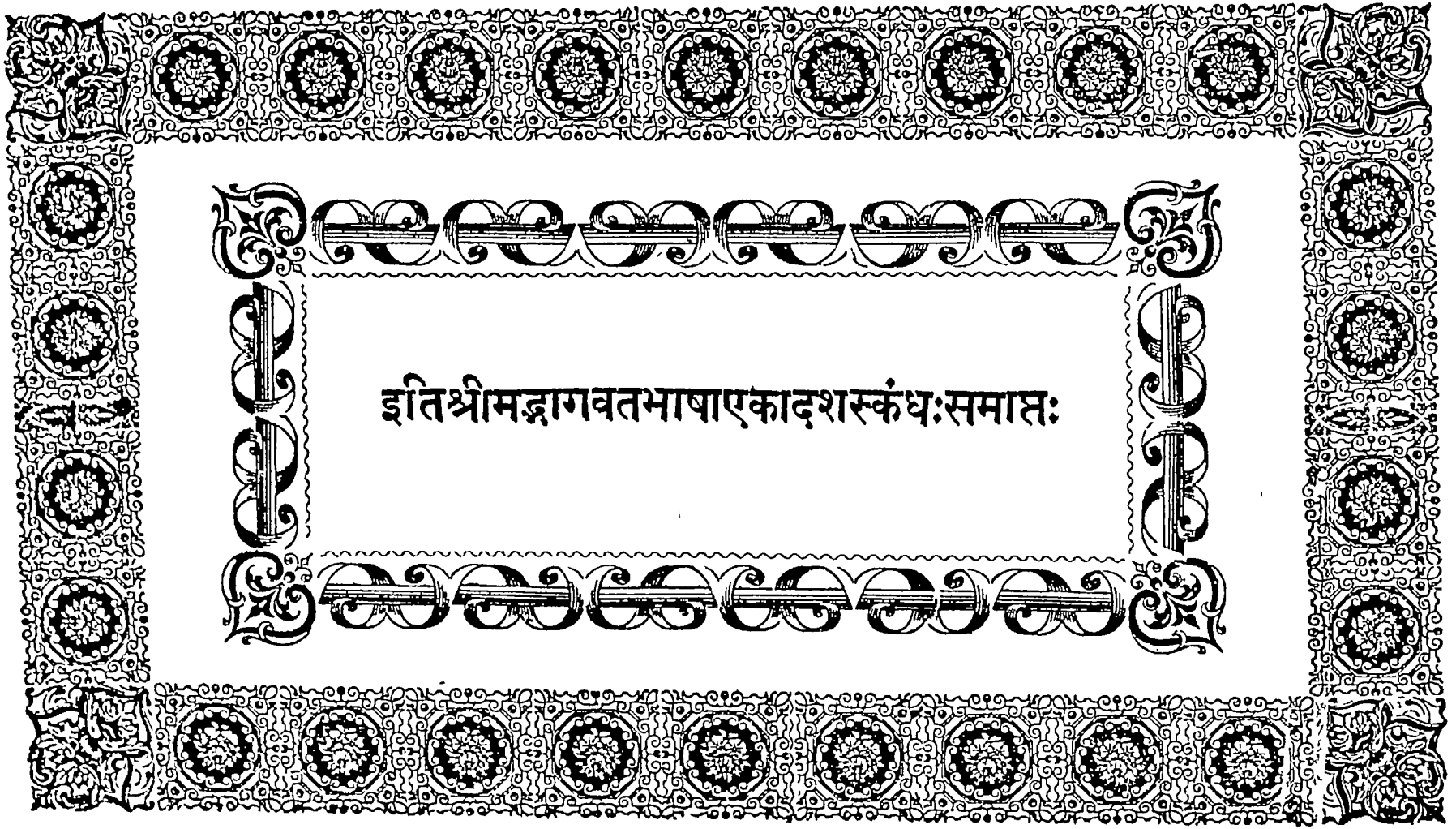

इतिश्रीमद्भागवतभाषाएकादशस्कंधःसमाप्तः